पचास मौज़ूआत पर सौ वाक़ेआत

-प्रकाशक-

हाजीनाजी मेमोरियल ट्रस्ट
माली टेकरा, अम्बाचौक,
भावनगर (गुजरात इंडिया)

लेखक

मौलाना सय्यद अली अफ़ज़ल

जैदी क़ुम्मी

हिन्दी (लीपी)

हाजी नाजी मेमोरियल ट्रस्ट

નોંધ.....

➔વધુ કિતાબો ડાઉનલોડ કરવા માટે www.hajinaji.com પર લોગ ઓન કરો.

➔કિતાબમાં કોઈ ભૂલચૂક જણાય તો પેજની વિગત અને કિતાબનું નામ જાણ કરવા વિનંતી.

hajinajitrust@gmail.com

इंतेसाब (निस्बत देना)

मैं अपनी इस काविश (मेहनत) को वक्त के इमाम (अ.स.) यानी इमामे साहेबुल असर वज़्ज़मान (अ.स.) कि जिनकी मअरेफ़त हासिल करना हर एक पर वाजिब है. की मल्कूती बरगाह में हदियह करता हूँ.

दुआ गो हूं, कि परवरदिगारे आलम बंदे की इस काविश को अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमाऐ, और इमामे ज़माना (अ.स.) का हक़ीक़ी सिपाही बनने की तौफ़ीक अता फ़रमाऐ और जुमलह (तमाम) मोमेनीन व मोमेनात की शरई हाजात को मुस्तजाब फ़रमाये और हमसब को आमाले सलेहा बजा लाने की तौफीक़ अता फ़रमाये आमीन या रब्बल आलमीन.

बहक्क़े हज़रत मोहम्मद (स.अ.व.) व आले मोहम्म्द (स.अ.व.)

क़तअह

हम तो जिन के हैं शैदा जल्द आनेवाले हैं
सू बसू है यह चरचा जल्द आने वाले हैं
इंतेज़ार जिनका है हम फ़ेदाई जिनके हैं
वह हुसैन (अ.स.) के शैदा जल्द आनेवाले हैं

बयाने मोअल्लिफ़ (लेखक)

नाचीज़ राकिम हम ने इस किताब से पहले एक और किताब ''इंसान साज़ वाक़ेआत'' तहरीर की थी जो अलहम्दु लिल्लाह काफ़ी लोगों ने पसंद किया लेकिन तमन्ना और आरज़ू यह थी कि वाक़ेआत को मौज़ू के साथ तहरीर किया जाए और आयात व रवायात को भी ज़िक्र किया जाये.

इस किताब को लिखने से पहले, जनाब हसन अली जीवानी साहब से मश्वेरह किया, तो उन्हों ने फ़रमाया, कि आज कल लोग वाकेआत की किताबें बहुत खरीदते हैं, और वाकेआत को पढ़ने में काफी दिलचस्पी लेते है - गोया उन्हों नें मेरी ख्वाहिश और आरज़ू की ताईद फ़रमाई,

इसलिए पाकिस्तान से इरान वापसी पर बंदे ने इस किताब को लिखना शुरू किया.

इस किताब में पचास मुखतलिफ़ मौजूआत हैं, और हर मौज़ूअ में पांच आयात, पांच रवायात, को ज़िक्र किया गया है, और मुख्तसर सी तशरीह व तौजीह भी की गई है, और हर मौजूअ पर दो वाक़ेआत का भी ज़िक्र किया गया है, खोसूसन अहले मिम्बर के लिये यह किताब काफ़ी मुफ़ीद साबित होगी, कोशिश की गई है कि ऐसे मौज़ूआत को बयान किया जाऐ कि जिनको पढ़ कर हम अपनी इस्लाह कर सकें.

अलहम दुलिल्लाह किताब ''इंसानसाज़ वाक़ेआत''और 'असरारे विलायत''
के बाद यह तीसरी काविश है, जो इस वक्त पढ़ने वालो के हाथों में मौजूद है. इस काविश और मेहनत को मोकम्मल करनें में जिन अफ़राद नें हिस्सह लिया है. उन्का मैं दिल की गहराईयों से शुक्रिया अदा करता हूँ. जैसे मौलाना मुबारक हसनैन जैदी साहब.

कि जिन्हों नें दिन रात मेहनत करके इस की कम्पोजिंग की, उसी तरह मौलाना नादिर सादक़ी, मौलाना सय्यद नासिर हुसैन जैदी, मौलाना ज़ीशान हैदर नक़वी, मौलाना रिज़वान अली अलवी, मौलाना शुजाअत अली हिन्दी, जनाब हाफ़िज़ खुदा बख्श, जनाब सय्यद ज़ुल्फिक़ार हुसैन नक़वी साहेबान, कि जिन्हों नें दस दस मौजूआत को लेकर तसहीह का काम अंजाम दिया, इसी तरह तमाम साथियों का शुक्रगुज़ार हूँ. जिन्हों नें इस काविश को शाया करनें में मेरी मदद की, खास तौर से नज़रे सानी और तबाअत के कामो में मदद करने वाले, मेरे अज़ीज़ दोस्त मौलाना सय्यद शहंशाह नक़वी और मौलाना मेहदी ईमानी का शुक्रगुज़ार हूँ.

खुदा से दुआगो हूँ. बहक्के मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.मु.स.), जिन अफ़राद नें जिस तरह की भी इस किताब में मदद की है.

बहक्के मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.मु.स.) उन्की तौफ़ीक़ात में इज़ाफ़ह फ़रमाए, इसी तरह कारे खैर करने की हम सब को तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हम सब के मरहूमीन की मगफ़ेरत फ़रमाए हमारा हशर व नशर कुरआन व अहलेबैत (अ.मु.स.) के साथ फ़रमाए

आमीन या रब्बल आलमीन - बहक्क़े हज़रत मोहम्मद (स.अ.व.) व आले मोहम्मद (स.अ.व.)

सय्यद अली अफ़ज़ल जैदी.

फेहरिस्त

1) आखेरत

आयात:

1-तमाम मर जाएँगे

اِنَّکَ مَیِّتٌ وَّ اِنَّھُمْ مَّیِّتُوْنَ

(सूरेए ज़ुमर आयत 30)

"पैगंम्बर (स.अ.व.) आप को भी मौत आनें वाली है, और यह सब मर जाने वाले हैं"

2-मौत मख्लूक़े खुदावंद (मौत अल्लाह की मखलूक़ है)

الَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَیٰوۃَ لِیَبْلُوَکُمْ اَیُّکُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا

(सूरेए मुल्क आयत 2)

"उसने मैत व हयात को इसलिए पैदा किया है. ता कि तुम्हारी आज़माइश करे कि तुम में हुस्ने अमल के ऐतबार से, सब से बेहतर कौन है"

3-मौत से डरने की वजह:

قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًا ۢبِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ

(सूरए बक़रह आयात 94-95)

‘‘उनसे कहो कि अगर सारे इंसानों में आखेरत का घर, फ़क़त तुम्हारे लिये है. और तुम अपने दावे में सच्चे हो तो तुम मौत की तमन्ना करो, और यह अपनें पिछले आमाल की बिना पर हरगिज़ मौत की तमन्ना नहीं करेंगे’’

4-मौत के बाद ज़िंदगी:

فَانْظُرْ اِلٰۤى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

(सूरए रूम आयत 50)

''अब तुम रहमते खुदा के उन आसार को देखो, कि वह किस तरह ज़मीन को मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा कर देता है. बेशक वही मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है, और वही हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है''

5-आखेरत बेहतर है:

وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى

(सूरेए आअला आयत 17)

आखेरत बेहतर, और हमेशा रहने वाली है

रवायात:

1-आखेरत के लिये अमल अंजाम दो-

قال علي عليه السلام : اِنَّکَ مَخْلُوْقٌ لِلْاٰخِرَةِ فَاعْمَلْ لَهَا

(गुररुल हेकम जिल्द 1.पेज. 17.)

''हज़रत अली (अ.स.) ने फ़रमाया, बेशक तुम आखेरत के लिये पैदा किये गये हो, उसी के लिये अमल अंजाम दो''

2-आखेरत नेक लोगों केलिये:

قال علي عليه السلام : اَلْاٰخِرَةُ فَوْزُ السُّعَدَاءِ''

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 16)

हज़रत अली (अ.स.) ने फ़रमाया: आखेरत नेक लोगों की कामियाबी है.

3-दुन्या की ज़ीनत:

قال علي عليه السلام : اَلْمَالُ وَ الْبَنُوْنُ زِيْنَةُ الدُّنْيَا

وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ حَرْثُ الْاٰخِرَةِ

(गुररुल हेकम जिल्द.1 पेज. 16)

हज़रत अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) नें फ़रमाया: माल और अव्लाद दुन्या की जीनत है, और नेक अमल आखेरत की खेती है.

4-आखेरत पर यकीन:

قال علي عليه السلام: مَنْ اَيْقَنَ بِالْاٰخِرَةِ لَمْ يَحْرِصْ عَلَي الدُّنْيا

(गुररूल हेकम जिल्द. 1, पेज. 19)

मौला अली (अ.अ.) ने फ़रमाया: जो शख्स आखेरत पर ईमान रखता है. वह दुन्या की हिर्स (लालच) नहीं करता.

5-अखेरत बाकी रहनें वाली है

قال علي عليه السلام: غَايَةُ الْاٰخِرَةِ الْبَقَاءُ

(गुररुल हेकम जिल्द. 1, पेज. 18)

हज़रत अली (अ.स.) ने फरमाया: आखेरत की गरज़ (मक़सद) बक़ा है

तशरीह:

इसमें कोई शक नहीं कि यह दुन्या फानी है. इस दुन्या को दवाम नहीं है. यानी यह दुन्या, हमेशा बाक़ी रहने वाली नहीं है. कुरआन व रवायात से यह बात साबित है. कि इंसान इस दुन्या में हमेशा रहने केलिये नहीं आया यह दुन्या फकत ऐक गुज़र गाह है. इंसान को हमेशह आखेरत की फ़िक्र में रहना चाहिए, आज अमल का दिन है, और कल हिसाब का. जज़ा व सज़ा का दारो मदार अमल पर है. जैसा अमल वैसी ही जज़ा व सज़ा- ऊपर ज़िक्र की हुई आयात व रवायात से भी यह बात पता चलती है. कि दुन्या से बेहतर आखेरत है.

खुदा से दुआ है बहक्के मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.मु.स.) हमें आखेरत में बेहतरीन जज़ा व इनआम अता फ़रमाऐ (आमीन).

वाक़ेआत-

1-नादान आबिद

बनी इसराईल में, एक मुत्तक़ी व परहेज़गार आबिद, दो सै साल अपनी उम्र इबादते इलाही में गुज़ार चुका था. उसने खुदा से दुआ की कि खुदाया! इबलीस को दिखा अचानक उस्के करीब एक बूढा शख्स ज़ाहिर हुवा

आबिद ने पूछा तुम कौन हो?

बूढ़े ने कहा मैं इबलीस हूँ-

आबिद: तुम मेरे पास इस से पहले क्यूं नहीं आए, मुझे धोखा व फ़रेब देने केलिये?

इबलीस ने कहा: कई बार आया लेकिन तुम मेरे जाल में न फँस सके

आबिद: क्यूं?

इबलीस: क्यूं कि तुम हमेशा इबादते इलाही में मशगूल रहते, और हमेशा इस फ़िक्र में रहते, कहीं इजराईल न आजाएँ और मैं

गुनाह व मासीयत में मुब्तेला हूँ, इस वजह से मै तुम पर मुसल्लत न हो सका, और इसी वजह से खुदा नें तुम्हारी दो सौ साल उम्र की, उस्के अलावा दो सौ साल और बढ़ा दी है. (गोया तुम्हारी उम्र चार सौ साल है) यह कहकर इबलीस गायब हो गया.

आबिद सोचने लगा, और अपने आप से कहने लगा कि दो सौ साल अभी मेरी उम्र बाकी है. क्यूं अपने आप को दुनयावी लज़्ज़त से महरूम रख्खूं (गोया आबिद आखेरत भूल गया) सौ साल ऐश व इशरत में गुजारता हूँ. और बाकी

सौ साल इबादत व इताअत में गुज़ार दूंगा- इस गलत फ़िक्र नें, आबिद को इबादत से दूर करदिया, और दुन्या की तरफ मुतवज्जह हुवा- आहिस्तह आहिस्तह गुनाह का मुरतकिब होता रहा- एक दफअ अचानक

उसनें महसूस किया, कि मल्कुल मौत इजराईल उस्के करीब आरहा है.

आबिद नें इजराईल से कहा: मेरी दो सौ साल उम्र है.

इजराईल नें कहा: बेशक तुम्हारी उम्र दो सौ साल थी लेकिन इबादत की दूरी और गुनाहों को अंजाम देने की वजह से तुम्हारी उम्र कम होगई. (तुम आखेरत को भूल गये और दुन्या की तरफ मुतवज्जह हो गये) इस तरह नादान आबिद की आकेबत व आखेरत खराब हो गई.

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ عَوَاقِبَ اُمُوْرِنَا خَيْرًا

तर्जुमह: खुदाया हमारी आकेबत बखैर फरमाँ

(आकेबत व कैफर गुनहगारान पेज.15.)

2-हकीकत को जानना

एक शख्स मस्जिद नबवी में दाखिल हुआ, और पैगम्बर (स.अ.व.) से अर्ज किया, अय

रसूले खुदा (स.अ.व.) मुझे कुरआन की तालीम दें, पैगम्बरे अकरम (स.अ.व.) नें अपनें असहाब में से उस्को एक सहाबी के सिपुर्द किया- सहाबी उसका हाथ पकड कर मस्जिद के एक कोनें में ले गया, और सूरेए मुबारेकह जिलज़ाल की उस्के सामने तिलावत की, जब इस आयत पर पहुचा

فَمَنْ يَعْمَلْ مثقال ذرۃ خیراً یرہ ومن یعمل مثقال

ذرۃ شرا یرہ

(फिर जिसने ज़र्रह बराबर नेकी की है. वही उसे देखे गा और जिसने ज़र्रह बराबर बुराई की है. वह उसे देखे गा)

उस शख्स ने थोड़ी फ़िक्र करने के बाद कहा: क्या यह जुमला वहये इलाही (अल्लाल की वही) है? सहाबी ने उस शख्स के जवाब में कहा बेशक- उस शख्स ने कहा: मैंने इस आयत से दरस (सबक़) ले लिया है. यानी

यही आयत मेरे राहे मुस्तकीम पर चलने और आखेरत की याद केलिये काफी है- और यह कहकर वह शख्स चल पड़ा-
सहाबी पैगम्बर (स.अ.व.) की खिदमत में हाज़िर हुवा और सारा वाकेया बयान किया- पैगम्बर (स.अ.व) ने फरमाया उस्को आज़ाद छोड़ दो उसने हकीकत को पा लिया (तफसीरे नमूना जिल्द 27, पेज. 231.)

2) ऐहसान

आयात

1-ऐसान केलिये हुक्मे इलाही:

اِنَّ اللّٰہَ یَاۡمُرُ بِالۡعَدۡلِ وَ الۡاِحۡسَانِ

सूरए नहल आयत 90

''बेशक अल्लाह अदल और एहसान का हुक्म देता है''

2-एहसान का बदलह:

ہَلۡ جَزَآءُ الۡاِحۡسَانِ اِلَّا الۡاِحۡسَانُ

सुरए रहमान आयत 60.

''क्या ऐहसान का बदलह एहसान के अलावह कुछ और भी हो सकता है''

3-नेकी का शौक़ दिलाना:

لِلَّذِیۡنَ اَحۡسَنُوۡا فِیۡ ہٰذِہِ الدُّنۡیَا حَسَنَۃٌ ؕ

सूरए ज़ुमजर आयत 10.

''जिन लोगों नें इस दुन्या में ऐहसान किया उन्के लिये नेकी है''

4-रहमते इलाही एहसान करने वालों के करीब है.

إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ

सूरए आराफ आयत 56.

उस्की रहमत अच्छा अमल नेक अमल करने वालों से करीब तर है.

5-खुदा एहसान करने वालों को दोस्त रखता है

وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ

(सूरए आले इमरान आयत 148)

और अल्लाह नेक अमल करने वालो को दोस्त रखता है.

रवायात

1-नेक लोगों की खसलत:

قال علي عليه السلام: اَلْاِحْسانُ غَرِيزَةُ الاَخيارِ

गोररुल हेकम जिल्द. 1, पेज. 269

मौला अली (अ.स.) नें फरमाया: एहसान करना नेक लोगों की खसलत है.

2-बेहतरी ईमान

قال علي عليه السلام: اَفْضَلُ الْاِيْمانِ اَلْاِحْسانِ

गोररुल हेकम जिल्द. 1 पेज. 271

मौलाऐ काऐनात नें फरमाया: बेहतरीन ईमान एहसान है.

3-एहसान मोहब्बत का सबब:

قال علي عليه السلام: اَلْاِحْسانُ مُحَبَّةٌ

गोररुल हेकम जिल्द. 1, पेज. 275

अमीरुल मोमेनीन नें फरमाया: एहसान मुहब्बत का सबब होता है.

4-गुनाह गार पर एहसान:

قال علي عليه السلام: اَلْإِحْسانُ إِلی الْمُسيِءِ أَحْسَنُ الْفَضْلِ

(गोररुल हेकम जिल्द 1 पेज. 277)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: गुनाह गार पर एहसान बेहतरीन फज़ीलत है.

5-गुलामी:

قال علي عليه السلام: بِالْإِحْسانِ يُسْتَعْبَدُ الْإِنْسانُ

(गोररुल हेकम जिल्द. 1, पेज. 280)

मौलाए मुत्तकीयाँन (अ.स.) नें फरमाया ऐहसान से इन्सान गुलाम बन जाता है.

तशरीह:

ऐहसान, हर वह अमल नेक है. जो वाकेँअन नेक हो और कुदरत की निगाह में नेक कहे जाने के काबिल हो, ताकि खुदा उस्का अज्र देसके वरना ख्याली नेकियों की कोई कीमत नहीं है هَلۡ جَزَآءُ الۡاِحۡسَانِ اِلَّا الۡاِحۡسَانِ
एक अकली क़ानून भी है और शरई कानून भी- साहेबाने अक्ल भी इस हकीकत को मानते हैं. कि नेकी का बदला नेकी के सिवा कुछ भी नहीं हो सकता, और हुक्में शरीअत भी है. कि अगर कोई शख्स तुम्हारे साथ नेक बर्ताव करे, तो उस्की नेकी का जवाब नेकी ही से दो- मगर बद बख्त अफराद नें, इस कानून का भी ख़याल नहीं रख्खा और परवरदिगार जैसे एहसान करनें वाले के साथ भी अच्छा बर्ताव नहीं किया, और उस्की बंदीगी से दूर हो गये, बल्की उस्के वजूद तक का इनकार कर दिया.

खुदा से दुआ है बहक्के चहारदह मासूमीन (अ.मु.स.) हम सब को ऐहसान व नेकी करनें की तौफीक अता करे- (आमीन)

1-एहसान और नेकी:

मोअम्मर बिन खलूद इमामे रेज़ा (अ.स.) से रवायत नक्ल करता है. कि हज़रत (अ.स.) ने फरमाया: बनी इस्राईल में एक शख्स नें ख्वाब में देखा कि उस्के पास कोई शख्स आया और उसने कहा: तेरी उम्र में आधी ज़िंदगी आराम व सुकून और खुशी में गुज़रेगी और आधी दूसरी ज़िंदगी परेशानी और तंगदस्ती में- अब तेरी मर्जी है. जिस्को चाहे पहले इन्तेखाब करले- उस शख्स नें कहा मेरे साथ मेरी शरीके हयात है बेहतर है. पहले उस से मश्वेरह करलूं- जब सुबह हुई तो उसने बीवी से कहा: रात ख्वाब में मैंनें एक शख्स को देखा और उसने मुझ से कहा: तेरी आधी जिंदगी में खुश्यां हैं, और आधी ज़िंदगी में परेशानियां हैं: अब तेरी मर्जी जिसको चाहे पहले इन्तेखाब कर:

उस्की बीवी नें कहा: पहले खुशी को इन्तेखाब करलो- उसने अपनी शरीके हयात की बात पर अमल किया और पहले खुशी को इन्तेखाब किया- जब उसने यह काम किया और दुन्या उस्की तरफ आई तो जब उसे कोई नेअमत मिलती तो उस्की बीवी उस से कहती तुम्हारा फलां हमसाया और पड़ोसी ज़रूरत मंद और मुहताज है. उस्के साथ ऐहसान करो या उस से कहती तुम्हारा फलां रिश्तह दार ज़रूरत मंद है उस्के साथ ऐहसान करो या उस से कहती तुम्हारा फलां रिश्तह दार न्याज़मंद है उस्की मदद करो इसी तरह हमेशह जो भी उस्को नेमत मिलती, वह गरीबों और मुहताजों की मदद करता और उस नेमत का शुक्र अदा करता. इस तरह उस्की आधी ज़िंदगी खुश्यो और फरावानी में गुज़री.

और जब दूसरी आधी ज़िंदगी शुरू हुई. तो उसकी बेवी नें कहा:

قد أنعم اللهُ عَلَيْنَا فَشَكَرْنَا وَاللهُ أَوْلَىٰ بِالْوَفَاء

यानी खुदा ने हमें नेमतों से नवाजा और हमने उस्का शुक्र अदा किया. और खुदा यकीनन, अपने वादे पर वफ़ा करेने वाला है. यही ऐहसान , शुक्रे नेमत, गरीबों, मुहताजों, अज़ीज़ व अकारिब की मदद करनां, सबब बना कि उस्की दूसरी आधी ज़िंदगी भी खुशयों और फरावानीं (हर चीज़ बुत ज़्याद) में गुज़री (बेहारुल अन्वार जिल्द. 77, पेज. 55, शरहे ज़ियारते अमीनुल्लाह, पेज. 315.)

2-एहसान और खिदमते खल्क:

इब्ने अब्बास कहते हैं: मै मस्जिदे हराम में इमामे हसन (अ.स.) के करीब बैठा, और इमाम (अ.स.) मस्जिद में ऐतकाफ में बैठे हुए थे- एक दिन इमाम (अ.स.) तवाफ कर

रहे थे. कि इतने में एक शख्स इमाम (अ.स.) के पास आया, और अर्ज की: अय फरज़न्दे रसूल (स.अ.व.) मैं मकरूज़ हूँ. मुझे इस्कदर रकम चाहिए अगर मुमकिन हो तो मेरा कर्ज अदा करदें.

इमाम (अ.स.) नें फरमाया इस घर के रब की क़सम मैंनें इस हाल में सुबह की है. कि मेरे पास कुछ भी नहीं: उस शख्स ने कहा: अगर मुमकिन हो तो मुझे साहेबे कर्ज से वक्त ले कर देदें. क्यूं की वह मुझे डराता और धमकाता है इब्नें अब्बास कहते हैं: इमाम (अ.स.) नें अपने तवाफ को छोड़ा, और उस शख्स के साथ उस्की हाजत रवाई के लिये चल पड़े. मैंनें अर्ज किया: अय फ़रजन्दे रसूल (स.अ.व.) आप ऐतकाफ में हैं. हज़रत (अ.स.) नें फरमाया मैंने अपने वालिदे गरामी से सुना है कि रसूले खुदा (स.अ.व.) नें फरमाया जो भी किसी मोमीन

की हाजत पूरी करेगा, गोया उसने नव्वे हज़ार साल खुदा की इबादत की, ऐसी इबादत कि दिन को रोज़े से और रातों को क़याम में.

(गंजीनए मआरिफ जिल्द. 1, पेज.45.)

3) इखलास

आयात

1-खालिस इबादत

وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ

सूरए बय्येनह आयत 5

"और उन्हें सिर्फ इस बात का हुक्म दिया गया था. कि खुदा की इबादत करें, और उस इबादत को उसी केलिये खालिस रख्खें"

2-सब कुछ खुदा के लिये

قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

(सूरए अनआम आयत 162)

"कह दीजिये कि, मेरी नमाज़, मेरी इबादतें, मेरी ज़िंदगी, मेरी मौत, सब अल्लाह केलिये है. जो आलमीन का पालने वाला है"

3-शैतान से महफ़ूज़

وَلَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ

(सूरए हिज्र आयात 39-40)

‘‘और सब को इकठ्ठा गुमराह करूगा, अलावह तेरे उन बन्दों के जिन्हें तूनें खालिस बनाया है’’

4-नजात याफ्तह:

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ

(सूरए साफ्फात आयात 73-74)

तो अब देखो कि जिन्हें डराया जाता है.
उन्के न मानने का अंजाम क्या होता है.
अलावा उन लोगों के जो अल्लाह के
मुखलिस बंदे होते हैं.

5-मुखलिस बन्दों के सिवा कोई खुदा की तौसीफ नहीं कर सकता

سُبۡحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الۡمُخۡلَصِيۡنَ

(सूरए साफ्फात आयत 160)

ज़ाते खुदा पाक व मुनज्जह है. उन सब के बयानात से जो वह कहते हैं. मगर खुदा के मुखलिस बंदे उस्की तौसीफ करेंगें.

1-कामियाबी

قال علي عليه السلام : أَلْإِخْلَاصُ فَوْزٌ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज. 404)

मौलाऐ काऐनात नें फ़रमाया ‘‘इखलास कामियाबी है’’

2-इबादत का मेअयार

قال علي عليه السلام : أَلْإِخْلَاصُ مِلَاكُ الْعِبَادَةِ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज. 405.)

हज़रत अली (अ.स.) नें फ़रमाया इखलास इबादत का मेअयार है.

3-मुक़र्रबींन की इबादत

قال الي عليه السلام : أَلْإِخْلَاصُ عِبَادَةُ الْمُقَرَّبِيْنَ

गोररुल हेकम जिल्द. 1 पेज. 405

इमामे अली (अ.स.) नें फरमाया इखलास मुक़र्रबींन की इबादत है.

4-आज़ादी

قال علي الاسلام : غَايَةُ ٱلْإِخْلَاصِ ٱلْخَلَاصُ

गोररुल हेकम जिल्द 1 पेज. 407

अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) ने फरमाया इखलास का नतीजह (अज़ाबे खुदा से) खलासी व रेहाइ है.

5-मुराद पा लेना

قال علي عليه السلام : مَنْ أَخْلَصَ بَلَغَ ٱلْآمَالَ

(गोररुल हेकम जिल्द 1 पेज 408)

अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) नें फरमाया. जिसने अपनें अमल व नीयत में ख़ुलूस पैदा किया, वह अपनें मकसद व मुराद को पागया

तशरीह

इखलास व खुलूसे नीयत, एक बहुत अज़ीम मसअला है. जिस पर कुरआने मजीद की आयात, व रवायाते मअसूमीन (अ.मु.स.), में बहुत जोर दिया गया है.

सिर्फ मुखलिस अफराद ही की फ़िक्र व नीयत, अमल और इखलाक काबिले अहमियत हैं. और सिर्फ वही लोग अजरे अज़ीम और रिज्वाने इलाही के मुस्तहक होते हैं.

अगर हमारी कोशिश, आमाल और अखलाकी तमाम काम, गैरे खुदा केलिय हों, तो उन्की कोई अहमीयत नहीं, और खुदा के नज़दीक उसका कोई सवाब नहीं है.

इखलास बेहतरीन अमल है- इख्लास बहुत बड़ी कामियाबी है- इखलास इबादत का समरह, (यानी इबादत का फल) है. और इसी अखलास के ज़रिये इंसानों के आमाल,

बलंदियों की तरफ जाते हैं. और परवर दीगरे आलम मुखलिस बन्दों की दुआओं को बहुत जल्द मुस्तजाब करता है.

खुदा से दुआ करते हैं. बहक्के मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.मु.स.) हमें खुलूस नीयत से हर नेक काम करनें की तौफीक अता फरमाए. (आमीन)

1-शैतान का वअदह और आबिद की शिकस्त

किताब खुलास्तुल अख्यार, और दूसरी मोअतबर किताबों में मिलता है. कि बनी इस्राईल में एक दरख़्त था. जिसमें से शैतान आवाज़ निकाल कर, लोगों से बातें किया करता था- और काफी लोग उस दरख्त के बारे में उलूहिय्यत (यानी अल्लाह होने) के क़ाएल हो गए थे. एक आबिद को जब इस माजरे के बारे में पता चला, तो खुलूसे नीयत से उस दरख्त को काटने का इरादा किया- पस उस आबिद नें कुल्हाड़ी उठाई और उस दरख्त के करीब आया, कि उस्को काट दे- अचानक शैतान इन्सानीं सूरत में मुजस्सम हुवा, और आबिद को दरख्त काटने से मना किया (मगर आबिद नें कहा मैं ज़रूर इस दरख़्त को काटूं गा) आपस में झगडा हुवा

और आबिद शैतान पर ग़ालिब आगया, और शैतान को ज़मीन पर गिरा दिया, शैतान नें जब देखा कि आबिद अपने इरादे से मुन्हरिफ (हट) नहीं होरहा है. तो उसनें आबिद से कहा: अगर इस दरख़्त को काटने से तुम्हारा मक़सूद सवाब है, तो मैं तुम्हारे लिये एक ऐसा काम अंजाम देता हूँ जिसका सवाब और अजर इस से बेहतर है- आबिद नें कहा: वह कौन सा अमल है? शैतान ने कहा: जब तक तुम ज़िंदा हो मैं वादा करता हूँ, कि तुम्हारे मुसल्ले के नीचे से तुम्हें हर रोज दो दीनार सोनें के मिलेगे, और तुम वह दीनार फोक्रा (ग़रीबों) में तकसीम करदेना- आबिद बेचारह, शैतान के फरेब (धोके) में आगया, और दरख़्त को काटने से मुन्हारिफ (हट) हो गया. शैतान ने चंद दिनों तक तो अपनें वादा पर अमल किया. लेकिन कुछ दिनों के बाद जब आबिद को मुसल्ले के

नीचे से दीनार न मिले. तो दोबारह दरख़्त को काटने के लिये चल पड़ा- शैतान फिर आबिद के रास्ते में आया, और दरख्त काटनें से रोका लेकिन आबिद नें इनकार किया, दोनों में दोबारह झगडा हूआ- इस बार शैतान नें, आबिद पर गलबह (जीत गया) पाया, और आबिद को ज़ेर (हरा) कर दिया- आबिद नें तअज्जुब किया, और शैतान से स्वाल किया, कि क्या वजह है उस बार मैं ग़ालिब (कामियाब) आया था. और इस बार तू ग़ालिब (कामियाब) हूआ? शैतान नें कहा: उस दफ़ा तेरी नीयत खालिस थी, और अल्लाह तआला केलिये तू काम अंजाम देना चाहता था. लेकिन इस दफ़ा तेरी नीयत खालिस न थी. बल्की दीनार न मिलने की वजह से तू यह काम अंजाम देना चाहता था- (खजीनतुल जवाहिर फ़ी अयनतुल मनाबिर जिल्द .2, पेज. 1012.)

2-इखलास की बका:

शैख़ अब्बास कुम्मी (कु.सि.) ने सफीनतुल बिहार, की जिल्द दो पेज 668 (लफ्ज़े खलस) में शैख़ शरफुद्दीन बिन मूनिस की किताब मुखतसुरुल अहया. से नक्ल किया है कि: उन्हों नें इखलास के बाब में तहरीर किया है. जो भी अपने अमल को ख्लूसे नीयत से अल्लाह के लिये अंजाम देगा, अगर चे नीयत न हो, तो उस्के आसार और बरकात उस्के लिये, और उसी तरह उस्के लवाहेकीन (मोतअल्लेकींन) व पस्मंदेगान (परीवार) के लिये रोज़े कयामत तक बाकी व क़ाऐम रहें गें-

जैसा कि नक्ल करते हैं कि: जब हज़रत आदम (अ.स.) ज़मीन पर तशरीफ लाये. तो ज़मीन पर रहने वाले मुख्तलिफ हैवानात उन्की जियारत और सलाम केलिये हाज़िर हुये. आपनें आनें वाले जानवरों को उन्की

हयसीयत और मंजेलत के मुताबिक दुआ फरमाई.

हिरनों का एक दस्तह (गिरोह) आदम (अ.स.) के सलाम के लिये उन्के पास आया, हज़रत आदम (अ.स.) नें उन्की पीठ पर मुहब्बत से हाथ फेरा और उन्के हक़ में दुआ फरमाई, जिस के नतीजे में हक्के तआला नें उन्हें नाफऐ मिश्क (यानी हिरन की नाफ में मिश्क) अता फरमाया.

जब यह हिरन मिश्क के अमीन बनकर अपनी कौम में गये तो दूसरे हिरनों ने कहा: आज हमें तुम से अजीब सी खुश्बू महसूस हो रही है. और आज से पहले यह खुशबू तुम में नहीं पाई जाती थी. यह खुशबू कहाँ से लाए हो?

हिरनों ने कहा हम खुदा के बर्गुजीदह हज़रत आदम (अ.स.) की जियारत केलिये गए थे. उन्हों नें हमारी पीठ पर दस्ते शफकत फेरा

और हमारे हक़ में दुआ फरमाई, अल्लाह तआला नें हमें नाफऐ मिश्क का हामिल बना दिया.

जब दूसरे हीरनों नें यह सुना, तो उन्हों नें कहा हम भी आदम (अ.स.) के पास नाफ़ए मिश्क हासिल करनें केलिये जाते हैं. यह कह कर वह हज़रत आदम (अ.स.) के पास आये और उन्को सलाम किया हज़रत (अ.स.) नें उन्के पुशत पर शफक़त का हाथ फेरा और उन्के लिये दुआ फरमाई मगर उनमें वह खुशबू पैदा न हुई.

उन्हों नें वापस आकर हिरनों की पहली टोली से कहा, हम ने भी आदम (अ.स.) की जियारत की उन्हों नें हमारी पुश्त पर दस्ते शफ़कत फेरा, और दुआ भी की, मगर हमारे अंदर वह खुशबू पैदा नहीं हुई जो तुम्हारे अंदर है.

तो दूसेरे हिरनो नें जवाब दिया हमारी और तुम्हारी नीयत में फ़र्क था तुम नें हज़रत आदम (अ.स.) की जियारत को खुलूसे नीयत से अंजाम नहीं दिया, बल्की तुम्हारी नीयत यह थी कि परवरदिगार तुम को भी साहिबे नाफ़ऐ मिश्क अता करे, इसलिये तुम महरूम रहे और हमारी नीयत खालिस थी. लिहाजा हक़ तआला नें हमें इस खुशबू से नवाजा और यह खुशबू कयामत तक उन्की नस्लों में बाकी और क़ाऐम रहेगी. (हज़ार व यक हिकायत इखलाकी, पेज 208.)

4) अखलाक़

आयात

1-हुस्नें खुल्क:

وَ اِنَّکَ لَعَلٰی خُلُقٍ عَظِیۡمٍ

(सूरए कलम आयत 4)

आप बलंद तरीन इखलाक के दर्जे पर हैं.

2-बेहतरी कलाम:

وَقُلۡ لِّعِبَادِیۡ یَقُوۡلُوا الَّتِیۡ ہِیَ اَحۡسَنُ

(सूरए असरा आयत 53)

और मेरे बन्दों से कह दीजिये कि सिर्फ अच्छी बातें किया करें.

3-बेहतरीन जवाब:

وَاِذَا حُیِّیۡتُمۡ بِتَحِیَّۃٍ فَحَیُّوۡا بِاَحۡسَنَ مِنۡہَاۤ اَوۡ رُدُّوۡہَا

(सूरए निसा आयत 86)

और जब तुम लोगों को कोई तोहफ़ऐ (सलाम) पेश किया जाए तो उस से बेहतर या (कम से कम) वैसा ही वापस करो.

4-वह कहो जिसपर खुद अमल करते हो:

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ

(सूरए सफ आयत 2.)

ईमान वालो, आखिर वह बात क्यूं कहते हो, जिस पर अमल नहीं करते.

5-बा इखलाक बन्दों की सिफत:

وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا

(सूरए फुरकान आयत 72)

और जब लग्व (बेकार, फुजूल) कामों के करीब से गुजरते हैं. तो बुजुर्गाना अंदाज़ से गुजर जाते हैं.

रवायात

1-कमाले ईमान की निशानी:

قال الباقر عليه السلام : إِنَّ أَكْمَلَ الْمُؤْمِنِيْنَ إِيْمَاناً أَحْسَنُهُمْ خُلْقاً

(ओसूले काफी जिल्द. 2 पेज. 99.)

हज़रत इमाम मोहम्मद बाकिर (अ.स.) नें फरमाया: बेशक ईमान के लिहाज़ से, सब से ज्यादा कामिल वह है. जो ऐखलाक के लिहाज़ से सब से अच्छा हो.

2-बेहतरीन नेकी:

قال الحسن عليه السلام : إِنَّ اَحْسَنَ الْحَسَنِ الْخُلْقُ الْحَسَنُ

(खेसाल पेज. 29, वसाऐल जिल्द 12 पेज 153)

इमामे हसन (अ.स.) नें फरमाया: बेहतरीन नेकी और खूबी बेहतरीन इखलाक है.

3-अफ्ज़ले अमल

قال رسول الله (ص): مَا يُوضَعُ فِي مِيزَانِ أمْرِيءٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَفْضَلُ مِنْ حُسْنِ الْخُلُقِ

(ओसूले काफी जिल्द 2 पेज 99)

पैग़म्बरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया: रोज़े कयामत मीजान (तराज़ू) में किसी का कोई अमल, हुस्नें खुल्क (अच्छा इखलाक) से ज्यादा अफज़ल न होगा-

---

4-तूलानी उम्र का सबब:

قال الصادق عليه السلام: اَلبِرُّ وَحُسْنُ الْخُلُقِ يَعْمُرَانِ الدِّيَارَ وَيَزِيدَانِ فِي الْأَعْمَارِ

(ओसूले काफी जिल्द 2 पेज 100.)

हज़रत इमामे सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया नेकी और हुस्ने खुल्क शहरों को आबाद करते हैं और उम्रों को बढ़ाते हैं.

5-बेहतरीन दोस्त

قال علي عليه السلام : لَاقَرِيْنَ كَحُسْنِ الْخُلُقِ

(गोररुल हेकम जिल्द 1 पेज 420)

हज़रत अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) नें फरमाया हुस्ने खुल्क जैसा, कोई रफीक व साथी नहीं.

तशरीह: (शरह, वज़ाहत)

इंसान की शेनाख्त (पहचान) उस्के ऐखलाक और किरदार से होती है. जिस का ऐखलाक बेहतरीन होगा, उस्के साथी और दोस्त ज्यादा होंगें. इसी लिये खुदा नें, इंसान की हीदायत केलिए, जितनें भी हादी भेजे, तमाम के तमाम ऐखलाक के आला (बलंद) दर्जे पर फ़ाऐज़ थे, और इंसान को अपनें अखलाक ही के ज़रिये मक़ाम व मंजेलत मिलती है. और बेहतरीन ऐखलाक ही, बाइस बनता है कि, उस्के रिज्क को बढाऐ और उम्र लंम्बी हो- बेहूदह और बुरी बातों से परहेज करें और अच्छे ऐखलाक की तरफ झुकाव हो. क्यूं कि बेहतरीन साथी ऐखलाक है. और हर मक़ाम व जगह पर अच्छे ऐखहलाक वाले लोगों को, लोग पसंद करते हैं. हमें चाहिये कि, हमेशा अच्छे ऐखलाक को अपनाएं. खुदा से दुआ है कि बहक्के मोहम्मद व आले

मोहम्मद (अ.मु.स.) हमें बेहतरीन ऐखलाक अपनानें की तौफीक अता फरमाए.

वाकेआत:

1-इमामें मूसा काजिम (अ.स.) का ऐखलाक:

शैख़ मुफीद और दूसरे उल्मा नें रवायत की है. कि मदीना तय्यबह में एक शख्स, दूसरे खलीफह की अव्लाद मेंसे रहता था. जो हमेशा इमामे मूसा काजिम (अ.स.) को तकलीफ देता, और आप (अ.स.) को बुरा भला कहता, और जब हज़रत को देखता, तो हज़रत अमीरुल मोमेनीन अली (अ.स.) को गाली देता- यहाँ तक कि आप (अ.स.) के मोतअल्लेकीन में से कुछ लोग कहनें लगे कि, हमें इजाज़त दीजिये कि हम इस फाजिर को क़त्ल करदें आप (अ.स.) नें उन्हें सख्ती के साथ इस काम से मना किया, और उज्हें झिडक दिया, और पूछा कि वह शख्स कहाँ है. अर्ज किया गया कि, मदीनें की फलां तरफ ज़राअत (खेती करने) में मशगूल है

हज़रत (अ.स.) सवार हुऐ और मदीनें से उसे देखनें के लिये तशरीफ़ ले गये.

जब पहुंचे तो वह अपनें खेत में खडा था. हज़रत अपनी सवारी के साथ उस्के खेत में दाखिल होगए. वह चिल्लानें लगा कि हमारी खेती को खराब न करो, और इस रास्ते से न आव हज़रत जिस तरह से जा रहे थे चलते रहे, यहाँ तक कि उस्के करीब जाकर बैठ गए, और उस से हंसमुख चेहरे के साथ बातें करने लगे, और उस से स्वाल किया कि, तूनें इस खेत पर कितना खर्च किया है. कहनें लगा कि सौ अशर्फी आप (अ.स.) नें फरमाया कितनी उम्मीद है. कि इस से मुनाफ़ा हासिल करलेगा, कहने लगा मैं गैब नहीं जानता. आप (अ.स.) नें फरमाया कितनी आमदनी की तुझे उम्मीद है. कहने लगा उम्मीद है कि दो सौ अशर्फी आमदनी होगी. पस आप (अ.स.) नें अशर्फी का थैला

निकाला, कि जिसमें तीनसौ अशर्फियाँ थीं, और उस्को दे दीं और फरमाया: इसे ले और तेरी खेती भी तेरे लिये है. और खुदा तुझे इस से उतनी ही रोजी देगा, कि जिस की तू उम्मीद रखता है. वह उमरी शख्स खडा होगया, और उसनें आप (अ.स.) के सर का बोसा लिया, और हज़रत (अ.स.) से दरख्वास्त की. कि उस्की गुस्ताखियों को मोआफ़ फरमादें. हज़रत (अ.स.) नें तबस्सुम फरमाया और वापस तशरीफ़ लाऐ. फिर उस उमरी को मस्जिद में बैठे हुऐ लोगों नें देखा कि जब उस्की निगाह हज़रत पर पडी तो कहने लगा الله ا علم حيث يجعل رسا لته खुदा बेहतर जानता है. कि वह अपनी रिसालत कहाँ क़रार दे. उस्के साथियों नें उस से कहा तुझे क्या होगया. तू पहले तो कुछ और कहता था. कहनें लगा तुम नें सुना है जो मैंनें कहा, अब फिर सुनों. पस उसने आप

(अ.स.) को दुआ देना शुरू की, उस्के साथियों ने उससे झगडा किया वह भी उन से झगडता रहा. पस हज़रत (स.अ.) नें अपनें असहाब से कहा कि कौन सा तरीका बेहतर है. वह जो तुम नें इरादा किया था. या वह जो मैंने अख्तियार किया- मैंनें अपनें एहसान व ऐखलाक के ज़रिये उस्की इस्लाह कर दी और उस से शर (बुराई) दूर कर दिया (अह्सनुल मकाल जिल्द. 2, पेज. 19)

2-मालिके अशतर का एखलाक:

मन्कूल है कि, मालिके अशतर (र.अ.), एक रोज बाजारे कूफह से आम लिबास पहने हुये गुजर रहे थे. एक बाजारी मर्द नें जब उन्को देखा, तो अपनी निगाह में हकीर व पस्त जाना, और हिक़ारत से उन्की तरफ एक पत्थर फेंका, मालिके अशतर नें उस्की तरफ कोई तवज्जोह न दी, किसी नें उस बाजारी शख्स से कहा तुझ पर वाऐ हो. तुम नें यह

क्या किया? तुम जानते हो किस की तरफ पत्थर फेका है. उसनें कहा नहीं! कहा: यह मालिके अशतर (र.अ.) हज़रत अमीरुल मोमेनींन (अ.स.) के के असहाब में से हैं.

उस शख्स का बदन लरज्नें (कांपने) लगा और मालिके अशतर (र.अ.) से मुआफी के लिये चल पड़ा, देखा कि मालिके अशतर (र.अ.) मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे हैं. जब मालिके अशतर (र.अ.) नमाज़ से फारिग हुएऐ, तो वह बाजारी शख्स मालिके अशतर (र.अ.) के पैरों में गिर गया और मोआफी मांगनें लगा मालिके अशतर (र.अ.) नें कहा, कोई बात नहीं (डरो मत) खुदा क़ी क़सम मैं मस्जिद में फकत तुम्हारी वजह से आया हूँ. और खुदा से तुम्हारे लिये मग्फेरत की दुआ की है. (आमाल अल वाएजीन जिल्द. 1, पेज. 123.)

5) इसराफ़

आयात

1-इसराफ न करो:

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ

(सूरए अअराफ आयत 31)

''और खाव पियो, मगर इसराफ न करो, कि खुदा इसराफ करनें वालों को दोस्त नहीं रखता है.''

2-फिरऔन इसराफ करनें वालों में था.

وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ

(सूरएव यूनुस आयत 83)

और फिरऔन बहुत ऊंचा है, और वह इसराफ और ज्यादती करने वाला भी है.

3-इसराफ करनें वालों की इताअत (पैरवी) न करो:

وَلَا تُطِيعُوٓا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ

(सूरए शोअरा आयत 151-152)

और इसराफ व ज्यादती करने वालों की बात न मानों, जो ज़मीन पर फसाद बरपा करते हैं, और इस्लाह नहीं करते.

4-अहले इसराफ की हलाकत:

وَأَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِينَ

(सूरए अंबिया आयत 9.)

और इसराफ व ज्यादती करनें वालों को, हम नें तबाह व बरबाद कर दिया:

5-इसराफ और अज़ाबे इलाही:

وَكَذٰلِكَ نَجۡزِىۡ مَنۡ اَسۡرَفَ وَلَمۡ يُؤۡمِنۡۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ وَ

لَعَذَابُ الۡاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبۡقٰى

(सूरए ताहा आयत 127.)

और हम इसराफ व ज्यादती करने वाले, और अपनें रब की निशानियों पर ईमान न लानें वालों, को इसी तरह सज़ा देते हैं, और आखेरत का अज़ाब यकीनन सख्त तरीन, और हमेशह बाकी रहनें वाला है.

रवायात:

1-इसराफ मज़मूम यानी बुरा कहागया है:

قال علي عليه السلام: أَلْإِسْرَافُ مَذْمُومٌ فِي كُلِّ شَيْءٍ

إِلَّا فِي أَفْعَالِ الْخَيْرِ

(गोररुल हेकम जिल्द 1 पेज. 649.)

मौलाऐ काऐनात अली (अ.स.) नें फरमाया: इसराफ हर चीज़ में मज़मूम (मज़म्मत की गई) है, मगर नेक काम में नहीं-

---

2-नेअमत का ज़ाएल होना:

قال ألكاظم عليه السلام: مَنْ بَذَّرَ وَأَسْرَفَ زَالَتْ

عَنْهُ النِّعْمَةُ

(बिहारुल अन्वार जिल्द 75 पेज 327)

इमामे मुसाकाजिम (अ.स.) नें फरमाया: जो शख्स फजूल खर्ची और इसराफ करता है. उस से नेअमत ज़ाऐल (खत्म) हो जाती है.

3-बरकत कम होना:

قال الصادق عليه السلام : إِنَّ مَعَ الْإِسْرَافِ قِلَّةُ

الْبِرْكَةِ

(वसाएल अल शीआ जिल्द 21 पेज. 556)

इमामे जअफर सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: बेशक इसराफ करने से बरकत कम होजाती है

4-कमतरीन इसराफ:

قال الصادق عليه السلام : أَدْنَى الْإِسْرَافِ هِرَاقَةُ

فَضْلِ الْإِنَاءِ

(ओसूले काफी जिल्द 6, पेज. 240)

इमामे सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: कमतरीन इसराफ यह है कि, अपनें बर्तन (खाने या पीने) का बचा हुआ फ़ेंक देना.

5-फक्र का सबब:

قال علي عليه السلام: سَبَبُ الْفَقْرِ الْإِسْرَافُ

(गोररुल हेकम जिल्द 1 पेज 650.)

मौला अली (अ.स.) नें फरमाया: इसराफ नादारी (फ़कीरी) और फक्र (फ़ाक़ा) का सबब है.

तशरीह:

खानें पीनें, बखशिश, इन्फाक़ में इसराफ करना, एक बुरा फेल और अमल है. इंसान को चाहिए कि इसराफ और ज़्यादह रवी (यानी हदसे ज़्यादा), और फजूल खर्ची से परहेज़ करे, कुरआन और रवायात में इसराफ करने वाले की मज़म्मत की गई है. और इसराफ करने से रिज्क में तंगी और नेअमत ज़ाऐल होजाती है. इमामे रेज़ा (अ.स.) एक शख्स को देख रहे थे. कि जो फल खा रहा था वह शख्स पूरा फल न खाता (मसलन आधा सेब खाता और आधा फेक देता) इमाम (अ.स.) उसपर नाराज़ हुए, और फरमाया अगर तुम बेनियाज़ और गनी हो, तो मोआशेरे में नियाज़मंद व फकीर अफराद मौजूद हैं. उनमें तकसीम करो.

हमें कोशिश करनी चाहिए कि इसराफ न करें, अगर इसराफ का अपनें मोआशरे में

मुशाहेदह (देखना) करना हो तो, शादियों दअवतों वगैरह में देख लें, कि हम लोग कितना इसराफ करते हैं. उस्को छोडीये पानीं के इस्तेअमाल में हम कितना इसराफ करते हैं.

खुदा से दुआ करते हैं. बहक्के चहार्दह मअसूमीन (अ.मु.स.) हमें इसराफ से बचनें की तौफीक अता फरमाए (आमीन)

वाकेआत:

1-पानी का इसराफ:

हसने बसरी एक दिन मौलाए काएनात अली (अ.स.) के साथ फोरात के किनारे जा रहे थे, उन्हें (हसने बसरी) प्यास महसूस हुई, तो उन्हों नें एक बर्तन में पानीं भरा, और कुछ पानी पीकर बाकी पानी ज़मीन पर उंडेल (गिरा) देता.

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: तूनें पानी ज़मीन पर उंडेल (डाल) कर इसराफ किया- तेरे लिये बेहतर था, कि बाकी पानी को दरया में डाल देता.

हज़रत अली (अ.स.) की नसीहत सुनकर, हसने बसरी को गुस्सह आया, और कहा अगर मैंनें थोड़ा सा पानी ज़मीन पर फेंक दिया है. तो आप (अ.स.) इसे फुजूल खर्ची और इसराफ क़रार देते हैं. जब कि आप की

तलवार से, मुसलमानों का खून टपक रहा है. क्या वह इसराफ नहीं है?

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया तुझे बागियों से इतनी हमदर्दी थी तो तूनें उनकी मदद क्यूं न की? हसने बसरी नें कहा: मेरा इरादा था, कि मैं तलवार लेकर आप (अ.स.) के बागियों की मदत करूं, लेकिन उस वक्त मैंनें एक गैबी आवाज़ सुनी थी, कि कातिल व मकतूल दोनों दोज़खी हैं. इसी लिये मैं अपने घर में बैठ गया.

अमीरुल मोमेंनींन (अ.स.) नें पूछा: तूने सच कहा, और क्या तू जानता है कि वह आवाज़ किस की थी?

हसने बसरी नें कहा नहीं, हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया वह इबलीस की आवाज़ थी.

फिर आप (अ.स.) नें फरमाया, हर उम्मत में एक सामरी होता है, और हसने बसरी इस

उम्मत का सामरी है. (पिंदे तारीख जिल्द 3 पेज 220.)

2-इसराफ न करो-

एक शख्स इमामे सादिक़ (अ.स.) की खिदमत में आया और अर्ज किया: मुझे कुछ मिक़दार कर्ज़ चाहिए, जब मुस्ततीअ होजावूं गा तो आप का कर्जह अदा कर दूंगा-

इमाम (अ.स.) नें फरमाया क्या तुम्हारे पास खेती है, जिस के ज़रिये मेरा कर्ज़ अदा कर सको?

उस शख्स नें कहा: खुदा की क़सम मेरे पास कोई खेती बाडी नहीं है.

इमाम (अ.स.) नें फरमाया क्या कोई तिजारत वगैरह करते हो? कि जिसको बेच कर मेरा कर्ज अदा करसको.

कहा नहीं

इमाम (अ.स.) नें फरमाया: या तुम्हारे पास कोई मिल्क या जाऐदाद है? जिसको बेच करके, मेरा कर्ज़ अदा कर सको.

कहा; खुदा की क़सम ऐसी भी कोई चीज़ मेरे पास नहीं.

इमाम (अ.स.) नें फरमाया खुदा वंदे आलम नें हमारे माल व दौलत में से, तुम जैसे लोगों के लिये हक़ रख्खा है.

उस वक्त इमाम (अ.स.) नें खादिम को हुक्म दिया, कि वह कीसह (थैला) लेकर आऐ, जिसमें पैसे रख्खे हुऐ हैं. (कीसह लाया गया), इमाम (अ.स.) नें कीसह में हाथ डालकर, एक मुठ्ठी उस शख्स को पैसे दिये, और उस्के बाद फरमाया,

खुदा से डरो और इसराफ न करो, सख्ती से काम न लो मियानह रवी (बीच वाली सूरत) अखतियार करो फोजूल खर्ची और ज़्यादह रवी (ज़्यादा खर्च करना) इसराफ है. क्यूंकि

खुदा वंद आलम फरमाता है, ज़्यादह रवी न करो (हज़ार व यक हिकायत इखलाकी पेज. 528.)

6) आज़माइश व इम्तेहान

आयात:

1-आज़माइश व इम्तेहाने इलाही:

اَحَسِبَ النَّاسُ اَنۡ يُّتۡرَكُوۡۤا اَنۡ يَّقُوۡلُوۡۤا اٰمَنَّا وَهُمۡ لَا يُفۡتَنُوۡنَ

(सूरए अनकबूत आयत 2.)

क्या लोगों नें यह ख्याल कर रखखा है, कि वह सिर्फ इस पर छोड़ दिये जाएँ गे, कि वह यह कहदें हम ईमान ले आऐ हैं, और उन्का इम्तेहान नहीं होगा.

2-इम्तेहान में गुमराही का खतरह:

قَالَ فَاِنَّا قَدۡ فَتَنَّا قَوۡمَكَ مِنۡۢ بَعۡدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِىُّ

(सूरए ताहा आयत 85)

इरशाद हुआ कि, हम नें तुम्हारे बाद तुम्हारी कौम का इम्तेहान लिया और सामरी नें उन्हें गुमराह कर दिया है.

3-वसाएले आज़माइश व इम्तेहान:

الْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِیْ

(सूरए बकरह आयत 155)

और यकीनन हम तुम्हें थोड़े खौफ, थोड़ी भूख, और अमवाल, नोफूस और समरात (फल), की कमी से आज़माएँ गे और अय पैगम्बर (स.अ.व.) आप (स.अ.व.) उन सब्र करने वालों को बशारत दे दें.

4-आज़माँइश व इम्तेहान की जगह:

اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ

اَحْسَنُ عَمَلًا

(सूरए कहफ़ आयत 7)

बेशक हम नें ज़मीन की हर चीज़ को ज़मीन की जीनत करार दे दिया है. ताकी उनलोगों का इम्तेहान लें, कि उनमें अमल के एअतबार से सब से बेहतर कौन है.

5-माल और अव्लाद आज़माँइश का ज़रीयह हैं:

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ

(सूरए अनफाल आयत 28)

और जांन लो कि यह तुम्हारी अव्लाद और तुम्हारे अमवाल (माल) एक आज़माँइश हैं.

रवायात:

1-ईमान के हिसाब से इम्तेहान:

قال الصادق عليه السلام : إِنَّ أَشَدَّ النَّاسِ بَلَاءً

الْأَنْبِيَاءُ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثُمَّ الْأَمْثَلُ فَالْأَمْثَلُ

(ओसूले काफी जिल्द 2. पेज. 252.)

हज़रत इमामे सादिक (अ.स.) नें फरमाया, लोगों में सब से ज़्यादह सख्त इम्तेहान अंबिया का है. उस्के बाद जो इनसे करीब हों, और उस्के बाद जिस का रूत्बह बलंद होगा.

2-ईमान और इम्तेहान:

قال الباقر عليه السلام : إِنَّمَا الْمُؤْمِنُ بِمَنْزِلَةِ كَفَّةِ

الْمِيزَانِ كُلَّمَا زِيدَ فِي إِيمَانِهِ زِيدَ فِي بَلَائِهِ

(ओसूले काफी जिल्द 2 पेज. 253)

इमामे मोहम्मद बाकिर (अ.स.) नें फरमाया मोमिन की मिसाल तराज़ू के पलड़े की जैसी

है. जितना ईमान ज़्यादह होता है. उतनी मुसीबत ज़्यादह होती है.

3-आज़माइश बक़द्रे दीन

قال الباقر عليه السلام : إِنَّمَا يُبْتَلَي الْمُؤْمِنُ فِي الدُّنْيَا عَلَي قَدْرِ دِينِهِ

(ओसूले काफी जिल्द 2 पेज 253)

इमामे बाकिर (अ.स.) नें फरमाया: दुन्या में मोमिन, बक़द्रे अपने दींन के (यानी उस्के अंदर दीन की कितनी मारेफ़त है) आजमाँइश किया जाता है.

4-जन्नत में मक़ाम:

قال الصادق عليه السلام : إِنَّ فِي الْجَنَّةِ مَنْزِلَةً مَنْزِلَةً لَا يَبْلُغُهَا عَبْدٌ إِلَّا بِالْاِبْتَلَاءِ فِي جَسَدِهِ

ओसूले काफी जिल्द 2 पेज 255.

इमामे जअफर सादिक (अ.स.) नें फरमाया जन्नत में एक मक़ाम है. जिसे इंसान नहीं पाता, जब तक उस्का जिस्म मुब्तेलाऐ इम्तेहान व मुसीबत न हो. (यानी जबतक आज़माइश न होजाऐ)

5-खुदा के दोस्त

قال الصادق عليه السلام : إِنَّ عَظِيْمَ الْأَجْرِ لَمَعَ عَظِيْمَ الْبَلَاءِ وَمَا أَحَبَّ اللّٰهُ قَوْمًا إِلَّا ابْتَلَاهُمْ

(ओसूले काफी जिल्द 2 पेज 252)

इमामे सादिक (अ.स.) नें फरमाया: जितनी मुसीबत ज़्यादह होगी, उतना ही अज्र ज़्यादह होगा, खुदा जिन लोगों को दोस्त रखता है. उन्को मुसीबत में ज़रूर मुब्तेला करता है.

तशरीह

परवरदिगारे आलम नें इंसानों को अशरफुल मख्लूकात बनाया, इंसान यह सोचता है कि, बस हम इस दुन्या में आगये, और हमारी किसी किस्म की आज़माँइश न होगी, और बस यही दुन्या है. इसके अलावह कुछ नहीं, यह इंसान की भूल है. कुरआन और रवायात में आज़माँइश व इम्तेहान और मुसीबत का ज़िक्र हुवा है. और इंसान का इम्तेहान उस्के ईमान के ऐतबार से होगा. जितना ईमान कवी (मज़बूत) उतना ही इम्तेहान सख्त होगा, अब यह किस तरह पता चले कि, मसलन माल और अव्लाद हमारे लिये इम्तेहान है, या मुसीबत. अगर शुक्रे इलाही और इबादात में उन्के बाद कमी आजाऐ और ज़ुबान पर शिक्वह और शिकायत जारी हो, तो समझनां कि मुसीबत है, और अगर शुक्र और इबादात में कमी न आऐ, बल्की

इजाफह हो जाऐ, तो समझ्ना कि यह इम्तेहान है. किसी नें पैगम्बरे अकरम (स.अ.व.) से सवाल किया कि, दुन्या में सब से जियादह सख्त इम्तेहान किसका होता है. हज़रत नें फरमाया अम्बिया, फिर अव्सिया, और फिर मोमेंनींन, और उस्के बाद मोमेंनींन बकद्रे अपनें ईमान (यानी अपनें ईमान के हिसाब से) और हुस्नें अमल (अच्छे अमल के हिसाब से) इम्तेहान में मुब्तेला किये जाएँगें. जिस का इम्तेहान और अमल सहीह होगा, उतनी ही उस्की मुसीबत सख्त होगी, और जिसका ईमान हल्का और कमज़ोर होगा, उतनी ही उस्की मुसीबत कम होगी.

बहरहाल हमें हमेशह इम्तेहान व आजमाँइश के लिये तय्यार रहना चाहिए. खुदा से दुआ करते हैं. बहक्के शोहदाऐ कर्बला हमें हर इम्तेहान में कामियाबी अता फरमाए (आमीन).

वाकेआत:

1-माल इम्तेहाने इलाही का वसीलह:

खुदावंदे आलम नें एक सहराई (जंगली) गोस्फंद हज़रत इब्राहीम (अ.स.) को दिया, एक रोज मामूल (आदत) के मुताबिक, हज़रत इब्राहीम (अ.स.) सहरा में गोस्फंद चरा रहे थे. कि अचानक उस बयाबान व सहरा (जंगल) में, एक दिल रुबा मअशूक की आवाज़ सुनी, कि कोई कह रहा है سبوح قدوس ربنا ورب الملائكة و الروح ، हज़रत इब्राहीम नें आवाज़ दी: अय बंदऐ खुदा, तूनें मेरे महबूब का नाम लिया, अगर एक बार और कहो, तो इस गोस्फंद का तीसरा हिस्सह तुम्हें देदूंगा दोबारह आवाज़ आई سبوح قدوس ، ربنا ورب الملائكة و الروح

फिर जनाबे इब्राहीम (अ.स.) नें कहा, एक बार और मेरे महबूब का नाम लेलो, तो आधा गोस्फंद तुझे देदूंगा, मैं इस ज़िक्र का आशिक हूँ और इस ज़िक्र से लज़्ज़त हासिल

कर रहा हूँ कि कोई कहे, आवाज़ बलंद हुई
سبوح قدوس ، ربنا ورب الملائكة و الروح
हज़रत इब्राहीम (अ.स.) नें कहा एक बार और कहो, तमाम गोस्फंद मैं तुम को देदूंगा, उसने फिर कहा हज़रत इब्राहीम (अ.स.) नें आवाज़ दी, अय साहेबे सदा व ज़िक्र (यह ज़िक्र कहने वाले) आवो और यह गोस्फंद अपना मुझसे लेजाव. देखा कि हसीन व जमील जवान बेहतरीन लिबास पहने हुऐ, निकल के सामने आया और कहा: अय इब्राहीम (अ.स.) वह मैं था.

हज़रत इब्राहीम (अ.स.) नें कहा: यह तुम्हारा गोस्फंद, खुदा हाफ़िज़. हज़रत इब्राहीम (अ.स.) चंद क़दम ही चले थे, कि जवान नें आवाज़ दी ‘इब्राहीम इधर आव’ जनाबे इब्राहीम (अ.स.) जवान के करीब आये जवान नें कहा: कहाँ जारहे हो? अपना गोस्फंद तो ले जाव, इब्राहीम (अ.स.) नें कहा मैंने यह गोस्फंद आप को बख्श दिया है.

जवान ने कहा: मैं इसका क्या करूंगा, मैं जब्रईल हूँ, मैं तुम्हारे इम्तेहान के लिये आया था (गंजीनए मआरिफ जिल्द 1, पेज 113.)

1-कौमें मूसा (अ.स.) का इम्तेहान:

अली इब्नें इब्राहीम नें रवायत की है, कि अल्लाह तआला नें हज़रत मूसा (अ.स.) से वादा किया कि, तीस रोज में, तौरैत, और लौहैंन (दो लौह यानी दो तख्तियां) उन्के पास भेजी जाएंगी आप नें बनी इस्राईल को खुदा के वादे की इत्तेला दी, और कोहे तूर की जानिब रवाना हुये, और अपनी कौम में हारून को अपना खलीफ़ह बनाया, जब तीस रोज गुजर गये, और मूसा (अ.स.) वापस न आऐ तो उनलोगों नें हारून की इताअत तर्क कर दी, और चाहा कि उन्को मार डालें, और कहनें लगे कि मूसा (अ.स.) नें हम से गलत कहा, और हमारे पास से भाग गये उस वक्त शैतान, एक मर्द की सूरत में उन्के पास

आया, और उनसे कहा कि मूसा तुम्हारे दरमियाँन से भाग गये, और अब वापस न आएं गें. लेहाज़ा अपने जेवरात जमाँ करो, ताकी मैं तुम्हारे लिये, एक खुदा बना दूं- सामरी, मूसा (अ.स.) के कल्बे लश्कर का सरदार था. जिस रोज कि खुदा नें फ़िरऔन और उस्के साथियों को गर्क किया, उसनें जब्रईल (अ.स.) को देखा कि एक मादह हैवान पर सवार हैं. और वह जानवर जिस जगह क़दम रखता है, वह ज़मीन हरकत करनें लगती है तो सामरी नें जब्रईल के घोड़े के टाप के नीचे की ख़ाक उठा ली देखा कि वह हरकत कर रही है. उसनें उस्को एक हथेली में रख लिया और बनी इस्राईल पर हमेशा फख्र किया करता था. कि मेरे पास ऐसी ख़ाक है. जब शैतान नें बनी इसरईल को फरेब दिया तो उन लोगों नें बछड़ा बनाया, फिर वह सामरी के पास आया, और

कहा वह ख़ाक जो तेरे पास है वह ले आ. और उस से लेकर बछड़े के शीकम में रख दी, तो उसी वक्त वह बछड़ा हरकत में आया, और बोलनें लगा. और बाल व दुम उस्के पैदा होगये. उस वक्त बनी इसराईल नें उस्को सज्दह किया. वह सत्तर हज़ार लोग थे. जनाबे हारून जितनी भी उन्को नसीहत फरमाते थे. लेकिन कोई फ़ाऐदह नहीं हुवा, वह लोग कहनें लगे कि, हमलोग इस बछड़े की परसतिश (पूजा) नहीं छोड़ेंगें जब तक मूसा (अ.स.) नहीं आएंगें, और चाहा कि हारून को हलाक करें- हारून (अ.स.) नें उनसे दूरी अख्तियार की- जबकी वह उसी हाल पर बाकी रहे, यहाँ तक की मूसा (अ.स.) के चालीस रोज़, तूर पर गुजर गये खुदा नें उन्को दस जिल्हिज्जह को तौरैत अता फरमाई, जो तख्तियों पर नक्श थी. उसमे वह सब कुछ जैसे अहकाम व

नसीहतें, और किस्से मौजूद थे. जिन की उनलोगों को ज़रूरत थी. फिर खुदा नें मूसा (अ.स.) को वही की. कि हम नें तुम्हारी कौम का इम्तेहान लिया. सामरी नें उन लोगों को गुमराह किया, और वह लोग सोनें के बछड़े की पारसतिश (पूजा) करनें लगे, जो बोलता है. मूसा (अ.स.) नें अर्ज की, इलाही गौसाला तो सामरी नें बनाया आवाज़ उसमें किस्नें पैदा की- फरमाया! मैंनें, अय मूसा (अ.स.) जब मैंनें देखा कि, उनलोगों नें मेरी जानिब से मुंह फेर लिया, और गौसालह की तरफ माँएल (झुक) होगए हैं तो, मैंनें उन्के इम्तेहान को और ज़्यादह कर दिया (हयातुल कुलूब जिल्द. 1, पेज. 454.)

7) अम्र बिल्मारूफ़ व नहीं अज़ मुन्कर

आयात

1-नेकी की दावत देना:

يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ

(सूरए लुकमान आयत 17)

बेटा नमाज़ क़ाऐम करो, नेकियों का हुक्म दो, और बुराईयूँ से मना करो.

2-बेहतरीन उम्मत:

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ

بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ

(सूरए आले इमरान आयत 104)

और तुम में से, एक गिरोह को ऐसा होना चाहिए, जो ख़ैर की दअवत दे, नेकियों का

हुक्म दे, बुराईयों से मना करे और यही लोग नजात याफतह हैं.

3-नेकी की तरफ बुलाना रसूल (स.अ.व.) की खास सिफत:

اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهٰهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ

(सूरए अअराफ आयत 157.)

जोलोग रसूले नाबीये उम्मी (स.अ.व.) का इत्तेबअ करते हैं. जिस का ज़िक्र अपनें पास तौरैत और इंजील में लिखा हुवा पाते हैं. कि वह नेकियों का हुक्म देता है, और बुराएयों से रोकता है.

4-मोमेनीन की सिफत:

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ يَاْمُرُوْنَ

بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ

(सूरए तौबह आयत 71)

मोमिन मर्द और मोमिन औरतें आपस में सब ऐक दूसरे के वाली और मददगार हैं. कि यह सब एक दूसरे को नेकियों का हुक्म देते हैं, और बुराईयों से रोकते हैं.

5-मुनाफेकीन की सिफत:

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ يَاْمُرُوْنَ

بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ

(सूरए तौबह आयत 67)

मुनाफिक मर्द और मुनाफिक औरतें आपस में सब एक दूसरे से हैं-सब बुराईयों का हुक्म देते हैं, और नेकियों से रोकते हैं

रवायात:

1-अफ्ज़ले अमल:

قال علي عليه السلام أَلْاَمْرُ بِالْمَعْرُوفِ أَفْضَلُ

اَعْمَالِ الْخَلْقِ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज. 87)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: नेकी का हुक्म देना मखलूक का अफज़ल तरीन अमल है.

2-मोमेनींन के मददगार:

قال علي عليه السلام : مَنْ عَمِلَ (اَمَرَ) بِالْمَعْرُوفِ

شَدَّ ظُهُورَ الْمُؤْمِنِينَ

(गोररुल हेकम जिल्द 1 पेज. 91)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: जो शख्स मअरूफ पर अमल करता या उस्का हुक्म देता है. वह मोमिनों की पुश्त को मज़बूत बनाता है.

3-नेकी का हुक्म देनें वाले बनों:

قال علي عليه السلام : كُنْ بِالْمَعْرُوفِ آمِراً وَعَنِ الْمُنْكَرِ نَاهِيًا

(गोररुल हेकम जिल्द 1 पेज 91)

मौला अली (अ.स.) नें फरमाया: नेकी का हुक्म देनें और बुराई से रोकनें वाले होजावो.

4-अम्र बिल मारूफ को तर्क करनें की सज़ा:

لَا تَتْرُكُوا الْأَمْرَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّهْيَ عَنِ الْمُنْكَرِ فَيُوَلَّى عَلَيْكُمْ شِرَارُكُمْ ثُمَّ تَدْعُونَ لَا يُسْتَجَابُ لَكُمْ

(नहजुल बलागा खुतबा नंबर 47)

अम्र बिल मारूफ और नहीं अनिलमुनकर को तर्क मत करो, वरना तुम पर बुरे लोग (हुक्मरां) मुसल्लत हो जाएँगे, फिर तुम दुआ करोगे मगर मुस्तजाब (क़बूल) न होगी.

5-खलीफ़ऐ खुदा:

قال رسول الله (ص): مَنْ أَمَرَ بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَى عَنِ الْمُنْكَرِ فَهُوَ خَلِيفَةُ اللهِ فِي أَرْضِهِ وَخَلِيفَةُ رَسُولِهِ وَخَلِيفَةُ كِتَابِهِ

मजमउल बयान जिल्द 2 पेज 359,
मुसतदरक अल वसाऐल जिल्द 2 पेज 179.

रसूले खुदा (स.अ.व.) नें फरमाया: जो शख्स अम्र बिल मारूफ और नहीं अनिलमुन्कर करता है. वह ज़मीन में खुदा का जानशीन, और उस्के रसूल (स.अ.व.), और उस्की किताब का जानशीन है-

तशरीह:

नेकियों का हुक्म देना, और बुराईयों से रोकना, हर शख्स की ज़िम्मे दारी है. लेकिन इस फुरूऐदींन पर अमल करनें से पहले, ज़रूरी है. कि जिसतरह नमाज़ के मसाऐल याद करते हैं. उसी तरीके से अम्र बिल मारूफ और नहीं अनिलमुन्कर के मसाऐल याद करें, कि कहाँ नेकियों का हुक्म देना है. और कहाँ बुराईयों से रोकना है. क्यूंकि मारूफ और मुन्कर का दाऐरा (सर्किल) बहुत बड़ा है. हर नेक काम पसनदीदह है. और हर बुरा काम ना पसनदीदा है. यह काम वही कर सकता है. जो खुद पहले अम्र बिलमारूफ पर अमल करता हो, और बुराइयों से बचता हो, और मोमेनीन की अलामत अम्र बिलमारूफ, नहीँअनिल मुन्कर, नमाज़ का कयाम, ज़कात कि अदाऐगी, और अल्लाह व रसूल (स.अ.व.) की इताअत है. जो लोग

यह काम करते हैं. वही मोमिन हैं. वरना उन्का शुमार, फासेकीन व मुनाफेकीन में होगा.

शैतान को शिकस्त देनें का तरीक़ा:

एक बादियह नशींन (देहाती) हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व.) की खिदमत में हाज़िर हुवा, और अर्ज की मुझे ऐसे कामों की तालीम दें जिन के ज़रिये मैं बहिश्त को हासिल कर सकूं, पैगम्बरे अकरम (स.अ.व.) नें पांच अखलाकी दस्तूर की उस्को तालीम दी और फरमाया:

1-भूखे को सैर करो.

2-प्यासे को सैराब करो.

3-अम्र बिलमारूफ करो.

4-नहीं अनिलमुन्कर करो.

5-अगर इन तमाम चीज़ों का अंजाम देनें की कुदरत नहीं रखते, तो अपनी ज़ुबान पर कंट्रोल रख्खो कि नेकी और ख़ैर के अलावा हरकत न करे. इस सूरत में तुम शैतान को शिकस्त दे सकते हो, और कामियाबी हासिल

कर सकते हो (गंजीनए मआरिफ जिल्द 1, पेज. 124.)

खुदा से दुआ करते हैं. बहक्के मोहमद व आले मोहम्मद (अ.मु.स.) हम सब को नेकियों का हुक्म देनें और बुराइयों से रोकनें की तौफीक अता फरमाए (आमीन).

वाकेआत:

1-इमामे सादिक़ (अ.स.) का नही अनिलमुन्कर का तरीक़ा:

हज़रत रसूले खुदा (स.अ.व.) ने अपनें चंद गुलाम आज़ाद फरमाए थे. उनमें से एक आजाद होनें वाले गुलाम का एक बेटा था, जिस का नाम शक़रानीं था.

सिब्ते इब्ने जूज़ी तज्केरतुल्ख्वास में तहरीर करते हैं. कि शक़रानी कहता है, कि एक दिन मंसूरे दवांनीकी, लोगों में इनाम तकसीम कर रहा था, लेकिन मेरे पास किसी भी शख्स की सिफारिश मौजूद न थी. जिस की सिफारिश उसपर असर डालती, मैं मंसूर के महल के सामने हैरान व परेशान खडा था, कि इमामे जाफर सादिक़ (अ.स.) तशरीफ़ लाऐ, मै इमाम के सामने गया, और अपनीं दरख्वास्त उन्की खिदमत में पेश की, इमाम (अ.स.) मंसूर के पास गये, कुछ देर बाद वापस

आये, तो मेरा इनाम भी साथ लकर आये, और मुझसे फरमाया
हर शख्स के लिये नेकी अच्छी है. लेकिन तेरे लिये ज़्यादा अच्छी है. और हर शख्स की बुराई बुरी है, और तुम्हारी बुराई ज़्यादा बुरी है, क्यूंकि तुम हम से निस्बत रखते हो (क्यूंकि तुम हमारी तरफ मंसूब हो और रसूल के आज़ाद करदः गुलाम के बेटे हो, इसी लिये नेकी तुम्हारे लिये औरों की बनिस्बत ज़रूरी है, और तुम्हारे लिये बुराई ज़्यादह बाइसे नंग व आर है यानी ज़िल्लत व रुसवाई है)
इमाम आली मकाम (अ.स.) नें शक़रानी को नसीहत इसलिए की थी कि, आप (अ.स.) को उस्के शराब पीने का इल्म हो चुका था, और आप (अ.स.) नें हसींन इशारा से उसे नसीहत फरमाई (पिंदे तारीख जिल्द 5. पेज. 17.)

2-अम्र बिलमारूफ व नहीं अनिलमुकर के मुकद्देमात:

एक शख्स नें अब्दुल्लाह इब्नें अब्बास से कहा: मै चाहता हूँ कि लोगों को अम्र बिलमारूफ और नहीं अनिलमुन्कर करूं, और लोगों को नसीहत करूं.

इब्नें अब्बास नें सवाल किया: शुरू किया या नहीं?

उस शख्स नें कहा इरादा किया है. इब्नें अब्बास नें कहा कोई बात नहीं मगर होशियार रहना कि, कहीं यह तीन आयतें तुझे रुसवा न करदें-

उस शख्स नें कहा कौन सी तीन आयात:

इब्नें अब्बास नें कहा पहली यह आयत है.

اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ

(सूरे बकरा आयत 44)

किया तुम लोगों को नेकियों का हुक्म देते हो, और खुद अपनें को भूल जाते हो. क्या

तुम मुतमइन हो कि इस आयत के मिस्दाक नहीं हो?
उस शख्स नें कहा: नहीं दूसरी आयत पढो-
इब्नें अब्बास नें कहा: दूसरी आयत यह है.

لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ

(सूरे सफ आयात 3-2)

अय ईमान वालो तुम ऐसी बातें क्यूं कहते हो. जिस पर खुद अमल नहीं करते हो. अल्लाह के नज़दीक यह सख्त नाराजगी का सबब है. कि तुम वह कहते हो जिस पर खुद अमल नहीं करते.
इस आयत के बारे में क्या ख्याल है क्या तुम मुतमइन हो कि तुम इस आयत के मिस्दाक नहीं हो-
कहा: नहीं तीसरी आयत पढ़ो.

इब्नें अब्बास नें कहा: यह आयत हज़रत शोऐब (अ.स.) के बारे में है. जब वह अपनी कौम से मुखातिब थे.

ما أريد أن أخالفكم إلي ما انهاكم عنه

मैं तो यह नहीं चाहता कि जिस काम से तुम को रोकूं तुम्हारे बर खेलाफ खुद उस्को करनें लगूं.

क्या तुम इस आयत पर आमिल (अमल करते हो) हो?

कहा! नहीं-

इब्नें अब्बास! तो सब से पहले खुद से शुरु करो (कुरआनी लतीफे पेज. 88, गंजीनए मआरिफ जिल्द 1 पेज. 121)

8) इन्फाक़

आयात

1-हुक्में इन्फाक (खर्च करने का हुक्म):

وَاَنۡفِقُوۡا فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَلَا تُلۡقُوۡا بِاَيۡدِيۡكُمۡ اِلَى التَّهۡلُكَةِ

وَاَحۡسِنُوۡا اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الۡمُحۡسِنِيۡنَ

(सूरए बकरह आयत 195)

और राहे खुदा में खर्च करो, और अपनें नफ्स को हलाकत में न डालो- नेंक बर्ताव करो, कि खुदा नेक अमल करनें वालों के साथ है.

2-बेहतरीन माल में से इन्फाक (खर्च करना)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَنۡفِقُوۡا مِنۡ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبۡتُمۡ وَمِمَّاۤ

اَخۡرَجۡنَا لَكُمۡ مِّنَ الۡاَرۡضِ ۖ وَلَا تَيَمَّمُوا الۡخَبِيۡثَ مِنۡهُ

تُنۡفِقُوۡنَ وَلَسۡتُمۡ بِاٰخِذِيۡهِ اِلَّاۤ اَنۡ تُغۡمِضُوۡا فِيۡهِ

(सूरए बकरह आयत 267.)

अय ईमान वालो अपनीं पाकीजह कमाई और जो कुछ हम नें ज़मीन से तुम्हारे लिये पैदा किया है. सब में से राहे खुदा में खर्च करो और खबरदार इन्फाक के इरादे से, खराब माल को हाथ भी न लगाना अगर यह माल तुम को दिया जाऐ तो तुम लेने वाले नहीं हो. मगर यह कि (मुरव्वत की वजह से) चश्म पोशी कर जाव.

3-परहेज़ गार अहले इन्फाक (यानी खुदा की राह में खर्च करना) है:

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ

(सूरए बकरह आयात 2-3)

यह साहेबाने तकवा और परहेज़गार लोगों के लिये मुजस्सम हिदायत है. जो गैब पर ईमान रखते हैं. पाबंदी के साथ पूरे

ऐहतमाम से नमाज़ अदा करते हैं. और जो कुछ हमनें रिज्क दिया है. उस में से हमारी राह में खर्च भी करते हैं.

4-अफ़सोस

وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ اَخَّرْتَنِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ

(सूरए मुनाफेकून आयत 10.)

और जो रिज्क हम नें अता किया है. उस में से हमारी राह में खर्च करो, कब्ल इसके कि तुम में से किसी को मौत आजाये, और यह कते हैं. खुदाया हमें थोड़े दिनों की मोहलत क्यूं नहीं दे देता, कि हम खैरात निकालें और नेक बन्दों में शामिल हो जाएँ.

5-पसंदीदह चीज़ में से इन्फाक:

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ

فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ

(सूरए आलेइमरान आयत 92)

तुम नेकी की मंजिल तक नहीं पहुँच सकते, जब तक अपनीं महबूब चीज़ों में से, राहे खुदा, में इन्फाक न करो, और जो कुछ भी इन्फाक करोगे खुदा उससे बिकुल बाखबर है.

रवायात:

1-अहमीयते इन्फाक:

قال رسول الله (ص) : مَنْ اَعْطِي دِرْهَمًا فِي سَبِيْلِ اللهِ

كَتَبَ لَهُ سَبْعَ مِائَةٍ حَسَنَةً

(मीज़ान अल हिक्मह जिल्द 4, पेज. 3350)

पैगम्बरे अकरम (स.अ.व.) नें इरशाद फरमाया: जो अल्लाह की राह में एक दिरहम देगा, खुदा वन्दे मुतआल उस्के लिये, सात नेकियां (उस्के नामए आमाल में) लिखेगा.

2-अपनें माल में से इन्फाक:

قال علي عليه السلام : اِنَّكُمْ اِلي إِنْفَاقِ مَا اكْتَسَبْتُمْ

أَحْوَجُ مِنْكُمْ اِلَي اكْتِسَابِ مَا تَجْمَعُوْنَ

(गोररुल हेकम जिल्द. 1 पेज. 768)

मौलाऐ मुत्तकीयाँन अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) नें फरमाया तुम अपनी कमाई में से, इन्फाक

(खर्च) करने के, जमा करनें से ज़्यादा मुहताज हो.

3-इन्फाके इमामे सज्जाद (अ.स.)

قال الباقر علیه السلام : إِنَّ عَلِيَّ ابْنَ الْحُسَيْنِ قَاسَمَ اللهَ مَالَهُ مَرَّتَيْنِ

(बिहारुल अन्वार जिल्द 46 पेज 90)

इमामें मोहम्मद बाकिर (अ.स.) नें फरमाया: इमामें जैनुल आबेदीन (अ.स.) नें अपना माल, दो मर्तबह राहे खुदा में इन्फाक किया

4-आखेरत की जज़ा पर यकीन:

قال علي علیه السلام : مَنْ أَيْقَنَ بِالْخَلَفِ جَادَ بِالْعَطِيَّةِ

(अमाली 532.)

इमाम अली (अ.स.) नें फरमाया: जो शख्स आखेरत की जज़ा पर यकीन रखता है. वह अपना माल राहे खुदा में बखशिश व इन्फाक करता है.

5-इन्फाक बहुत बड़ी नेअमत है:

قال علي عليه السلام : إِنَّ إِنفَاقَ هَذَا الْمَالِ فِي طَاعَةِ اللهِ أَعْظَمَ نِعْمَةٌ وَ إِنْفَاقَهُ فِي مَعْصِيَّةِ اللهِ أَعْظَمُ مِحْنَةٌ

(जामेअ अहादीस शीअह जिल्द 17 पेज. 86)

इमाम अली (अ.स.) नें फरमाया: बेशक अल्लाह की इताअत में माल का इन्फाक करना, बहुत बड़ी नेअमत है, और गुनाह के रास्ते में माल का खर्च करना बहुत बड़ी गिरफ्तारी है.

तशरीह:

जिस वक्त कोई हाजत मंद, तुम्हारे पास आये तो जब तक वह अपनी बात पूरी न करे उस्की बात को न काटो, जब वह अपनी बात या कलाम को पूरा कर ले, तो उस्को नर्म मिजाजी और इज़्ज़त के साथ जवाब दो, अगर तुम्हारे अख्तियार और ताकत में कुछ है, तो उस्को देदो. या आराम से मना करदो. क्यूंकि मुमकिन है. सवाल करनें वाला फरिशता हो, जो अल्लाह की तरफ से तुम्हारी आज़माइश व इम्तेहान के लिए आया हो, ताकि तुम को देखे कि खुदा की नेअमतों के बदले में, तुम किस तरह अमल करते हो, इन्फाक (अता करना) अपनी महबूब तरीन चीज़ों में करना चाहिये, क्यूंकी इन्फाक करनां परहेज़ गारों की निशानी, कुरआन का हुक्म और अंबिया व अइम्मा ताहेरीन (अ.मु.स.) की सीरत है. यह इंसानी

ज़ेहन की इस्लाह है, कि इंसान इन्फाक करके मगरूर न होजाऐ, कि हमने कोई काम किया है- नहीं- उसनें उसी माल में से इन्फाक किया है. जिसे खुदा ने पहले बतौरे रिज्क दिया है. फिर इनफाक करते वक्त रिज्क और इन्फाक के तनासुब पर भी निगाह रखखे. कि खुदा नें उसे रिज्क कितना दिया है. और उसनें उस्की राह में कितना खर्च किया है. इंसान कारे ख़ैर करते वक्त, इस नुक्तेह की तरफ से बिकुल गाफिल होजाता है. और अपनें अमल की मिकदार को देखनें लगता है. कि हमने सब से ज़्यादह चंदा दिया है. वह भूल जाता है कि खुदा नें भी उसे सब से ज़्यादह रिज्क दिया है. और खुदा की इताअत के मुकाबिले में उस्के अमल की कोई कीमत नहीं है.

यही वजह है कि, जब इंसान अल्लाह की राह में इन्फाक करता है. तो माल गोया

(बोलता है) होता है. मै फानी था, मुझे बका देदी, मैं हकीर था, मुझे बुज़ुर्गी बखशी, मैं दुश्मन था, मुझे दोस्त बना लिया, तू मेरा मुहाफिज़ व निगहबान था, अब मैं तेरा मुहाफिज़ व निगहबान हूँ.

खुदा से दुआ करते हैं. बहक्के पंजतन पाक (अ.मु.स.) हमें अल्लाह की राह में इन्फाक करनें की तौफीक अता फरमा (आमीन)

वाकेआत:

1-हैरत अंगेज इन्फाक:

पैगंबरे अकरम (स.अ.व.) के असहाब में से एक सहाबी, जिन का नाम अबू तलहा अंसारी है. मदीने में उन्का एक सर सब्ज़ व शादाब और हसीन व जमील बाग था, और मदीने में किसी का इतना खूबसूरत बाग न था. तमाम मदीने में उन्के बाग़ के बारे में लोग एक दूसरे से गुफ्तगू और तारीफ किया करते थे. उस बाग में एक साफ़ शफ्फाफ चशमह भी था. कि जब भी पैगंबर (स.अ.व.) उस बाग में तशरीफ़ लाते उस चश्में का पानी नोश फरमाते, और उस से वुजू किया करते. उस्के अलावह उस बाग की दरआमद (आमदनी) भी अबू तल्हा अंसारी के लिये बहुत अछी थी. जिस वक्त यह आयत لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ

नाज़िल हुई तो अबू तल्हा अंसारी खिदमते रसूल (स.अ.व.) में शरफे ज्यारत केलिये आये और अर्ज किया कि अय अल्लाह के हबीब क्या आप जानते हैं. मेरे अमवाल में से महबूब तरीन माल यही बाग है. पैगंबर (स.अ.व.) नें फरमाया जानता हूँ.

अबू तल्हा नें अर्ज किया अय अल्लाह के रसूल (स.अ.व.)! मै चाहता हूँ कि इस बाग को अल्लाह की राह में इन्फाक करदूं ताकी आखेरत केलिये ज़खीरह हो जाऐ. पैगंबरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया بَخٍّ بَخٍّ ذٰ لِكَ مَالٌ رَابِحٌ لَكَ

मुबारक हो मुबारक हो यह माल तुम्हारे लिये सूदमंद (फ़ाइदे मंद) होगा.

उस्के बाद फरमाया अय अबू तल्हा! मैं तुम्हारे लिये इस में बेहतरी देख रहा हूँ कि तुम इस बाग को अपनें करीबी न्याज़ मंद व मुहताज रिश्ते दारों मैं इन्फाक करदो. अबू तलहा अंसारी नें पैगंबरे अकरम (स.अ.व.)

के हुक्म पर अमल किया, और उस बाग को अपनें रिश्ते दारों में इन्फाक व तकसीम करदिया (गंज हाए बहिश्ती पेज. 336.)

2-इमाम मोहम्मद तकी (अ.स.) के नाम इमाम रेज़ा (अ.स.) का एक अहम खत:

बज़न्ती जो शीआ दानिशवर, रावी, और इमाम अली रेज़ा (अ.स.) के मोअतबर, और काबिले ऐतेमाद सहाबी भी हैं. ब्यान करते हैं. मैंनें उस खत को पढ़ा, जो इमाम रेज़ा (अ.स,) नें खोरासान से हज़रत इमाम जवाद (स.अ.) को मदीना भेजा था. जिसमें तहरीर था.

मुझे मालूम हूवा है, कि जब आप बैतुश्शरफ से बाहर निकलते हैं. तो खादमींन आप को छोटे दरवाज़े से बाहर निकालते हैं, और सवारी पर सवार होते हैं. यह उनका बुख्ल है. ताकि आप का खैर दूसरों तक न पहुंचे मैं बउन्वाने इमाम और पेदर, तुम से यह

चाहता हूँ कि बड़े दरवाज़े से आना व जाना किया करो, और रफ्त व आमद के वक्त अपने पास दिरहम व दीनार रख लिया करो, ताकी अगर किसी नें तुम से स्वाल किया तो उस्को अता करदो, अगर तुम्हारे चचा तुम से स्वाल करें तो उन्को पचास दीनार से कम न देना, और ज़्यादह देनें में तुम खुद मुख्तार हो अगर तुम्हारी फुफियां तुम से स्वाल करें तो पचीस दिरहम से कम नहीं देना, अगर ज़्यादह देना चाहो तो तुम्हारी मर्जी

मेरी आरज़ू है, कि अल्लाह तुम को बलंद मर्तबे पर फ़ाऐज़ करे लिहाजा राहे खुदा में इन्फाक करो और खुदा की तरफ से तंग दस्ती से न डरो (तौबह आगोशे रहमत बज़बाने उर्दू पेज 325.)

9) इमामत

आयात:

1-इमामत मन्सबे इलाही:

وَاِذِ ابۡتَلٰۤی اِبۡرٰہٖمَ رَبُّہٗ بِکَلِمٰتٍ فَاَتَمَّہُنَّ ؕ قَالَ اِنِّیۡ جَاعِلُکَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ وَمِنۡ ذُرِّیَّتِیۡ ؕ قَالَ لَا یَنَالُ عَہۡدِی الظّٰلِمِیۡنَ

(सूरए बकरह आयत 124)

और उस वक्त को याद करो जब खुदा नें चंद कलेमात के ज़रिये इब्राहीम का इम्तेहान लिया और उन्हों नें पूरा कर दिया. तो उसनें कहा कि तुम को लोगों का इमाम बनारहे हैं. उन्हों नें अर्ज की मेरी ज़ुर्रियत? इर्शाद हुआ कि यह इमामत का ओहदा जालेमीन तक नहीं जाएगा.

2-इस्मते इमाम व अहलेबैत (अ.मु.स.)

إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَ

يُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا

(सूरए अहज़ाब आयत 33)

बस अल्लाह का इरादा यह है कि, अहलेबैत (अ.स.) तुम से हर बुराई को दूर रख्खे, और इस तरह पाक व पाकीज़ा रख्खे जो पाक व पाकीज़ा रखनें का हक़ है.

3-वुजूबे इताअत:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي

الْأَمْرِ مِنكُمْ

(सूरए निसा आयत 59)

ईमान वालो अल्लाह की इताअत करो, रसूल और साहेबान अम्र की इताअत करो

4-इक्माले दीं‍न:

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَ

رَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا

(सूरए माएदह आयत 3)

आज मैंनें तुम्हारे दीं‍न को कामिल करदिया, और अपनी नेमतों को तमाम कर दिया, और तुम्हारे लिये दींने इस्लाम को पसंदीदह बना दिया है.

5-हिदायत:

وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ

الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا

عٰبِدِيْنَ

(सूरए अंबिया आयत 73)

और हम नें उन्को पेशवा व इमाम क़रार दिया है. जो हमारे हुक्म से हिदायत करते

हैं. और उन्की तरफ कारे खैर करनें, नमाज़ क़ाऐम करनें, और ज़कात आदा करनें, की वही की, और यह सब के सब हमारे इबादत गुज़ार बंदें थे.

रवायात:

1-ज़मीन पर इमाम का होना ज़रूरी है:

قال الصادق عليه السلام : لَوْ لَمْ يَكُنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا إِثْنَانِ لَكَانَ إِلَّا اَمَامُ أَحَدَهُمَا

(किता अल शाफी जिल्द.2 पेज. 32)

इमामे सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: अगर ज़मीन पर सिर्फ दो आदमी बाकी रहें गें, तो एक उन में से इमाम होगा-

---

2-इताअते इमाम:

قال علي عليه السلام : مَنْ اَطَاعَ اِمَامَهُ فَقَدْ اَطَاعَ رَبَّهُ

(गोररुल हेकम जिल्द.1, पेज. 107)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया जिस नें अपनें इमाम की इताअत की दर हकीकत उसनें अपनें रब की इताअत की.

3-इताअते इमाम:

قال علي عليه السلام : إِمَامٌ عَادِلٌ خَيْرٌ مِّنْ مَطَرٍ وَابِلٍ

(गोररूल हेकम जिल्द. 1, पेज.107

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: आदिल इमाम अच्छी बारिश से बेहतर है.

4-इमाम हसन (अ.स.) व इमाम हुसैन (अ.स.)

قال رسول الله (ص) : اَلْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ عَلَيْهِمَا

السَّلَامُ اِمَامَانِ قَامَا اَوْ قَعَدَا

(मनाकिब आले अबी तालिब पेज. 137

पैगंबरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया: हसन (अ.स.) और हुसैन (अ.स.) दो इमाम हैं. चाहे क़याम करें या क़याम न करें.

5-इमाम हुसैन की नस्ल से:

قال رسول الله (ص): أَلْاَئِمَّةِ مِنْ وُلْدِ الْحُسَيْنِ مَنْ اَطَاعَهُمْ فَقَدْ اَطَاعَ اللهَ وَمَنْ عَصَاهُمْ فَقَدْ عَصَي اللهَ هُمُ أَلْعُرْوَةُ الْوُثْقِي وَهُمُ الْوَسِيْلَةُ إِلي اللهِ تعَالي

पैगंबरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया अइम्मा ताहेरीन (अ.मु.स.) हुसैन (अ.स.) की अव्लाद में से हैं. जिसनें उन्के इताअत की गोया उसनें अल्लाह की इताअत की, और जिसनें उन्की नाफरमानी की, गोया उसनें अल्लाह की नाफरमानी की- वह खुदा की मज़बूत रस्सी हैं, और खुदा तक पहुँचाने का वसीलह हैं-

तशरीह:

नबूवत के खात्में पर हिदायत को बाक़ी रखनें केलिये. इमामत का सिलसिला शुरू किया, और उस सिलसिले को क़यामत से मिला दिया और यही वजह है, कि क़यामत में हर गिरोह को उस्के इमाम के साथ बुलाया जाएगा. इमाम खुदा के ऐतेबार से वली, और हाकिम होता है. और नबी के ऐतेबार से वसी और जांनशींन. इमाम खलीफए खुदा और रसूल (स.अ.व.) है. तो उसे दोनों के कमालात का आईनह दार होना चाहिए. यही वजह है कि परवरदिगार नें हिजरत में इमाम के नफ्स को अपना नफ्स क़रार दिया, और मुबाहेले में उसे नफ्से रसूल (स.अ.व.) क़रार दिया इमाम हाफिजे शरीअत भी है, और क़ाएदे इमामत भी. हिफ्ज शरीअत के लिये इल्म लाजिम है. और हिफ्ज़े इमामत के लिये कूवत व ताकत.

अब इमामे उम्मत वही होगा जो इल्म में सारी उम्मत से बालातर हो यानी बाबे मदीनतुल इल्म हो. और ताकत में सारी दुन्या से कवीतर हो यानी لا فتي إلا علي عليه السلام हो. इमामत और क़यादते उम्मत केलिये पांच बातों का होना ज़रूरी है.

1-हुक्में खुदा से हिदायत करे.

2-नेंकियां अंजाम दे.

3-नमाज़ क़ाऐम करे.

4-ज़कात अदा करे.

5-हर हाल में इबादते इलाही अंजाम देता रहे, और कोई काम उस्की मर्जी के खिलाफ न करे.

इसीलिये कुरआन नें दो इमामों का तज़केरा किया है. एक वह इमाम है, जो हमारे हुक्म से हिदायत करते हैं. और दूसरे वह इमाम है जो लोगों को जहन्नम की तरफ बुलाते हैं. अब हमें खुद फैसला करनां है कि हम किन

इमामों की इताअत करें और किन इमामों को अपना इमाम व क़ाऐद बनाएँ. खुदा से दुआ करते हैं, कि बहक्के मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.मु.स.) हमें हकीकी अइम्मा (अ.मु.स.) की इताअत करनें और उन्के नक्शे क़दम पर चलने की तौफीक आता फरमाए. (आमीन)

वाकेआत:

1-हज़रत अली (अ.स.) चौथे खलीफह:

शैख़ सदूक नें अपनें उस्दाद से हज़रत इमाम अली रेज़ा (अ.स.) से नक्ल किया. इमाम अली रेज़ा (अ.स.) नें अपनें आबाऐ ताहेरीन (अ.मु.स.) की सनद से हज़रत अली (अ.स.) से रवायत. की आप (अ.स.) नें फरमाया कि एक मर्तबह मैं रसूले अकरम (स.अ.व.) के साथ मदीनह के रास्ते पर चल रहा था. कि तवीलुल कामत (लंबे कद वाले) घनीं दाढी और चौड़े शानों वाले बुज़ुर्ग हमें मिले, और उन्हों नें रसूले खुदा (स.अ.व.) पर सलाम किया और आंहज़रत (स.अ.व.) को खुश आमदीद कहा- फिर बुज़ुर्ग मेरी तरफ मुतवज्जेह हुवे और कहा

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَابِعَ الْخُلَفَاءِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ

चैथे खलीफ आप पर सलाम हो. और अल्लाह की रहमत और बरकतें हों.

फिर उसनें रसूले खुदा (स.अ.व.) से कहा कि, या रसूलुल्लाह (स.अ.व.) क्या यह चौथे खलीफह नहीं हैं?

रसूले खुदा (स.अ.) नें फरमाया जी हाँ.

फिर वह बुज़ुर्ग रवाना हो गए. उन्के जानें के बाद मैंनें रसूले खुदा (स.अ.व.) से अर्ज की, कि यह बुज़ुर्ग क्या कह रहे थे. और आप नें किस बात की तस्दीक की?

रसूले खुदा (स.अ.व.) नें फरमाया! हकीकत यही है (कि तुम चौथे खलीफ़ा हो) क्यूकि अल्लाह नें अपनी किताब में फरमाया है.

اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً (सूरे बकरा आयत 30)

मैं ज़मीन में अपना खलीफह बना रहा हूँ.

इन अलफ़ाज़ के ज़रिये आदम (अ.स.) की खेलाफत का एअलान किया गया. लेहाज़ा पहली खेलाफत हज़रत आदम (अ.स.) की है. फिर अल्लाह नें फरमाया कि मूसा (अ.स.)

नें अपनें भाई हारून (अ.स.) से कहा था.
اخۡلُفۡنِیۡ فِیۡ قَوۡمِیۡ وَ اَصۡلِحۡ
मेरी कौम में मेरे खलीफ़ा बन जाव, और इस्लाह करो.

दूसरी खेलाफत हारून (अ.स.) की है. अल्लाह नें तीसरे खलीफह का ज़िक्र इन अलफ़ाज़ में बयांन किया.

يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلۡنٰکَ خَلِیۡفَۃً فِی الۡاَرۡضِ فَاحۡکُمۡ بَیۡنَ

النَّاسِ بِال

अय दाऊद (अ.स.) बेशक हमनें आप को ज़मीन में खलीफ़ा बनाया है. तुम लोगों के दर्मियाँन हक़ के साथ फैसला करो लेहाजह तीसरी खेलाफत हज़रत दाऊद (अ.स.) की है. उन तीन खोलफ़ा के बाद अल्लाह नें फरमाया!

وَ اَذَانٌ مِّنَ اللّٰہِ وَ رَسُوۡلِہٖۤ اِلَی النَّاسِ یَوۡمَ الۡحَجِّ الۡاَکۡبَرِ

हज्जे अकबर के दिन अल्लाह और उस्के रसूल (स.अ.व.) की तरफ से लोगों के लिये. ऐलान किया जाता है.
खुदा और उस्के रसूल (स.अ.व.) के ऐलांन करनें वाले तुम हो, और तुम ही मेरे वसी, वज़ीर, जानशीन, और मेरे कर्ज़ अदा करनें वाले और मेरी तरफ से दींन पहुचानें वाले हो, और तुम्हें मुझ से वही निस्बत है, जो हारून (अ.स.) को मूसा (अ.स.) से थी. लेकिन मेरे बाद कोई नबी नहीं आऐगा. जैसा कि उस बुज़ुर्ग नें कहा है. तुम चैथे खलीफह हो. और क्या तुम्हें मालूम है कि वह बुज़ुर्ग कैन थे.
मैंनें कहा: नहीं! मुझे मालूम नहीं.
आंहज़रत नें फरमाया: फिर तुम्हें मालूम होना चाहिये वह तुम्हारे भाई हज़रत खिज़्र (अ.स.) थे (मोअजेज़ाते आले मोहम्मद अ.मु.स. जिल्द.1, पेज. 387.)

2-ऐजाज़े इमामत:

इब्नें शहरे आशोब नें जाबिर अन्सारी से रवायत की है कि उन्हों नें कहा! अमीरुल मोंमेनींन अली (अ.स.) नें हमें नमाज़े फज्र पढाई. फिर आप (अ.स.) हमारी तरफ मुतवज्जह हुवे और फरमाया लोगो अल्लाह तुम्हें तुम्हारे भाई सलमान की मौत पर सब्र अता करे और तुम्हारे अज्र में इजाफह करे उस्के बाद आप (स.अ.) नें रसूले खुदा (स.अ.व.) का अमामह और चादर ज़ेबेतन फरमाई और रसूले खुदा (स.अ.व.) का असा और तलवार उठाई और नाक़ह अज़्बा पर सवार हुये और कंबर से फरमाया कि तुम एक से दस तक की गिनती गिनों.

कंबर कहते हैं, कि मैंनें दस तक गिनती गिनी तो मेंनें देखा कि हम सलमान फ़ारसी के दरवाजह पर खड़े थे.

ज़ाज़ान का ब्यान है कि जब सलमान फारसी की मौत का वक्त करीब हुवा तो मैंनें उनसे कहा तुम्हे गुस्ल कौन देगा? उन्हों नें कहा जिसनें रसूले खुदा (स.अ.व.) को गुस्ल दिया था वही मुझे गुस्ल देगा मैंनें कहा कि रसूले खुदा (स.अ.व.) को तो हज़रत अली (अ.स.) नें गुस्ल दिया था. मगर वह इस वक्त मदीना में हैं और आप मदाऐन में हैं.

उन्हों नें कहा था कि अय ज़ाज़ान जब तू मेरी तहतुलहनक बाधेगा तो उस वक्त तुझे कदमों की आवाज़ सुनाई देगी.

ज़ाज़ान कहते हैं कि जैसे ही मैंनें सलमान की तहतुलहनक बाधी तो मैंनें कदमों की आहट सुनी, और मैं दरवाज़े पर गया, तो अमीरुल मोंमेनींन (अ.स.) को मौजूद पाया. आप (अ.स.) नें फरमाया ज़ाज़ान सलमान अल्लाह को प्यारे होगये.

मैंनें कहा जीहाँ मेरे सरदार फिर आप (अ.स.) अंदर आगये और सलमान के चेहरे से चादर हटाई तो सलमान नें तबस्सुम किया हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया,
अबू अब्दिल्लाह जब तुम रसूल खुदा (स.अ.व.) के पास जाव तो उन्को बताना कि उन्की कौम नें आप के भाई से क्या सुलूक किया है.
फिर अमीरुल मोमेंनींन (स.अ.) नें उन्की तजहीज़ व तक्फीन की और फिर आप (अ.स.) नें उन्की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई. हम अमीरुल मोंमेंनीन (अ.स.) से इन्तेहाई बलंद आवाज़ में तकबीर सुनते रहे और मुझे हज़रत (स.अ.) के साथ दो आदमी भी दिखाई दिये जब मैंनें आप (अ.स.) से उन्के बारे में पूछा तो आप (अ.स.) नें फरमाया एक मेरे भाई जाफर (अ.स.) थे और दूसरे खिज़्र (अ.स.) थे और हर एक के साथ

फरिश्तों की सत्तर सफें थीं, और हर सफ में दस दस लाख फ़रिश्ते शामिल थे (मोअजेज़ाते आले मोहम्मद स.अ.व. जिल्द 1, पेज. 383.)

10) ईमान

आयात:

1-बेहतरीन पादाश:

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ

مَاٰبٍ

(सूरए रअद आयत 29.)

जोलोग ईमान लाऐ और उन्हों नें नेक आमाल किये. उन्के लिये बेहतरीन जगह (बहिश्त) और बेहतरीन बाज़गश्त है.

2-फाएदह ईमान (ईमान का फ़ाइदा):

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ

مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا

كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ

(सूरए आराफ आयत 96.)

और अगर अहले कर्यह (बसती) ईमान ले आते और तक़वा अख्तियार कर लेते. तो हम उन्के लिये ज़मीन और आसमान से बरकतों के दरवाजे खोल देते. लेकिन उन्हों नें तक्जीब की तो हम नें उन्को, उन्के आमाल की गिरफ्त में ले लिया.

3-बेहतरीन मखलूक:

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ

(सूरए बय्यनह आयत 7.)

बेशक जो ईमान लाये और उन्हों नें नेक आमाल किये वह बेहतरीन खलाएक हैं.

4-महबूबे मख्लूके इलाही:

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا

(सूरए मरयम आयत 96.)

बेशक जो ईमान लाये और उन्हों नें नेक आमाल किये अन्क़रीब रहमान लोगों के दिलों में उन्की मोहब्बत पैदा करदेगा

5-कामियाब तरीन अफराद:

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ

الَّذِيْنَ ہُمْ فِيْ صَلَاتِہِمْ خٰشِعُوْنَ

وَالَّذِيْنَ ہُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ

وَالَّذِيْنَ ہُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ

(सूरए मोमेनून आयत 1-4)

यकीनन साहेबाने ईमान कामियाब होगये. जो अपनीं नमाजों में गिडगिड़ाने वाले हैं. और लग्व बातों से दूरी करनें वाले हैं. और ज़कात अदा करने वाले हैं.

रवायात

1-ईमान बगैर अमल क़ाबिले कबूल नहीं

قال رسول الله (ص) : لَا يَقْبَلُ الْإِيمَانُ بِلَا عَمَلٍ وَلَا عَمَلُ بِلَا إِيمَانٍ

(कन्जुल उम्माल जिल्द 1, पेज. 68)

हज़रत मोहम्मद (स.अ.व.) नें फरमाया! इमाम बगैर अमल के और अमल बगैर ईमान के काबिले कबूल नहीं.

2-इखलास:

قال علي عليه السلام : اَلْإِيمَانُ إِخْلَاصُ الْعَمَلِ

(गोररूल हेकम जिल्द 1, पेज. 116)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया! ईमान, अमल को खालिस करदेता है. (यानी अगर ईमान मज़बूत है तो ख़ुलूस पैदा होगा)

3-साहिबे ईमान को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता:

قال الصادق علیه السلام : اَلْاِیْمَانُ لَا یَضُرُّ مَعَهٗ عَمَلٌ

وَ کَذٰلِکَ الْکُفْرُ لَا یَنْفَعُ مَعَهٗ عَمَلٌ

(किताब अल शाफी जिल्द. 5, पेज. 78)

ईमामें सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया ईमान के होते हुवे कोई अमल नुकसान नहीं पहुंचाता और कुफ्र के होते हुवे कोई अमल फाऐदा नहीं देता.

4-नजात:

قال علي علیه السلام : اَلنِّجَاةُ مَعَ الْاِیْمَانِ

(गोररूल हेकम जिल्द. 1, पेज 117.)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: ईमान के साथ नजात है

5-जन्नत का रास्तह:

قال أمير المومنين : عَلَيْكُمْ بِإِخْلَاصِ الْإِيمَانِ فَإِنَّهُ السَّبِيْلُ إِلَى الْجَنَّةِ وَالنَّجَاةُ مِنَ النَّارِ

(गोररूल हेकम जिल्द. 1 पेज. 120)

मौलाऐ मुत्तकीयाँन अली इब्नें अबी तालिब (अ.स.) नें फरमाया: तुम पर ज़रूरी है. कि ईमान को खालिस करो. क्यूकी यह जन्नत का रास्ता और जहन्नम से नजात का तरीक़ा है.

तशरीह:

इमान का मतलब है कि इंसान दिल की गहराइयों से हक़क़तों का इक़रार करे, और उन तमाम तकाजों (मुतालिबों) पर अमल करना ज़रूरी होगा जो ईमानें हकीकी के तकाजेह (मुतालिबें) हैं. और जिन के बगैर ईमान, ईमान कहे जानें के काबिल नहीं है. अमले सालेह हकीकत में ईमान के तकाजों ही का नाम है. ईमान और अमले सालेह का असर सिर्फ आखेरत में नहीं होता है. बल्की दुन्या में भी उस्के असरात ज़ाहिर होते हैं, और वह असरात माद्दी (दुनयवी) वसाऐल (वसीलों) का नतीजह नहीं हैं.

माद्दी (दुनयावी) वसाएल (वसीले) शर्क व ग़र्ब व जोनूब व शुमाल (मशरिक, मगरिब, उत्तर दख्खिन) में काम करते हैं, और कुदरती वसाएल ज़मीन और आसमान की बरकतों से नवाज़ देते हैं, और उन्हें किसी का मुहताज

नहीं रखता है, और न उन्के हालात को दुन्या की कोई ताकत चैलेन्ज करसकती है. उन्का मददगार खुदा है. साहेबाने ईमान महबूबे इलाही भी, और महबूबे मख्लूके खुदा भी. जितना ईमान पोख्तह (पक्का) होगा उतना ही अमल मोहकम (मज़बूत) होगा जहाँ अमल में कमजोरी दिखाई दे, तो समझ जाएँ कि उस्का ईमान कमज़ोर है.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के इमामुल मुत्तकीन अमीरुल मोंमेनींन हज़रत अली इब्नें अबी तालिब (अ.स.) हम सब के ईमान में रोज ब रोज इजाफह फरमाऐ.

वक़ेआत:

1-अबुज़र गफ्फारी के ईमान की बलन्दी;

एक दफ़ा का वाकेआ है कि जनाबे अबुज़र गफ्फरी खिदमते रसूले अकरम (स.अ.व.) में हाज़िर हुवे. सलाम के बाद अर्ज की अय अल्लाह के रसूल (स.अ.व.) मैं जंगल में अपनी भेडे चरा रहा था, और जब नमाज़ का वक्त हुवा तो मैं नमाज़ पढनें लगा. उसवक्त एक भेडीया आया और उसनें एक भेंड उठा लिया, नागाह (अचानक) एक शेर नें उस भेडिये पर हमलह किया और दुंबह को छोड़ा कर मेरी भेंड़ों की रखवाली करनें लगा, जब में नमाज़ से फारिग हुवा तो शेर नें मुझ से कहा: अय अबुज़र! अभी जाव और रसूले खुदा (स.अ.व.) की ज्यारत कर आव. आप की भेड़ों की मैं हिफाजत का रहा हूँ. रसूले खुदा (स.अ.व.) नें मुस्कुरा के

फरमाया: अय अबुज़र यह सब तुम्हारे ईमान की बदौलत है.

उस्के बाद रवायत बताती है कि बीस मुनाफेकीन ने कहा: अबुज़र हम में अपनी बडाई बयान करता है. चलो आज जंगल में जाकर अबुज़र की भेडें चुराते हैं. जब यह मुनाफेकीन जंगल में पहुंचे तो क्या देखा कि अबुज़र की भेड़ों को एक शेर चरा रहा है. जो भी दुंबह गल्ले से अलग होजाता है, उसे शेर हंका कर गल्ले में ले आता है. मुनाफेकीन को देखकर, शेर बकुदरते खुदा गोया हुवा (यानी बोला) अय गिरोहे मुनाफेकीन! यह तो अबुज़र के ईमान और मारफत की बलन्दी है. कि मैं उस्के जानवरों को चरा रहा हूँ. याद रख्खो अगर अबुज़र हमें हुक्म दें कि, इन मुनाफिकों को पकड़ लो तो खुदा की क़सम एक लम्हा में सब को इसतरह निगल जावूंगा जिसतरह दौरे

मूसा (अ.स.) में कालीन के शेर नें जादूगरों के अझदहे को निगल लिया था. (मजालिसे बनी हाशिम पेज. 97)

2-नूरे ईमान से मुनव्वर दिल:

इस्हाक बिन अम्मार से मरवी है कि. हज़रत अबु अब्दिल्लाह नें फरमाया: रसूले खुदा (स.अ.व.) नें लोगों के साथ नमाज़े सुबह पढ़ी

आप (स.अ.व.) नें सज्दह में एक जवान को देखा वह अपना सर इधर उधर हिला रहा है. उस्का रंग ज़र्द है और जिस्म नहीफ व लागर है आखें सर में गड गईं है. हज़रत नें फरमाया अय शख्स तेरा क्या हाल है उसनें कहा मैं यकीन पर हूँ.

रसूल (स.अ.व.) नें उस्के कहनें पर तअज्जुब किया और फरमाया: यकीन की एक हकीकत होती है तुम्हारे यकीन की हकीकत क्या है. उसनें कहा या रसूलुल्लाह (स.अ.व.)! वह

काम जिसनें मुझे ग़मगीन किया और रातों में जगाया है, और सख्त गर्म दिनों में प्यासह रख्खा है. वह गमें आखेरत है. गोया अर्शे इलाही मेरी नज़र के सामने है, और मैं हिसाब केलिये खड़ा हूँ, लोगों को हाज़िर किया जारहा है. मैं भी उनमें हूँ और गोया मैं अहले जन्नत को देख रहा हूँ कि वह जन्नत की नेमतों से फाऐदा उठा रहे हैं. और तख्तों पर तकिया लगाऐ हुवे एक दूसरे को पहचनवा रहे हैं, और गोया दोज़ख्यूं को देखता हूँ कि वह अज़ाबे इलाही में पड़े हुये चीख पुकार कर रहे हैं गोया में अब भी अहले नार व जहन्नम की चीख व पुकार को सुन रहा हूँ और वह आवाजें मेरे कान में गूँज रही हैं. हज़रत रसूले खुदा (स.अ.व.) नें अपनें असहाब से फरमाया: यह है वह बंदा जिसके दिल को अल्लाह नें नूरे ईमान से मुनव्वर कर दिया है. हज़रत (अ.स.व.) नें

उस से फरमाया तुम अपनें हाल पर क़ाएम रहो.

उसनें कहा या रसूलुल्लाह (स.अ.व.) आप दुआ करें कि खुदा मुझे शहादत का दर्जह दे हज़रत नें दुआ फरमाई चुनान्चह एक गज्वह में वह नौ शहीदों के बाद दसवें नंम्बर पर शहीद हुवा (किताब अल शाफ़ी जिल्द. 3 पेज. 318.)

11) बखील (कंजूस)

आयात:

1-कन्जूस की सज़ा:

لَا يَحۡسَبَنَّ الَّذِيۡنَ يَبۡخَلُوۡنَ بِمَاۤ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖ هُوَ خَيۡرًا لَّهُمۡ‌ؕ بَلۡ هُوَ شَرٌّ لَّهُمۡ‌ؕ سَيُطَوَّقُوۡنَ مَا بَخِلُوۡا بِهٖ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ

(सूरए आले इमरान आयत 180)

जो लोग खुदा की दी हुई नेमतों को खर्च करनें में कंजूसी से काम लेते हैं. उन्हें हरगिज़ ये नहीं सोचना चाहिए कि यह अच्छा काम है. बल्की यह बहुत बुरा काम है. अन्क़रीब क़यामत के दिन वही चीज़ें उन्के गर्दनों में तौक की तरह लटका दी जाएँ गी, जिन में वह बुख्ल किया करते थे.

2-कन्जूस खुदा का महबूब नहीं:

الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَأْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۗ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ

(सूरए हदीद आयात 23, 24.)

अलाह अकडनें वाले मगरूर अफराद को पसंद नहीं करता. कि जो खुद भी बुख्ल करते हैं और दूसरों को भी बुख्ल का हुक्म देते हैं, और जो भी खुदा के हुक्म से मुंह मोडता है उसे मालूम होना चाहिए कि खुदा सब से बिनियाज़ और काबिले हम्द व सताइश है.

3-बखील काफिरों की सफ में:

الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَأْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۗ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا

(सूरए निसा आयत 37)

जोलोग खुद भी बुख्ल करते हैं, और दूसरों को भी बुख्ल का हुक्म देते हैं, और जो कुछ खुदा नें अपनें फज्ल व करम से उन्हें अता किया उसपर (अपनें कुफ्र की वजह से) परदा डालते हैं. (तो उन्हें मालूम होना चाहिए कि) हम नें काफिरों के वास्ते रुसवा करदेने वाला अजाब मुहय्यह (तय्यार) कर रखखा है.

4-बुख्ल अपने ही लिये:

هَٰٓأَنتُمْ هَٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنفِقُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ فَمِنكُم مَّن يَبْخَلُ ۖ وَمَن يَبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَن نَّفْسِهِۦ ۚ وَٱللَّهُ ٱلْغَنِىُّ وَأَنتُمُ ٱلْفُقَرَآءُ

(सूरए मोहम्मद (स.अ.व.) आयत 38)

हाँ हाँ! तुम वही लोग हो जिन्हें राहे खुदा में खर्च करने केलिये बुलाया जाता है, तो तुम में से कुछ लोग बुख्ल (कंजूसी) करनें लगते हैं, और जो बुख्ल करते हैं वह अपनें ही हक़

में बुख्ल करते हैं और खुदा सब से बिनियाज़ है तुम लोग उस्के मुहताज हो.

5-बुख्ल सख्ती का सबब:

اَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى

وَ كَذَّبَ بِالْحُسْنٰى

فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى

(सूरए लैल आयत 8'9'10)

जिसनें बुख्ल (कंजूसी) किया और लापरवाही बरती और नेकी को झुठलाया है. उस्के लिये सख्ती की राह हमवार करदेंगे.

रवायात:

1-बुख्ल एक अय्ब:

قال علي عليه السلام : اَلْبُخْلُ عَارٌ

(नहजुल बलागा कलेमाते किसार 3)

हज़रत अली (अ.स.) ने फरमाया बुख्ल (कंजूसी) नंग व आर है

2-बुख्ल फकीरी का सबब

قال علي عليه السلام : اَلْبُخْلُ فَقْرٌ

(गोररूल हेकम जल्द.1,पेज. 145)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया बुख्ल नादारी व फकीरी है.

3-बद तरीन बुख्ल:

أَقْبَحَ الْبُخْلُ مَنْعُ الْأَمْوَالِ مِنْ مُسْتَحِقِّهَا

(गोररूल हेकम जिल्द.1 पेज. 145)

इमाम अली (अ.स.) नें फरमाया मुस्तहक लोगों तक माल न पहूँचाना बद तरीन कंजूसी है.

4-बुख्ल बहुत बुरी आदत:

قال علي عليه السلام: بِئْسَ الْخَلِيقَةُ الْبُخْلُ

(गोररूल हेकम जिल्द.1, पेज.146)

अमीरुल मोमेंनींन (अ.स.) नें फरमाया कंजूसी बहुत बुरी आदत है

5-बखील का कोई चाहने वाला नहीं:

قال علي عليه السلام: لَيْسَ لِبَخِيلٍ حَبِيبٌ

(गोररूल हेकम जिल्द.1 पेज.49)

मौलाए काएनात हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया बखील का कोई दोस्त नहीं होता.

तशरीह:

बुख्ल व कंजूसी एक बुरी और मज्मूम सिफत है. इंसान जो कुछ कमाता है और जो कुछ माल व सर्वत जमा करता है वह यह फ़िक्र करता है कि यह माल हमेशह उस्के पास रहेगा. अगर खर्च करदिया तो क्या होगा, गोया कन्जूस अपने लिये भी अपनी दुन्या की छोटी सी चीज़ में भी कंजूसी करता है, और अपनी सारी दुन्या को अपने वारिसों के लिये छोड़ देता है. बखील इस लिये फकीरों की तरह ज़िंदगी गुजारता है, कि कहीं नादार व फकीर न होजाये या इसलिए फकीरों की तरह ज़िंदगी बसर करता है, कि ज़्यादह माल जमा कर सके कंजूसी करने वाला दुन्या में मज्मूम और आखेरत में अज़ाब का मुस्तहक होगा. बखील इंसान को यह याद रखना चाहिए कि माल यह जमा करेगा फाऐदा कोई और उठाएगा. इस

लिये कंजूसी से बेहतर है कि इंसान माल को अल्लाह की राह में खर्च करे.

खुदा से दुआ करते हैं. बहक्के मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.मु.स) हम सब को बुख्ल व कंजूसी से दूर रहनें की तौफीक अता फरमाऐ (आमीन)

वाकेआत:

1-चालाक कन्जूस (बखील)

एक कन्जूस नें कूजह बनाने वाले से कहा मेरे लिये एक कूजह और एक प्याला बना दो

कूजह बनाने वाले नें कन्जूस से पूछा तुम्हारे कूज़े पर क्या लिखूं?

कन्जूस नें कहा: (فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّىْ ۚ) लिखो जो शख्स इस में से (पानी) पीयेगा वह मुझ से न होगा.

दोबारह कूजह बनाने वाले नें कन्जूस से पूछा कि तुम्हारे प्याले पर क्या लिखूं?

कन्जूस नें कहा (وَ مَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّىٓ ۚ) लिखो और जो शख्स इस में से नहीं चखेगा (पीयेगा) बेशक वह मुझ से होगा.

(गंजीनए मआरिफ जिल्द 1,पेज. 87, कुरआनी लतीफे पेज 26.)

2-बखील का गुनाह:

पैगंम्बरे अकरम (स.अ.व.) खानऐ काबा के तवाफ में मशगूल थे. एक मर्द को देखा जो ग़लाफे काबा को पकडे दुआ कर रहा था. खुदाया इस घर का वास्ता मुझे बख्श दे.

रसूले खुदा (स.अ.व.) नें फरमाया: तेरा गुनाह क्या है उस शख्स नें कहा मेरा गुनाह इतना बड़ा है कि मैं उस्को ब्यान नहीं कर सकता.

रसूले खुदा (स.अ.व.) तेरा गुनाह बड़ा है या ज़मीन?

शख्स: मेरा गुनाह.

रसूले खुदा (स.अ.व.) तेरा गुनाह बड़ा है या पहाड़?

शख्स; मेरा गुनाह.

रसूले खुदा (स.अ.व.) तेरा गुनाह बड़ा है या आसमान?

शख्स: मेरा गुनाह.

रसूले खुदा (स.अ.व.) तेरा गुनाह बड़ा है या खुदा?
शख्स: खुदा आला और अजल है.
रसूले खुदा (स.अ.व.) तुझ पर वाय हो! अपने गुनाह को ब्यान कर. शख्स: अय रसूलुल्लाह (स.अ.व.) मैं एक दौलत मंद शख्स हूँ और जब भी मेरे पास कोई साएल आता है और मुझसे किसी चीज़ का स्वाल करता है तो मुझे अयसा लगता है जैसे आग का शोलह मेरी तरफ आरहा है.
पैगंम्बरे अकरम (स.अ.व.) ने फरमाया मुझ से दूर होजा और मुझे अपनी आग में न जला उस खुदा की कसम जिसनें मुझे हिदायत और करामत के साथ मबऊस किया अगर तू रुक्न व मक़ाम के दरमियान खड़ा हो और दो हज़ार साल नमाज़ पढे और इस्कदर गिरया व ज़ारी करे कि तेरे आंसुवों से नहरें जारी हो जाएँ और उन आंसुवों से

दरख़्त सेराब हों फिर उस वक्त तू बुख्ल और कंजूसी की हालत में मर जाए तो खुदावंदे मुतआल तुझ को जहन्नम की आग में डाल देगा.

तुझ पर वाए हो! क्या तुमनें कुरआंन नहीं पढ़ा कि खुदा फरमाता है जो बुख्ल करते हैं वह अपने ही हक़ में बुख्ल करते हैं (सूरए मोहम्मद आयत 38.)

जो शख्स अपने नफ्स को बुख्ल से दूर रख्खे गा वही कामियाब व कामरान है (हज़ार व हिकायते एख्लाक़ी पेज. 456.)

12) बीमारी

आयात:

1-बीमार उज़्र रखता है

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

(सूरए तव्बा आयत 91)

जो लोग कमज़ोर या बीमार हैं. और वह लोग जिन के पास राहे खुदा में खर्च करने के लिये खुछ नहीं है जंग से बाज़ रहनें में या जंग पर न जाने में कोई हरज नहीं है बशर्ते कि खुदा और रसूल के हक़ में इखलास रखते हों कि नेक किरदार लोगों से कोई पूछ गछ नहीं है और अल्लाह बहुत बख्शनें वाला मेहरबान है.

2-रूही बीमारी की तरफ तवज्जोह:

يَآيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ

(सूरेए यूनुस आयत 57.)

अय लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से नसीहत और दिलों की शफा का सामान और हिदायत और रहमत साहेबाने ईमान केलिये 'कुरआन की सूरत में' आचुका है

3-

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا

(सूरए असरा आयत 82)

और हम कुरआंन में वह सब कुछ नाज़िल कर रहे हैं जो साहेबाने ईमान के लिये शफा

और रहमत है और ज़ालेमीन के लिये खसारा में इजाफ़ा के अलावह कुछ नहीं है.

4-शफा देनें वाला खुदा है:

وَ اِذَا مَرِضۡتُ فَهُوَ يَشۡفِيۡنِ

(सूरए शोअरा आयत 80)

और जब बीमार होजाता हूँ तो वही मुझे शफा देता है.

5-मरीज़ (बीमार) और रोज़ा

شَهۡرُ رَمَضَانَ الَّذِىۡٓ اُنۡزِلَ فِيۡهِ الۡقُرۡاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الۡهُدٰى وَالۡفُرۡقَانِ‌ۚ فَمَنۡ شَهِدَ مِنۡكُمُ الشَّهۡرَ فَلۡيَـصُمۡهُ‌ ؕ وَمَنۡ كَانَ مَرِيۡضًا اَوۡ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنۡ اَيَّامٍ اُخَرَ‌ؕ يُرِيۡدُ اللّٰهُ بِكُمُ الۡيُسۡرَ وَلَا يُرِيۡدُ بِكُمُ الۡعُسۡرَ وَلِتُكۡمِلُوا الۡعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰٮكُمۡ وَلَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ

(सूरए बकरह आयत 185

माहे रमजान वह महीना है जिस में कुरआंन नाज़िल किया गया है. जो लोगों केलिये हिदायत है, और उसमें हिदायत और हक़ व बातिल में फर्क की वाज़ेह निशानिया मौजूद हैं. लेहाजा जो शख्स इस महीनें में हाज़िर रहे उसका फ़र्ज़ है. कि रोज़ा रख्खे, और जो मरीज़ या मुसाफिर हो वह उतने ही दिन दूसरे दिनों में रोज़ा रख्खे खुदा तुम्हारे बारे में आसानी चाहता है. ज़हमत नहीं चाहता और उतने ही दिन का हुक्म इसलिए है कि. तुम अदद पूरे करदो और अल्लाह के दी हुई हिदायत पर उस्की किब्रियाई का इकरार करो और शायद तुम इसतरह शुक्र गुज़ार बंदे बनजाव.

रवायात:

1-बीमारी की सख्ती:

قال علي عليه السلام : اَلْمَرَضُ حَبْسُ البَدَنِ

(गोररुल हेकम जिल्द. 2 पेज. 537)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: बीमारी बदन की क़ैद है

2-बीमार:

قال علي عليه السلام : كَمْ دَنِفَ نَجَا وَصَحِيْحِ هَوِيْ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज 462)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया बहुत से बीमार नजात पा लेते हैं. और बहुत से सेहत मंद गिरपड़ते हैं (या मर जाते) हैं

3-बीमारी गुनाहों का कफ्फारह

قال رسول الله (ص) : اَلْمَرِيْضُ تَحَاتُّ خَطَايَاهُ كَمَا يَتَحَاتُّ وَرَقُ الشَّجَرِ

(मीज़ान अल हिक्मह जिल्द 4 पेज 2885)

रसूले खुदा (स.अ.व.) नें फरमाया बीमारी में (बीमार के) गुनाह

इसतरह झड़ते हैं जिसतरह (खेजां में) दरख़्त के पत्ते झड़ते हैं

4-इलाज की अहमीयत:

قال علي عليه السلام: مَنْ كَتَمَ الْأَطِبَّاءَ مَرَضَهُ خَانَ بَدَنَهُ

(गोररुल हेकम जिल्द 2, पेज. 537)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया जो शख्स अपनी बीमारी को डाक्टरों से छुपाऐ उसनें अपने बदन से खयानत की.

5-बुखार:

قال إمام زين العابدين عليه السلام: حُمَّى لَيْلَةٍ كَفَّارَةُ سَنَةٍ

(आमाल अल वाएजीन जिल्द 1 पेज 517)

इमामे जैनुल आबिदीन (अ.स.) नें फरमाया: एक रात का बुखार एक साल की गुनाहों का कफ्फारा है.

तशरीह;

बीमारी भी एक नेमत है. बीमारी बंदे की कम्ज़ूरी है, और शफा देना परवरदिगार का करम है, और बीमारी का बेहतरीन इलाज परहेज़ है. बीमारी की हालत में भी इंसान को शुक्रे खुदा बजालाना चाहियी न कि ज़ुबान पर ऐसे जुमले लाये जिस से शिर्क की बू आती हो. जिसतरह रवायत में ज़िक्र है कि एक रात का बुखार एक साल की गुनाहों का कफ्फारह है. बाज़ अव्कात यही बीमारी खुदा की तरफ से बंदें का इम्तेहान होती है. और बाज़ अव्क़ात बीमारी बदपरहेजी से वोजूद में आती है इसलिए इंसान को चाहिए कि अपना इलाज करवाऐ और अगर कोई मरीज़ होजाऐ तो लोगों को चाहिए कि उस्की अयादत केलिये जाएँ. जो शख्स मरीज़ की अयादत के लिये जाता है. तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उस्के साथ होते है,

और उस्के लिये अस्तग्फार करते हैं. यहाँ तक कि वह वापस अपनें घर आजाऐ

वाकेआत:

1-पैगंम्बरे अकरम का मुस्कुराना:

एक रोज पैगंम्बरे अकरम (स.अ.) नें आसमान की तरफ निगाह की और मुस्कुराने लगे. एक शख्स नें आंहज़रत (स.अ.व.) से पूछा: या रसूलुल्लाह (स.अ.व.)! हम नें देखा कि आप नें आसमान की तरफ निगाह की और मुस्कुरानें लगे उस्की क्या वजह है? रसूले खुदा (स.अ.व.) नें फरमाया: बेशक जब मैनें आसमान की तरफ निगाह की तो देखा दो फ़रिश्ते ज़मीन की तरफ आरहे हैं. ताकी एक सालेह (नेक) मर्द की शब व रोज़ (दिन व रात) की इबादत का सवाब लिखें. जो अपनी मखसूस जगह नमाज़ व इबादत में मशगूल रहता था. लेकिन उन फरिश्तों ने उस्को वहाँ न पाया क्यूंकी वह शख्स बिस्तरे मर्ज़ पर पड़ा हुवा था. फ़रिश्ते आसमान की तरफ चले गये,

और खुदा वंदमुतआल से अर्ज की; हम हसबे मामूल (रोज़ की तरह) उस सालेह
(नेक) मर्द की इबादत का सवाब लिखने केलिये उस्की इबादत कीजगह गये थे. लेकिन हमनें उस्को वहाँ नहीं पाया क्यूंकि वह बीमारी की वजह से बिस्तर पर आराम कर रहा रहा था- खुदा वंदमुतआल नें फरिश्तों से फरमाया अय फरिश्तो! जब तक मेरा बंदा बिस्तरे मर्ज़ पर है. मुझ पर लाजिम है कि उस्को बीमारी में इतना सवाब आता करूं जितना सवाब तंदुरुस्ती की इबादत में अता करता था (क्यूं कि वह मेरा बंदह बीमारी की वजह से इबादतें बजालाने से माज़ूर है) (गंजीनए मआरिफ जिल्द 2 पेज 129,आमालुल वाऐजीन. जिल्द 1, पेज. 517)

2-बीमार की देख भाल की अहमीयत:

दो साथी काफी दूर से मनासिके हज को बजा लाने केलिये मक्कह की तरफ रवाना हुवे. जब यह दोनों मदीनें में रसूले अकरम (स.अ.व.) की ज्यारत के लिये आये. तो उनमें से एक साथी मदीनह के किसी होटल में बहुत ज़्यादह बीमार होगया, और उस्का दूसरा साथी उस्की देख भाल करनें में मशगूल होगया.

एक दिन हमसफर साथी नें बीमार साथी से कहा. मुझे बहुत इश्तियाक है कि रसूले खुदा (स.अ.व.) के मज़ार की ज्यारत करूं तुम मुझे इजाज़त दो कि मैं ज्यारत केलिये जावूं.

बीमार नें कहा तू मेरा यार व मदद गार है. मुझे तनहा न छोड़, मेरी तबीअत बहुत खराब है, मुझ से जुदा न हो. साथी नें कहा मेरे भाई हम बहुत दूर से आये हैं, मेरा दिल

ज्यारत केलिये तड़प रहा है. तुम इजाज़त दो मैं बहुत जल्द ज्यारत करके वापस आजावूंगा. लेकिन बीमार साथी जिसको देख भाल की बहुत शदीद ज़रूरत थी. वह नहीं चाहता था कि उस्का साथी ज्यारत के लिये जाऐ.

लेकिन हमसफ़र साथी उस्को छोडकर ज्यारते पैगंम्बर (स.अ.व.) केलिये चला गया, और ज्यारत के बाद इमामे सादिक़ (अ.स.) के घर गया, और ज्यारत से शरफयाब हुवा, और अपना और अपनें साथी का किस्सह आंहज़रत (स.अ.व.) के सामने बयान किया.

इमाम सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया! अगर तुम अपनें दोस्त के पास रहते, और उस्की देख भाल और निगरानी करते, तो तुम्हारा अज्र खुदाऐ बुज़ुर्ग की बारगाह में रसूले खुदा (स.अ.व.) के मज़ार की ज्यारत से ज़्यादह

होता (गंजीनए मआरिफ जिल्द. 2 पेज. 130.)

13) बसारत व बसीरत (सूझ बूझ)

आयात:

1-बसीरत की अहमीयत:

قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۣ عَلٰي بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ۭ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ

(सूरए यूसुफ़ आयत 108)

आप कह दीजियी कि यही मेरा रास्ता है. कि मैं और मेरा इत्तेबाअ करने वाले बसीरत के साथ (लोगोंको) खुदा कीतरफ बुलाते हैं और खुदा पाक व बेनियाज़ है और मैं मुशरेकीन में से नहीं हूँ.

2-बीना और ना बीना मसावी नहीं:

قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِىْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَ

لَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّىْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ ؕ قُلْ هَلْ

يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ

(सूरए अनआम आयत 50)

आप कहिये कि हमारा दावा ये नहीं है, कि हमारे पास खुदाई खजानें हैं. या हम आलेमुल गैब हैं. और न हम यह कहते हैं कि, हम मलक हैं. हम तो सिर्फ वहये परवरदिगार का इत्तेबाअ करते हैं, और पूछीये कि, क्या अन्धें और बीना (आँख वाले) बराबर हो सकते हैं. आखिर तुम क्यूं नहीं सोचते हो.

3-क़यामत में नाबीना होनें का सबब:

مَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِىْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا

قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى

(सूरए ताहा आयात 124-126)

और जो मेरे ज़िक्र से मुंह मोडे गा उस्की ज़िंदगी तंग बना दूंगा, और हम उसे क़यामत के दिन अंधा महशूर करेंगें. (फिर) वह कहेगा कि परवरदिगारा यह तूनें मुझे अंधा क्यूं महशूर किया है. जब की मैं दुन्या में साहिबे बसारत था. इरशाद होगा कि जिसतरह हमारी आयतें तेरे पास आईं और तूनें उन्हें भुला दिया उसी तरह आज तू भी नज़र अंदाज़ कर दिया जाएगा.

4-अहले बसीरत केलिये इबरत:

يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَعِبۡرَةً لِّاُولِى الۡاَبۡصَارِ

(सूरए नूर आयत 44.)

अल्लाह (ही) रात को दिन और दिन को रात से तब्दील करता है, और यकीनन उसमें साहेबाने बसीरत के लिये सामाने इबरत है.

5-बसीरत का स्वाल:

وَلَا تَقۡفُ مَا لَـيۡسَ لَكَ بِهٖ عِلۡمٌ ؕ اِنَّ السَّمۡعَ وَالۡبَصَرَ وَالۡفُؤَادَ كُلُّ اُولٰۤـئِكَ كَانَ عَنۡهُ مَسۡـُٔوۡلًا

सूरए आसरा आयत 36

और जिस चीज़ का तुम्हें इल्म नहीं है उस्के पीछे मत जाना कि (क्यूं की) रोज़े क़यामत समाअत बसारत और कूवते कल्ब सब के बारे में स्वाल किया जाएगा

रवायात:

1-बसीरत की अहमीयत:

قال علي عليه السلام: فَقْدُ الْبَصَرِ أَهْوَنُ مِنْ فِقْدَانِ الْبَصِيرَةِ

(गोररुल हेकम जिल्द 1 पेज 164)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया आँखों का अंधा होजाना बसीरत के गवां (बरबाद) देने से आसान है.

2-बसीरत न होना:

قال علي عليه السلام: لَا بَصِيرَةَ لِمَنْ لَا فِكْرَ لَهُ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज. 165)

मौला अली (अ.स.) नें फरमाया: जो साहिबे फ़िक्र नहीं है वह बसीरत से खाली है.

3-दीदए बसीरत:

قال علي عليه السلام : نَظَرُ الْبَصَرِ لَا يُجْدِي إِذَا عَمِيَتِ الْبَصِيرَةُ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज. 165)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया आँख से देखनें में कोई फाएदह नहीं जबतक कि बसीरत न हो:

4-पूशीदए असरार (राजों का पूशीदा रहना)

قال علي عليه السلام : قَدِ انْجَابَتِ السَّرَائِرُ لِأَهْلِ الْبَصَائِرِ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज 164)

इमाम अली (अ.स.) नें फरमाया यकीनन साहेबानें बसीरत के लिये बहुत से पूशीदह असरार (छुपे हुवे राज़) खुल जाते हैं.

5-बसीरत बेहतर है या बसारत?

قال علي عليه السلام : ذِهَابُ الْبَصَرِ خَيْرٌ مِنْ عَمَي الْبَصِيْرَةِ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज. 163)

अमीरूल मोंमेनींन (अ.स.) नें फरमाया बीनाई (आँख की रौशनी) जाना, बसीरत खत्म होनें से बेहतर है.

तशरीह:

ज़ाहेरी निनाहों (आँखों) से देखनें का नाम है बसारत, और दिल की निगाहों से देखनें का नाम है बसीरत. बसारत और बसीरत का बुन्यादी फर्क यह है कि. बसारत ज़ाहिर को देखती है और बसीरत बातिन को. मौलाऐ काऐनात का इरशाद है कि बेहतरीन साहिबे बसीरत वह है. जो अपने ओयूब को देख ले और गुनाहों से अलग होजाये. बसीरत का बेहतरीन मजहर यह है कि. इंसान जाहरी हालात के मुताबिक काम न करे. बल्की अक्ल के मशवरे के मुताबिक अमल करे. इसलिए कि अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) के इरशाद के मुताबिक आँखें धोखा दे सक्ती हैं. लेकिन अक्ल किसी इंसान को धोखा नहीं देती. तो हमें बा बसीरत होनें की कोशिश करनी चाहिये. ताकी हमारे लिये पोशीदह असरार (छुपे हुवे राज़) खुल जाएँ

खुदा से दुआ है, कि बहक्के चाहार्दह मासूमीन (अ.मु.स.) हमें साहिबे बसीरत बना दे.

वाकेआत:

1-बा बसीरत गुलाम:

नबीये अकरम (स.अ.व.) की हयाते तय्यबह में एक हब्शी रहता था. जो मुसलामानों के साथ उठता बैठता था. इस तरह आहिस्ता आहिस्ता वह मुसलमानों के दीनी अक़ाऐद (अकीदों) से आशना (बाखबर) होगया. जब उसे यकीन होगया कि मुसलमानों के अक़ाऐद बरहक़ हैं. तो वह रसूले खुदा (स.अ.व.) की खिदमत में हाज़िर हुवा और कलमऐ शहादतैन पढ़ा, और इस्लाम कबूल किया. उस्के बाद वह मुसलामानों से दीनी मसाऐल हासिल करनें लगा. एक दिन रसूले अकरम (स.अ.व.) की खिदमत में हाज़िर हुवा और उसनें अर्ज किया या रसूलल्लाह (स.अ.व.) क्या जहांन का खालिक आलिम व खबीर है?

रसूले अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया! जी हाँ अल्लाह तआला हर ज़ाहिर व बातिन से वाकिफ है, वह माज़ी हाल और मुसतक्बिल के वाकेआत से भी वाकिफ है, खुदा हर कौल व फेल (काम) और दिलों में पैदा होनें वाले खयालात से भी वाकिफ है. यह बातें सुनर कर गुलाम कुछ देर तक सोचता रहा. फिर उसनें कहा या रसूलल्लाह (स.अ.व.) उस्का मकसद तो यह है कि खुदा मेरे तमाम गुनाहों से वाकिफ है, और हर वक्त मुझे देख रहा है, और मेरी हर हरकत व सुकून उस्के सामने है.

नबीये अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया! बेशक ऐसा ही है अल्लाह को तुम्हारी ज़िंदगी के हर लम्हा का इल्म है

यह सुनकर उसनें एक चीख मारी और बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ा, और उसी

बेहोशी की हालत में उस्की रूह परवाज़ कर गई (कश्कोल दस्तेगैब जिल्द 1 पेज. 51.)

2-बसीरते अबुहारूंन मक्फ़ूफ़:

क़ुतुब रावान्दी नें अबु बसीर से रवायत की है वह कहता है कि इमाम मोहम्मद बाकिर (अ.स.) के साथ हम मस्जिद में दाखिल हुवे, और कुछ लोग भी मस्जिद में दाखिल होरहे थे. हज़रत नें मुझ से फरमाया
ज़रा लोगों से पूछो कि वह मुझे देख रहे हैं. उस्के बाद जिस शख्स को मैं देखता था. उस से यही पूछता था कि क्या तुम नें अबु जाफर (अ.स.) को देखा है. तो जवाब में वह कहता था. कि नहीं हालांकि हज़रत वहीं खड़े हुए थे. यहाँ तक कि अबु हारून मक्फ़ूफ़ (नाबीना) दाखिले मस्जिद हुये. हज़रत नें फरमाया: उस से पूछो मैंनें उस से पूछा कि क्या अबु जाफर (अ.स) को देखा है. तो उसने कहा कि क्या ये हज़रत नहीं खड़े हुऐ

हैं. मैंनें कहा तुझे कैसे मालूम हुवा? तो उसनें कहा कैसे मालूम न हो वह तो एक चमकता हुवा नूर हैं. यानीं जमाले इमामत को देखनें केलिये ज़ाहरी आखें काफी नहीं है. दिल की आखें दरकार हैं (इमाम को देखने के लिये बसारत नहीं बल्की बसीरत दरकार है) (अहसनुल मकाल जिल्द 1 पेज 675.)

14) तरबियत

आयात:

1-तरबियत का नमूना:

لَقَدۡ کَانَ لَکُمۡ فِیۡ رَسُوۡلِ اللّٰہِ اُسۡوَۃٌ حَسَنَۃٌ

(सूरए अहज़ाब आयत 21)

तुम्हारे लिये रसूल की ज़िन्दगी बेहतरीन नमूना है

2-तरबियते अंबिया का मकसद:

ہُوَ الَّذِیۡ بَعَثَ فِی الۡاُمِّیّٖنَ رَسُوۡلًا مِّنۡہُمۡ یَتۡلُوۡا عَلَیۡہِمۡ اٰیٰتِہٖ وَ یُزَکِّیۡہِمۡ وَ یُعَلِّمُہُمُ الۡکِتٰبَ وَ الۡحِکۡمَۃَ ٭ وَ اِنۡ کَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ لَفِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ

(सूरए जुमअह आयत 2)

उस खुदा नें मक्का वालों में एक रसूल (स.अ.व.) भेजा है. जो उन्हीं मेंसे था. ताकी उन्के सामनें आयात की तिलावत करे, उन्के

नुफ़ूस को पाकीजह बनाऐ, और उन्हें किताब व हिकमत की तअलीम दे, अगरचे यह लोग इस से पहले बड़ी खुली हुई गुमराही में मुब्तेला थे.

3-अव्लाद पर वालदैन का हक़:

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ

ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا

(सूरए असरा आयत 24)

और वालदैन केलिये खाकसारी के साथ अपनें कांधों को झुका दो, और उन्के हक़ में दुआ करते रहो, कि पवरदिगार उन दोनों पर इसतरह रहमत नाज़िल फरमाँ जिसतरह उन्हों बचपनें में अपनीं रहमतें निछावर करके मुझे पाला है.

4-तरबियते फरज़न्द की अहमीयत:

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا قُوۡۤا اَنۡفُسَكُمۡ وَاَهۡلِيۡكُمۡ نَارًا وَّقُوۡدُهَا النَّاسُ وَالۡحِجَارَةُ عَلَيۡهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعۡصُوۡنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمۡ وَيَفۡعَلُوۡنَ مَا يُؤۡمَرُوۡنَ

(सूरए तहरीम आयत 6)

अय ईमान वालो अपनें आप को और अपनें घर वालों को उस आग से बचावो जिसका ईंधन इंसान और पत्थर होगें, जिस पर ऐसे फ़रिश्ते, मलाऐका मोअय्यन हैं. जो सख्त मिज़ाज और तुंद हैं. वह खुदा के हुक्म की मुखालफत नहीं करते और उन्हें जो हुक्म दिया जाता है उसी पर अमल करते हैं.

5-राहे मुस्तकीम (सीधा रास्ता)

اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيۡ وَرَبُّكُمۡ فَاعۡبُدُوۡهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسۡتَقِيۡمٌ

(सूरए आले इमरान आयत 51)

अल्लाह मेरा और तुम्हारा (दोनों) का रब है लिहाज़ह उस्की इबादत करो. कि यही सिराते मुस्तकीम (सीधा रास्ता) है.

रवायात:

1-बेहतरीन वारिस:

قال الصادق عليه السلام : إِنَّ خَيْرَ مَا وَرَّثَ الْآبَاءُ لِأَبْنَائِهِمُ الْأَدَبُ لَا الْمَالُ

(ओसूले काफी जिल्द 8, पेज 150)

हज़रत इमामे सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया बेहतरीन मीरास जो वालदैन अपनी अव्लाद केलिये छोड़ कर जाते हैं. वह अदब है न कि माल व दौलत.

2-अगाज़े तरबियत:

قال علي عليه السلام : أَفْضَلُ الْأَدَبِ مَا بَدَأْتَ بِهِ نَفْسَكَ

(मीजान अल हिक्मह जिल्द 1 पेज. 54)

मौला अली (अ.स.) नें फरमाया! बेहतरीन अदब वह है जो अपनें आप से शुरू हो.

3-तरबियत केलिये दुआ:

قال السجاد عليه السلام : وَاَعِنِّي عَلي تَرْبِيَتِهِمْ وَتَأْدِيبِهِمْ وَبِرِّهِمْ

(सहीफ़ए कामेलह दुआ न० 25, पेज 235)

इमाम सज्जाद (अ.स.) नें फरमाया (खुदाया) बच्चों की तरबियत व तादीब और उन्के साथ अच्छे बरताव करनें में मेरी मदद फरमा

4-तर्बियते मुहब्बते अहलेबैत (अ.मु.स.)

أَدِّبُوا أَوْلَادَكُمْ عَلي ثَلَاثُ خِصالٍ : حُبِّ نَبِيِّكُمْ حُبِّ اَهْلِبَيْتِهِ وَقِرَاءَةِ الْقُرْآنِ : قال رسول الله (ص)

(कन्जुल उम्माल जिल्द 16. पेज. 456.)

रसूले खुदा (स.अ.व.) नें फरमाया! अपनें बच्चो को तीन चीज़ें सिखाव

1-अपनें नबी (हज़रत मोहम्मद मुस्तफा स.अ.व.) की मुहब्बत.

2-उन्के अहलेबैत (अ.मु.स.) की मुहब्बत.
3-किरअते कुरआन.

5-फरज़न्द सालेह:

إِنَّ الْوَلَدَ الصَّالِحَ رَيْحَانَةٌ مِنْ رِيَاحِينِ الْجَنَّةِ: قال رسول الله (ص)

(ओसूले काफी जिल्द 6 पेज 3)

रसूले अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया फरजंदे सालेह बहिश्त के फूलों में से एक फूल है.

तशरीह:

बच्चों की तरबियत में हमें काफी कोशिश और दिक्कत से काम लेना चाहिए. क्यूं कि बच्चे बड़ों के किरदार और आमाल को देखते हैं, और फिर वही काम करते हैं. बच्चे समझते हैं कि. जो कुछ बड़ों नें काम किया है अछा है. इसलिए हमें भी वही अंजाम देना चाहिए. लिहाजा हमें ऐसे काम और गुफ्तगू से परहेज़ करना चाहिए. जिन का बुरा असर बच्चों पर हो. क्यूं कि हमारे बच्चे बाकियातुस्सालेहात हैं. अगर बच्चों की अच्छी तरबियत की. तो बड़े होकर हमारे लिये बाइसे इफ्तेखार होंगें, और अगर बच्चों की तरबियत सहीह नहीं की. तो यही हमारे लिये बाइसे ज़िल्लत व ख्वारी होंगें. कुरआन व रवायात की ताकीद है कि. अपनें आप को और अपने अहल व आयाल को जहन्नम की आग से बचाव, उन्की तरबियत कुरआन व

हदीस की रौशनी में करो क्यूं की बच्चे जन्नत के फूलों में से एक फूल हैं. कहीं ऐसा न हो हमारे बच्चे बुरी राह की तरफ चले जाएँ. आजकल मुआशेरा (समाज) बहुत खराब होता जा रहा है एक बच्चे की तरबियत करनां गोया एक खानदान की तरबियत करना है. (आमीन)

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.मु. स.) हमें अपनें बच्चों की तरबियत करनें की तौफीक अता फरमाऐ.

वाकेआत:

1-फरज़न्दे सालेह की अहमीयत:

रसूले अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया एक रोज हज़रत ईसा (अ.स.) एक कब्र के पास से गुज़रे तो आप नें देखा कि साहिबे कब्र को अज़ाब होरहा है. फिर जब दूसरे साल वहाँ से गुज़रे तो आप नें देखा कि साहिबे कब्र से अज़ाब टल चुका है. हज़रत ईसा (अ.स.) नें बारगाहे इलाही में अर्ज की. अय मेरे अल्लाह! एक साल कब्ल मैं इसी कब्र से गुजर रहा था. तो साहिबे कब्र को अज़ाब हो रहा था. लेकिन इस साल अजाब उठ गया है. इसका राज़ क्या है. खुदावंद तआला नें हज़रत ईसा (अ.स.) पर वही की अय रूहुल्लाह! इस मरने वाले का एक बेटा था जिस नें बालिग़ होनें के बाद (लोगों के लिये) एक रास्ता बनाया एक यतीम को पनाह दी. पस उस्के बेटे के दो नेक कामों

की वजह से उस्को बख्श दिया गया है. (गंजीनए माआरिफ जिल्द 3 पेज. 236. इबरत अंगेज वाकेआत पेज 118.)

2-गेज़ा का असर:

अल्लामा मोहम्मद तकी नक्ल करते हैं. जो की आयात, रवायात और तजर्बों से भी मुनासेबत रखती है. अल्लामा मोहम्मद तकी मजलिसी जामाँ मस्जिद इस्फेहान में नमाज़ पढ़ाया करते थे. एक रात अपने फरज़न्द मोहम्मद बाकिर मजलिसी को मस्जिद ले आये जो किसी वजह से सहने मस्जिद में खेल कूद में मसरूफ रहे. अल्लामा मोहम्मद तकी नमाज़ में मसरूफ थे. कि मोहम्मद बाकिर मजलिसी नें सहने मस्जिद में रख्खी हुई, पानी से भरी हुई मश्क में सूराख करदिया, और बहते हुवे पानी से खेलनें लगे नमाज़ के बाद जब अल्लामह मोहम्मद तकी मजलिसी को इल्म हुवा. तो आप सख्त

नाराज़ हुये घर जाकर अपनी जौजह को सामने बिठाया, और पूछा मैं नें हम्ल ठहरनें से पहले और हम्ल ठहरनें के बाद. गिज़ा के सिलसिले में इस्लामी दस्तूरात की रेआयत की थी. और उस्की विलादत के बाद अब तक तरबियत के वोसूलों पर अमल करता आरहा हूँ. लेकिन आज उस्का अमल हम दोनों में से किसी एक की कोताही की निशान्दही कर रहा है. बच्चे की माँ नें कहा अय्यामे हम्ल में एक रोज पड़ोसी के घर जाने का इत्तेफाक हुवा. जहां दरख़्त के लगे हुये अनारों नें मेरी तवज्जोहात को अपनी तरफ मोड़ दिया. उस वक्त मैंनें एक अनार में ज़ाऐक़ा चखने के लिये सूई चुभो कर उस्का ज़ाऐक़ा चखा था.

तवज्जोह करें हम्ल के ज़मानें में माँ का पड़ोसी के अनार का इस तरह खाना या चखना बच्चे की शखसियत पर इतना असर

अंदाज़ होता है. तो हराम गिज़ा का मुसलसल इस्तेमाल उस आने वाले बच्चे को इन्सानियत और इस्लाम से कितना दूर करदेगा (तहजीबे ज़िंदगी पेज. 204.)

15) तफ़क्कुर (गौर व फिक्र)

आयात:

1-तफक्कुर (गौर व फ़िक्र) की दअवत:

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ

تَتَفَكَّرُوْنَ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

(सूरए बकरह आयात 219-220)

खुदा इसी तरह अपनी आयात को वाज़ेह करके बयान करता है. ताकी तुम फ़िक्र कर सको दुन्या में भी और आखेरत में भी.

2-मुतवज्जह करवाना:

اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ط قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ

الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ

(सूरए हदीद आयत 117)

याद रख्खो खुदा मुर्दह ज़मीनों को जिन्दा करता है. और हमनें तमाम निशानियों को

वाज़ेह करके बयान कर दिया है. ताकी तुम अक्ल से काम ले सको.

3-खिल्कत में गौर व फ़िक्र:

وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا

(सूरए आले इमरान आयत 191)

और वह लोग आसमान व ज़मीन की खिल्कत में गौर व फ़िक्र करते हैं कि खुदाया तूनें यह सब बेकार नहीं पैदा किया है.

4-ज़मीन में निशानियां:

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ

(सूरए रअद आयत 3)

इस में साहेबानें फ़िक्र व नज़र के लिये बड़ी निशानियां पाई जाती हैं.

5-गलत फ़िक्र:

اِنَّهٗ فَكَّرَ وَ قَدَّرَ

فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ

(सूरए मुद्दसिर आयत 18-20)

उसनें फ़िक्र की और अन्दाजह लगाया, तो उसी में मारा गया कि कैसा अन्दाजह लगाया, या फिर उसी में और तबाह होगया कि कैसा अन्दाजह लगाया.

रवायात:

1-नेकी की दअवात:

اَلتَّفَكُّرُ يَدْعُوْ إِلي الْبِرِّ وَ الْعَمَلِ بِهِ

(सफीनतुल बिहार जिल्द 7 पेज 144, किताब अल शाफी जिल्द 3, पेज 321)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया! तफक्कुर नेकी करनें और उसपर अमल करने की दावत देता है.

2-असल इबादत:

قال الرضا عليه السلام : لَيْسَ الْعِبَادَةُ كَثْرَةَ الصَّلاةِ وَ الصَّوْمِ إِنَّمَا الْعِبَادَةُ التَّفَكُّرُ فِيْ أَمْرِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ

(सफ़ीनतुल बिहार जिल्द 7 पेज 145, किताब अल शाफी जिल्द 3 पेज 320)

इमाम रेज़ा (अ.स.) नें फरमाया! कसरत से नमाज़ पढनें और रोजह रखनें का नाम इबादत नहीं है. बल्की अमरे इलाही (अल्लाह

के अहकाम) में गौर व फ़िक्र करना इबादत कहलाता है.

3-आखेरत की फ़िक्र:

عَنِ الحَسَنِ الصَّيقَلِ قَالَ سَأَلْتُ أَبَا عَبْدِ اللهِ عَلَيْهِ السَّلَامُ عَمَّا يَرْوِي النَّاسُ أَنَّ تَفَكُّرَ سَاعَةٍ خَيْرٌ مِنْ قِيَامِ لَيْلَةٍ قُلْتُ: كَيْفَ يَتَفَكَّرُ؟ قَالَ: يَمُرُّ بِالْخَرِبَةِ أَوْ بِالدَّارِ فَيَقُولُ: أَيْنَ سَاكِنُوكِ أَيْنَ بَانُوكِ مَا لَكِ لَا تَتَكَلَّمِينَ

(सफीनतुल बिहार जिल्द 7 पेज. 144 किताब अल शाफी जिल्द 3 पेज 320)

इमामे सादिक़ (अ.स.) नें पूछा: लोग बयान करते हैं कि एक घड़ी की फ़िक्र बेहतर है तमाम रात खड़े होकर इबादत करने से. मैनें कहा कैसी फ़िक्र करता है? फरमाया जब किसी खराबे या घर की तरफ से गुजरता है.

तो यह कहता हुवा गुज़रता है. कि तेरे साकिन (रहने वाले) कहाँ गये तेरे बनाने वाले क्या हुवे, तुझे क्या होगया है. तू बोलता क्यूं नहीं?

4-बेहतरीन इबादत:

قال أمير المومنين عليه السلام : اَلتَّفَكُّرُ فِيْ آلَاءِ اللّٰهِ

نِعْمَ الْعِبَادَةُ

(गोररुल हेकम जिल्द 2 पेज. 354)

हज़रत अमीरुल मोमेनीन (स.अ.व.) नें फरमाया! खुदा की नेमतों में गौर व फ़िक्र करना बेहतरीन इबादत है.

5-बसीरत मिल्ना:

قال علي عليه السلام : تَفَكُّرُكَ يُعِيْدُكَ الْاِسْتِبْصَارَ وَ

يُكْسِبُكَ الْاِعْتِبَارَ

(गोररुल हेकम जिल्द 2, पेज. 356)

मौला अली (अ.स.) नें फरमाया! तुम्हारा गौर व फ़िक्र करना तुम्हें बसीरत से नवाज़े गा, और तुम्हें इबरत हासिल करनें की सलाहियत अता करेगा.

तशरीह:

इंसान को किसी काम को अंजाम देनें से पहले गौर व फ़िक्र कर लेना चाहिये. ताकी बाद में पशेमान न हो. इसी लिये कुरआन व रवायात में गौर व फ़िक्र करनें का हुक्म दिया है. काम करनें से पहले मश्वेरह और गौर व फ़िक्र इन्तेहाई ज़रूरी है. वरना बाज़ अवकात मशवेरह और फ़िक्र न करनें की वजह से परेशानियां उठानी पड़ती हैं. खुदा नें इंसान को अक़्ले सलीम इसी वजह से अता की है. कि वह ज़मीन व आसमान वगैरह की खिल्कत में गौर व फ़िक्र करे. और बसीरत हासिल करे गौर व फ़िक्र करनें से इंसान हिदायत पाता है. और यही तफ़क्कुर इंसान को नेक अमल की तरफ दावत देता है. और इंसान उस बारे में फ़िक्र करने पर मजबूर होता है. कि खुदा नें हमें अबस और बेहूदह खल्क नहीं किया और अल्लाह

तआला ने साहेबाने फ़िक्र व नज़र के लिये कुरआन में वाज़ेह निशानियां बयान की हैं. खुदा से दुआ करते हैं. बहक्के अबुल फज़्लिल अब्बास (अ.स.) हम सब को सहीह फ़िक्र करने की तौफीक अता फरमाऐ- (आमीन)

वाकेआत:

1-जैसी फ़िक्र वैसा सवाब:

हज़रत अली (अ.स.) के बावफा साथी मेक्दाद कहते हैं. मैं अबु होरैरह के पास गया तो मैंनें सुना कि वह कह रहा था कि पैगंम्बरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया! एक घड़ी फ़िक्र करनां एक साल की इबादत से बेहतर है. (फिर मैं) इब्ने अब्बास के पास गया तो सुना कि वह फरमा रहे थे, कि पैगंम्बरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया! एक साअत (लम्हे) फ़िक्र करना सात साल की इबादत से बेहतर है. (फिर मैं) किसी और सहाबी के पास गया उससे सुना कि कौले रसूल खुदा (स.अ.व.) है कि आंहज़रत (स.अ.व.) नें फरमाया: एक लम्हा फ़िक्र करनां सत्तर साल की इबादत से बेहतर है.

मिक्दाद कहते हैं मैंने तअज्जुब किया, कि हरऐक दूसरे के खेलाफ हदीस नकल कर

रहा है. मैं रसूलेखुदा (स.अ.व.) के पास आया और तीनों हदीसों को बयान किया. पैगंम्बरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया: अय (मिक्दाद) वह तीनों बिलकुल सहीह कह रहे हैं. उस्के बाद इस मतलब को वाज़ेह करनें के लिये पैगंम्बरे अकरम (स.अ.व.) नें उन तीनों को अपने पास बुलवाया, और वो तीनों आंहज़रत की खिदमत में आये. मैं भी वही मौजूद था. रसूले खुदा (स.अ.व.) नें अबुहोरैरह से फरमाया! तुम क्या फ़िक्र करते हो, अबुहोरैरह नें कहा: मैं कुरआन के मुताबिक फ़िक्र करता हूँ, जो कुछ कुरआन नें कहा है ''साहेबाने फ़िक्र व नज़र ज़मीन व आसमान की तखलीक में गौर व फ़िक्र करते हैं'' मैं भी ज़मीन व आसमान के असरार और उस्की तखलीक (पैदा होने) के बारे में गौर व फिक्र करता हूँ. पैगंम्बरे अकरम

(स.अ.व.) नें फरमाया: तेरी एक साअत की फ़िक्र एक साल की इबादत से बेहतर है.

उस्के बाद इब्ने अब्बास से फरमाया: तुम क्या फ़िक्र करते हो? इब्नें अब्बास नें जवाब दिया: मैं मौत और रोज़े कयामत के बारे में गौर व फ़िक्र करता हूँ. पैगंम्बरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया: तुम्हारी एक घड़ी की फ़िक्र सात साल की इबातद से अफज़ल व बेहतर है.

उस्के बाद सहाबी से पूछा कि तुम क्या फ़िक्र करते हो? उसनें जवाब में अर्ज किया: मैं जहन्नम की आग और उस्की सख्ती और अज़ाब के बारे में गौर व फ़िक्र करता हूँ'' पैगंम्बरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया: तुम्हारी एक लम्हा की फ़िक्र सत्तर साल की इबादत से बेहतर है.

इस तरतीब के साथ मुख्तलिफ गौर व फ़िक्र का मसअला एक इख्तेलाफी मसअला बन

गया. कि फ़िक्र करने की जज़ा और पादाश इंसान की नीयत से वाबस्तह है, जैसी फ़िक्र होगी वैसा अज्र दिया जाएगा!

(गंजीनए मआरिफ जिल्द. 1 पेज 281, नक्ल अज़ तफसीरे रूहुल बयान जिल्द 8. पेज 440.)

2-नसीहत पैगंम्बरे अकरम (स.अ.व.)

एक शख्स रसूले अकरम (स.अ.व.) की खिदमत में हाज़िर हुवा. अर्ज की या रसूलुल्लाह (स.अ.व.) मुझे नसीहत फरमाएं. आंहज़रत (स.अ.व.) नें फरमाया: अगर मैं तुझे नसीहत करूं तो तुम उस पर अमल करोगे?. उस मर्द नें जवाब में कहा जी हाँ. इस स्वाल व जवाब का रसूल (स.अ.व.) और उस शख्स के दरमियान तीन बार रद्दो बदल (तकरार) हुवा, जब भी रसूले खुदा (स.अ.व.) उस से फरमाते: अगर नसीहत

करूं अमल करोगे? तो वह शख्स हर बार जवाब में कहता: जी हाँ. अमल करूँगा.

जब रसूले अकरम (स.अ.व.) नें उस शख्स से इकरार और तअहुद लेलिया तो आप (स.अ.व.) नें उससे फरमाया: जब भी किसी काम का इरादा करो तो पहले तफक्कुर व तदब्बुर और उस्के नतीजे को देखो! अगर उस्के नतीजे में कामियाबी और हिदायत है तो उस काम के पीछे जाव और उस्को अंजाम दो और अगर उस्का नतीजा बुरा और गुमराह कुन है तो उससे दूर रहो.

रसूले खुदा (स.अ.व.) का उस शख्स से इकरार और वादा लेने से मालूम होता है कि पैगंम्बर अकरम (स.अ.व.) उस (तफक्कुर व तदब्बुर) के बारे में कितनी अहमीयत के क़ाऐल हैं. और हम को सम्झाना चाहते हैं. कि गौर व फ़िक्र की अपनें अंदर आदत पैदा करो और हर काम को अंजाम देनें से पहले

उस में गौर व फ़िक्र करो और उस्के नतीजे व आकेबत की तरफ नज़र रख्खो, वरना उस से पहले उस काम को अंजाम न दो. (गंजीनए मआरिफ जिल्द 1. पेज 282, नक्ल अज़ बिस्त गुफ्तार शहीद मुतहहरी पेज. 192.)

16) तक़वा

आयात:

1-इकराम:

اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ

(सूरए हुजरात आयत 13.)

बेशक तुम में से खुदा के नज़दीक ज़्यादह मोहतरम वही है जो ज़्यादह परहेज़ गार है. और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला और हर बात से बा खबर है.

2-तक़वा बेहतरी लिबास:

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَ رِيْشًا ؕ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ ذٰلِكَ خَيْرٌ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ

(सूरए अअराफ आयत 26)

अय अवलादे आदम हम नें तुम्हारे लिये लिबास नाज़िल किया है. जिस से अपनी शरमगाहों का पर्दा करो, और जीनत का लिबास भी दिया है. लेकिन तक़वा का लिबास सब से बेहतर है. और यह अल्लाह की निशानियों में से एक है. शायद वह लोग इबरत हासिल कर सकें.

3-खुदा मुत्तकीन के साथ:

فَاِنِ انْتَہَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَی الظّٰلِمِیْنَ

(सूरए बकरह आयत 194)

और अल्लाह से डरों और यह समझ लो कि खुदा परहेज़ गारों के साथ है.

4-अदालत:

وَلَا یَجْرِمَنَّکُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰۤی اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۟ ہُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰی ۫ وَاتَّقُوا اللّٰہَ

(सूरए बकरह आयत 194)

और खबर दार किसी कौम की अदावत (दुश्मनी) इस बात पर आमादा न करदे कि इन्साफ को तर्क करदो. इन्साफ करो कि यही तक़वा से करीब है, और अल्लाह से डरते रहो.

5-तशखीसे हक़ व बातिल:

يَاۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِنۡ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجۡعَلْ لَّكُمۡ فُرۡقَانًا وَّ يُكَفِّرۡ عَنۡكُمۡ سَيِّاٰتِكُمۡ وَيَغۡفِرۡ لَكُمۡ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الۡفَضۡلِ الۡعَظِيۡمِ

(सूरए अनफाल आयत 29.)

ईमान वालो अगर तुम तक़वाऐ इलाही अख्तियार करोगे. तो वह तुम्हे हक व बातिल मे फर्क करने की सलाहियत अता कर देगा. तुम्हारी बुराइयों की पर्दह पोशी करेगा. तुम्हारे गुनाहों को माफ़ करदेगा. कि वह बड़ा फज्ल करने वाला है.

रवायात:

1-अहमियत तक़वा:

قال أمير المومنين عليه السلام : اَلتَّقْوىٰ مِفْتَاحُ الصَّلَاحِ

गोररुल हेकम जिल्द 2, पेज 746.

अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) नें फरमाया! तक़वा कामियाबी की चाबी है.

2-सरदारे इखलाक:

قال أمير المومنين عليه السلام : اَلتَّقْوٰي رَئِيْسُ الْاَخْلَاقِ

(गोररुल हेकम जिल्द 2, पेज. 746.)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया! तक़वा इखलाक का सरदार है.

3-बेहतरीन लिबास:

قال أمير المومنين عليه السلام : ثَوْبُ التُّقْيِ اَشْرَفُ الْمَلَابِسِ

(गोररुल हेकम जिल्द 2 पेज. 747

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: तक़वा का लिबास शरीफाना और बेहतरीन लिबास है.

4-अंबिया का इखलाक:

قال أمير المومنين اله السلام : عَلَيْكَ بِا التُّقَى فَاِنَّهُ خُلُقُ الْأَنْبِيَاءِ

(गोररुल हेकम जिल्द 2 पेज. 748)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: तुम्हारे लिये ज़रूरी है कि तक़वा अखतियार करो कि यह अंबिया का इखलाक है.

5-बेहतरीन तूशाऐ राह;

قال أمير المومنين عليه السلام : التَّقْوِيْ خَيْرُزَادٍ

गोररुल हेकम जिल्द 1 पेज 745

मौलाए काएनात (अ.स.) नें फरमाया: तक़वा बेहतरीन जादे राह है.

तशरीह:

इस्लाम में फज़ीलत और शराफत का मेयार कौम व कबीला नहीं है. बल्की तक़वा व किरदार है. जहां पर नूह (अ.स.) के लड़के को गर्क (डूबा दिया जाता है) करदिया जाता है, और सलमान को अहलेबैत (अ.स.) में शामिल कर लिया जाता है.

अपनें को गुनाहों और मासियतों से दूर रखना, और हलाक करने वाली आफतों और बालाओं से बचाना, एक अय्सी हकीकत है. जिसको कुरआन करीम और रवायात नें “तक़वा” के उन्वान से याद किया है.

तक़वा उस हालत का नाम है जो गुनाहों से इज्तेनाब (दूरी) और इबादते खुदा से हासिल होती है, और तक़वा दीनी अक़दार और मानवी जीबाई (खूबसूरती) में एक खास अज़मत रखता है. सिर्फ मुत्तकी व परहेज़गार ही में हिदायते इलाही के आसार ज़ाहिर होते

हैं. और जन्नत भी सिर्फ और सिर्फ अहले तक़वा के लिये बनाई गई है.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के इमामुल मुत्तकीन हज़रत अली इब्नें अबी तालिब (अ.स.) हमें मुत्तकी व परहेज़गार बननें की तौफिक अता फरमाऐ (आमीन)

वाकेआत:

1-परहेज़गार जवान:

कबीलऐ अंसार का एक शख्स कहता है: गर्मी के दिनों में ऐक रोज रसूले खुदा (स.अ.व.) के साथ एक दरख़्त के साये में बैठा हुवा था. एक शख्स आया जिसनें अपना कुर्ता उतारा और गर्म रेत पर लोटना शुरू करदिया, कभी पीठ के बल कभी पेट के बल और कभी चेरा गर्म रेत पर रख कर कहता था. अय नफ्स इस गर्म रेत का मज़ा चख, क्यूंकी खुदा वंदे आलम का अज़ाब तो इस से कहीं ज़्यादह सख्त है.

रसूले अकरम (स.अ.व.) इस वाक़ऐ को देख रहे थे. जिस वक्त वह जवान वहाँ से उठा, और अपनें कपडे पहन कर हमारी तरफ देख कर जाना चाहा तो पैगंबरे अकरम (स.अ.व.) नें उस्को अपनें पास बुलाया. जब वह हज़रत के करीब आया तो आंहज़रत (स.अ.व.) नें

उससे फरमाया: अय बंदऐ खुदा! मैंनें अबतक किसी को ऐसा काम करते हुवे नहीं देखा इस काम की वजह क्या है. तो उसनें अर्ज किया खौफे खुदा मैंनें अपनें दिल में ठान लिया है. ताकि शहवत और तुग़यान (हैजान) से महफूज़ रहूँ.

पैगंबरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया तूने खुदा से डरने का हक़ अदा करदिया है. खुदा वंद आलम तेरे ज़रिये अहले आसमान पर फख्र व मुबाहात करता है. उस्के बाद आंहज़रत (स.अ.व.) नें अपने असहाब से फ़रमाया: सब लोग अपनें इस दोस्त के पास जमा होजाव ताकी यह तुम्हारे लिये दुआ करे. सब असहाब जमा हो गये, तो उसनें इसतरह से दुआ की: पालने वाले हमारी जिंदगी हीदायत पर गामज़न (बाकी)) रख तकवा को हमारा ज़ादे राह और बहिश्त को हमारी मंजिले मक़सूद बना दे.

(तौबह आगोशे रहमत (उर्दू ज़बान में) पेज. 247)

2-परवरदिगार मुत्कीन के आमाल को क़बूल करता है:

हज़रत इमामे सादिक़ (अ.स.) ने फरमाया: मैंनें अहले सुन्नत अफराद से एक शख्स की बड़ी तारीफ सुनी, और उस्के अल्लाह वाला और साहिबे करामत होनें की कई दास्तानें सुनीं, मुझे उसे देखने का शौक़ पैदा हुवा.

इत्तेफाक से मैंनें उसे एक मुकाम पर देखा, लोग उस्के इर्द गिर्द जमा थे. और वह लोगों को अपनें आप से दूर कर रहा था. उसनें कपडे से अपना चेहरा छुपा रख्खा था. और उस्की पेशानी और आँखें ज़ाहिर थीं. वह अपने चाहने वालों को अपनें आप से दूर करता गया, आखिर कार वह अकेला एक रास्ते पर चलनें लगा, मैं भी खामोशी से उस्के पीछे पीछे चलता रहा, रास्ते में नान

बाई (रोटी पकानें वाला) की एक दूकान थी. जहां लोगों की काफी भीड़ थी. यह शख्स वहाँ गया मैंनें देखा कि उसनें वहाँ से दो रोटियां चुराई, और चलता बना फिर आगे ऐक शख्स अनार बेच रहा था. उसनें उस्की गफलत से फ़ाऐदा उठाया और दो अनार चोरी कर लिये. मैं यह माजरा देख कर सख्त तअज्जुब में पड गया कि यह शख्स भी चोरी करता है.

चंद कदम चलनें के बाद रास्ते मे, उसने एक मरीज़ को देखा, तो वह रोटियां और दो अनार उसे दे दिये, मैंनें उसे आवाज़ दी तो वह रुक गया, मैंनें उस से कहा अय बंदऐ खुदा मैंनें तेरी बहुत तारीफें सुनीं थीं और तुझे देखनें का ख्वाहिश मंद था. लेकिन आज मैंनें तुझे देखा तो मुझे तुम्हारी इस हालत पर बहुत ही दुख और अफ़सोस हुवा. उसनें कहा तूनें क्या देखा और मेरी किस

बात से तुम्हें दुख पहुँचा है. इमाम (अ.स.) नें फरमाया मैंने तुझे नान बाई (रोटी बेचनें वाले) की दूकान से दो रोटियां और अनार बेचनें वाले की दूकान से दो अनार चोरी करते देखा. जब मैंनें यह अलफ़ाज़ कहे तो उसनें मुझे दोबारह बात करनें की मोहलत ही न दी. और फौरन बोल पड़ा तू कौन है.

मैंनें कहा मेरा तअल्लूक अहलेबैते रसूल (स.अ.व.) से है. उसनें मेरा वतन पूछा तो मैंनें कहा मेरा घर मदीनें में है. उसनें कहा फिर यकीनन आप जाफर बिन मोहम्मद बिन अली बिन हुसैन (अ.मु.स.) हैं. मैंनें कहा बिकुल में वही हूँ. उस शख्स नें कहा रसूल अकरम (स.अ.व.) से तुम्हारी निस्बत तुम्हें क्या फ़ाइदा देगी. जब की तुम अपनें नाना के इल्म से ना वाकिफ हो. मैंनें कहा बयान करो मैं कैसे नावाकिफ हूँ. उसनें कहा:

शायद तुम नें कुरआन की यह आयत नहीं पढ़ी जिस में अल्लाह तआला नें फरमाया:

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا

जो शख्स एक नेकी करेगा उस्के नामए आमाल में दस नेकियां लिखी जाएँगी और जो एक बुराई करेगा उस्की सजा उतनी ही है.

तो अब सुनो: मैंनें दो रोटियां और दो अनार चोरी किये मेरे नामए आमाल में चार गुनाह दर्ज (लिखे गये) हुवे फिर मैंनें वह दो रोटियां और दो अनार राहे खुदा में एक मरीज़ को दे दें तो मेरे नामए आमाल में चालीस नेकियां दर्ज हुईं. अब चालीस से अगर चार को घटा दो तो फिर भी मेरे नामए आमाल में 36 नेंकिया बच जाएॅ गीं.

मैं (इमाम अ.स.) नें उस्की बात सुन कर कहा.

ثَكِلَتْكَ اُمُّكَ

''तेरी माँ तेरे गम में रोऐ. तुझे तो किताबे खुदा का ज़र्रह बराबर भी इल्म नहीं है. अल्लाह तआला ने कुरआन में वाज़ेह तैर पर फरमाया है.

اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ

''अल्लाह परहेज़ गारों के आमाल को कबूल करता है.

अब तूनें दो रोटियां और दो अनार चोरी किये. तेरे नामऐ आमाल में चार बुराइयां दर्ज हुईं और फिर तूनें उन चीज़ों के मालिक की इजाज़त के बगैर उन में तसर्रुफ किया. तो चार गुनाह और तुम्हारे नामऐ आमाल में लिख दिये गये. इस तरह तेरे नामऐ आमाल में आठ गुनाह लिखे गये. जब कि नेकी एक

भी दर्ज नहीं हुई. वह शख्स इमाम (अ.स.) का इस्तेद्लाल (दलील) सुनकर हैरान होगया, और रोने लगा. (पिंद तारीख जिल्द 4,पेज 141, गंजीनए मआरिफ जिल्द 1 पेज 310.)

17) तकब्बुर

आयात

1-तकब्बुर से पनाह:

قَالَ مُوسَىٰٓ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُم مِّن كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ

सूरए गाफ़िर आयत 27

और मूसा (अ.स.) नें कहा कि मैं अपनें और तुम्हारे परवर दीगार की पनाह चाहता हूँ, हर उस मुतकब्बिर से जिस का रोज़े हिसाब पर ईमान नहीं.

2-मुतकब्बिर के दिल पर मोहर:

كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ

(सूरए गाफिर आयत 35.)

और उसी तरह अल्लाह हर मुतकब्बिर और सरकश इंसान के दिल पर मुहर लगा देता है.

3-शैतान के काफिर होनें का सबब:

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِکَۃِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِیْسَ ؕ اَبٰی وَاسْتَکْبَرَ ٭ۡ وَکَانَ مِنَ الْکٰفِرِیْنَ

(सूरए बकरह आयत 34)

और याद करो वह मौक़ा जब हम नें मलाऐका से कहा कि आदम केलिये सज्दा करो. तो इबलीस के अलावा सब नें सज्दा करलिया. उसने इनकार और तकब्बुर से काम लिया और काफेरीन में से हो गया.

4-शैतान का तकब्बुर:

قَالَ مَا مَنَعَکَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُکَ ؕ قَالَ اَنَا خَیْرٌ مِّنْہُ ۚ خَلَقْتَنِیْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَہٗ مِنْ طِیْنٍ قَالَ فَاہْبِطْ مِنْہَا فَمَا یَکُوْنُ لَکَ اَنْ تَتَکَبَّرَ فِیْہَا فَاخْرُجْ اِنَّکَ مِنَ الصّٰغِرِیْنَ

(सूरए अअराफ आयात 12-13.)

इरशाद हुवा कि तुझे किस चीज़ नें रोका था कि तूनें मेरे हुक्म के बाद भी सज्दा नहीं किया. उसनें कहा मैं उन (आदम) से बेहतर हूँ. तूनें मुझे आग से पैदा किया है, और उन्हें मिट्टी से बनाया है. फरमाया: तू यहाँ से चला जा तुझे हक नहीं है कि यहाँ तकब्बुर व गोरूर से काम ले. निकल जा कि तू ज़लील लोगों मेंसे है.

5-मूतकब्बेरीन का ठीकाना:

فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ

(सूरए नहल आयत 29.)

जाव अब जहन्नम के दरवाजों से दाखिल हो जाव और हमेशा वहीं रहो क्यूंकि मुतकब्बेरीन का ठेकाना बहुत बुरा है.

रवायात:

1-तकब्बुर गुनाह की दावत:

قال أمير المومنين عليه السلام : اَلْكِبْرُدَاعٍ إِلَي التَّقَحُّمِ فِي الذُّنُوبِ

(गोररुल हेकम जिल्द 2, पेज 430)

अमीरुल मोंमेंनीन (अ.स.) नें फरमाया: तकब्बुर गुनाहों में मुब्तेला होनें की दअवत देता है

2-मुतकब्बिर जन्नत में नहीं जा सकता:

قال الباقر و الصادق عليهما السلام : قَالَا لَا يُدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ مِنْ كِبْرٍ

(किताब अल शाफी तर्जुमह ओसूले काफी जिल्द 4, पेज 272)

इमाम मोहम्मद बाकिर (अ.स.) और इमाम सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: वह शख्स

जन्नत में दाखिल नहीँ हो सकता जिस के दिल में ज़र्रह बराबर भी तकब्बुर हो.

3-सब से बुरा तकब्बुर:

قال الصادق علیہ السلام : اَلْكِبْرُ أَنْ تَغْمِصَ النَّاسَ وَ تَسْفَهَ الْحَقَّ

(किताब अल शाफी तर्जुमह ओसूले काफी जिल्द 4, पेज 272)

इमामे सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: सब से बद तर तकब्बुर यह है कि. लोगों को हकीर समझे और हक़ बात को बेवकूफी से निस्बत दे.

4-क़यामत के दिन मुतकब्बेरीन की हालत:

قال الصادق علیہ السلام : إِنَّ الْمُتَكَبِّرِينَ يُجْعَلُونَ فِي صُوَرِ الذَّرِّ يَتَوَطَّأُهُمُ النَّاسُ حَتَّي يَفْرَغَ اللهُ مِنَ الْحِسَابِ

(जिल्द 4 पेज 273 किताब अल शाफी)

इमामे सादिक (अ.स.) नें फरमाया मुतकब्बिर लोग रोज़े क़यामत चूंटीयों की शक्ल में बना दिये जाएँ गें. और लोग हिसाब से फारिग होने तक उन्हें पैरों तले कुचलते रहेंगे.

5-बद तरीन अय्ब:

قال امیر المومنین علیہ السلام : اَلْکِبْرُ شَرُّ الْعُیُوْبِ

गोररुल हेकम जिल्द 2 पेज 431

मौलाऐ मुत्कीयाँन अली इब्नें अबि तालिब (अ.स.) नें फरमाया: तकब्बुर बद तरीन अय्ब है.

तशरीह:

तकब्बुर, शैतानीं सिफत, खुदा के मुकाबिले में आनें का बाइस और लोगों को ज़लील व ख्वार समझनें वाली चीज़ है. तकब्बुर करनें वाला शैतानी गिरोह, और इबलीस का साथी, और खुदा की नज़र में मलऊन, और उस्की रहमत से महरूम है. इबलीस एक सज्दा के इनकार से काफिर होगया. तो मुस्तकिल सज्दा को तर्क करनें वालों का अंजाम क्या होगा. इस नुक्तेह पर साहिबे इल्म व अक्ल को गौर करना चाहिए. इबलीस अपने तकब्बुर व गुरूर की वजह से बारगाहे यज़दी से निकाल दिया गया. और लानत का तौक हमेशा हमेशा के लिये उस्की गर्दन में डाल दिया गया. उसी तरह तकब्बुर करनें वाला शख्स अपने तकब्बुर व गुरूर की वजह से इंसानियत और मकामे आदमीय्यत को खो बैठता है.

इमामे अली (अ.स.) फरमाते हैं: वाकेअन इंसान पर तअज्जुब होता है कि जिस की इब्तेदा नुत्फह और जिस का अंजाम एक बदबूदार मुरदार है. यानी जिसकी इब्तेदा और इन्तेहा नजासत है. लेकिन फिर भी वह तकब्बुर करता है.

खुदा से दुआ करते हैं. बहक्के मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.मु.स.) हमें इस बुरी सिफत से बचनें की तौफीक अता फरमा (आमीन)

वाकेआत:

1-कारून का तकब्बुर:

कारून हज़रत मूसा (अ.स.) का खाला ज़ाद भाई था. खुदा वंद आलम नें इतना माल और दौलत अता की थी. कि जिस के खजाने की चाबियाँ एक ताक़तवर जामात नहीं उठा सकती थी. लेकिन यह शख्स अपनी कौम पर ज़ुल्म करता था. कौम के लोग उसे नसीहतें किया करते थे. कि गुरूर व तकब्बुर से बाज़ आजा, और लोगों के साथ नेक सुलूक कर. ज़मीन पर फसाद न फैला और यतीमों कमजोरों और हाजत मंदों के साथ अच्छा बर्ताव कर. तो वह जवाब में कहता:

إِنَّمَآ أُوتِيتُهُۥ عَلَىٰ عِلْمٍ عِندِىٓ

(सूरे केसस आयत 78)

यह माल व दौलत तो मुझे अपनें इल्म की वजह से हासिल हुवा है.

(हज़रत मूसा (अ.स.) इल्मे कीमिया (कमिस्टरी) जानते थे और उस में से कुछ चीज़ें आप नें यूशा बिन नून को तालीम फरमाई थीं. और कुछ का 'लब बिन यूहना' को और कुछ कारून को यानी पूरा इल्म किसी के पास न था. लेकिन कारून नें बाकी इल्म उन दोनों से हासिल कर लिया. और इल्मे कीमिया का मालिक बन गया. और बड़ी दौलत हासिल करली (हाशियह फरमान अली पेज 269.) क्या कारून नें यह भी खयाल न किया. कि अल्लाह इस से पहले उन लोगों को हलाक कर चूका है. जो उस से ताकत और तेदाद के ऐतबार से कहीं ज़्यादा थे. उन्हों नें खुदा के हुक्म के सामनें गुरूर व तकब्बुर किया. और खुदा नें सब को फना के घाट उतार दिया.

एक दिन कारून अपनी कौम के सामनें बड़े ठाट बाट के साथ निकला जो लोग दुन्या

की चंद रोज़ा जिंदगी के तालिब थे. उस शान को देख कर कहने लगे. जो माल व दौलत कारून को अता हुई है. काश हमारे पास भी होती. अचानक अज़ाबे खुदा नें उस्को अपनी गिरफ्त में लिया. इरशाद हुवा:

فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ٭ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ

(सूरे केसस आयत 81)

और हमनें कारून और उस्के कसर को ज़मीन में धंसा दिया फिर तो खुदा के सिवा कोई जमात ऐसी न थी. कि उस्की मदद करती और न वह खुद अपनी मदद कर सका.

हलाकत और बद बखती नें इस तरह उसे अपनीं गिरफ्त में लिया कि जो लोग कल उसपर हसद करते थे. आज वही कहते हैं. अलहम्दुलिल्लाह अच्छा हुवा कि हम कारून

की जगह पर नहीँ थे. वरना हम भी गुरूर व तकब्बुर की वजह से हलाक हो जाते. (इबरत अगेज़ वाकेआत पेज 55.)

2-मख्खी और मंसूर दवान्की:

एक दफ़ा का ज़िक्र है कि इमामे जाफर सादिक़ (अ.स.) मंसूर दवान्की के पास बैठे हुए थे. एक मख्खी मंसूर को परेशान कर रही थी. मंसूर उसे उडाता. मगर वह दुबारा आकर उस्के मुंह पर बैठ जाती. वह फिर उडाता वह फिर आकर बैठ जाती थी. अल्गरज़ मख्खी नें मंसूर को बे बस कर दिया था. तंग आकर मंसूर नें कहा अय अबा अबदिल्लाह! भला मख्खियों का क्या फ़ाइदह है? لِاَ يِّ شَـيْءٍ خَلَقَ اللهُ الذُّبَابَ क्यूं खुदा नें मख्खियो को खल्क किया? इमाम जाफर सादिक़ (अ.स.) नें फ़ौरन जवाब दिया.

لِيُذِلَّ بِهِ الْجَبَّارِيْنَ

अल्लाह नें सरकशों को रुसवा करनें के लिये मख्खियाँ पैदा की हैं.

इमाम (अ.स.) का जवाब सुनकर मंसूर सख्त हैरान हुवा और कुछ न कह सका. लेकिन सोचनें लगा कि किसी मुनासिब मौक़े पर इमाम (अ.स.) को क़त्ल करदे (यक सदो पंजाह मौजू अज़ कुरआन करीम व अहादीसे अहलेबैत (अ.मु.स.) पेज 327, कश्कोल दस्तेगैब जिल्द 2, पेज 197.)

18) तवाज़ोअ

आयात:

1-खुदा के बंदे:

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا

(सूरए फुरकान आयत 63)

और खुदा के बंदे वही हैं जो ज़मीन पर आहिस्तह चलते हैं.

2-तवाजोअ की बशारत:

وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ

(सूरए हज आयत 34)

और हमारे गिड गिडाने वाले बन्दों को बशारत दो

3-खुदा के नज़दीक तवाजो का मक़ाम:

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ

(सूरए हूद आयत 23)

बेशक जो ईमान ले आये और उन्हों नें नेक आमाल अंजाम दिये, और अपनें रब की बारगाह में आजेज़ी से पेश आये वही अहले जन्नत हैं. और हमेशा उस में रहनें वाले हैं.

4-चलनें मैं तवाजो:

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا

(सूरए असरा आयत 37)

और ज़मीन के ऊपर अकड के न चलना.

5-बात करनें में तवाजो:

فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَّيِّنًا

(सूरए ताहा आयत 44)

उस से नरमी से बात करना.

रवायात:

1-खुदा से नजदीक कौन?

عَنْ أَبِي عَبْدِ اللهِ عَلَيْهِ السَّلَامُ قَالَ فِيمَا أَوْحَى اللهُ عَزَّ وَ جَلَّ إِلَى دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ يَا دَاوُدُ كَمَا أَنَّ أَقْرَبَ النَّاسِ مِنَ اللهِ الْمُتَوَاضِعُونَ كَذَلِكَ أَبْعَدُ النَّاسِ مِنَ اللهِ الْمُتَكَبِّرُونَ

इमामे सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: खुदा नें हज़रत दाऊद की तरफ वही की, अय दाऊद जिस तरह तवाजोअ करने वाले अल्लाह से ज़्यादा करीब हैं. उसी तरह तकब्बुर करनें वाले उस से ज़्यादह दूर हैं.

2-बुलंद मरतबा:

قال الصادق عليه السلام : إِنَّ فِي السَّمَاءِ مَلَكَيْنِ مُوَكَّلَيْنِ بِالْعِبَادِ فَمَنْ تَوَاضَعَ لِلهِ رَفَعَاهُ وَمَنْ تَكَبَّرَ وَضَعَاهُ

(किताब अल शाफी जिल्द 3 पेज 428)

इमामे सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: आसमान पर दो तरह के फ़रिश्ते बन्दों पर मोअय्यन किये गये हैं. एक वह जो कुर्बतन इलल्लाह तवाजोअ करने वालों का रुत्बा बलंद करते हैं, और दूसरे वह जो तकब्बुर करनें वालों को उन्के मरतबे से गिरा देते हैं.

3-सलाम करना:

قال الصادق عليه السلام : مِنَ التَّوَاضُعِ أَنْ تَرْضِيَ بِا

الْمَجْلِسِ دُوْنَ الْمَجْلِسِ وَأَنْ تُسَلِّمَ عَلِيٰ مَنْ تَلْقِيٰ

(किताब अल शाफी जिल्द 3, पेज 429)

इमाम सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: तवाजोअ यह है कि किसी मजलिस में नीचे मक़ाम पर बैठे, और जिस से मिले उसे सलाम करे.

4-अज़ीम इबादत:

قال أمير المومنين عليه السلام : عَلَيْكَ بِالتَّوَاضُعِ فَإِنَّهُ مِنْ أَعْظَمِ الْعِبَادَةِ

(ओसूले काफी जिल्द 2 पेज 123.)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: तुम्हारे लिये ज़रूरी है कि तवाज़ोअ करो क्यूंकि तवाजोअ अज़ीम इबादत है.

5-इत्मामे नेअमत:

قال أمير المومنين عليه السلام : بِالتَّوَاضُعِ تُتِمُّ النِّعْمَةُ

(नहजुल बलागा कलमऐ क़ेसार 224.)

अमीरुल मोमेनीन (स.अ.) नें फरमाया: तवाज़ोअ के ज़रिये नेमत तमाम होती है.

तशरीह:

कलमए 'तवाजोअ' कुरआंन मजीद में ज़िक्र नहीं हुवा है लेकिन दूसरे अलफ़ाज़ जो उस्के मफहूम को बयान करते हैं मसलन 'हब्बत' 'खफ्फज़ जिनाह' 'लय्यीन' 'जिल्लह' 'हौन' वगैरह इस्तेअमाल हूये हैं.

तवाजोअ खातिर मदारात, मेहमान नवाज़ी, आज्ज़ी व इंकेसारी के माना में इस्तेअमाल होता है. इमाम रेज़ा (अ.स.) नें फरमाया तवाज़ोअ यह है कि तुम लोगों को वह अता करो जिसे तुम चाहते हो. कि कोई तुम्हें अता करे. रावी कहता है कि मैंनें पूछा तवाजोअ की हद क्या है. जिस के करने पर बंदा मोआशरे (समाज) में मुतावाज़ेअ समझा जाऐ? फरमाया: तवाजो के दरजात हैं उन में से एक दरजा यह है कि इंसान सच्चे दिल से लोगों के सामनें खुद को अपनें मक़ाम से नीचा दिखाऐ, और यह बात पसंद करे कि

दूसरों को वही मिले जिसे वह अपने लिये चाहता है, और अगर किसी से बुराई देखे तो उस्का बदला नेकी से दे, गुस्से को पी जानें वाला, ग़लतियों को मोआफ़ करदे (यह तमाम काम ऐहसान शुमार किये जाते हैं) और अल्लाह ऐहसान करनें वालों को दोस्त रखता है.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.मु.स.) हमें तवाज़ोअ व इंकेसारी की, और लोगों के साथ तवाज़ोअ से पेश आनें की, तौफीक अता फरमाऐ.

वाकेआत:

1-तवाज़ोअ और बुलंदी:

इमाम सादिक़ (अ.स.) से मन्कूल है कि नज्जाशी (बादशाहे हब्शह) ने जनाबे जाफर बिन अबी तालिब (अ.स.) और उन्के असहाब को (अपनें घर) बुलाया. जब वह लोग वहाँ पहुंचे तो क्या देखा कि वह अपनें घर में ख़ाक पर बैठा हुवा है. और पुराना लिबास पहने हुऐ है. जनाबे जाफर (अ.स.) का बयांन है कि हम उस की हालत देखकर डर गये. जब उसने हमारे चेहरों का रंग बदला हुवा देखा तो कहनें लगा: हम्द है उस खुदा की जिसनें मोहम्मद (स.अ.व.) की नुसरत की, उन्की आँखों को ठंढा किया. क्या मैं खुश खबरी सुनाऊँ? मैंने कहा ज़रूर उसनें कहा मेरे पास अभी अभी तुम्हारे मुल्क से मेरा एक जासूस आया है. जो वहाँ रहता है, और यह खबर लाया है कि, खुदा नें अपनें

मोहम्मद (स.अ.व.) की मदद की उन्के दुश्मनों को हलाक किया और फलां फलां फलां नामवर कुरैश क़ैद कर लिये गये हैं.

जनाबे जाफर (अ.स.) नें कहा अय बादशाह यह तो फरमाइये कि आप ख़ाक पर क्यूं बैठे हुये हैं, और यह पुरानें कपडे क्यूं पहनें हुये हैं. कहा हमनें जनाबे ईसा (अ.स.). पर नाज़िल हुई किताब में पढ़ा है कि बन्दों पर अल्लाह का हक़ यह है कि जब किसी नेमत के हासिल होनें पर बन्दों से बात करो तो तवाज़अ करो जब खुदा नें मुझे मोहम्मद (स.अ.व.) जैसे नबी की नेअमत दी तो मैं तवाज़ोअ व इंकेसारी से बात क्यूं न करू. यह तवाज़ोअ खुश्नूदिये खुदा के लिये है. जब हज़रत रसूले खुदा (स.अ.व.) को यह खबर मिली तो अपनें असहाब से फरमाया: सद्कह देनें से नेअमत ज़्यादह होती है. तुम सद्कह दो. अल्लाह तुम पर रहम करेगा.

तवाज़ोअ मुतवाज़ेअ की बुलंदियों को ज़्यादह करती है लेहाज़ा तवाज़ोअ अख्तियार करो खुदा तुम्हारा मर्तबह बुलंद करेगा और माफ़ करनां इज़्ज़त को बढाता है, पस अफव (माफ) करो अल्लाह तुम्हें इज़्ज़त देगा. (किताब अल शाफी जिल्द 2, पेज 227, गंजीनऐ मआरिफ जिल्द 1 पेज. 267.)

2-तवाज़ोअ हज़रत ईसा (अ.स.)

काफी में मन्कूल है कि हज़रत ईसा (अ.स.) बिन मरयम (अ.स.) नें हवारियों से फरमाया: तुम लोगों से मेरी एक ख्वाहिश है उस ख्वाहिश को पूरा करो. उन्हों नें अर्ज किया: अय रूहुल्लाह! आप की ख्वाहिश पूरी की जाऐगी. यह सुनते ही आप (अ.स.) नें अपनी जगह से उठ कर उन्के पाँव धोना शुरू करदिये यह माजरा देखकर वह लोग अर्ज करनें लगे कि यह काम तो हमें करनां चाहिए था, यह हमारे लिये मुनासिब था तो

आप नें फरमाया: खिदमते खल्क का सब से ज़्यादह हक़दार आलिम है. मैंनें इस किस्म की तवाज़ोअ इसलिए की है ताकी तुम मेरे बाद लोगों के साथ इस तरह तवाजोअ करो. जिसतरह मैंनें तुम्हारे साथ तवाजोअ की है. उस्के बाद ईसा (अ.स.) नें फरमाया! तवाजोअ के ज़रिये हिकमत आबाद होती है न तकब्बुर के ज़रिये. उसी तरह हमवार ज़मीन में खेती उगती है न पहाड़ में (शरहे हदीस जुनूदे अक्ल व जेहल पेज 313)

19) तौबह

आयात:

1-हकीकी तौबह:

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا

(सूरए फुरकान आयत 71)

और जो तौबह करेगा और अमले सालेह अंजाम देगा वह अल्लाह की तरफ वाकेँअन रोजू करने वाला है

2-तौबह का हुक्म:

وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ

(सूरए नूर आयत 31)

और साहेबाने ईमान तुम सब अल्लाह की बारगाह में तौबह करते रहो कि शायद इसी तरह तुम्हें फलाह और नजात हासिल हो जाये

3-खुदा तौबह को कबूल करता है:

وَہُوَ الَّذِیۡ یَقۡبَلُ التَّوۡبَۃَ عَنۡ عِبَادِہٖ وَیَعۡفُوۡا عَنِ السَّیِّاٰتِ

(सूरए शूरा आयत 25)

और वही वह है जो अपने बन्दों की तौबा को कबूल करता है, और उनकी बुराइयों को मोआफ करदेता है.

4-तौबह न करने का अंजाम

وَمَنۡ لَّمۡ یَتُبۡ فَاُولٰٓئِکَ ہُمُ الظّٰلِمُوۡنَ

(सूरए हुजरात आयत 11)

और जो शख्स तौबा न करे तो समझो कि यही लोग हकीकत में जालेमीन हैं.

5-तौबा के बाद इस्लाह:

فَمَنۡ تَابَ مِنۡۢ بَعۡدِ ظُلۡمِہٖ وَاَصۡلَحَ فَاِنَّ اللّٰہَ یَتُوۡبُ عَلَیۡہِ

(सूरए माएदह आयत 39)

फिर ज़ुल्म के बाद जो शख्स तौबा करे और अपनी इस्लाह करे तो खुदा उस्की तौबा कबूल करलेगा.

रवायात:

1-बनीं आदम खताकार हैं (गुनाह करने वाले हैं)

قال رسول الله (ص) : كُلُّ بَنِي آدَمَ خَطَّاءٌ وَخَيْرُ الْخَطَّائِينَ التَّوَّابُونَ

(तवबा अज़ नज़रे कुरआन व रवायात)

रसूले खुदा (स.अ.व.) नें फरमाया: तमाम बनी आदम खताकार हैं, और यह खताकार तौबा करनें वाले हैं.

2-हुक्मे अस्तग्फार:

قال رسول الله صلي الله عليه و اله وسلم : دوَاءُ الذُّنُوبِ الْاِسْتَغْفَارُ

(वसाएल अल शीआ जिल्द 16, पेज 65)

रसूले अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया: गुनाहों की दवा अस्तागफार है.

3-तर्के गुनाह:

قال أمير المومنين عليه السلام : تَرْكُ الذَّنْبِ أَهْوَنُ مِنْ طَلَبِ التَّوْبَةِ

(बिहारुल अन्वार जिल्द 70 पेज 364.)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया गुनाह न करना तौबा करनें से आसान है.

4-पशेमानी:

قال رسول الله صلي عليه و اله وسلم : اَلنَّدَمُ تَوْبَةٌ

(मीजान अल हिक्मह जल्द 1, पेज 546)

रसूले खुदा (स.अ.व.) नें फरमाया: पशेमानी तौबा है.

5-इबादत:

قال أمير المومنين عليه السلام : اَلتَّنَزُّهُ عَنِ الْمَعَاصِي عِبادَةُ التَّوّابِيْنَ

(मीजान अल हिक्मह जल्द 1, पेज 543)

हज़रत अमीरुल मोमेनीन अली (अ.स.) नें फरमाया: गुनाहों से दूरी तौबा करनें वालों की इबादत है.

तशरीह:

तौबा परवरदिगारे आलम की नेमतों में से एक नेअमत है. खुदावनदे आलम नें अपने लुत्फ़ व करम की बिना पर. गुनाहगार इंसानों के लिये एक ऐसा दरवाज़ा खोल रख्खा है. जिस से इंसान अपनें माज़ी का जुबरान करसकता है, और वह उस दरवाज़े से दाखिल होकर फकत अपनें नफ्स से गुनाहों की आलूदगी को दूर ही नहीं बल्की उस्के ज़रिये अपनें मानवी दरजात में इज़ाफ़ा भी कर सकता है. यह दरवाज़ा जिसे आसमानी व रूहानी हक़ीकत कहते हैं तौबा के अलावा कुछ नहीं. तौबा के ज़रिये गुनहगार इंसान खुदा वंदे आलम से कुर्बत हासिल करता है. तौबा का रुत्बह बहुत बलंद व बाला और अज़ीम है. रवायत में भी है कि. तौबा करनें वाला ऐसा है जैसे उसनें गुनाह ही नहीं किया. इसका मकसद यह

नहीं कि इंसान गुनाह करे फिर तैबा करे फिर वही गुनाह कर बैठे. नहीं बल्की तौबऐ नसूह करे. यानी दोबारा वह गुनाह अंजाम न दे तौबा करना इतना आसान नहीं जितना हम आसान समझते हैं. तौबा करना बहुत मुश्किल है. लेकिन इंसान को खुदा की रहमत से मायूस नहीं होना चाहिये.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.मु.व.) हम सब को गुनाहों से दूर रहने और उनसे तौबा करनें की तौफीक अता फरमाऐ (आमीन)

वाकेआत:

1-फाऐदे मंद तौबह:

किसी वलिये खुदा के ज़मानें में एक शख्स बहुत ज़्यादह गुनाहगार था. जिसने अपनी तमाम उम्र लह्व व लअब और बेहूदा चीज़ों में गुजारी और आखेरत के लिये कुछ भी जादे राह इकठ्ठा न कर सका.

नेक व सालेह लोगों नें उस से दूरी अख्तियार कर ली थी और वह भी नेक लोगों से कोई मतलब नहीं रखता था, आखिर उम्र में उसनें अपनें कारनामों पर निगाह डाली और अपनी उम्र का जाऐज़ा लिया तो उसे उम्मीद की कोई किरन नज़र नहीँ आई, बागे अमल की किसी शाख पर कोई गुल न था, यह देख कर उसनें एक ठंढी सांस ली और उस्के दिल के एक गोशे से आह निकल पडी, उस्के आँखों से आंसू

बहने लगे. तौबा व अस्तगफार के उन्वान से बारगाहे यज्दी में अर्ज किया:

يَا مَنْ لَهُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةُ اِرْحَمْ مَنْ لَيْسَ لَهُ الدُّنْيَا وَ الْاٰ

خِرَةُ

अय वह जो दुन्या व आखेरत का मालिक है. उस शख्स के ऊपर रहम कर जिस के पास न दुन्या है और न आखेरत.

उस्के मरने के बाद शहर वालों नें खुशी मनाई और उस्को शहर से बाहर किसी खंडहर में फ़ेंक दिया और उस्के ऊपर खस व खाशाक डाल दी.

उस मौके पर उस वलीये खुदा को आलमे ख्वाब में हुक्म हुवा कि उस्को गुस्ल व कफ़न दो और मुत्तकी परहेज़गारों के कबरस्तान में दफन करो.

अर्ज किया: अय रब्बुल आलमीन! वह एक मशहूर व मारूफ गुनाहगार व बद कार था,

वह किस चीज़ की वजह से तेरे नज़दीक अज़ीज़ और महबूब बन गया और तेरी रहमत व मगफेरत का हक़दार बन गया? जवाब आया उसनें अपनें को मुफलिस और दर्द मंद देखा तो हमारी बारगाह में गिरया व जारी की हमनें उस्को अपनीं आगोशे रहमत में ले लिया.

कौन ऐसा दर्द मंद है जिस के दर्द का हमनें इलाज न किया हो और कौन ऐसा हाजत मंद है जो हमारी बारगाह में रोऐ और हम उस्की हाजत पूरी न करें, कौन ऐसा बीमार है जिसनें हमारी बारगाह में गिरया व जारी की हो और हम नें उस्को शफा न दी हो (तौबह आगोशे रहमत बजुबाने उर्दू पेज. 154.)

2-इमामे अली (अ.स.) की नज़र में हकीकी तौबा:

इमामे अली (अ.स.) नें उस शख्स के बारे में फरमाया जिस नें ज़ुबान पर استغفر الله जारी किया था: अय शख्स: तेरी माँ तेरे सोग में बैठे, क्या तू जानता है कि तौबह क्या है? याद रख तौबा इल्लीयींन का दर्जह है, जो इन छे चीज़ों से मिलकर बनता है, उन के बगैर हासिल नहीं होसकता:

1-अपनें माज़ी पर शरमिन्दह और पशेमाँन होना.

2-दोबारा गुनाह न करने का पक्का इरादह करना.

3-लोगों के हुकूक का अदा करना.

4-छूटे हुवे वाजेबात को बजा लाना.

5-गुनाहों के ज़रिये पैदा होने वाले गोश्त को इस क़दर पिघलाना कि हड्डियों पर गोश्त

बाकी न रह जाये और हालते इबादत में हड्डियों पर गोश्त चढ जाये.

6-बदन को इताअत की तकलीफ में मुब्तेला करना जिसतरह गुनाह का मज़ा चखा है लिहाजा इन छ मरहलों के गुज़रने के बाद استغفرالله कहना. (तौबा आगोशे रहमत पेज 105)

20) तवक्कुल

आयात:

1-खुदा पर तवक्कुल:

فَاِذَا عَزَمۡتَ فَتَوَكَّلۡ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الۡمُتَوَكِّلِيۡنَ

(सूरए आले इमरान आयत 159.)

और जब इरादा कर लो तो अल्लाह पर तवक्कुल और भरोसा करो, कि वह तवक्कुल और भरोसा करने वालों को दोस्त रखता है.

2-खुदा पर तवक्कुल क्यूं:

وَّقَالُوۡا حَسۡبُنَا اللّٰهُ وَنِعۡمَ الۡوَكِيۡلُ

(सूरए आले इमरान आयत 173.)

और उन्हों ने कहा कि हमारे लिये खुदा काफी है, और वही हमारा ज़िम्मे दार है

3-अल्लाह काफी है:

وَمَنۡ يَّتَوَكَّلۡ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسۡبُهٗ

(सूरए तिलाक आयत 3.)

और जो खुदा पर तवक्कुल और भरोसा करेगा खुदा उस्के लिये काफी है.

4-मोमेनीन का तवक्कुल:

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ

(सूरए इब्राहीम आयत 11.)

और साहेबाने ईमान तो सिर्फ अल्लाह ही पर तवक्कुल और भरोसा करते हैं.

5-साहेबाने तवक्कुल पर शैतान ग़ालिब नहीं आता:

اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ

(सूरए नहल आयत 99)

शैतान हरगिज़ उनलोगों पर गलबह नहीं पा सकता जो साहेबाने ईमान हैं, और जिनका अल्लाह पर तवक्कुल और ऐतेमाद है.

रवायात:

1-हक़ीक़ते तवक्कुल:

قال الصادق علیه السلام : لَمَا سُئِلَ عَنْ حَدِّ التَوَكُّلِ :

أَنْ لَاتَخَافَ مَعَ اللهِ شَيْئاً

(बिहारुल अन्वार जिल्द 68,पेज. 56.)

इमामे सादिक़ (अ.स.) से स्वाल किया गया कि तवक्कुल की हद क्या है: तो आप (अ.स.) नें फरमाया: तुम खुदा के होते हुवे किसी से न डरो.

2-सबसे बड़ा ताकतवर कौन:

قال رسول الله (صلي الله عليه واله وسلم) : مَنْ سَرَّهُ

أَنْ يَكُونَ أَقْوَى النَّاسِ فَلْيَتَوَكَّلُ عَلَي اللهِ

(मीज़ानुल हिक्मह जिल्द 4, पेज 3659)

रसूले खुदा (स.अ.व.) नें फरमाया: जो यह चाहता है कि सब से बड़ा ताक़त्वर होजाये

तो उसे चाहिये कि वह खुदा पर तवक्कुल व भरोसा करे.

3-बुलंद तरीन अमल:

قال علي عليه السلام : اَلتَّوَكُّلُ أَفْضَلُ عَمَلٍ

(गोररुल हेकम जिल्द. जिल्द 1 पेज 757)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: तवक्कुल (खुदा पर भरोसा करनां) सब से अफज़ल (बाला तर) अमल है.

4-बन्दों से बिनियाज़:

قال أمير المومنين عليه السلام : مَنْ تَوَكَّلَ عَلَي اللهِ

غَنِيٌ عَنْ عِبَادِهِ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज 759)

मौला अली (अ.स.) नें फरमाया: जो खुदा पर तवक्कुल करता है, वह उस्के बन्दों से बिनियाज़ होजाता है.

5-बेहतरीन सोतूंन:

قال أمير المومنين عليه السلام: اَلتَّوَكُّلُ خَيْرُ عِمَادٍ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज 757)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: खुदा पर तवक्कुल बेहतरीन सहारा है.

तशरीह:

खुदा पर तवक्कुल और भरोसा करने का यह माना नहीं है, कि इंसान हर तदबीर और बन्द व बस्त को बेकार समझे, और हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाऐ क्यूंकि बेकारी एक अखलाकी जुर्म है, और खेलाफे शररीअत भी है. यह दुन्या सबब व मुसब्बब की दुन्या है. तवक्कुल और भरोसे का मतलब यह है. कि इंसान तमाम असबाब व ऐलल को अंजाम दे ले. उस्के बाद खुदा पर भरोसा और तवक्कुल करे मसलन घर से कहीं बाहर जा रहे हैं. तो घर का दरवाजह बंद करें, और उस में ताला लगाएं उस्के बाद खुदा पर तवक्कुल करें कि इंशाअल्लाह घर में चोरी वगैरह न हो, यह नहीं कि दरवाजह बंद न करें और ताला न लगाएं फिर तवक्कुल करें कि अब चोरी नही होगी. हमारा घर महफ़ूज़ है. यह बिलकुल गलत है. बल्की तवक्कुल

के माना यह हैं. कि जब बनदा किसी काम का इरादा करे, तो जितने असबाबे जाहरी हैं. उन्को पूरा करे, फिर उस्के बाद अपनें अम्र को अपने काम को मालिके हकीकी के सिपुर्द करदे, यानी हर मुमकिन कूवत सर्फ़ करने के बाद नतीजा खुदा पर छोड़ दे. यह है तवक्कुल. बस जितनी ज़्यादह खुदा की मारेफत होगी उतना ही ज़्यादह खुदा पर भरोसा और तवक्कुल होगा.

दुआ करते हैं खुदाया बहक्के मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.मु.स.) हमें तवक्कुल करने की तौफीक अता फरमाए (आमीन).

वाकेआत:

1-हज़रत अबूज़र का तवक्कुल:

अगर हम मुसलमान हैं, तो हमें खुदा पर उसी तरह से ईमान रखना चाहिए जिस तरह हज़रत अबुज़र रखते थे. हमें खुदा के अलावा किसी से अपनी तवक्कोआत (उम्मीदें) वाबस्तह नहीं करनी चाहिए. क्यूकी पुरी मखलूक खुदा की मुहताज है और खुदा किसी का मुहताज नहीं है

एक मर्तबा हाकिमे शाम मोआवीया नें सोचा कि अबूज़र हमेशा उस्की माली पालिसी पर तनकीद करते रहते है. क्यू न उन्हें भी दौलत के जाल में फँसा दिया जाऐ. ताकी कल वह उसपर तनकीद न कर सकें. यह सोच कर उसनें अपने नौकर को बुलाया, और उसे दो सौ दीनार दे कर कहा, कि तुम यह दीनार अबूज़र के पास ले जाव, और उनसे

कहो कि, यह हाकिमे शाम की तरफ से तुम्हारे लिये तोहफा है.

हाकिमे शाम का मकसद यह था. कि वह इस तरह अबूज़र को अपने सुनहरी जाल में फंसा ले गा, और उन्हें अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) से मुन्हरिफ करने में कामियाब हो जाऐगा.

जब कासिद अबूज़र के पास पहुँचा, और उसनें वह रकंम उन्की खिदमत में पेश की, तो अबूज़र नें वह रकम लेली, और फ़ौरन हुजरे से बाहर निकले, और कासिद (नौकर) की मौजूदगी में, वह रकम ग़रीबों और मिकीनों में तकसीम करदी, और अपने लिये एक दिरहम भी नहीं बचाया. फिर अबूज़र नें हाकिमे शाम के कासिद से कहा. मोआवीया से जाकर कह देना कि. जब तक मेरी इस थैली में कुछ न कुछ मौजूद है. उस वक्त तक मैं किसी का मुहताज नहीं हूँ. हाकिमें

शाम के कासिद नें कहा मैं चाहता हूँ कि. आप मुझे अपनी थैली दिखाएँ, ताकी मैं देखू कि उसमें कितना खजाना मौजूद है. हज़रत अबूज़र नें उस्के सामने थैली उलट दी. उस में से जौ की दो खुश्क रोटियां बरआमद हुईं. हज़रत अबूज़र नें कहा देख रहे हो ना, मेरे पास इस वक्त दो रोटियां मौजूद हैं. एक से अफ्तार करूँगा और दूसरी सहरी के वक्त खावूंगा. अगर मैं जिन्दा रहा, तो खुदा इसके बाद भी मुझे रोटियां इनायत करेगा. इसी लिये मै किसी हाकिम का मुहताज नहीं हूँ. जिस खुदा नें मुझे आज रिज्क दिया है वह आइन्दा भी मुझे रिज्क से महरूम नहीं रख्खे गा. (कश्कोल दस्तेगैब जिल्द 1, पेज 43, नक्ल अज़ नफ़्से मुतमइन्नह पेज 125.)

2-मुहकम सहारा:

जब यूसुफ़ (अ.स.) के भाइयों नें उन्को कुवें में फेकने लगे, तो हज़रत यूसुफ़ (अ.स.)

मुस्कुराने लगे, भाइयों में से यहूदा नें हज़रत यूसुफ़ (अ.स.) से पूछा इस वक्त मुस्कुराने का मौक़ा तो नहीं है. आप क्यूं मुस्कुरा रहे हैं. हज़रत यूसुफ़ (अ.स.) नें फरमाया मैंनें एक दिन ख्याल किया था. कि मेरे इतनें ताक़त्वर और ज़्यादा भाई हैं. कि किसी को मेरे साथ दुश्मनी की हिम्मत भी नहीं होसकती. शायद इसी ख़याल की वजह से, खुदा वंदे मुतआल नें उन ही भाइयों को मेरे ऊपर मुसल्लत फरमाया है. ताकि मैं समझलूं कि खुदा वंदे आलम के अलावा किसी और पर भरोसा व तवक्कुल न करनां.

(मौज़ूई दास्तानें पेज 121)

21) तोहमत

आयात:

1-अपने गुनाह की निस्बत दूसरे की तरफ देना:

وَمَنۡ يَّكۡسِبۡ خَطِيۡٓـئَةً اَوۡ اِثۡمًا ثُمَّ يَرۡمِ بِهٖ بَرِيۡٓــًٔا فَقَدِ

احۡتَمَلَ بُهۡتَانًا وَّاِثۡمًا مُّبِيۡنًا

(सूरए निसा आयत 112.)

और जो शख्स भी कोई गलती या गुनाह करके, दूसरे बेगुनाह के सर डाल देता है. वह बहुत बड़े बोहतान और खुले गुनाह का ज़िम्मेदार होता है.

2-जो कुछ नहीं किया इस्की निस्बत देना:

وَالَّذِيۡنَ يُؤۡذُوۡنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَالۡمُؤۡمِنٰتِ بِغَيۡرِ مَا اكۡتَسَبُوۡا

فَقَدِ احۡتَمَلُوۡا بُهۡتَانًا وَّ اِثۡمًا مُّبِيۡنًا

(सूरए अहज़ाब आयत 58.)

और जो लोग साहेबाने ईमान मर्द या औरतों को बगैर कुछ किये धरे अजीयत देते हैं. उन्हों नें बड़े बोहतान और खुले गुनाह का बोझ अपनें सर पर उठा रख्खा है.

3-रहबराने इलाही पर तोहमत:

اِنۡ ہُوَ اِلَّا رَجُلُ ۨ افۡتَرٰی عَلَی اللّٰہِ کَذِبًا وَّ مَا نَحۡنُ لَہٗ بِمُؤۡمِنِیۡنَ

(सूरए मोमेनूंन आयत 38)

यह एक अयसा इंसान है जो खुदा पर बोहतान बाधता है और हम उसपर ईमान लाने वाले नहीं.

4-शखसीयत को पामाल करना:

اِذَا تُتۡلٰی عَلَیۡہِمۡ اٰیٰتُنَا بَیِّنٰتٍ قَالُوۡا مَا ہٰذَاۤ اِلَّا رَجُلٌ یُّرِیۡدُ اَنۡ یَّصُدَّکُمۡ عَمَّا کَانَ یَعۡبُدُ اٰبَآؤُکُمۡ ۚ وَ قَالُوۡا مَا ہٰذَاۤ اِلَّاۤ

اِفۡکٌ مُّفۡتَرًی ؕ وَ قَالَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا لِلۡحَقِّ لَمَّا جَآءَہُمۡ ۙ اِنۡ ہٰذَاۤ اِلَّا سِحۡرٌ مُّبِیۡنٌ

(सूरए सबा आयत 43.)

और जब उन्के सामनें हमारी रौशन आयात की तिलावत की जाती है. तो कहते हैं कि. यह शख्स सिर्फ यह चाहता है. कि तुम्हें उन सब से रोक दे जिन की तुम्हारे आबा व अजदाद परस्तिश क्या करते थे. और सिर्फ यह एक गढी हुई दास्तान है, और कुफ्फार तो जब भी उन्के सामने हक़ आता यही कहते हैं. कि यह एक खुला हुवा जादू है.

5-पैगंम्बर (हज़रत नूह अ.स.) पर तोहमत:

قَالَ الۡمَلَاُ مِنۡ قَوۡمِہٖۤ اِنَّا لَنَرٰىکَ فِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ قَالَ یٰقَوۡمِ لَیۡسَ بِیۡ ضَلٰلَۃٌ وَّ لٰکِنِّیۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡ رَّبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ

(सूरए अअराफ आयात 60,61)

तो कौम के रोअसा (बड़े बड़े लोगों) नें जवाब दिया. कि हम तो तुम्हें खुली हुई गुमराही में देख रहे हैं. नूह (अ.स.) नें कहा अय कौम मुझ में गुमराही नहीं है. बल्कि मैं रब्बुल आलमीन की तरफ से भेजा हुवा नुमाँइन्दह हूँ.

रवायात:

1-अज़ीम गुनाह

قال الصادق عليه السلام : اَلْبُهْتَانُ عَلَي الْبَرِيْءِ اَثْقَلُ مِنَ الْجِبَالِ الرَّاسِيَاتِ

(खेसाल पेज 348.)

इमामे सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: किसी पाक दामन मोमिन पर तोहमत लगाना मुस्तहकम पहाड़ों से भी ज़्यादह संगीन व भारी है.

2-सज़ा

مَنْ بَهَتَ مُؤْمِناً أَوْ مُؤْمِنَةً قَالَ فِيْهِ لَيْسَ فِيْهِ اَقَامَهُ اللّٰهُ تُعَالٰى يَوْمَ الْقِيامَةِ عَلَي تَلٍّ مِنْ نَارٍ حَتّي يَخْرُجَ مِمَّا قَالَهُ فِيْهِ

(बिहारुल अन्वार जिल्द 7, पेज 194.)

हज़रत रसूले अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया: जो शख्स किसी मोमिन पर तोहमत लगाऐ. या उस्के बारे में वह चीज़ कहे जो उस में न पाई जाती हो. तो एसे शख्स को खुदा वंदे आलम आग की एक बुलंदी पर खड़ा करेगा, ताकी वह अपनें मोमिन भाई की शान में कही जाने वाली बात को साबित करे.

3-मलामत न करे:

مَنْ عَرَّضَ نَفْسَهُ لِلتُّهْمَةِ فَلَا يَلُومَنَّ مَنْ أَسَاءَ الظَّنَّ بِهِ

(गोररुल हेकम जिल्द 2, पेज. 763.)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: जो अपनें नफ्स को तोहमत में डालता है. उस शख्स पर मलामत नहीं करना चाहिये जो उस से बद गुमान होता है.

4-ईमान का पिघल जाना:

قال الصادق علیه السلام : إِذَا اتَّهَمَ الْمُؤْمِنُ أَخَاهُ انْمَاثَ الْإِيمَانُ مِنْ قَلْبِهِ كَمَا يَنْمَاثُ الْمِلْحُ فِي الْمَاءِ

(किताब अल शाफी जिल्द 4,पेज, 344.)

इमामे सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: जो मोमिन भाई अपने मोमिन भाई पर तोहमत लगाता है. तो ईमान उस्के दिल में इस तरह पिघल जाता है जैसे नमक पानी में.

5-तोहमत लगाने वाला मलऊन:

قال کاظم علیه السلام : مَلْعُونٌ مَلْعُونٌ مَنِ اتَّهَمَ أَخَاهُ

(वसाएल अल शीआ जिल्द 12, पेज, 231.)

इमामे मूसा काजिम (अ.स.) नें फरमाया: मलऊन है वह शख्स जो अपनें दीनी बरादर पर तोहमत लगाऐ.

तशरीह:

तोहमत एक अज़ीम गुनाह है. ज़ुबान से किये जाने वाले गुनाहों में से एक गुनाह तोहमत है. तोहमत यानी वहम व गुमान की बुन्याद पर किसी की तरफ गलत बात या गुनाह की निस्बत देना. अगर हम किसी शख्स को गुनाह अंजाम देते हुए देखें. तो उस गुनाह की निस्बत उस्के तरफ दे सकते हैं. लेकिन जब हम नें देखा ही नहिं तो हम किसी भी सूरत हक़ नहीं रखते कि उस्को मुत्तहिम करें. अगरचे क़राएंन (दलीलें) मौजूद हों. तोहमत लगाकर हम हकीकत में, किसी पाक दामन मर्द या औरत को लोगों के दरमियाँन ज़लील व रुसवा करते हैं. कितना बुरा अमल है. कि इंसान किसी के सर ऐसा गुनाह थौंपे (डाले) जिस से उस्का दामन पाक हो और किस क़दर ना पसंद है कि इंसान हवा व हवस और बेहूदा चीज़ों की

बिना पर किसी मोहतरम इंसान को ज़लील व रुसवा करे यकीनन ऐसा इंसान रहमते इलाही से दूर है.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के चहार्दह मअसूमीन (अ.मु.स.) हम सब को तोहमत से बचने की तौफीक अता फरमाऐ.

वाकेआत:

1-गैर मुसलमान पर भी तोहमत जाइज़ नहीं:

अम्र बिन नोंमान जोफ़ी कहते हैं: हज़रत इमाम जाफर सादिक़ (अ.स.) का एक दोस्त था. जहां भी इमाम जाते वह इमाम के साथ रहता, और इमाम से अलग न होता, एक दिन इमाम (अ.स.) के साथ बाजार गया और उस्का गुलाम जो कि मुसलमान नहीं था. वह भी उस्के साथ था. (लेकिन दरमियान में गुलाम कहीं इधर उधर हो गया) उसनें तीन मरतबा पीछे मुड के देखा, मगर गुलाम दिखाई न दिया जब चौथी मरतबा देखा तो गुलाम नज़र आया. तो उसनें कहा: अय बदकार औरत के बेटे तू कहाँ था. रावी कहता है: इमाम सादिक़ (अ.स.) अपना हाथ अपनी पेशानी पर मारा और कहा: खुदा की पनाह तू उस्की माँ पर

तोहमत लगाता है! मैं गुमान करता था कि तुम एक परहेज़ गार शख्स हो, लेकिन मैं तुम में परहेजगारी की कोई निशानी नहीं देख रहा हूँ. उसने कहा मेरी जांन आप पर कुर्बान उस्की माँ सिंदियह व मुशरिक है. हज़रत नें फरमाया: क्या तुम नहीं जानते हर उम्मत व मज़हब में निकाह होता है? मुझ से दूर होजा! रावी कहता है उस्के बाद मैंनें कभी भी उस्को हज़रत के साथ नहीं देखा यहाँ तक कि वह इस दुन्या से चल बसा. (गंजीनए मआरिफ जिल्द 1, पेज. 261, नक्ल अज़ दास्तानहाए अखलाकी पेज 201, और चेहल हदीस रसूले महल्लाती जिल्द 2 पेज 166.)

2-तोहमत की सजा:

हज़रत मूसा (अ.स.) नें फरमाने इलाही के मुताबिक कारून से ज़कात का मुतालिबा किया, लेकिन उसनें कहा मैंनें तौरात को पढ़ा

है और मैं मूसा (अ.स.) से कम नहीं हूँ, क्यों अपनें माल की ज़कात मूसा (अ.स.) को दूं आखिर कारून नें बेईमानी और गोरूर की वजह से एक खतरनाक प्रोगेराम बनाया, वह यह था, कि उसनें एक फाहेशह औरत से कहा: मैं तुम को चंद हज़ार दिरहम दूंगा कल जब हज़रत मूसा (अ.स.) खिताब कर रहे हों, तो सब लोगों के सामने खड़े होकर कहना कि (नऊज़ो बिल्लाह) मूसा नें मेरे साथ ज़ेना किया है. उस औरत नें इस पेश कश को क़बूल करलिया, लेकिन जिस वक्त उसने हज़रत मूसा (अ.स.) के नूरानीं चेहरे को देखा, तो अपनें इरादह से हट गई. और बुलंद आवाज़ से कहा: मैंनें एक लाख दिरहम इस नाजिबा तोहमत लगाने के लिये, लिये हैं. और खुदा वंदे मूतआल नें तुझको इस तरह आलूदगी से पाक व मुनज्जह रख्खा है. उस वक्त हज़रत मूसा (अ.स.) का

दिल शीकस्तह (टूट गया) हुवा और कारून केलिये बददुआ की: अय ज़मीन कारून को जकड ले और अपनें अंदर धंसा ले! ज़मीन नें अपना मुंह खोला और कारून ज़मीन में धंस गया और सख्त अज़ाबे इलाही में गिरफ्तार हुवा.

हारून की हलाकत के बाद बनी इस्राईल की नादाँन कौम के लोग एक दूसरे से कहनें लगे "मूसा (अ.स.)" नें कारून केलिये बददुआ की ताकी वह हलाक होजाए और उस्के माल व दौलत में तसर्रुफ करे. मूसा (अ.स.) नें इस तोहमत से बचनें केलिय दुआ की खुदाया कारून के खजानें को भी नाबूद करदे दुआ मुस्तजाब हुई और कारून का खज़ानह भी ज़मीन में धंस गया. (गंजीनए मआरिफ जिल्द 1,पेज. 261.)

22) जेहालत व नादानी

आयात:

1-अक्सर नहीं जानते:

كِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

(सूरए अअराफ आयत 131)

उन्की अक्सरीयत इस राज़ से बेखबर है.

2-ज़ुल्म अवामिले जहल में से है:

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ

جٰهِلُوْنَ

(सूरए यूसुफ़ आयत 89.)

उसने कहा कि तुम्हे मालूम है कि तुम नें यूसुफ़ और उन्के भाई के साथ क्या बर्ताव किया है जबकि तुम बिलकुल जाहिल थे.

3-असबाबे जेहालत:

وَاِنۡ تُصِبۡهُمۡ سَيِّئَةٌ يَّقُوۡلُوۡا هٰذِهٖ مِنۡ عِنۡدِكَ‌ ؕ قُلۡ كُلٌّ مِّنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ‌ ؕ فَمَالِ هٰٓؤُلَۤاءِ الۡقَوۡمِ لَا يَكَادُوۡنَ يَفۡقَهُوۡنَ حَدِيۡثًا

(सूरए निसा आयत 78.)

अगर अच्छे हालात पैदा होते हैं तो कहते हैं कि यह खुदा की तरफ से और मुसीबत आती है तो कहते हैं कि यह आप की तरफ से है तो आप कह दीजिए कि सब खुदा की तरफ़ से है फिर आखिर में इस कौम को क्या होगया है कि यह कोई बात समझती ही नहीं है.

4-अक्सर जाहिल हैं:

وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ يَجۡهَلُوۡنَ

(सूरए अनआम आयत 111)

उन्की अक्सरीयत जेहालत ही से काम लेती है.

5-बेजा तवक्कोआत जेहालत कीवजह से होती है:

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ

(सूरए बकरह आयत 118.)

यह जाहिल मुशरेकीन कहते हैं कि खुदा हमसे कलाम क्यूं नहीं करता और हम पर आयत क्यूं नाज़िल नहीं करता, उन्के पहले वाले भी अयसी ही जेहालत की बातें करचुके हैं. उन सब के दिल मिलते जुलते हैं और हमनें तो अहले यकीन केलिये आयात को वाज़ेह करदिया है.

रवायात:

1-हर शख्स का दुश्मन:

قال الرضا عليه السلام : صَدِيْقُ كُلِّ أَمرٍ عَقلُهُ وَ

عَدُوُّهُ جَهلُهُ

(किताब अल शाफी जिल्द 1, पेज 37.)

इमामे रेज़ा (अ.स.) नें फरमाया: हर शख्स का दोस्त उस्की अक्ल है और उस्का दुश्मन उस्की जेहालत है.

2-जाहिलों की मिसाल:

قال أمير المومنين عليه السلام : إِنَّ قُلُوبَ الجُهَّالِ

تَبْتَعِزُّهَا الاَطمَاعُ وَتَرتَهِنُهَا المُنىٰ وَتَستَعلِقُهَا الخَدَائِعُ

(किताब अल शाफी जिल्द 1, पेज 57.)

अमीरुल मोमेंनींन (अ.स.) नें फरमाया: जाहिलों के दिल उन शिकारी जानवरों की

तरह हैं. कि तमा (लालच) उन्को अपनी जगह से निकालती है और वह शैतानी फरेब की जाल में फँस जाते हैं.

3-मुहताजी:

قال رسول الله صلي الله عليه و اله وسلم : يَا عَلِيُّ لَا فَقْرَ اَشَدُّ مِنَ الْجَهْلِ

(किताब अल शाफी जिल्द 1, पेज, 62.)

रसूले खुदा (स.अ.व.) नें फरमाया: अय अली (अ.स.) जेहालत से बढ़ कर कोई फक्र नहीं.

4-हर चीज़ तबाही के सबब:

قال أمير المومنين عليه السلام : اَلْجُهْلُ فَسادُ كُلِّ أَمْرٍ

(गोररुल हेकम जिल्द 1 पेज. 213)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: जेहालत हर चीज़ की तबाही का सबब है.

5-सब से बड़ी मुसीबत:

قال أمير المومنين عليه السلام: اَعْظَمُ الْمَصائِبِ الْجُهْلُ

(गोररुल हेक जिल्द 1 पेज. 212)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: जिहालत सब से बड़ी मुसीबत है.

तशरीह:

परवर दिगारे आलम नें इंसान को अक्ल जैसी नेअमत से नवाज़ा है. ताकि इंसान उस अक्ल के ज़रिये जेहालत के पर्दे और नादानी को दूर करके नजात की राह पा सके. कुरआन और रवायात की रौशनी में, जेहालत के माना बेअक्ली है. न कि नादानी, लेहाज़ा लफ्ज़े जेहल को अक्ल के मुकाबिले में इस्तेमाल किया जाता है. इल्म के मुकाबिले में इस्तेमाल नहीं होता. जेहालत एक ऐसी सिफत है, जिस से अवलियाऐ इलाही नें भी पनाह माँगी है. आप तारीख का मुतालेआ करें तो मालूम होगा कि. नबी, रसूल व अंबिया अइम्मा व अवलियाऐ केराम वगैरह के जितनें भी दुश्मन थे सब के सब जाहिल व नादाँन थे, और उसी जेहालत की बिना पर अपने आप को अक़्ल्मंद तसव्वुर करते थे. और हादियाने इलाही को जाहिल तसव्वुर

करते थे और उसी जेहालत की बुन्याद पर उनसे दुश्मनी रखते थे, और आखिरकार नतीजा क्या निकला कि जाहिल व नादान अफराद को ज़िल्लत व रुसवाई का सामना करना पड़ा, औए यह बदतरीन अज़ाबे इलाही में मुब्तेला हुये, और यही जेहालत इंसान की तबाही का सबब है .

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के मोहम्मद व आले मोहम्मद बहक्के बाबुलइल्म (अ.मु.स.) हमें इस बद तरीन सिफ़ाते जेहालत से बचा और अक्ल जैसी दौलत अता फारमा. (आमीन)

वाकेआत:

1-जाहिल आदमी गधे का भाई है:

बाज़ भरोसे मंद अफराद नक्ल करते हैं कि एक जाहिल व नादाँ शख्स मरहूम शैख़ अंसारी (मुसन्निफ़ किताब रसाएल व मकासिब) की खिदमत में आया और कहा मैं गधा खरीदना चाहता हूँ इस्तेखारा निकाल दीजिये. मरहूम शैख़ अंसारी नें कुरान से इस्तेखारा निकाला तो यह आयत.

سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ

(सूरए केसस आयत 35)

निकली यानी हम तुम्हारे बाजूवों को तुम्हारे भाई से मज़बूत करेंगे शैख़ अंसारी नें फरमाया: बेहतर है. कि गधा खरीद लो. एक दूसरा शख्स शैख़ के पास बैठा हुवा था उसनें शैख़ अंसारी से कहा: आपनें किस वजह से उससे फरमाया कि गधा खरीद लो? मरहूम अंसारी नें फरमाया: यह जाहिल व

नादाँन शख्स है और कुरआन में परवर दिगारे आलम फरमाता है.

اَمۡ تَحۡسَبُ اَنَّ اَکۡثَرَہُمۡ یَسۡمَعُوۡنَ اَوۡ یَعۡقِلُوۡنَ ؕ اِنۡ ہُمۡ

اِلَّا کَالۡاَنۡعَامِ بَلۡ ہُمۡ اَضَلُّ سَبِیۡلًا

(सूरए फुरकान आयत 44)

क्या आप का ख़याल यह है कि उन्की अक्सरियत कुछ सुनती और समझती है हरगिज़ नहीं यह सब जानवरों जैसे हैं बल्की उनसे भी बदतर.

पस जाहिल व नादान शख्स हकीकत में गधे का भाई है.

(गंजीनए मआरिफ जिल्द 1, पेज 423.)

2-नादाँन की इबरत हासिल करना:

एक हकीम नादाँन व जाहिल शख्स के घर आया. हकीम नें देखा कि घर बहुत ही आलीशान व हर चीज़ से मुजय्यन (सजा हुवा) है और ज़मीन पर फर्श भी कीमती

बिछा हुवा है. लेकिन घर वाला, नादाँन व जाहिल है, और इल्म की अलिफ़, बा, से भी वाक़फीयत नहीं रखता हकीम नें उस्के मुंह पर थूका.

साहिबे मंजिल नें ऐतराज़ करते हुवे कहा: हकीम साहब आपनें मेरे साथ कितना बुरा किया?

हकीम साहब नें कहा मेरा यह काम हिकमत की बुन्याद पर था क्यूंकि लुआबे दहन (थूक) को घर की पस्त तरीन जगह पर थूका जाता है, और मैंने तुम्हारे घर में तुम से पस्त तर किसी को नहीं पाया.

नादाँन शख्स नें हकीम साहब के अमल और गुफ्तगू से इबरत हासिल की और जाना कि नादानी और जेहालत घर में रंग व रोगन करने से नहीं जाती बल्कि इल्म से जाती है.

(गंजीनए मआरिफ जिल्द 1 पेज 422)

23) जहन्नम

आयात:

1-सात दरवाज़े जहन्नम के लिये:

وَ اِنَّ جَہَنَّمَ لَمَوۡعِدُہُمۡ اَجۡمَعِیۡنَ لَہَا سَبۡعَۃُ اَبۡوَابٍ

(सूरए हुजर आयात 43,)

और जहन्नम ऐसे तमाम लोगों की वादा गाह है उस्के सात दरवाज़े हैं.

2-जहन्नम को सामने लाया जाऐगा:

وَجِایۡٓءَ یَوۡمَئِذٍۭ بِجَہَنَّمَ ۬ۙ یَوۡمَئِذٍ یَّتَذَکَّرُ الۡاِنۡسَانُ وَ اَنّٰی لَہُ الذِّکۡرٰی

(सूरए फज्र आयत 23)

और जहान्नम को उस दिन सामने लाया गएगा तो इंसान को होश आजाऐगा और हम इसे याद दिलाएंगे.

3-जहन्नम की आग खामोश होने वाली नहीं:

كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا

(सूरए असरा आयत 97.)

जहन्नम की आग बुझने भी लगे गी तो हम शोलों को भडका देंगे.

4-दोज़खियों की गेज़ा:

لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِىْ مِنْ جُوْعٍ

(सूरए गाशियह आयत 6,7)

खारदार झाडियों के अलावह इन की कोई गज़ा न होगी जो न इन्हें ताकत देगी और न भूक से नजात देगी.

5-शैतान की पैरवी करनें वालों की जगह:

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ

(सूरऐ आराफ आयत 18.)

फरमाया यहाँ से निकल जा तू ज़लील व मरदूद है अब जो भी तेरा इत्तेबा करेगा मैं तुम सब से जहन्नम को भर दूंगा.

रवायात:

1-जहन्नमी काफिर:

قال أمير المومنين عليه السلام: إِنَّ أَهْلَ النَّارِ كُلُّ كَفُورٍ مَكُورٍ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज .225)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: बेशक जहन्नम वाले सब ही काफिर व मक्कार हैं.

2-जहन्नमी हमेशह अज़ाब में:

قال أمير المومنين عليه السلام: وَقُودُ النَّارِ أَبَداً مُعَذَّبُونَ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज .225)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: आतिशे जहन्नम में दाखिल होनें वाले हमेशा अज़ाब में रहेंगे.

3-यह जिस्म जहन्नम की आग को बरदाश्त नहीं कर सकता:

قال علي عليه السلام : لَيْسَ لِهٰذَا الْجِلْدِ الرَّقِيْقِ صَبْرٌ عَلَي النَّارِ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज .225)

मौला अली (अ.स.) नें फरमाया: यह नाज़ुक व बारीक खाल जहन्नम की आग पर सब्र नहीं कर सके गी.

4-जहन्नम की सज़ा काफी है:

قال علي عليه السلام : كَفٰي بِجَهَنَّمَ نِكَالاً

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज .224)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: जहन्नम के लिये उस्की सज़ा का होना ही काफी है.

5-इफरात का नजीजा:

قال أمير المومنين عليه السلام : اَلنَّارُ غَايَةُ الْمُفْرِطِيْنَ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज .226)

अमीरुल मोमेंनीन (अ.स.) नें फरमाया:

आतिशे जहन्नम इफरात (ज्यादती) करनें वालों के अमल का नतीजा है.

तशरीह:

बहिश्त मुत्ताकीन के लिए हमेश्गी और अबदी मुक़ाम है. उन्के लिये वहाँ बागात होंगे जिन के नीचे नहरें जारी होगी और वह हमेशह उसमें रहें गें. जहन्नम अहले कुफ्र व गुनाह करनें वालों का मुकाम है. कोई भी उन्को अज़ाबे इलाही से बचाने वाला न होगा उन्के चेहरे सियाह रात की तरह होंगे.

जन्नत और दोज़ख पर ईमान रखना ज़रूरियाते दींन में से है, और उन दोनों पर ईमान न रखना कुफ्र के मसावी है. बहिश्त अपनीं तमाम तर माद्दी व मानवी नेमतों के साथ नेक व सालेह अफराद की पादाश व जज़ा, और जहन्नम अपनें तमाम ज़ाहरी व बातनी अज़ाब के साथ बदकारों केलिये सज़ा की जगह है.

जन्नत व जहन्नम गैब के मसादीक में से है. उन दोनों के बारे में बयांन करनां सिर्फ

व सिर्फ 'वहये' इलाही की जिम्मेदारी है. इंसान का इल्म जिस को पालने से कासिर (मजबूर) है. बहरहाल जो शख्स भी उन पर ईमान रखता है. वह जन्नत केलिये नेक अमल करता है, और जहन्नम से बचनें केलिए अपनें आप को मुर्हरमात से दूर रखता है.

बहरहाल हमें अपने आप को और अपने अहल व अयाल (घर वालों) को जहन्नम की आग से बचने के लिये कोशिश करते रहना चाहिए. आज कल का माहौल बहुत ही खराब और खराब से खराब तर होता जा रहा है. अय्से माहौल में ताज्कियए नफ्स (नफ्स का तज़किया) और मुर्हरमात से बचना बहुत ही ज़रूरी है.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के बाबुल हवाऐज हजरते अब्बासे अलम बरदार (अ.स.) हमें

जहन्नमी होने से बचा और हमें अहले बहिश्त में क़रार दे. (आमीन)

वाकेआत:

1-इमामे सादिक़ और आतिशे जहन्नम की याद:

गर्मी थी और शाम के खाने का वक्त हो चुका था. इमामे सादिक़ (अ.स.) के सामने दस्तर ख्वान को बिछाया गया. उस्के बाद प्याला लाया गया जिसमें गोश्त का सालन था. हज़रत (अ.स.) के पास रख दिया गया. प्याला सालन की वजह से काफी गर्म था. जिस वक्त हजरते सादिक़ (अ.स.) नें एक लुक्मा रोटी का उठाकर सालन से लगाना चाहा तो अपनें हाथ को खैच लिया और कई बार फरमाया:

نستجیر باﷲ من النار نعوذ باﷲ من النار

खुदा से जहन्नम की आग से पनाह माँगता हूँ.

यह जुमला इतनी बार तकरार किया कि सालन ठंढा होगया. उस वक्त आपनें (अ.स.)

नें फरमाया: जब हम इस सालन की तपिश को बरदाश्त नहीं कर सकते तो फिर किस तरह आतिशे जहन्नम को बरदाश्त कर सकते हैं. इस लिहाज़ से ईमामें सादिक (अ.स.) गर्म सालन को देखकर आतिशे जहन्नम की याद में पड गये और तवाजोअ (इंन्केसारी) के ज़रिये खुदा की तरफ पनाह माँगी. (गंजीनए मआरिफ जिल्द 1 पेज 416)

2-पहाड़ का गिरयह:

जंगे तबूक का वाकेआ हिजरत के नवें साल पेश आया. मुसलमानों का एक अज़ीम लश्कर पैगंबरे इस्लाम (स.अ.व.) की कयादत में रूम और सर ज़मीने शामात की तरफ रवानह हूवा. पैगंबर (स.अ.व.) के साथ उस जंग में शिरकत के लिये तकरीबन तीस हज़ार अफराद थे. रास्ते में एक पहाड को देखा कि ऊपर से पानी का कतरा, क़तरा

नीचे एक पत्थर पर गिर रहा है. लोगों नें कहा पानी का ऊपर से गिरना बहुत ही अजीब है. पैगंबरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया: यह पहाड़ रो रहा है! लोगों नें कहा क्या पहाड़ भी गिरया करता है? पैगंबरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमया: क्या तुम दोस्त रखते हो कि पहाड़ के रोने को समझो (कि पहाड़ क्यूं गिरयह कर रहा है) तमाम लोगों नें एक ज़ुबान होकर कहा जी हाँ: आंहज़रत (स.अ.व.) नें पहाड़ से पूछा: ''अय पहाड़ तेरे रोने की वजह क्या है?'' तमाम लोगों नें सुना कि पहाड़ नें रसूले अकरम (स.अ.व.) के जवाब में कहा: अय रसूले खुदा (स.अ.व.) एक रोज हजरते ईसा (अ.स.) का यहाँ से गुजर हुवा और जब यहाँ (इस पहाड़) पर पहुंचे तो कहा:

قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَہْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُہَا النَّاسُ وَالْحِجَارَۃُ

अपनें नफ्स और अपने अहल को उस आग से बचाव जिस का इंधन इंसान और पत्थर होंगें (अय रसूल्ले खुदा स.अ.व.) उस रोज से लेकर अभी तक इस खौफ से गिरया कर रहा हूँ कहीं वह पथर मैं ही तो नहीं हूँ. पैगंबरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया: अय पहाड़ तू अपनीं जगह आराम से रह तू उन पत्थरों में से नहीं है बल्की वह पत्थर किबरीत है. (जैसे पैगंबर स.अ.व. नें यह फरमाया) तो उस वक्त से पहाड़ से पानी आना बंद होगया यहाँ तक कि उस पहाड़ में रुतूबत भी देखनें में न आई. (गनजीनए मआरिफ जिल्द 1 पेज 416)

24) हिर्स व लालच

आयात:

1-हिर्स नापसंद सिफत:

وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ

(सूरए बकरह आयत 96.)

अय रसूल (स.अ.व.) आप देखें गें कि यह ज़िंदगी के सब से ज़्यादा हरीस है और कुछ मुशरेकींन तो यह चाहते हैं कि उन्हें हज़ार बरस की उम्र दे दी जाऐ कि यह हज़ार बरस भी जिन्दा रहें तो लंबी हयात उन्हें अज़ाबे इलाही से नहीं बचा सकता. अल्लाह उन्के आमाल को खूब देख रहा है.

2-इंसान में हिर्स व लालच:

اِنَّ الۡاِنۡسَانَ خُلِقَ ہَلُوۡعًا

(सूरए मआरिज आयत 19.)

बेशक इंसान बड़ा लालची है.

3-पैगंबर (स.अ.व.) और हिर्स:

قَدۡ جَآءَکُمۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡ اَنۡفُسِکُمۡ عَزِیۡزٌ عَلَیۡہِ مَا عَنِتُّمۡ

حَرِیۡصٌ عَلَیۡکُمۡ بِالۡمُؤۡمِنِیۡنَ رَءُوۡفٌ رَّحِیۡمٌ

(सूरए तौबह आयत 128)

यकीनन तुम्हारे पास वह पैगंबर आया है जो तुम ही में से है और उसपर तुम्हारी हर मुसीबत शाक (तकलीफ देह) होती है वह तुम्हारी हिदायत के बारे में हिर्स रखता है और मोमेनीन के हाल पर शफीक और मेहरबान है.

4-हिदायत के लिये हिर्स:

اِنۡ تَحۡرِصۡ عَلٰی هُدٰىهُمۡ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا یَهۡدِیۡ مَنۡ یُّضِلُّ وَ

مَا لَهُمۡ مِّنۡ نّٰصِرِیۡنَ

(सूरए नहल आयत 38.)

अगर आप को ख्वाहिश है कि यह हिदायत पा जाएँ तो अल्लाह जिनको गुमराही में छोड़ चुका है अब उसे हिदायत नहीँ दे सकता और न उन्का कोई मदद करनें वाला होगा.

5-अदालत:

وَلَنۡ تَسۡتَطِیۡعُوۡۤا اَنۡ تَعۡدِلُوۡا بَیۡنَ النِّسَآءِ وَلَوۡ حَرَصۡتُمۡ

(सूरए निसा आयत 129)

और तुम कितना ही क्यूं न चाहो औरतों के दरमियान मुकम्मल इन्साफ नहीं कर सकते.

रवायात:

1-बुराई की जड:

قال إمام علي عليه السلام : اَلْحِرْصُ رَأْسُ الْفَقْرِ وَاُسُّ الشَّرِّ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज .242)

हज़रत अमीरुल मोमेनीन अली (अ.स.) नें फरमाया: हिर्स फक्र और बुराई की जड है.

2-ज़िल्लत:

قال علي عليه السلام : اَلْحِرْصُ ذُلٌّ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज .244)

हिर्स ज़िल्लत व कुल्फत (मुसीबत) है

3-यकीन में कमी:

قال علي عليه السلام : مَنْ كَثُرَ حِرْصُهُ قَلَّ يَقِيْنُهُ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज .246)

हज़रत अली इब्नें अबी तालिब (अ.स.) नें फरमाया: जिस की हिर्स बढ़ जाती है उस्का यकीन कम होजाता है.

4-फकीर:

قال علي عليه السلام: مَنْ كَثُرَ حِرْصُهُ قَلَّ يَقِيْنُهُ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज .246)

हरीस फकीर है चाहे वह पूरी दुन्या का मालिक होजाऐ.

5-शकावत:

قال علي عليه السلام: مَنْ كَثُرَ حِرْصُهُ كَثُرَ شَقَائُهُ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज .249)

मौलाऐ काऐनात अली (अ.स.) नें फरमाया: जिस की हिर्स बढ़ जाती है उस्की शकावत (सख्त दिली) व बद बखती भी बढ जाती है.

तशरीह:

हिर्स इंसानी ज़िंदगी में अच्छी सिफत नहीं लेकिन हिदायत की हिर्स यकीनन एक बेहतरीन सिफत है. और यह उसी इंसान में पैदा हो सकती है जिसे राहे हक़ से बेपनाह दिलचस्पी हो, और वह कौम से भी हमदर्दी रखता हो, और हर वक्त यह चाहता हो कि सारी कौम राहे रास्त पर आ जाए, और कोई गुमराह न होने पाऐ, और हिर्स, व लालच, व तमअ, माद्दीयात (दुनयावी लिहाज़ से) में सहीह नहीं लेकिन मानवीयात में सहीह है. जिसतरह कुआन नें पैगंबरे अकरम (स.अ.व.) केलिये कहा है. कि वह तुम्हारी हिदायत के बारे में हिर्स रखता है. लोगों की हिदायत केलिये जितनी भी हिर्स हो उतना ही कम है. लेकिन माद्दियात में हिर्स इंसान को तबाह कर देती है, और इंसान की हिर्स व लालच कभी कम नहीं होती. जिस को

आखेरत पर यकीन हो तो वह कभी दुन्या पर हरीस नहीं होगा. यह दुन्या फना होजाऐगी जितना भी जमा करलें उतना कम है, और इसी माल व दौलत की लालच नें इंसान को खुदा की याद से गाफिल कर दिया.

दुआ करते हैं बहक्के शरीकतुल हुसैन (अ.स.) हजरते जैनब (अ.स.) हमें हिर्स व लालच से दूर रख्खे. (आमीन)

वाकेआत:

1-लालची बूढा:

कहते हैं कि हारुन रशीद ने अपनें वजीरों से कहा कि मैं चाहता हूँ कि अय्से शख्स से मुलाक़ात करू, जो सोबते रसूल (स.अ.व.) से मुर्शरफ हुवा हो, और रसूले खुदा (स.अ.व.) से कोई हदीस सुनी हो, ताकी बिला वास्तह वह रसूल (स.अ.व.) की हदीस नक्ल करे. हारून के नौकरों नें अतराफ में एसे शख्स की तलाश शुरू करदी, लेकिन उन्हें कोई शख्स न मिल सका. सिवाऐ एक बूढ़े के जिस के तमाम हवास कमज़ोर हो चुके थे और सिवाऐ जिस्म और एक मुश्त हड्डियों के कुछ बाकी न बचा था. उसे एक टोकरी में बिठा कर निहायत इज़्ज़त व एहतेराम के साथ हारून के सामनें दरबार में लाया गया. हारून बहुत खुश हुवा कि उस्का मकसद पूरा हुवा कि ऐसे शख्स को देख लिया जिसनें

रसूले अकरम (स.अ.व.) की ज़्यारत की और उन्की गुफ्तगू सुनी.

हारून नें कहा: अय ज़ईफ़! क्या तूम ने रसूले खुदा (स.अ.व.) को देखा है?

बूढ़े ने अर्ज़ किया: जी हाँ.

हारून नें कहा: तूने कब रसूले खुदा (स.अ.व.) को देखा था?

अर्ज किया: मेरा बचपन था कि एक दिन मेरे बाप नें मेरा हाथ पकड़ा और खिद मेते रसूल (स.अ.व.) में ले गये और उस्के बाद मैं खिद मते रसूल (स.अ.व.) में न गया, यहाँ तक कि पैगंबरे इस्लाम (स.अ.व.) रेहलत फरमा गये. हारून नें कहा: बयान करो अगर उस दिन रसूल (स.अ.व.) से तुम नें कोई हदीस सुनी थी.

अर्ज किया: हाँ उस दिन रसूले अकरम (स.अ.व.) से मैंने सुना था कि आप (स.अ.व.) नें फरमाया:

يشيب ابن ادم وتشب معه فصلتان: الحرص وطول الامل

इंसान बूढा होजाता है मगर उसमें दो सिफतें जवान रहती हैं: एक हिर्स और दूसरी लंबी आरजूएँ.

हारून बहुत खुश हुवा कि उसने हदीसे रसूल (स.अ.व.) फकत एक वास्ते के ज़रिये सुनी उसने हुक्म दिया कि एक थैली दीनार की उसे इनाम के तैर पर दी जाये. और हुक्म दिया कि उसे वापस घर पहुँचाया जाऐ.

जब गुलामों नें चाहा कि उसे बाहर ले जाएँ तो उस बूढ़े नें अपनी कमज़ोर आवाज़ को बुलंद किया कि मुझे वापस दरबार में हारून के पास ले चलो. मुझे हारून से ऐक बात पूछनी है फिर उस्के बाद मुझे बाहर लेजाना.

टोकरी को उठाने वाले दोबारह उस बूढ़े को हारून के पास ले आये. हारुन नें पूछा क्या बात है?
बूढ़े नें अर्ज किया अय बादशाह यह फरमाइये के यह इनाम इस साल केलिये है या हर साल इनायत फरमाऍंगे?
हारून रशीद बहुत हंसा और तअज्जुब से कहा: रसूले खुदा (स.अ.व.) नें सच फरमाया है. कि इंसान जितना बुढापे के नज़दीक होजाता है उसमें दो चीज़ें जवान रहती हैं: हिर्स और लंम्बी उम्मीदें.
इस जईफ में जांन नहीं और मैं गुमान भी नहीं रखता कि आइन्दह साल यह जिन्दा रहेगा, लेकिन फिर भी कहता है कि यह अता इस साल के साथ मखसूस है या हर साल होती रहेगी. ज्यादतीये माल की हिर्स और लंम्बी उम्मीदों नें उसे यहाँ तक पहूंचा दिया है लेकिन फिर भी अपनीं उम्र की पेश

बीनी (यानी लंम्बी उम्र की ख्वाहिश) करता है और दूसरों की अत्यात (यानी कोई दूसरा दे दे) की तलाश में है. (इबरत अंगेज वाकेआत पेज 11, कुछ इख्तेलाफ़ के साथ यकसद व पंजाह मौजू अज़ कुरआने करीम व अहादीसे अहलेबैत अ.मु.स. पेज 412)

2-लालची शख्स की हिकमत आमेज़ वसीयत:

एक लालची अपनें बेटो को वसीयत कर रहा था और हिर्स व लालच के आदाब उन्को सिखा रहा था. उसनें अपनी आख़री गुफ्तगू में इस तरह कहा अय मेरे बच्चो! आखिर मैं तुम्हें इन आयात की वसीयत करता हूँ कि खुदा फरमाता है:

فاذا دخلتم بيوتا 1 –فيها ما تشتهيه ألانفس 2 –تلذ ألاعين كلوا واشربوا 3 –ما استطعتم من قوة 4 –إذا بلغت الحلقوم 5 –فانفجرت منه إثنتا عشرة عينا 6

जब घरों में दाखिल हो तो वहाँ वह तमाम चीज़ें होंगीं जिन की दिल में ख्वाहिश हो और जो आँखों को भली लगें, खाव और पीयो, जितनी कुदरत रखते हो यहाँ तक कि हलक तक पहुँच जाये और बारह चश्में उस से जारी हो जाएँ. (आप नें देखा इस लालची शख्स नें "मज्कुरा बाला आयात" को मुख्तलिफ जगहों से चुनकर एक जगह किया और बच्चों को वसीयत की)

(गनजीनए मआरिफ जिल्द 1,पेज 382.)

25) हसद

आयात:

1-हसद के शर से पनाह मांगनी चाहिए:

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ

وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ

(सूरए फलक आयात 1-5)

अय रसूल कह दीजिये कि मैं सुबह के मालिक की पनाह चाहता हूँ तमाम मख्लूकात के शर से और अंधेरी रात के शर से जब उस्का अधेरा छा जाऐ और गंन्डो पर फ़ूक्नें वालियों के शर से और हर हसद

करने वाले के शर से जब भी वह हसद करे.

2-काबील का हसद:

فَطَوَّعَتۡ لَهٗ نَفۡسُهٗ قَتۡلَ اَخِيۡهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصۡبَحَ مِنَ الۡخٰسِرِيۡنَ

(सूरए माएदह आयत 30)

फिर उस्के नफ्स नें उसे भाई के कत्ल पर आमादा करदिया और उसनें उसे क़त्ल कर दिया और वह खसारा वालों में शामिल होगया.

3-यूसुफ़ (अ.स.) के भाइयों का हसद:

اِنَّ اَبَانَا لَفِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنِ اقۡتُلُوۡا يُوۡسُفَ اَوِ اطۡرَحُوۡهُ اَرۡضًا يَّخۡلُ لَـكُمۡ وَجۡهُ اَبِيۡكُمۡ

(सूरए यूसुफ़ आयात 8,9)

यकीनन हमारे माँ बाप एक खुली गुमराही में मुब्तेला हैं तुम लोग यूसुफ़ को क़त्ल करदो या किसी ज़मीन में फ़ेंक दो तो बाप का रुख तुम्हारी ही तरफ होजाऐगा.

4-मुसलमानों से हसद:

وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۖ حَسَدًا

(सूरए बकरह आयत 109)

बहुत से अहले किताब यह चाहते हैं कि तुम्हें भी ईमान के बाद काफिर बना लें वह तुम से हसद रखते हैं.

5-साहिबाने कमाल से हसद:

اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا

(सूरए आयत 54)

या वह उनलोगों से हसद करते हैं जिन्हें खुदा नें अपने फज्ल व करम से बहुत कुछ अता किया तो फिर हमनें आले इब्राहीम (अ.स.) को किताब व हिकमत और मुल्के अज़ीम सब कुछ अता क्या.

रवायात:

1-हसद आफते दीं़न:

قال الصادق علیه السلام : آفَةُ الدِّیْنِ اَلْحَسَدُ وَ

الْعُجْبُ وَالْفَخْرُ

(सफीनतुल बिहार जिल्द 2, पेज 176.
किताब अल शाफी जिल्द 4 पेज 276.)

इमामे सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: दीं़न की आफत हसद, गुरूर और फख्र करना है.

2-हसद ईमान को खा जाता है:

قال الصادق علیه السلام : إِنَّ الْحَسَدَ يَأْكُلُ الْإِيْمَانَ

كَمَا تَأْكُلُ النَّارُ الْحَطَبَ

(सफीनतुल बिहार जिल्द 2- पेज 175,
किताब अल शाफी जिल्द 4, पेज 266.)

इमामे सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: हसद ईमान को उसी तरह खा जाता है जैसे आग लकड़ी को.

3-बुराई की जड:

قال أمیر المومنین علیہ السلام: رَأسُ الرَّذَائِلُ

اَلْحَسَدُ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज .262)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: रज़ाऐल (बुराई) की जड़ हसद है.

4-हसद शैतान की खसलत:

قال أمیر المومنین علیہ السلام: إِيَّاكَ وَالْحَسَدَ فَإِنَّهُ

شِيْمَةٍ وَأَقْبَحُ سَجِيَّةٍ وَخَلِيفَةُ الشَّيْطَانِ

(गोररुल हेकम जिल्द 1,पेज .261)

मौला अली (अ.स.) नें फरमाया: खबर दार हसद के करीब न जाना बहुत बुरी खसलत है और बद तरीन आदत है. यह शैतान का शेवह है.

5-राहत व आसाइश (आराम) नहीं:

قال أمير المومنين عليه السلام : لَا رَاحَةَ لِحَسُودٍ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज .266)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: हासिद केलिये कोई राहत व आसाइश (आराम) नहीं.

तशरीह:

हसद जलन, किसी का ज़वाल चाहना, अदावत, बुग्ज़ व कीना को कहते हैं, और यह एक नफसानी हालत है हासिद दूसरों के कमाल व नेमतों के ज़वाल की आरज़ू व तमन्ना करता है. इंसान जितना साहिबे कमाल होगा उसी क़दर महसूद (यानी लोग उस से हसद करें गे) भी होगा, बेकमाल (यानी जिसके पास कोई कमाल नहीं है) हासिद हो सकता है महसूद नहीं हो सकता. इसी वजह से इमाम मोहम्मद बाकिर (अ.स.) नें फरमाया: महसूद वाक़ई हम अहले बैत (अ.मु.स.) हैं. यह हसद ऐसा मरज़ है जिससे रेहाई व खलासी बहुत ही मुश्किल है और यह बुरी सिफत हुब्बे दुन्या की एक शाख है. यह बुरी सिफत ईमान को खत्म करदेती है. हमेशह दूसरों के माल व सर्वत व कमालात पर निगाह, हमेशह उन्के

ज़वाल के बारे में सोचना और अपने लिये माल व दौलत को जमा करने की फ़िक्र में रहना, और यही हसद दींन की आफत भी है और दिल की बीमारी भी है हसद नेकियों को और हसनात को ऐसे खा जाता है जैसे आग लकड़ी को. खुदा से दुआ करते हैं बहक्के चाहार्दह मासूमींन (अ.मु.स.) हमें इस बुरी सिफत से बचनें की तौफीक अता फरमा. अगर हमारे अंदर है तो उसको खत्म करदे. (आमीन)

वाकेआत:

1-हजरते ईसा (अ.स.) के हवारी का हसद:

रावी कहता है कि हम नें इमामे सादिक़ (अ.स.) से सुना कि फरमाया: अल्लाह से डरो और एक दूसरे पर हसद न करो हज़रत ईसा (अ.स.) अपनें ज़मानें में शहरों की सैर किया करते थे. एक बार वह सैर केलिये चले, तो उन्के हवारियों में से एक हवारी उन्के साथ चला यह अक्सर हज़रत ईसा (अ.स.) के साथ रहा करता था. जब हजरते ईसा (अ.स.) दरया के किनारे पहुंचे तो खुदा की ज़ात पर पूरा यकीन रखते हुऐ. बिसमिल्लाह पढ़ी और पानी पर चलनें लेगे. हवारी नें जब यह देखा तो उसनें भी पूरे यकीन के साथ बिसमिल्लाह पढ़ी और पानी पर चल कर हज़रत ईसा (अ.स.) से जा मिला. अब उस्के दिल में गुरूर नें जगह पाई और कहने लगा जिस तरह हजरते ईसा

रूहुल्लाह (अ.स.) पानी पर चलते हैं मैं भी चलता हूँ. लिहाजह उन्को मुझ पर क्या फज़ीलत है? यह ख़याल आते ही वह पानी में डूब्नें लगा, पस हज़रत ईसा (अ.स.) से फरयाद की. आप (अ.स.) नें उसको डूबने से बचाया और फरमाया: तूनें क्या कहा? उसने कहा मैंनें दिल में कहा जिस तरह ईसा (अ.स.) पानीं पर चलते हैं. मैं भी चलता हूँ. इसतरह गुरूर मेरे अंदर दाखिल हुवा.

हज़रत ईसा (अ.स.) नें फरमाया: तूनें अपनें दिल में वह सोचा जिसका तू अहल (जिस्के तू लाऐक़) नहीं. इस लिये खुदा तुझ से नाखुश हुवा. अब तू अल्लाह से तौबा कर चुनान्चेह उसने तौबा की खुदा नें उस्की तौबा कबूल करके फिर वही मर्तबा दे दिया. इमाम(अ.स.) नें फरमाया:

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا يَحْسِدَنَّ بَعْضُكُمْ بَعْضاً

अल्लाह से डरो और एक दूसरे पर हसद न करो. (औंसूले काफी जिल्द 2 पेज 291 गंनजीनए मआरिफ जिल्द 1 पेज 370 यकसद व पंजाह मौजू अज़ कुरआने करीम व अहादीसे अहलेबैत (अ.मु.स.) पेज 409.)

2-इमाम मोहम्मद तकी (अ.स.) से हसद:

इमाम मोहम्मद तकी (अ.स.) के ज़मानें में रूनुमा (ज़ाहिर) होने वाला यह वाकेआ तवज्जोह से पढ़ने के काबिल है.

उस ज़मानें में मुतवक्किल अब्बासी का काजी अल कोजा (चीफ जस्टिस) अबु लैला खेलाफत के तमाम कानूनी कामों को जो कि इस्लामी कहलाते थे अंजाम दिया करता था. एक दिन यह चीफ साहब जब अपने दूकानदार पड़ोसी दोस्त ज़र्का के घर आया तो खासा परेशान था. ज़र्का ने पूछा:

चीफ़ जस्टिस साहब आज आप इतनें परेशान क्यूं हैं? चीफ साहब नें कहा: क्या

तुम सुन सकोगे कि आज खलीफ़ा के दरबार में मुझ पर कितनी बड़ी मुसीबत टूटी है? एक चोर लाया गया, उस्का जुर्म साबित होचुका था और अब हद जारी करने का मोआमेलह था. मुझ से खलीफ़ा नें पूछा कि उस्का हाथ कहाँ से काटा जाऐ.

मैंने नें कहा: कुरआन मजीद में खुदावंदे आलम इरशाद फरमाता है कि चोर के हाथ काट डालो और वुज़ू का हुक्म बयान करने वाली आयत में है कि कोहनियों से लेकर पूरा हाथ धोना चाहिये लेहाजा मालूम हूवा कि उस का हाथ केहनियों से काटा जाऐ.

खलीफ़ा नें दरबार में मौजूद दूसरे अफराद से पूछा तो उन्हों नें कहा: चोर का कलाई से काटा जाऐ क्यूंकि तयम्मुम वाली आयत में हाथ से मुराद कलाई है, खलीफ़ा नें शीओं के इमाम हज़रत मोहम्मद तकी (अ.स.) से

पूछा तो आपनें फरमाया: दूसरे अपनी राऐ देचुके हैं.
खालीफ़ा नें इसरार किया तो आखिरकार मजबूरन हज़रत मोहम्मद तकी (अ.स.) नें फरमाया: चोर की उंगलियां काटी जाएँ क्यूंकि खुदा वंदे आलम फरमाता है कि ''मसाजिद खुदा के लिय हैं.'' मसाजिद मस्जिद की जमा है, और उससे मुराद वह आज़ा हैं जो सजदे की हालत में ज़मीन पर रख्खे जाते हैं. यह चोर भी जब नमाज़ पढेगा तो उसे भी सजदे की हालत में ज़मीन पर सातो आज़ा रखनें होंगें यानी दोनों हाथों की हथेलियाँ भी रखनी होंगीं. लिहाजा सिर्फ उस्की दो उगलियाँ ही काटी जाएँ गी.
जब शीओं के इमाम ने यह बात कही: तो खालीफ़ा नें कहा: बहुत खूब! शाबाश! और फ़ौरन ही यह हुक्म देदिया कि इमाम के बताऐ हुवे फरमान पर अमल किया जाऐ

और फिर चोर के हाथों की उंगलियां काट दी गईं.
तो अय ज़र्का! तुम खुद अन्दाज़ा करसकते हो कि उस वक्त मेरी क्या हालत हुई होगी जब उस पचीस (25) सालह जवान को मुझ पर फौकीयत दे दी गई होगी!
ज़ाहिर है उसी वजह से मैं सख्त परीशांन हूँ और जबतक इन्तेकाम नहीं लेलेता चैन से नहीं बैठूंगा. हांलांकि मैं जानता हूँ कि जो शख्स भी उस नौजवान के क़त्ल में शरीक होगा वह आतिशे जहन्नम में डाल दिया जाऐगा. लेकिन फिरभी जबतक वह क़त्ल न होजाऐ मैं उसे नहीं छोडूंगा. ज़र्का कहते हैं मैंनें उसे नसीहत की लेकिन उसनें उसे कबूल करने से इनकार करदिया.
दर हकीकत अबु लैला चीफ जस्टिस हसद की आग में जल रहा था दूसरे ही दिन वह खलीफह के पास पहुँचा और कनें लगा:

जानते हो कल तुम नें क्या किया है?
वह शख्स जिसको मुसलमानों की अच्छी तादाद अपना इमाम समझती है और उसे पैगंबर (स.अ.व.) का जानशीन मानती है, और आप को बातिल और गलत समझती है, आप नें बजाऐ उसे मिटानें के मजीद नुमायाँ और मज़बूत करदिया. वह लोग जो यह कहते हैं कि वह हक़ पर हैं. अब यह कहेंगें कि देखा खुद खलीफ़ा नें भी इस बात का ऐतेराफ कर लिया और दूसरों के नज़रियात पर उस्के नज़रिये को मुक़द्‌दम कर दिया! ज़रा सोचिये कि यह आप नें कितनी बड़ी सियासी गलती की है.
मुख़्तसर यह कि अबु लैला नें (हसद की वजह से) खलीफ़ा के इस्कदर कांन भरे कि वह इमाम मोहम्मद तकी (अ.स.) के क़त्ल पर आमादा होगया और आखिर कार इमाम

(अ.स.) को ज़हर देदिया गया. (बिखरे मोती जिल्द 1, पेज. 75.)

26) हिल्म व बुर्द बारी

आयात:

1-हिल्म खुदा की सिफत:

وَاعْلَمُوٓا اَنَّ اللّٰہَ غَفُوْرٌ حَلِیْمٌ

(सूरए बकरह आयत 235)

और यह जांनलो कि बेशक खुदा वंदे मुतआल गफूर भी है और हलीम व बुर्द बार भी.

2-हज़रत इब्राहीम (अ.स.) की सिफत:

اِنَّ اِبْرٰہِیْمَ لَاَوَّاہٌ حَلِیْمٌ

(सूरए तौबह आयत 114)

बेशक इब्राहीम बहुत ज़्यादह तज़र्रो (रोने वाले) करने वाले और बुर्द बार व हलीम थे.

3-हज़रत इस्माईल (अ.स.) की सिफत:

فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ

(सूरए साफात आयत 101)

फिर हमनें उन्हें (इब्राहीम को) एक नेक दिल फरजंद की बशारत दी.

4-लोगों का एअतराफ हज़रत शुऐब (अ.स.) की बुर्द बारी के लिये

اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ

(सूरए हूद आयत 87.)

तुम तो बड़े बुर्द बार और समझ दार मालूम होते हो

5-हिल्म जेहल के मुकाबिले में:

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ وَ

اِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ

تَسْبِيْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا

(सूरए असरा आयत 44.)

सातो आसमान व ज़मीन और जो कुछ उन्के दरमियान है सब उस्की तस्बीह कर रहे हैं, और कोई शै ऐसी नहीं है जो उस्की तस्बीह न करती हो, यह और बात है, कि तुम उन्की तस्बीह को नहीं समझते हो, परवरदिगार बहुत बरदाश्त करने वाला और दरगुजर करने वाला है.

रवायात:

1-मानाऐ हिल्म:

قال أمير المومنين عليه السلام : إِنَّمَا الْحِلْمُ كَظْمُ الْغَيْظِ وَمِلْكُ النَّفْسِ

(गोररुल हेकम जिल्द .1, पेज 175)

बुर्द बारी तो बस गुस्सा बारदाश्त करना और नफ्स पर काबू रखने का नाम है.

2-आबिदे वाकइ:

قال الرضا عليه السلام : لَا يَكُونُ الرَّجُلَ عَابِداً حَتّٰي يَكُونُ حَلِيْماً

(ओसूले काफी जिल्द 3, पेज 175)

इमामें रेज़ा नें फरमाया: इंसान आबिदे हकीकी नहीं बन सकता मगर यह कि वो हलीम हो:

3-मुसीबत के वक्त हिल्म व सब्र:

قال علي عليه السلام : إِنَّمَا الْحَلِيمُ مَنْ إِذَا أُوذِيَ صَبَرَ وَإِذَا ظُلِمَ غَفَرَ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज .340)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया हलीम व बुर्दबार तो बस वही है कि उस्को अजीयत दी जाऐ तो सब्र करे और अगर ज़ुल्म किया जाऐ तो बख्श दे.

4-साहिबाने इल्म के साथ बैठने का हुक्म:

قال أمير المومنين عليه السلام : جَالِسِ الْحُلَمَاءَ تَزْدَدْ حِلْماً

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज .340)

मौला अली (अ.स.) नें फरमाया: बुर्द बार लोगों के पास बैठो ताकी हिल्म को बढ़ा सको.

5-बुर्द बार की तलाश;

قال أمير المومنين عليه السلام : مَنْ تَحَلَّمَ حَلُمَ

(गोररुल हेकम जिल्द 1, पेज .341)

मौलाऐ काऐनात नें फरमाया: जो बुर्द बारी को तलाश करते हैं वह बुर्द बार हो जाते हैं.

तशरीह:

हिल्म यानी बुर्द बारी, तहम्मुल, सब्र, बर्दाश्त, नेक दिले नर्म को कहते हैं (1) हिल्म व बुर्द बारी खुदा वंदे मुतआल और अंबिया व अइम्माँ मोमेनीन की सिफात में से है. हिल्म व बुर्द बारी का मेयार खुशी में नहीं है कि इंसान हालाते खुशी व आसाइश में हलीम व बुर्दबार हो, बल्कि हिल्म व बुर्द बारी का मेयार हालाते गैज़ व गज़ब और गुस्से के वक्त है जब इंसान को गुस्सा आरहा हो उस वक्त इंसान अपने गुस्से को पीजाऐ तो उस वक्त ऐसे इंसान को कहते हैं. यह बहुत बड़ा हलीम व बुर्द बार है. अंबिया अइम्मऐ ताहेरीन, और मोमेनीन की कैफियत यही है कि, गुस्सेह के वक्त यह हलीम व बुर्द बार होते है. और खुदा वंदे

मूतआल उसी को दोस्त रखता है. जो गुस्सा के वक्त बुर्द बार होते हैं, और बुर्द बारी के ज़रिये दुश्मन पर गलबा व कामियाबी हासिल कर सकते हैं. हिल्म व बुर्द बारी का जो पहला एवज (बदला) इंसान को मिलता है वह यह है कि तमाम लोग उस्के दुश्मन के दुश्मन और उस्के मददगार हो जाते हैं. बुर्द बारी अखलाक की ज़ीनत, फज़ीलत का उन्वान, रियासत व होकूमत का सिर, इल्म का मेवा, कमाले अक्ल की दलील, सुलह का सबब, बेवकूफों के लिये लगाम है.

खुदा से दुआ करते है बहक्के इमामे मूसा काजिम (अ.स.) हमें हिल्म व बुर्द बारी अता फरमाँ. (आमीन)

वाकेआत:

1-इमामे जैनुल आबेदीन का हिल्म:

शैख़ मुफीद वगैरह नें रवायत की है कि इमामे जैनुल आबेदीन (अ.स.) के रिश्ते दारों में से एक शख्स आप की खिदमत में हाज़िर हुवा, और उसनें हज़रत को गालियाँ दीं आप (अ.स.) नें उस्के जवाब में कुछ न फरमाया! जब वह शख्स चला गया तो आप (अ.स.) नें अपनें अहले मजलिस से फरमाया: तुम लोगों नें सुना जो कुछ उस शख्स नें कहा है. अब मैं चाहता हूँ मेरे साथ चलो ताकी उस्के पास जाकर उस्की गालियों के बदले मेरा जवाब भी सुनो. वह कहने लगे हम चलते हैं और हम चाहते थे कि आप (अ.स.) उसी वक्त उस्को जवाब देते पस आप (अ.स.) नें जूता पहना और रवाना

हुवे जब कि आप (अ.स.) यह आयत तिलावत कर रहे थे:

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ

(सूरे आले इमरान आयत 134)

और जोलोग गुस्सा को पी जाते हैं. लोगों को माफ करते हैं और खुदा नेकी करने वालों को दोस्त रखता है.

रावी कहता है हम आप (अ.स.) के इस आयत के तिलावत करने से समझे कि आप (अ.स.) उसे बुरा भला नहीं कहें गे, पस आप (अ.स.) उस शख्स के घर तक पहुंचे, और आवाज़ देकर कहा कि उस से कहो कि अली इब्ने हुसैन आया है. जब उस शख्स नें सुना कि हज़रत आये हैं तो वह बुराई केलिये तय्यार होकर आया,

और उसे इस में शक नहीं था कि आप (अ.स.) उस्की जसारतों का बदलह देनें के लिये आए हैं. जब आप (अ.स.) नें उस्को देखा तो फरमाया: अय भाई तू मेरे पास आया था और तूनें यह बातें कही. पस वह बुरी बातें जो तूनें ज़िक्र की हैं अगर मुझ में पाई जाती हैं. तो मैं खुदा से उन्की बखशीश की दुआ माँगता हूँ, और अगर वह बातें जो तूनें कही हैं. मुझमें नहीं हैं. तो खुदा तुझे माफ़ फरमाऐ. रावी कहता है उस शख्स ने जब यह सुना तो आप (अ.स.) की दोनों आँखों के दरमियान बोसा दिया और कहनें लगा कि जो कुछ मैंनें कहा है मैं उन बुराइयों का ज्यादा सजावार हूँ. (अह्सनुल मकाल जिल्द 1 पेज 573 अल इरशाद जिल्द 2 पेज 145.)

2-इमामे हसन (अ.स.) का कोहेगिरां हिल्म:

इमामे हसन (अ.स.) के हिल्म व बुर्दबारी का दुश्मन भी ऐतेराफ करते थे. जिस वक्त इमाम (अ.स.) शहीद हुवे और जनाजे को घर से बाहर लेकर आये (तीरों की बारिश के बाद) तय यह पाया कि हज़रत इमाम हसन (अ.स.) को बकीअ की कब्रस्तान में दफन किया जाऐ मरवान इब्ने हेकम जो अहलेबैत (अ.मु.स) का सख्त तरीन दुश्मन था. ताबूते इमामे हसन (अ.स.) को कंधे पर उठाए हुए बकीअ की तरफ ले जा रहा था. उस वक्त इमामे हुसैन (अ.स.) गिरया की हालत में मरवान से मुखातिब हुवे:

تَحْمِلُ الْيَوْمَ جَنَازَتَهُ وَكُنْتَ بِالْأَمْسِ تُجَرِّعَهُ

الْغَيْظَ؟

आज उस (इमाम हसन अ.स.) के जनाजे को उठाये हुवे हो. जिसको कल तक तुमने गम व अंदोह में डाले हुवे था.

यह इस बात की तरफ इशारा था. कि कल तक हज़रत (अ.स.) से बुग्ज़ व कीना रखते थे, और ज़ुल्म करते थे, मरवान नें कहा:

نَعَمْ كُنْتُ أَفْعَلُ بِمَنْ يُوَازِنُ حِلْمُهُ الْجِبَالَ

जी हाँ! उस्के साथ इसतरह किया कि जिसका हिल्म कोहे गिरां के बराबर था. (गंजीनए मआरिफ जिल्द 1, पेज 341, बिहारुल अन्वार जिल्द 44, पेज 145)

27) दुआ

आयात:

1-दुआ करना इबादत है:

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ

يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ

(सूरए गाफिर आयत 60.)

और तुम्हारे परवर दिगार का इरशाद है कि मुझ से दुआ करो, मैं कबूल करूँगा, और यकीनन जो लोग मेरी इबादत से अकड़ते हैं. वह अन्क़रीब ज़िल्लत के साथ जहन्नम में दाखिल होंगें.

2-दुआ करें:

قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَاۗؤُكُمْ

(सूरए फुरकान आयत 77.)

पैगंबर (स.अ.व.) आप कह दीजिए कि अगर तुम्हारी दुआएं न होतीं तो परवर दिगार तुम्हारी परवाह ही न करता.

3-खुदा दुआ कबूल करता है:

وَاِذَا سَاَلَکَ عِبَادِیۡ عَنِّیۡ فَاِنِّیۡ قَرِیۡبٌ ؕ اُجِیۡبُ دَعۡوَۃَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ

(सूरए बकरह आयत 186)

और अय पैगंबर अगर मेरे बंदें तुम से मेरे बारे में स्वाल करें तो मैं उनसे करीब हूँ पुकारने वाले की आवाज़ सुनता हूँ जब भी पुकारता है.

4-दुआ करने का तरीकह:

اُدۡعُوۡا رَبَّکُمۡ تَضَرُّعًا وَّ خُفۡیَۃً ؕ

(सूरए आराफ आयत 55.)

तुम अपने रब को गिड गिडा कर और खामोशी के साथ पुकारो.

5-दुआ में इखलास:

فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ

(सूरए गाफिर आयत 14.)

लेहाज़ा तुम खालिस इबादत के साथ खुदा को पुकारो.

रवायात:

1-फजीलते दुआ:

قال رسول الله صلي الله عليه و اله : اَلدُّعَاءُ اَفْضَلُ مِنْ

قَرَائَتِ الْقُرْآنِ

(अल्मीजान जिल्द 2 पेज 34)

रसूले अकरम (स.अ.व.) ने फरमाया: दुआ करनां किरअते कुरआन (यानी कुरान पढ़ने) से अफज़ल व बरतर है.

2-मोमिन का हथ्यार:

قال رسول الله صلي الله عليه و اله : اَلدُّعَاءُ سِلَاحُ

الْمُؤْمِنِ وَعَمُوْدِ الدِّيْنِ وَنُوْرُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ

(काफी जिल्द 2 पेज 468)

पैगम्बरे अकरम (स.अ.व.) ने फरमाया: दुआ मोमिन का हथयार, दींन का सुतून, और ज़मीन व आसमान का नूर है.

3-दुआ रद्दे बला:

قال رسول الله صلي الله عليه و اله : إِدْفَعُوا أَبْوَابَ الْبَلَاءِ بِالدُّعَاءِ

(वासाएल अल शीआ जिल्द 7 पेज 42)

पैगम्बरे अकरम (स.अ.व.) ने फरमाया: दुआ के ज़रिये अपने आप से बलावों को दूर करो.

4-खुदा दुआ कबूल करता है:

قال علي بن أبي طالب عليه السلام : مَنْ دَعَا اللهَ أَجَابَهُ

(गोररुल हेकम जिल्द .1, पेज 459)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: जो खुदा से दुआ करता है वह उसे कबूल करता है.

5-बेहतरीन असलहा:

قال علي بن أبي طالب عليه السلام : نِعْمَ السِّلَاحُ الدُّعَاءُ

(गोररुल हेकम जिल्द .1, पेज 460)

हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) नें फरमाया: बेहतरीन असलहा दुआ है.

तशरीह:

दुआ इंसान का सरमायऐ फख्र, इबादत का जौहर, अपनें रब से बंदे का राज़ व नियाज़, मोमिन का असलहा, अंबिया का तरीक़ा, अइम्मह का शेआर, और इस वसी काऐनात में जहां इंसान किसी भी चीज़ का मालिक नहीं, उस्के दामने मिलकियत में वह दुर्रे यकता है. जो कुदरत नें उसे इनायत किया.

दुआ कितनी अज़ीम ज़रूरत है मोमिन की! कितना मुहताज है इंसान अपने रब से हम कलामी का! कितनी बड़ी ख्वाहिश है मोमिन की, उस्की बारगाहे नियाज़ में अपनी गुज़ारिशात पहुँचाने की, कितना बड़ा सरमायऐ सोकून है यह मुज़्तरिब इंसान केलिये, कितना बद बख्त है वह इंसान जिस के पास यह मिलकियत, यह सरमाया न हो.

कितना खुशनसीब है वह इंसान जिस की ज़िंदगी का सरमाया दुआ है.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के इमामे जैनुल आबेदीन (अ.स.) सय्य्दुस्साजेदीन (अ.स.) हमें दुआ करने की तौफीक अता फरमा. (आमीन)

वाकेआत:

1-खुदा के अलावह किसी से स्वाल न करो:

अल्लामा मजलिसी बिहारुल अन्वार में रवायत करते हैं कि. मोहम्मद इब्ने अजलान कहते हैं कि मैं सख्त मुश्किलात में गिरफ्तार था और काफी मकरूज़ हो चुका था. कर्ज देने वाले मुझे बहुत तंग कर रहे थे इसी वजह से मैं अपनें कदीमी दोस्त हसन बिन ज़ैद जो कि उस वक्त मदीने का अमीर था, के पास गया उस दौरान मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अली (अ.स.) बिन हुसैन (अ.स.) जो मेरे पुरानें साथियों और दोस्तों में से थे मेरी मुश्किलात और परेशानियों से आगाह हुवे. इत्तेफाकन रास्ते में उन से मुलाक़ात हुई, और उन्हों नें मेरा हाथ पकड़ कर मुझ से कहा, मैं तुम्हारी परेशानियों और सख्तियों और उन्की दूरी से बा खबर हूँ, बताव क्या करना चाहते हो और किस से

मदद के तालिब हो? मैंने कहा: हसन बिन ज़ैद
उन्हों ने फरमाया: वह तुम्हारी हाजत को पूरा नहीं करसकता, और जो तुम चाहते हो उस्को अंजाम नहीं दे सकता, आव और किसी ऐसे के पास चलते हैं. जो तुम्हारा काम और तुम्हारी मुश्किलात को दूर कर सकता हो. वह अज्वदुल अज्वदीन है, और तुम अपनी हाजत को उस से तलब करो, मैंने अपने चचा इमामे सादिक़ (अ.स.) उन्हों नें अपने जद्दे अमजद इमामे हुसैन (अ.स.) से और उन्हों नें अपने वालिदे गेरामी अली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) से और उन्हों ने रसूले खुदा (स.अ.व.) से रवायत नक्ल की है, कि आंहज़रत नें फरमाया:
खुदा वंदे मूतआल नें अपने बाज़ पैगंबरों की तरफ वही की मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम जो कोई भी मेरे अलावह किसी से

उम्मीद लगाएगा मैं उस्की उम्मीद को ना उम्मीदी में बदल दूंगा, और ज़िल्लत व ख्वारी का लिबास लोगों के दरमियान उसे पहनाऊंगा और अपनी रहमत व फज्ल से उस्को दूर रख्खू गा. क्या मेरा बंदह सख्तियों में मेरे अलावह किसी और से, उसे हल केलिये उम्मीद लगाऐ हालांकि सख्ती मेरे हाथ में है और मेरे अलावह किसी से क्या उम्मीद रखता है. हांलांकि मैं मुश्किल को हल करने वाला हूँ. बंद दरवाजों की चाभी मेरे पास है, और मेरा दरवाज़ा हर ऐक के लिये खुला हुवा है.

क्या तुम नहीं जानते, जब भी किसी पर कोई मुसीबत आती है. तो मेरे अलावा कोई उसे दूर नहीं कर सकता. पस मेरा बंदह मुझसे क्यूं रूगरदानी करता है, और दूसरों से उम्मीद लगाऐ रखता हैं. हालांकि मैं उस्के सवाल से पहले उसे अता करता हूँ. क्या

मुमकिन हैं कि कोई बंदः मुझ से मांगे और मैं उस्को न दूं हरगिज़ ऐसा नहीं है. क्यूकि मेरा जूद व करम खास नहीं है. क्या दुन्या व आखेरत मेरे अख्तियार में नहीं है. अगर तमाम ज़मीन व आसमान के रहने वाले मुझ से कुछ मांगें और मैं हर एक को उस्की चाहत के मुताबिक अलग अलग दूं तब भी मेरी मिलकियत में मख्खी के पर के बराबर कमी न होगी. और कम भी किस तरह हो सकती है. क्यूंकि चीज़ों का तकसीम करने वाला मैं हूँ. अय मुफलिस व मुहताज मेरी नाफरमानी करता है, और मुझ से डरता भी नहीं.

मैंनें उनसे कहा अय फर्जन्दे रसूल (स.अ.व.) इस हदीस को दोबारा मेरे लिये बयान करें. फर्जन्दे जहरा (स.अ.) नें इस हदीस को तीन मर्तबा मेरे लिये बयान किया. मैंनें कहा खुदा की क़सम इसके बाद अपनी हाजत किसी से

तलब नहीं करू गा, और कुछ ही देर गुज़री थी कि खुदा नें अपनीं तरफ से मेरे लिये रोजी पहुँचा दी. (चेहल हदीस रसूले महल्लाती जिल्द 2 पेज 129 इंसान साज़ वाकेआत पेज 138)

2-किस की दुआ कबूल नहीं होती:

रावी कहता है मैं सादिके आले मोहम्मद (स.अ.व.) के साथ मक्का और मदीना के दरमियान था. एक साऐल आया आप नें हुक्म दिया कि उसे दिया जाऐ फिर दूसरा आया फरमाया: उसे भी कुछ दिया जाऐ फिर तीसरा आया फरमाया: इसे भी दिया जाऐ फिर चौथा आया फरमाया: अल्लाह तुझे सैर करे और हम से मुखातिब होकर फरमाया: हमारे पास अभी देने केलिये है. तो मगर मुझे यह खौफ हुवा कि कहीं हम उनमें से न होजाएं जिन की दुआ कबूल नहीं होती. पहले वह जिसको अल्लाह माल दे और वह

उस्को गैर मुस्तहक में खर्च करदे और फिर खुदा से दुआ करे कि मुझे रिज्क दे तो उस्की दुआ कबूल न होगी. दूसरा वह जो अपनी बीवी केलिये दुआ करे कि वह हलाक होजाऐ हालांकि उसे तलाक़ देंनें का हक़ है. तीसरे वह जो पड़ोस केलिये बददुआ करे हालांकि अल्लाह नें यह कुदरत दी है कि वह उस्की हंमसाऐगी छोड़ दे, और अपना मकान बेच डाले.

इमाम सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: चार अश्खास की दुआ कबूल नहीं होती 1-वह जो अपने घर में बैठा रहे और कहे खुदा मुझे रिज्क दे उसे कहा जाएगा मैंनें तुझे तलाशे रोजी का हुक्म नहीं दिया है. 2-जो अपनी औरत के लिये बद दुआ करे उस से कहा जाऐगा क्या मैंनें तलाक की इजाज़त नहीं दी है. 3-वह जिस ने अपना माल गलत तरीके पर खर्च किया हो और फिर खुदा से

रिज्क मांगे, उस से कहा जाऐगा क्या मैंनें मियाना रवी का हुक्म नहीं दिया था, और क्या इस्लाह का हुक्म नहीं दिया था. 4-वह शख्स जो बगैर गवाह के कर्ज़ दे उस से कहा जाऐगा क्या मैंनें गवाह बनाने का हुक्म नहीं दिया था. (किताब अल शाफी जिल्द 5 पेज 148-149)

28) दुन्या

आयात:

1-कुरआन की नज़र में दुन्या:

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ؕ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ

(सूरेए अनकबूत आयत 64)

और यह दुन्या की ज़िंदगी एक खेल तमाशे के लावह और कुछ भी नहीं है, और आखेरत का घर हमेशा की ज़िंदगी का मरकज़ है. अगर यह लोग कुछ जानते और समझते हैं.

2-दुन्या इम्तेहान गाह:

اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا

(सूरए कहफ आयत 7)

बेशक हमने रूवे ज़मीन की हर चीज़ को ज़मीन की ज़ीनत क़रार दे दिया है ताकी उन लोगों का इम्तेहान लें कि उनमें अमल के ऐतेबार से सब से बेहतर कौन है.

3-दुन्या की जज़ा

مَنۡ كَانَ يُرِيۡدُ ثَوَابَ الدُّنۡيَا فَعِنۡدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنۡيَا وَ

الۡاٰخِرَةِ ‌ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيۡعًۢا بَصِيۡرًا

(सूरए निसा आयत 134)

जो इंसान दुन्या का सवाब और बदला चाहता है (उसे मालूम होना चाहिए) कि खुदा के पास दुन्या व आखेरत दोनों का इनाम है, और हर एक का सुनने वाला और देखने वाला है.

4-दुन्या दोस्ती:

كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَ تَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ

(सूरए कयामत आयात 20’21)

हरगिज़ नहीं बल्की तुम दुन्या को चाहते हो और आखेरत को नज़र अंदाज़ किये हुवे हो.

5-दुन्या पर फख्र:

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ۭ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ۭ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ

(सूरए हदीद आयत 20)

याद रख्खो दुन्या की ज़िंदगी सिर्फ एक खेल, तमाशा, आराइश, बाहमी तफाखुर और अमवाल व अव्लाद की कसरत का मुकाबला

है, और बस जैसे कोई बारिश हो जिस की कूवते नामिया (बढ़ने वाली ताकत) किसान को खुश करदे और उस्के बाद वह खेती खुश्क हो जाऐ फिर तुम उसे ज़र्द देखो और आखिर वह रेज़ा रेज़ा हो जाऐ और आखेरत में शदीद अज़ाब भी है, और मग्फेरत और रेजाए इलाही भी है, और जिन्देगानिये दुन्या तो बस एक धोके का सरमाया है, और कुछ नहीं है.

रवायात:

1-दुन्या से मुहब्बत:

قال الصادق علیه السلام : رَأْسُ كُلِّ خَطِيئَةٍ حُبُّ الدُّ

نْيَا

(बिहारुल अन्वार जिल्द 70’पेज 70)

इमाम सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: तमाम बुराइयों की जड़ हुब्बे दुन्या है.

2-दुन्या गुजरगाह:

قال عیسی علیه السلام : إِنَّمَا الدُّنْيَا قَنْطَرَةٌ فَاعْبُرُوهَا

وَلَا تَعْمُرُوهَا

(खिसाल पेज 35)

हज़रत ईसा (अ.स.) नें फरमाया: बेशक दुन्या एक पुल है पस उस्को ओबूर (उससे गुज़र जाव) करो और उस्को आबाद न करो.

3-दुन्या मोमिन के लिये ज़िन्दान:

قال أمير المومنين عليه السلام : اَلدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَ

الْمَوْتُ تُحْفَتُهُ وَ الْجَنَّةُ مَاوَاهُ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 463)

हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) नें फरमाया: दुन्या मोमिन के लिये क़ैद खाना और मौत उस्का तोहफ़ा है और जन्नत उस्का ठिकाना है.

4-दुन्या सायह और ख्वाब है:

قال علي بن أبي طالب عليه السلام : اَلدُّنْيَا ظِلُّ

الْغَمَامِ وَ حُلْمِ الْمَنَامِ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 464)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: दुन्या बादल का साया और एक ख्वाब है.

5-फ़ाइदह उठाने वाला:

قال أمير المومنين عليه السلام : اَلرَّابِحُ مَنْ بَاعَ

اَلْعَاجِلَةَ بِالآجِلَةِ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 465)

हज़रत अमीरुल मोमेनीन (अ.स) नें फरमाया: फाऐदा उठाने वाला वह है जो दुन्या को आखेरत के बदले फरोख्त कर देता है.

तशरीह:

दुन्या की दिनायत और पस्ती के लिये उस्का नाम ही क्या कम था कि उस्के हालात और इन्केलाबात नें उस्की हक़ीक़त को और वाज़ेह कर दिया.

दुन्या और उस्की बेसबाती (हमेशा न रहने वाली) के बारे में बेशुमार अक्वाल पाऐ जाते हैं. और कुरआन मजीद से लेकर मुफक्केरीन आलम तक सब नें उस्की बेसबाती और बेवफाई का तज्केरा किया है. मगर अफ़सोस यह है कि यह जिस क़दर बेवफा है लोग उसी क़दर उस्के दीवाने हैं, और यह जिस क़दर लोगों से किनारा कशी अख्तियार करती है, लोग उसी क़दर उस्के करीब होजाते हैं, मौलाए काऐनात नें हकीक़ते दुन्या के बारे में मुतअद्दिद अंदाज़ से तवज्जोह दिलाई है, और इंसान को उस्के खतरात से बाखबर किया है, दुन्या की मिसाल सांप

जैसी है, कि बाहर से उस्का जिस्म इन्तेहाई नरम और लतीफ़ होता है. लेकिन अंदर ज़हरे कातिल का एक जखीरा होता है. जिस का मतलब यह है कि, उस्का इश्क उन्ही दिलों में पैदा हो सकता है. जो सिर्फ ज़ाहिर पर कुर्बान होने वाले हैं. वरना जिन्हें हकाऐक़ का इदराक होगया है. वह किसी कीमत पर उस्की तरफ तवज्जोह करने वाले नहीं हैं. दुन्या एक ढलता हुवा साया है. साया में इंसान को सुकून ज़रूर मिलता है लेकिन साया में कभी दवाम नहीं होता है. दुन्या धोकाबाज़ भी है, और नुकसान देह भी, दुन्या पलटने वाली भी है, और ज़वाल पज़ीर भी, दुन्या खत्म होने वाली भी है, और फना होनें वाली भी, दुन्या खाजाने वाली भी है, और तबाह कुन भी, जिसनें फकत दुन्या को सब कुछ समझा वह हलाक हुवा, और जिसनें दुन्या को जारीयऐ आखेरत समझा

और सब कुछ इस दुन्या में रह कर आखेरत के लिये काम किया. वह कामियाब व कामरान हुवा. खुदा से दुआ करते हैं बहक्के मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.मु.स.) हमें इस दुन्या में नेक अमल करने की तौफीक अता फरमा.(आमीन)

वाकेआत:

1-हाथों में राज़:

ज़ुलकरनैन सिकंदर नें मौत के वक्त वसीयत की जब मेरा जनाज़ा उठाया जाऐ तो मेरे दोनों हाथों को मेरे जनाज़े के कफ़न से बाहर निकाल दिया जाऐ जिन्हें देखने वाले देखें.

उस्की वफात के बाद उस्की वसीयत पर अमल किया गया और उस्के दोनों हाथों को कफ़न से बाहर निकाल दिया गया. उस्के जनाजे के साथ चलने वाले सब लोग उस्के बारे में एक दूसरे से पूछते लेकिन किसी को मालूम न था, कि इस का मतलब क्या है, एक दाना व अक़ल्मंद से पूछा गया, तो उसनें कहा कि इस राज़ से परदा उठाया जाऐ. कहा: इस वसीयत का मकसद हमें यह बात समझना है कि गौर से देखो सिकंदर जैसा बादशा भी इस दुन्या से खाली हाथ

जारहा है. वह इस दुन्या के माल व खजानों से कुछ भी अपने साथ नहीं ले जा रहा है. (मौज़ूई दास्तानें पेज 175)

2-हज़रत ईसा (अ.स.) सूई के साथ:

जब हज़रत ईसा (अ.स.) को आसमान की तरफ उठाया गया, तो आप हज़रत जब्रईल के साथ रवाना थे, जब आप आसमाने अव्वल, दुव्वुम, और सुव्वुम को ओबूर करके आगे बढे, तो हज़रत जब्रईल को खिताब पहुँचा. हज़रत ईसा (अ.स.) को बस उधर ही रोक दियाजाऐ. वह उस से ऊपर नहीं जा सकते. अब ज़रा उनका मुकम्मल जाऐज़ा लिया जाऐ कि दुनयावी असबाब व अमवाल से वह क्या कुछ हमराह लिये जा रहे हैं.

जब देखा गया तो उन्के पैराहन के गरीबान में लगी हुई एक सूई निकली उन से पूछा गया आप यह सूई अपने हमराह क्यूं ले आऐ हैं? हज़रत ईसा (अ.स.) नें फरमाया:

मैं जब इस सफर पर रवाना होरहा था तो मुझे ख़याल गुज़रा कहीं अयसा न हो कि रास्ते में मेरा लिबास किसी जगह से फट जाऐ और मैं फटे लिबास के साथ दरगाहे आली में हाज़री दूं. इसी लिये सूई साथ लाया हूँ. खुदा वंदे मूतआल की तरफ से खिताब हुवा: मेरे पैगंम्बर नें चूँकि एक सूई बराबर ही दुन्या पर भरोसा किया, है इस लिये आगे बुलंदी की तरफ जाने से रोक दिये गये है, और ईसी आसमाने चहारुम पर ही बाकी रहें गें. अगर वह यह सूई साथ न लाऐ होते तो उन्की मंजिल व मुक़ाम अर्शे इलाही होता.

(मैजूई दास्तानें पेज 183)

29) ज़िक्र

आयात:

1-ज़िक्रे खुदा:

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ

(सूरए बकरा आयत 152)

अब तुम हमको याद करो ताकि हम तुम्हें याद रख्खें और हमारा शुक्र अदा करो और कुफ़रानें नेमत न करो.

2-सुबह शाम जिकरे खुदा:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا

وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا

(सूरए अहज़ाब आयात 41’42)

ईमान वालो अल्लाह का ज़िक्र बहुत ज़्यादह किया करो और सुबह व शाम उस्की तस्बीह किया करो.

3-इतमीने कल्ब:

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ

(सूरए राद आयत 28)

यह वह लोग हैं जो ईमान लाए हैं और उन्के दिलों को यादे खुदा से इत्मीनान हासिल होता है और आगाह हो जाव कि इत्मीनान यादे खुदा ही से हासिल होता है.

4-अज़ीम ज़िक्र:

وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ

(सूरए अनकबूत आयत 45)

और अल्लाह का ज़िक्र बहुत बड़ा है और अल्लाह तुम्हारे कार व बार से खूब बाखबर है.

5-ज़िक्रे खुदा तौबा और तवज्जोह का सबब:

وَالَّذِيْنَ اِذَافَعَلُوْافَاحِشَةً اَوْظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا

اللّٰہَ فَاسْتَغْفَرُوْالِذُنُوْبِهِمْ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۟ وَ

لَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَافَعَلُوْاوَهُمْ يَعْلَمُوْنَ

(सूरए आले इमरान आयत 135)

वह लोग वह हैं कि जब कोई नुमाया (खुली हुई) गुनाह करते हैं, या अपनें नफ्स पर ज़ुल्म करते हैं तो खुदा को याद करके अपनें गुनाहों पर अस्तागफार करते हैं, और खुदा के अलावा कौन गुनाहों का माफ करने वाला है, और वह अपने किये पर जान बूझके इसरार नहीं करते.

रवायात:

1-अक्ल की रौशनी:

قال أمير المومنين عليه السلام : اَلذِّكْرُ نُورُ الْعَقْلِ وَ

حَيَاةُ النُّفُوسِ وَجَلَاءُ الصُّدُوْرِ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 547)

हज़रत इमाम अली (अ.स.) ने फरमाया: ज़िक्र खुदा अक्ल की आगही, (अकलों को आगाह करता है) नोफूस की हयात (नफ्सों को ज़िंदा करता है) और सीनों की जिला, (सीनों को कुशादा करता) है.

2-बसीरतों की रौशनी:

قال علي بن أبي طالب عليه السلام : اَلذِّكْرُ جَلَاءُ

الْبَصَائِرِ وَنُوْرُ السَّرَائِرِ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 549)

अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) नें फरमाया: यादे खुदा बसीरतों की जिला (यानी बढाता है) और बातिन का नूर है.

3-ज़िक्र खुदा और रहमत के नोजूल (नाज़िल होनें) का सबब:

قال علي بن أبي طالب عليه السلام : بِذِكْرِ اللهِ تُسْتَنْزَلُ الرَّحْمَةُ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 550)

इमाम अली (अ.स.) नें फरमाया: ज़िक्रे खुदा से रहमत नाज़िल होती है

4-शैतान से तहफ्फुज़ (हिफाज़त):

قال علي بن أبي طالب عليه السلام : ذِكْرُ اللهِ دِعَامَةُ الْإِيْمَانِ وَعِصْمَةٌ مِنَ الشَّيْطَانِ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 551)

मौलाऐ काऐनात (अ.स.) ने फरमाया: ज़िक्रे खुदा दीन का सोतून और शैतान से तहफ्फुज़ (हिफाज़त) व सलामती है.

5-खुदा याद करता है:

قال أمير المومنين عليه السلام : مَنْ ذَكَرَ اللهَ ذَكَرَهُ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 552)

इमाम अली (अ.स.) नें फरमाया: जो खुदा को याद करता है खुदा उस्को याद करता है.

तशरीह:

आज कल के दौर में हर शख्स किसी न किसी परेशानी में मुब्तेला है. और हर एक की कोशिश है कि उसको सुकून व आराम मिल जाऐ. इस सोकून व इत्मीनान की तलाश में नजानें कहाँ से कहाँ चला जाता है. लेकिन फिर भी सोकून नहीं मिलता. लेकिन कुरआन व रवायात नें हमें बताया. कि ज़िक्रे खुदा ही के ज़रिये सोकूंन व इत्मीनान हासिल हो सकता है. लेकिन इंसान चूंकी यादे खुदा से गाफिल है. गुनाह व मासीयत माल व दौलत की रेकाबत (मुकाबिलों), लंबी उम्मीदों, नें इन्सान को ज़िक्रे खुदा से रोक रख्खा है, जब हम उस्को भूल गये तो उसनें हमें नहीं भुलाया, वह इतना रहीम व करीम है, कि हम उस्का ज़िक्र नहीं करते उस्के बावजूद वह हमें नेमतें दे रहा है, और ज़िक्रे खुदा से मुराद

यह है कि, इंसान किसी हाल में भी खुदा को फरामोश न करे, हर हाल में खुदा को याद रख्खे, जब हम उस्को याद रख्खें गें तो वह हमें याद रख्खे गा, दिल के सुकून का एक ही रास्ता यादे खुदा है.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के असीरानें कर्बला हमें ज़िक्र खुदा करने की तौफीक अता फरमा. (आमीन)

वाकेआत:

1-एक तस्बीह हज़रत सुलैमान की हुकूमत से बेहतर है:

किताबे इद्दतुद्दाई में ज़िक्र है कि: एक मरतबा जब हज़रत सुलैमान बिन दाऊद (अ.स.) तख्ते शाही पर बैठे महवे परवाज़ (यानी हवा में उड़ रहे) थे. तो उन्के कानों में किसी देहाती के तस्बीह करने की आवाज़ आई. हज़रत सुलैमान का तख़्त तीन मील चौड़ा और तीन मील लंबा था, और तख़्त पर बिछे हुवे फर्श पर जिनों नें सोनें से कशीदा कारी (यानी नक्श व नेगार) की थी उस तख़्त पर छे हज़ार कुर्सियां लगी हुई थी. और हज़रत सुलैमान (अ.स.) उस्के बीचो बीच शान व शौकत से तशरीफ़ फरमाँ थे. उन्के करीब पहली सफ में ओलमा, दूसरी में वोज़रा, और तीसरी में लश्कर के सरदार, और उस्के बाद दूसरे लोग सफ दर सफ मौजूद

थे. उस्के बाद जिन्नात थे और सर पर परिंदों नें सायह कर रख्खा था.

हवा उस तख़्त को जहां कहीं भी हज़रत (अ.स.) सुलैमान जाना चाहते उड़ा कर लेजाया करती थी.

अय्से ही एक सफर में. जब उस देहाती किसान की आवाज़ हज़रत सुलैमान की तवज्जोह का मरकज़ बन गई. जो कह रहा था.

सुबहान अल्लाह! क्या शान है उस खुदा वंदे ज़ुल्जलाल की, जिसने आले दाऊद (अ.स.) को अयसी शानदार हुकूमत अता की है! हवा नें देहाती का कलाम हज़रत सुलैमान (अ.स.) के कानों तक पहुँचाया. हज़रत सुलैमान (अ.स.) नें हुक्म दिया कि तख्ते शाही को नीचे उतारा जाये. हवा नें तख़्त ज़मीन पर उतारा. हज़रत सुलैमान उस देहाती के क़रीब गये और फरमाया:

تَسْبِيْحَةٌ وَاحِدَةٌ يَقْبَلُهَا اللهُ خَيْرٌ مِمَّا اُوْتِيَ مِنْ آلِ دَاوُدَ

जब कोई बंदऐ खुदा एक तस्बीह (सुब्हान अल्लाह एक बार) कहता है. और उस्की बारगाह में क़बूलियत का शरफ हासिल कर लेती है. तो यह तस्बीह इलाही, बेहतर है उस हुकूमत से जो आले दाऊद (अ.स.) को अता की गई है.

एक और रवायत में ज़िक्र हुवा है. कि एक बार सुबहान अल्लाह कहना चांदी के पहाड़ को राहे खुदा में इन्फाक करनें से बेहतर है.

मौलाऐ काऐनात नें इरशाद फरमाया: जो शख्स एक मरतबा सुब्हान अल्लाह कता है. तो तमाम मलाऐका (अ.स.) उसपर सलवात भेजते हैं. और तस्बीह के सवाब को खुदा के अलावह कोई नहीं जानता. (आमाल अल वाएजीन जिल्द 1 पेज 203-202 बिखरे मोती जिल्द 1 पेज 116)

2-तिलावते कुरआन की लज़्ज़त:

जिन ग़ज़वात (जंगों) में रसूले अकरम (स.अ.) शिरकत फरमाया करते थे. उन में से एक ग़ज़वह (जंग) के मैक़े पर आप (स.अ.व.) नें लश्कर को सहरा (जंगल) में ठहरने का हुकम दिया. लश्कर को शब खूनी (यानी रात में खून न बहे) से महफूज़ रखने केलिये आंहज़रत नें दो लोगों को पहरा देने केलिये मुक़र्रर फरमादिये. उनमें से एक अम्मार बिन यासिर थे, और दूसरे कोई और सहाबी.

सारा लश्कर सो गया, और उन दो अफराद नें रात के दो हिस्से करलिये, और आपस में बारी बारी जाग कर पहरा देने का फैसला कर लिया. अम्मार बिन यासिर सो रहे थे, और उन्का साथी जाग रहा था. और नमाज़ पढ़ने में मशगूल था पहली रकअत में सूरए हम्द के बाद सूरऐ कहफ़ की तिलावत शुरू

करदी. उसी दौरान में यहूदियों का एक जासूस इधर निकल आया. वह यह नहीं जानता था कि. लश्कर वाले सो रहे हैं या जाग रहे हैं. उन पर हम शबे खून (यानी तीर चला सकते हैं या नहीं) मार सकते हैं या नहीं! उस जासूस नें दूर से देखा कि, कोई चीज़ सोतून की तरह खड़ी हुई है. लेकिन तारीकी की वजह से समझ में नहीं आरहा था, कि किसी दरख़्त का तना है या कोई इंसान है.

यह जानने केलिए उसने उस्की तरफ एक तीर फेंका. तीर अम्मार के साथी को आकर लगा लेकिन उन में ज़र्रह बराबर भी जुम्बिश (हिलना) पैदा नहीं हुई. दर असल वह तिलावते कुरआन की लज़्ज़त में महो (गुम) होचुका था. यहूदी नें महसूस किया कि मेरे तीर का कोई असर नहीं हुवा. मालूम नहीं यह तीर निशाने पर लगा है या नहीँ.

चुनान्चेह उसने दूसरा तीर फेंका. उस तीर नें भी आकर उस नमाज़ी के जिस्म में एक और सूराख करदिया. लेकिन फिर भी उन में कोई हरकत नहीं हुई फिर जब उन्हें तीसरा तीर लगा. तो उन्हों नें अम्मार बिन यासिर को पावं से जगाया, और उस्के बाद वह नमाज़ मुकम्मल करके ज़मीन पर गिर पड़े. अम्मार नें तमाम मुसलमान सिपाहियों को जगाया, और आखिरकार यहूदी फरार होगया. उस्के बाद अम्मार नें अपनें साथी से पूछा. कि जब पहला तीर लगा. तो तुम नें मुझे क्यूं नहीं जगाया. साथी नें जवाब दिया: खुदा की क़सम मैं सूरऐ कहफ़ की तिलावत को रोकना नहीँ चाहता था. अल्बत्ता जब मुझे इसबात का खौफ महसूस हुवा कि. कहीं अयसा न हो कि बाद में मैं तुम्हें नहीं जगा सकूं. और दुश्मन लश्करे इस्लाम पर हमला करदे. लेहाज़ा मैंनें तुम्हें (तीसरा तीर

लगनें के बाद) जगा दिया- (बिखरे मोती जिल्द 2 पेज 105)

30) रेयाकारी

आयात:

1-रियाकारी से मना किया गया है:

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِم بَطَرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ

(सूरए अनफाल आयत 47)

और उनलोगों जैसे न हो जाव जो अपने घरों से इतराते हुवे और लोगों को दिखानें के लिये निकले और राहे खुदा से रोकते रहे कि अल्लाह उन्के आमाल का ऐहातह (देख रहा है) किये हुये है.

2-देखाने केलिये अमल करने वालों की तबाही:

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ

سَاهُوْنَ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ

(सूरए माँउन आयात 4’5’6)

तो तबाही है उन नमाजियों केलिये जो अपनी नमाजों से गाफिल रहते हैं दिखाने केलिये अमल करते हैं.

3-रिया कार की मुज़म्मत:

يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ اَحَدٌ

(सूरए बलद आयात 6;7)

कि वह कहता है मैंने बेतहाशा सर्फ़ (खर्च) किया है क्या वह गुमान करता है कि उसे किसी नें नहीं देखा.

4-बद तरीन साथी:

وَالَّذِیۡنَ یُنۡفِقُوۡنَ اَمۡوَالَہُمۡ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا یُؤۡمِنُوۡنَ بِاللّٰہِ وَلَا بِالۡیَوۡمِ الۡاٰخِرِ ؕ وَمَنۡ یَّکُنِ الشَّیۡطٰنُ لَہٗ قَرِیۡنًا فَسَآءَ قَرِیۡنًا

(सूरए निसा आयत 38)

और जो लोग अपने अमवाल को लोगों को दिखाने के लिये खर्च करते हैं और व आखेरत पर ईमान नहीं रखते उन्हें मालूम होना चाहिए कि जिस का शैतान साथी हो जाऐ वह बद तरीन साथी है.

5-रिया मुनाफिक की सिफत:

اِنَّ الۡمُنٰفِقِیۡنَ یُخٰدِعُوۡنَ اللّٰہَ وَہُوَ خَادِعُہُمۡ ۚ وَاِذَا قَامُوۡۤا اِلَی الصَّلٰوۃِ قَامُوۡا کُسَالٰی ۙ یُرَآءُوۡنَ النَّاسَ وَلَا یَذۡکُرُوۡنَ اللّٰہَ اِلَّا قَلِیۡلًا

(सूरए निसा आयत 142)

मुनाफेकीन, खुदा को धोका देना चाहते हैं, और खुदा उन्को धोके में रखने वाला है, और यह नमाज़ के लिये उठते हैं, तो सुस्ती के साथ लोगों को दिखाने केलिये अमल करते हैं, और अल्लाह को बहुत कम याद करते हैं.

रवायात:

1-इबादत की आफत:

قال أمیر المومنین علیه السلام : آفَةُ الْعِبادَةِ الرِّيَاءُ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 576)

हज़रत अली बिन अबी तालिब (अ.स.) नें फरमाया: इबादत की आफत रयाकारी है.

2-रियाकारी शिर्क है:

قال أمیر المومنین علیه السلام : يَسِيرُ الرِّيَاءُ شِرْكٌ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 576)

अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) नें फरमाया: थोड़ी सी भी रियाकारी शिर्क है.

3-रियाकारी का ज़ाहिर हसीन:

قال أمیر المومنین علیه السلام : اَلْمُرَائِي ظَاهِرُهُ جَمِيلٌ وَبَاطِنُهُ عَلِيلٌ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 576)

मौला अली (अ.स.) नें फरमाया: रियाकार का ज़ाहिर हसींन और उस्का बातिन बीमार है.

4-बगैर रिया के अमल अंजाम दो:

قال أمير المومنين عليه السلام: إِعْمَلُوا فِي غَيْرِ رِيَاءٍ وَ لَا سُمْعَةٍ فَإِنَّهُ مَنْ يَعْمَلْ لِغَيْرِ اللهِ يَكِلْهُ اللهُ سُبْحانَهُ إِلٰي مَنْ عَمِلَ لَهُ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 575)

अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) नें फरमाया: रियाकारी और शोहरत तलबी के बगैर अमल अन्जाम दो. क्यूंकि जो खुदा के गैर केलिये अमल करता है. तो खुदा उस्को उस्के हवाले कर देता है जिस केलिये उसनें अमल किया था.

5-रियाकार का अमल बातिल:

قال رسول الله صلي الله عليه و اله وسلم : إِنَّ اللهَ لَا

يَقْبَلُ عَمَلاً فِيْهِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِنْ رِئَاءٍ

(मीजान अल हिकमह जिद 2 पेज 1017)

हज़रत रसूले अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया: खुदा वंदे मूतआल ऐसा अमल जिस में ज़र्रह बराबर रिया हो, कबूल नहीं करता.

तशरीह:

इस्लाम में रियाकारी बदतरीन सिफत है. जिस के बारे में बयान किया गया है कि. रोज़े क़यामत रियाकार को उस शख्स के हवाले करदिया जाऐगा. जिस के लिये उसनें अमल किया है, और वह खुदाई अज्र से महरूम करदिया जाएगा, यही हाल बखील का भी है, जिस के बारे में हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: कि किस क़दर बद नसीब बखील है कि दुन्या में फकीरों जैसी ज़िंदगी गुजारता है, और आखेरत में रोवसा (अमीरों) जैसा हिसाब देता है. रिया कारी से जितना होसकता है इंसान बचे क्यूंकि मामूली सी भी रियाकारी शिर्क शुमार होती है, और रिया कार के आमाल बातिल होजाते हैं, जिन केलिये आमाल बजालाया है जज़ा भी उन ही से मिले गी, क्यूंकि आमाल खुदा केलिए बजा नहीं लाया था, तो किस तरह उस्को

जज़ा व पादाश दे. रवायत में है कि इमाम सादिक (अ.स.) ने फरमाया: बरोज़े महशर एक नमाज़ी शख्स को लाया जाएगा. वह बारगाहे यज़्दी में अर्ज करेगा. खुदाया मैंनें तेरी रिज़ा तलबी के लिये नमाज़ पढ़ी थी. जवाब में कहा जाऐगा अयसा नहीं है. बल्कि तूनें इसलिये पढ़ी थी कि लोग कहें गें कि फलां शख्स की नमाज़ कितनी अच्छी है. पस हुक्म होगा कि इसे जहन्नम की तरफ लेजाव.

खुदा से दुआ करते हैं. बहक्के अली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) हमें रियाकरी, खुद नुमाई, अमल के दिखावे, से बचने की तौफीक़ अता फारमा. (आमीन)

वाकेआत:

1-रियाकार शख्स:

अब्दुल आला सल्ल्मी रियाकार शख्स था एक रोज उसनें कहा: लोग समझते हैं कि मैं रिया कार हूँ हालांकि मैंनें कल भी रोज़ा रख्खा था और आज भी रोज़े से हूँ और किसी को मैंनें नहीं बताया कि मैं रोज़े से हूँ (गंजीनए मआरिफ जिल्द 1 पेज 505)

शिदाद बिन ओस कहते हैं: मैंनें पैगम्बरे अकरम (स.अ.) को रोते हुवे देखा, मैंनें कहा: आप क्यूं गिरया कर रहे हैं? फरमाया: अपनी उम्मत पर, शिर्क की डर की वजह से, मेरी उम्मत के लोग बुत चाँद, सूरज, पत्थर, वगैरा की परस्तिश नहीं करेंगे, बल्की वह लोग अपने आमाल में रियाकारी करें गे. (हज़ार व यक हिकायत अखलाकी पेज 212)

2-रियाकार के क़यामत में चार नाम:

पैगम्बरे अकरम (स.अ.व.) के शागिर्दों में से एक शागिर्द नें आंहज़रत (स.अ.व.) से मुलाक़ात की और पूछा: क़यामत के दिन नजात का रास्ता किस्में है? पैगम्बरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया: नजात उस शख्स के लिये है जो कोई खुदा को फरेब व धोका न दे. जो खुदा को धोका देना चाहता है खुदा भी उसे धोके में रखने वाला है. उस्के ज़रिये उस से ईमान को सल्ब करेगा. दर हकीकत उसनें अपने आप को धोका दिया है. पूछा या रसूलुल्लाह (स.अ.व.)! किसतरह खुदा को फरेब देंगे? फरमाया: खुदा ने जो इनको हुक्म दिया है कि मेरे लिये बजालाएं वह गैरे खुदा केलिये बजा लाऐ - रियाकारी से बचो क्यूकी रियाकारी शिर्के खुदा है, और रियाकार शख्स को क़यामत के दिन चार नामों से पुकारा जाएगा.

1-अय काफिर -2-अय फाजिर - 3- अय गादिर (धोके बाज़) - 4- अय खासिर (नुकसान उठाने वाला) तेरे अमल की कोई अहमियत नहीं, और तेरे अमल की जज़ा खत्म कर दी गई है, और आज तुझे कोई फ़ाइदा नहीं मिलेगा. अपनें अमल की जज़ा उस से लो जिसके लिये अमल किया था. (गंजीनए मआरिफ जिल्द 1 पेज 505)

31) ज़ुबान

आयात:

1-अहमीयते ज़ुबान:

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى
شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ۭ هَلْ
يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ

(सूरए नहल आयत 76)

और अल्लाह ने एक और मिसाल उन दो इंसानों की बयान की है. जिन में एक गूंगा है और उस्के बस में कुछ भी नहीं है. बल्की वह खुद अपनें मौला के सर पर एक बोझ है. कि जिस तरफ भी भेज दे कोई खैर लेकर न आयेगा तो क्या वह उस्के बराबर

हो सकता है. जो अदल का हुक्म देताहै और सीधे रास्ते पर गामज़न है.

2-गुफतगू में फ़साहत:

وَ احْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِیْ یَفْقَهُوْا قَوْلِیْ

(सूरए ताहा आयात 27’28)

और मेरी ज़ुबान की गिरह खोल दे कि यह मेरी बात समझ सकें.

3-बद जबानी:

لَا یُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ سَمِیْعًا عَلِیْمًا

(सूरए निसा आयत 148)

अल्लाह मजलूम के अलावह किसी की तरफ से भी अलल ऐलान (खुलकर) बुरा कहने को पसंद नहीं करता और अल्लाह हर बात का सुनने वाला और तमाम हालात का जांनने वाला है.

4-क़यामत में गवाह:

يَّوۡمَ تَشۡهَدُ عَلَيۡهِمۡ اَلۡسِنَتُهُمۡ وَاَيۡدِيۡهِمۡ وَ اَرۡجُلُهُمۡ بِمَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ

(सूरए नूर आयत 24)

क़यामत के दिन उन्के खिलाफ उन्की ज़ुबानें और उन्के हाथ पावं सब गवाही देंगें कि यह क्या कर रहे थे.

5-इंसान अपनी ज़ुबान का ज़िम्मेदार है.

كَلَّا ؕ سَنَكۡتُبُ مَا يَقُوۡلُ وَنَمُدُّ لَهٗ مِنَ الۡعَذَابِ مَدًّا ۙ وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوۡلُ وَيَاۡتِيۡنَا فَرۡدًا

(सूरए मरयम आयात 79’80)

हरगिज़ अयसा नईं है हम उस्की बातों को दर्ज (यानी लिख) कर रहे हैं और उस्के अज़ाब में भी और इजाफ़ा कर देंगें. और उस्के माल और अव्लाद के हम ही मालिक

होंगें और यह हमारी बारगाह में अकेला हाज़िर होगा.

रवायात:

1-मेअयारे इंसान:

قال أمیر المومنین علیہ السلام : اَللِّسَانُ مِیزَانُ الْإِنْسانِ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 507)

इमामुल मुत्तकीन अली (अ.स.) नें फरमाया: ज़ुबान इंसान का पैमाना और मेयार (कसौटी) है.

2-तरजुमाने अक्ल:

قال أمیر المومنین علیہ السلام : اَللِّسَانُ تَرْجُمَانُ الْعَقْلِ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 507)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: ज़ुबान अक्ल की तर्जुमान है.

3-ज़ुबान के नीचे:

قال أمير المومنين عليه السلام : اَلْمَرْءُ مَخْبُوْءٌ تَحْتَ لِسَانِهِ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 507)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: इंसान अपनी ज़ुबान के नीचे छुपा हुवा है.

4-ज़ुबान पर काबू:

قال أمير المومنين عليه السلام : قَوِّمْ لِسَانَكَ تَسْلَمْ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 508)

मौला अमीर (अ.स.) नें फरमाया: अपनी ज़ुबान को सीधा और काबू में रखखो ताकी महफ़ूज़ रहो.

5-हलाकत का सबब:

قال أمير المومنين عليه السلام : كَمْ مِنْ إِنْسَانٍ أَهْلَكَهُ لِسَانٌ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 509)

हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) नें फरमाया: कितने ही इंसानों को ज़ुबान नें हलाक कर डाला.

तशरीह:

इंसान को खुदा वंदे मूतआल नें जो नेमतें दी हैं. उनमेंसे एक नेमत ज़ुबान है. इस ज़ुबान के ज़रिये इंसान जन्नत भी हासिल करसकता है और जहन्नम भी. अक्सर गुनाहाने कबीरा जो अंजाम दिये जाते हैं वह ज़ुबान के ज़रिये से अंजाम दिये जाते हैं, और यही ज़ुबान इंसान के दिलों की तर्जुमानी करती है. गोया दिल कुछ इसतरह बात कहता है कि जिसे लोग समझ नहीं पाते. इसलिये मुतर्जिम (तर्जुमा करने वाले) की ज़रूरत है, और वह ज़ुबान है. ज़ुबान को काबू में रख्खें ताकी लग्ज़िश (चूक) कम से कम ज़र्जद (पैदा) हों. ज़ुबान हम से इस चीज़ का तकाजा करेगी जिसका हमनें उस्को आदी बनाया है. अगर गाली देने का आदी बनाया होगा तो वह गाली बके गी. और अगर नेक बात व ज़िक्रे इलाही का आदी

बनाया होगा तो नेक बात और ज़िक्रे इलाही करेगी. तलवार की काट का ज़ख़्म तो बंद होसकता है. लेकिन ज़ुबान से जो ज़ख्म लगाया जाता है. वह कभी पुर नहीं होता. इस वजह से मौला अली (अ.स. नें फरमाया: लग्ज़िशे ज़ुबान (ज़ुबान की गलती) सीनान (तीर) से ज़्यादह कारी (गहरा) ज़ख्म लगाती है, और क़यामत के दिन. यही ज़ुबान जिस से हम यहाँ पर फिर जाते हैं. अब कुछ कहा, थोड़ी देर बाद इनकार, हमारे खेलाफ गवाही देगी खुदा नें हमें यह नेमत ज़िक्रे इलाही के लिये दी है. तो इस से ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र करें हमेशा इस ज़ुबान से तस्बीह इलाही करनी चाहिऐ.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के चहार्दह मासूमीन (अ.मु.स) हमें ज़ुबान पर काबू रखने और उस से ज़िक्रे इलाही करने की तौफीक अता फरमा. (आमीन)

वाकेआत:

1-बेहतरीन और बद तरीन:

लुकमान हकीम शुरु में बनी इस्राईल के बुजुर्गों में से एक शख्स के गुलाम थे. एक दिन मालिक नें उन्को हुक्म दिया कि, एक भेड ज़बह करके उस्के जिस्म का बेहतरीन हिस्सा मेरे पास लेकर आव. लुकमान हकीम नें दुंबह को ज़बह किया, और दिल ज़ुबान अपनें मालिक को लाकर दे दिये. फिर चंद दिनों के बाद मालिक ने दोबारा कहा, कि एक भेड को ज़बह करके उसके जिस्म का बद तरीन हिस्सा मुझे लाकर दो हज़रत लुकमान नें हुक्म पर अमल करते हुवे, गोस्फंद को ज़बह किया, और दिल व ज़ुबान अपने मालिक को लाकर दे दिये. मालिक नें कहा: जाहेरन यह दोनों एक दूसरे की जिद हैं. (क्यूंकि हमारे समाज में तो यही होता है ज़ुबान पर कुछ और दिल में कुछ) हज़रत

लुकमान हकीम ने फरमाया: अगर दिल व ज़ुबान एक दूसरे की तस्दीक करें तो जिस्म के बेहतरीन हिस्से शुमार होंगें और अगर मुखालफत करें तो बदन के बद तरीन हिस्से शुमार होंगे. जब मालिक नें हजरते लुकमान (अ.स.) की यह हकीमानह गुफ्तुगू सुनी तो बहुत खुश हुवा और हज़रत लुकमान (अ.स.) को आज़ाद करदिया. (हज़ार व यक इखलाकी हिकायत पेज 596 इंसान साज़ वाकेआत पेज 161)

2-बद जुबानी का अंजाम: (सवाल)

मूसल के एक शीआ नें यह रवायत बयान की है. उसनें कहा: मैंने हज पर जाने का इरादह किया तो अपने दोस्तों और हमसायों को अलविदा कहा, तो एक हमसाए अहमद हम्दूंन हारिस गरवी के पास गया जो मूसल का एक मोअज़्ज़ज़ शख्स समझा जाता था. लेकिन हज़रत अली (अ.स.) का मुखालिफ

था. मैं रस्में दुन्या निभाने के लिये उस्के पास गया, और उस से कहा कि मैं बैतुल्लाह की ज्यारत के लिये जारहा हूँ. अगर तुम्हें मक्का मदीना से कोई चीज़ मंगवानी हो तो मुझे बता दो. मैं तुम्हारे लिये लेता आवोंगा. यह सुनकर वह घर में गया और कुरआंन मजीद लेकर आया. उसनें कुरआन मजीद मेरे हाथ पर रख्खा और कहा. मुझ से वादा करो कि जो मैं कहूँगा उसे पूरा करोगे.

फिर उसनें कहा जब तुम मदीना पहुँचो, और कब्रे रसूल (स.अ.व.) पर जाव. तो मेरी तरफ से उनसे यह कहना कि. आप (स.अ.व.) को अपनी साहब जादी फातिमा जहरा (स.अ.) के लिये अली (अ.स.) के अलावा और कोई रिश्ता नहीं मिला था. आप (स.अ.व.) को अली (अ.स.) में क्या दिखाई दिया था. कि आप (स.अ.व.) ने उन्हें अपना दामाद बना

लिया था. जब कि अली (अ.स.) सर से गंजे थे?

बहर हाल मैं अपनें शहर से रवानह होकर मक्का आया जहां मैंने मनासिके हज अदा किये. फिर मैं मदीना मुनव्वरह मस्जिदे नबवी (स.अ.व) मे गया. हुजूरे अकरम (स.अ.व.) को मैंने सलाम किया, और आंहज़रत (स.अ.व.) से अर्ज किया. या रसूलुल्लाह (स.अ.व.) मुझे यह पैगाम पहुंचाते हुवे इन्तेहाई शर्मिंदगी होरही है. लेकिन मेरे हम्साया नें मुझ से कुरआन पर हलफ लेकर कहा था, कि मैं आप की खिदमत में उस्का यह पैगाम पहूचावूं.

रात के वक्त जब मैं सोया हुवा था. तो मुझे अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) की ज्यारत नसीब हुई. आप (अ.स.) नें मुझे अपने साथ लिया और चश्में ज़दन में मूसल मेरे नास्बी हम्साया के घर ले आये. उस वक्त वह

बिस्तर पर पड़ा सो रहा था. आप (अ.स.) नें छुरी से उसे ज़बह किया जो आप (अ.स.) के हाथ में थी, और खून आलूदह छुरी को उस्के लिहाफ से साफ़ किया. जिस कीवजह से लिहाफ पर दो लकीरें बन गईं. फिर आप (अ.स.) नें उस्के दरवाजे के ऊपर वाले हिस्से को अपने हाथ से उठाया, और दरवाज़े के ऊपर उस छुरी को रख दिया.

उस्के बाद मैं नींद से बेदार हुवा. तो मैंनें अपनें काफिले वालों को यह ख्वाब सुनाया और एक कापी में तारीख लिख ली.

जब मैं सफरे हज से वापस अपनें शहर मूसल पहुँचा तो मैंनें लोगों से अपनें इस नास्बी हम्साया के मूतअल्लिक पूछा.

लोगों नें बताया कि वह कत्ल हो चुका है. लोगों ने उस्के क़त्ल की वही तारीख बताई जिसे मैंनें अपनी कापी में लिखा था.

लोगों नें बताया कि उस्के कातिल का अभी तक कोई इल्म नहीं हुवा. पुलिस नें शुबहे में पड़ोसियों को गिरफ्तार कर लिया है, और वह उनसे उस्के क़त्ल की तफ़तीश कर रही है.

मैंनें अपनें साथियों से कहा आव हम पुलिस अफसर के पास चलें और उसे असल किस्सा बतलाएं. ताकि बीगुनाह अफराद आज़ाद हो जाएँ.

हम पुलिस अफसर के पास गए, और जो मैंनें ख्वाब में देखा था उस से बयान किया. मेरे साथियों नें उस्की तस्दीक की और ख्वाब की तारीख के बारे में उसको बतलाया और उन्हों नें कहा: पहली अलामत तो यह है कि आप उस्के लिहाफ पर दो सुर्ख लकीरें पाएंगें और दूसरी यह कि छुरी छत के नीचे दरवाज़े पे रख्खी हुई है. पस अफसर खुद आया और उसनें दोनों अलामतें देखीं.

हज़रत अली (अ.स.) के इस एजाज़ से मूसल के बहुत से लोगों नें मजहबे शीआ अख्तियार कर लिया और मकतूल के अकरुबा नें भी अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) की दोस्ती अख्तियार कर ली. (कश्कोल दस्ते गैब पेज 45 नकल अज़ बिहारुल अन्वार जिल्द 42 पेज 10)

32) सखावत

आयात:

1-सखावत के असरात:

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ

(सूरए बकरा आयत 274)

जो लोग अपनें माल राहे खुदा में रात, में दिन, में खामोशी और अलल एलान (एलानिया) खर्च करते हैं उनकेलिए खुदा के पास अज्र भी है और न उन्हें कोई खौफ़ होगा और न हुज़्न (गम).

2-सखावत करनें पर हरीस:

وَلَا تَجۡعَلۡ يَدَكَ مَغۡلُوۡلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبۡسُطۡهَا كُلَّ الۡبَسۡطِ فَتَقۡعُدَ مَلُوۡمًا مَّحۡسُوۡرًا

(सूरए असरा आयत 29)

और खबर दार न अपनें हाथों को गर्दनों से बंधा हुवा क़रार दो और न बिलकुल फैला दो कि आखिर में काबिले मलामत और खाली हाथ बैठे रह जाव.

3-ईर्स तकसीम करते वक्त सखावत:

لِلرِّجَالِ نَصِيۡبٌ مِّمَّا تَرَكَ الۡوَالِدٰنِ وَالۡاَقۡرَبُوۡنَ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيۡبٌ مِّمَّا تَرَكَ الۡوَالِدٰنِ وَالۡاَقۡرَبُوۡنَ مِمَّا قَلَّ مِنۡهُ اَوۡ كَثُرَ ؕ نَصِيۡبًا مَّفۡرُوۡضًا وَاِذَا حَضَرَ الۡقِسۡمَةَ اُولُوا الۡقُرۡبٰى وَالۡيَتٰمٰى وَالۡمَسٰكِيۡنُ فَارۡزُقُوۡهُمۡ مِّنۡهُ وَقُوۡلُوۡا لَهُمۡ قَوۡلًا مَّعۡرُوۡفًا

(सूरए निसा आयत 7’8)

मर्दों केलिये उन्के वालदैन और अक्रुबा (नजदीक वालों) के तर्के (यानी जो कुछ मरने के बाद छोड़ा है) में एक हिस्सा है, और औरतों के लिये भी उन्के वालदैन और अक्रुबा (करीब वालों) के तर्के में से एक हिस्सा है, वह माल बहुत हो या थोड़ा यह हिस्सा बतौरे फरीज़ा है, और अगर तकसीम के वक्त दूसरे क़राबतदारों यतीम मिसकींन भी आजाएँ तो उन्हें भी उस में से बतौरे रिज्क दे दो और उनसे नरम व मुनासिब गुफ्तगू करो.

4-महर में सखावत:

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ؕ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَیْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِیْٓــًٔا مَّرِیْٓــًٔا

(सूरए निसा आयत 4)

औरतों का उन्को महर अता करदो, फिर अगर वह खुशी खुशी तुम्हें देना चाहें तो शौक से खा लो.

5-सखावत करनें में मियाना रवी:

وَلَا تَمۡنُنۡ تَسۡتَكۡثِرُ

(सूरए मुद्दस्सिर आयत 6)

और इसतरह ऐहसान न करो कि तलबगार (खुद मुहताज हो जाव) बन जाव.

रवायात:

1-मुक़र्रबीन की इबादत:

قال أمير المومنين عليه السلام : اَلْجُوْدُ فِي اللهِ عِبادَةُ الْمُقَرَّبِيْنَ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 197)

मौलाऐ काऐनात (स.अ.) नें फरमाया: राहे खुदा में सखावत करना मुक़र्रबीन (यानी जो बंदः खुदा से करीब है) की इबादत है.

2-कमाले सखावत:

قال أمير المومنين عليه السلام : غَايَةُ الْجُوْدِ بَذْلُ الْمَوْجُوْدِ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 206)

इमाम अली (अ.स.) नें फरमाया: सखावत का कमाल यह है कि जो कुछ मौजूद हो उस्को (राहे खुदा में) खर्च करदो.

3-सख्ती में सखावत:

قال أمير المومنين عليه السلام : أَفْضَلُ الْجُوْدِ مَا كَانَ عَنْ عُسْرَةٍ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 198)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: सख्ती में सखावत करना बड़ी सखावत है.

4-सखावत की आफत:

قال أمير المومنين عليه السلام : آفَةُ الْجُوْدِ التَّبْذِيْرِ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 198)

इमाम अली (अ.स.) नें फरमाया: बख्शीश व अता की आफत फ़जूल खर्ची है.

5-सर्फराज़ी (कामियाबी):

قال أمير المومنين عليه السلام : أَحْسَنُ الْمَكَارِمِ الْجُوْدُ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 197)

मौला अली (अ.स.) नें फरमाया: बेहतरीन सर्फराज़ी व सर बुलंदी बख्शीश (यानी रहे खुदा में देना) है.

तशरीह:

बाज़ लोगों का ख़याल है कि अगर सखावत की जाये, और लोगों को अपना माल दे दिया जाये. तो उन्के लिये माल व सर्वत कभी जमा नहीं होसकती, यह वहम व ख़याल बातिल व गलत है. किस तरह हज़रत इब्राहीम (अ.स.) इतनी बख्शीश व सखावत के बावजूद, बगैर मेहमान के खाना नहीं खाते थे. और काफी माल उन्के पास था? अगर हम सखावत करें तो उस्का फ़ाइदा हम ही को है. अंबिया व अइम्मा (अ.मु.स.) की सीरत का मुतालेआ करें तो पता चलता है कि. वह लोग सखावत करने के बावजूद गनी थे. वह लोगों के मुहताज न थे. लोग उन्के मोहताज थे जब भी ज़रूरत होती उन्के दर पर आते. अदल और जूद व सखावत में यही फर्क है, अदालत, यानी साहिबे हक़ को उस्का हक़ मिल जाए, और सखावत यह है

कि अपना माल राहे खुदा में खर्च करदिया जाए. क्या जो माल राहे खुदा में खर्च हो जाता है, उस्के खर्च करनें से इंसान खाली हाथ हो जाता है? जो माल खुदा की राह में चला जाऐ उस्को दवाम (यानी हमेशा बाकी रहने वाला) मिलता है. जो लोग खुदा की राह में माल देते हैं उन्को इज़्ज़त व सर्फराज़ी और सर बुलंदी मिलती है, और जो लोग बुख्ल करते है वह हमेशा ज़लील व रुसवा होते हैं, और ऐसे लोगों का पेट कभी नहीं भरता, अगर इंसान खुदा का कुर्ब चाहता है, तो उसे चाहिये कि सखावत करे. माल को फना से बचाना चाहता है. तो अल्लाह की राह में खर्च करे.

खुदा से दुआ है बहक्के इमामुल मुत्तकींन (अ.स.) मौलल मोवह्हेदीन हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) हमें सखावत करनें की तौफीक अता फरमा. (आमीन)

वाकेआत:

1-सखावते इमाम अली (अ.स.):

एक दफ़ा इमामुल मुत्तकीन अली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) खानऐ काबा का तवाफ कर रहे थे. देखा कि एक जवान खानऐ काबा का गलाफ पकड़े हुवे दुआ कर रहा है खुदाया! मुझे चार हज़ार दिरहम की बहुत सख्त ज़रूरत है. हज़ार दिरहम का मकरूज़ हूँ, हज़ार दिरहम घर केलिये चाहिये, और हज़ार दिरहम शादी में, खर्च करने की ज़रूरत है. और हज़ार दिरहम, अपने रोजी कमानें केलिये. हज़रत अली (अ.स.) नें उस जवान की आवाज़ को सुना और फरमाया: तुम नें इन्साफ से काम लिया जब मक्का से वापस जाव तो मदीना आजाना मैं तुम्हारी ज़रूरत को पूरा कर दूंगा. जवान चंद दिनों के बाद मदीना आया और लोगों से इमाम अली (अ.स.) के घर को पूछ्नें लगा. पहली

शख्सियत जिस से, उसनें इमाम अली (अ.स.) का घर पूछा, वह इमाम हुसैन (अ.स.) थे. वह जवान इमाम हुसैन (अ.स.) के साथ हज़रत के घर की तरफ चल पड़ा. रास्तह में जवान नें पूछा आप कौन हैं. हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) नें फरमाया: मैं हुसैन (अ.स.) इब्नें अली (अ.स.) हूँ. मेरे वालिदे गरामी अली (अ.स.) हैं, और मादरे गिरामी फातिमा (स.अ.) और जद्दे बुजुर्गवार पैगम्बरे अकरम (स.अ.व.), और मेरे भाई हसने मुज्तबा (अ.स.) हैं. उस जवान नें कहा: दुन्या की सारी सआदतें तुम्हारे पास हैं. जब घर पहुंचे, अरब जवान नें इमाम हुसैन (अ.स.) से अर्ज किया: अपने बाबा से जाकर कहो वही जवान आया है, जिस से वादा किया था कि तुम्हारी हाजत को पूरा करूँगा. इमामे हुसैन (अ.स.) नें तमाम माजरा मौलाऐ काएनात (अ.स.) को बताया.

इमाम अली (अ.स.) नें उस जवान को घर में बुलवाया, और सलमान को अपनें पास बुला कर फरमाया: मेरे पास एक बाग है उस्को फरोख्त करना चाहता हूँ. सलमान लोगों के दरमियान बाग फरोख्त करने गये आखिर कार बारह हज़ार दिरहम का वह बाग फरोख्त हुवा. इमाम अली (अ.स.) नें पहले चार दिरहम उस जवान को दिये, बाकी दिरहम मदीने के फकीरों में तकसीम करदिये, और खाली हाथ घर वापस आगऐ (गंजीनए मआरिफ जिल्द 1, पेज 551, नक्ल अज़ रौज़तुल वाएजीन जिल्द 1 पेज 124)

2-खुदा भी सखावत मंद को दोस्त रखता है:

यमन से एक क़ाफिला रसूले खुदा (स.अ.व.) की खिदमत में आया. उस कारवां में एक शख्स आंहज़रत (स.अ.व.) से गुस्ताखी से पेश आया. आंहज़रत उस्की उस हरकत से काफी गुस्से में थे लेकिन खुल्के अज़ीम के

मिस्दाक नें तहम्मुल (यानी ऐखलाक की बलंदियों पर फ़ाऐज़ रसूल स.अ.व.) किया. उसी वक्त जब्रईले अमीन खुदा की तरफ से पैगम्बर (स.अ.व.) के पास वही लेकर आऐ कि यह शख्स सखावत मंद है. जब रसूले खुदा (स.अ.व.) नें यह सुना तो गुस्सह पी गये और उस शख्स की तरफ रुख करके फरमाया: अगर जब्रईल मुझे यह खबर न देते कि तू एक सखावत मंद शख्स है और लोगों को खाना पहूँचाता है तो मैं यकीनन तुझसे इतना नाराज़ होता कि लोग तुझसे इबरत हासिल करते. उस शख्स ने कहा: क्या तुम्हारा खुदा सखावत को पसंद करता है? पैगम्बरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया: बेशक खुदा वंदे आलम सखावत को पसंद करता है. फ़ौरन उस शख्स नें कहा:

أشهد ان لا اله الا الله وانك رسول الله

मैं गवाही देता हूँ कि खुदा के सिवा कोई माबूद नहीं और आप अल्लाह के रसूल हैं.
मैं नें कभी भी किसी को खाली हाथ नहीं पलटाया. किसी को अपनें माल व खाने से दूर नहीं किया. (गंजीनए मआरिफ जिल्द 1 पेज 552)

33) शुक्र

आयात:

1-शुक्र अज़ाब से दूरी का सबब:

مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ

شَاكِرًا عَلِيْمًا

(सूरए निसा आयत 147)

खुदा तुम पर अज़ाब करके क्या करेगा अगर तुम उस्के शुक्र गुज़ार और साहेबाने ईमान बनजाव, और वह तो हर एक के शुकरीये को कबूल करनें वाला और हर एक की नीयत को जांनने वाला है.

2-शुक्र का हुक्म:

وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ

(सूरए बकरा आयत 152)

और हमारा शुक्रिया अदा करो और कुफराने नेमत न करो.

3-शुक्र गुज़ार हकीकी बहुत कम हैं:

وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ

(सूरए सबा आयत 13)

और हमारे बन्दों में से शुक्र गुज़ार बंदे बहुत कम हैं

4-शुक्र नेमतों में इजाफ़ा का सबब:

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ

(सूरए इब्राहीम आयत 7)

अगर तुम हमारा शुक्रिया अदा करोगे तो हम नेमतों में इजाफ़ा करेंगें और अगर कुफराने नेमत करोगे तो हमारा अज़ाब भी बहुत सख्त है.

5-शुक्र करो:

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَ

اشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ

(सूरए बकरा आयत 172)

साहिबानें ईमान जो हमनें पाकीज़ा रिज्क अता किया है, उसे खाव और देने वाले खुदा का शुक्र अदा करो, अगर तुम उस्की इबादत करते हो.

रवायात:

1-हमेशह शुक्र:

قال أمير المومنين عليه السلام : اِسْتَدِمِ الشُّكْرُ تَدُمُ عَلَيْكَ النِّعْمَةُ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 709)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: हमेशा शुक्र अदा करो ताकि हमेशा नेमत मिलती रहे.

2-शुक्र नेमतों की अफ्जाइश (बढाने) का सबब:

قال أمير المومنين عليه السلام : اَلشُّكْرُ يُدِرُّ النِّعَمِ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 712)

हज़रत (अ.स.) नें फरमाया: शुक्र नेमतों को बढाता है.

3-शुक्र गनीमत:

قال أمير المومنين عليه السلام : اَلشُّكْرُ مُغْتَنِمُ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 712)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: शुक्र गनीमत है.

4-नेमतों की जीनत:

قال أمير المومنين عليه السلام : اَلشُّكْرُ زِيْنَةٌ لِلنِّعْماءِ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 713)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: शुक्र नेमतों की ज़ीनत है.

5-शुक्र, अमल से ज़ाहिर:

قال أمير المومنين عليه السلام : شُكْرُ الْمُؤْمِنِ يَظْهَرُ فِيْ عَمَلِهِ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 716)

इमाम अली (अ.स.) नें फरमाया: मोमिन का शुक्र उस्के अमल से ज़ाहिर होता है.

तशरीह:

शुक्र का पहला मरहला ऐहसास व इद्राके इनआमे खुदा (यानी खुदा की नेमतो का ऐहसास और उस्का दर्क करना) और दूसरा मरहला, जुबानी तशक्कुर है, और आखरी मरहला अमली (यानी अमल से ज़ाहिर हो कि शुक्रे खुदा कर रहा है) है. शुक्रि यह है, जैसा कि रवायात में वारिद हुवा है कि, शुक्रे नेमत मुहर्रेमात से इज्तेनाब (परहेज़) करने का नाम है. कि नेमते खुदा को हराम में सर्फ़ करना नाशुक्री है शुक्र नहीं. बाज़ हज़रात का ख्याल है कि इंसान नेमतों का शुक्र अदा करले तो दुन्या ही में नेमतों में इजाफ़ा होजाऐगा, और यह किसी हद तक सहीह भी है. लेकिन अज़ाबे शदीद का क़रीना, आयत में बता रहा है कि नेमत में इजाफ़ा और अज़ाबे शदीद, दोनों आखेरत में हैं. शुक्रे नेमत इजाफ़ा का सबब और

कुफराने नेमत अज़ाबे शदीद का सबब है. इंसान को चाहिये कि जितना हो सके उस मालिक का शुक्र अदा करे. जिसनें हमें इतनी नेमतें दी हैं. उस्की नेमतें लामहदूद हैं, और हमारा शुक्र बहुत कम है. अगर हम चाहतें हैं कि. नेमतों को दवाम रहे. तो खुदा का शुक्र अदा करें. हर नेमत के मिलनें पर शुक्र और उस शुक्र पर भी शुक्र करें. कि खुदाया तूनें मुझे शुक्र अदा करने की तौफीक दी. अगर इस तरह करेंगें तो यकीनन हम नें शुक्र अदा किया, और शुक्रे अमली का बेहतरीन नमूना नमाज़ है.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के अइम्मा ताहेरीन (अ.मु.स.) हमें शुक्र अदा करनें की तौफीक अता फरमा. (आमीन)

वाकेआत:

1-हज़रत ईसा (अ.स.) और नाबीना (अंधा):

हज़रत ईसा (अ.स.) नें ऐक रोज सैर व तफरीह करते हुवे एक नाबीना शख्स को देखा जो मुख्तलिफ बीमारियों में मुब्तला था. नाबीना के अलावा जुज़ाम, बरस, और दो तरफ से बदन फालिज है. और ज़मीन गीर भी है, उस्के बावजूद बार बार यह कह रहा था. खुदाया तेरा शुक्र है कि तूनें मुझे बहुत सी बीमारियों से बचाया हुवा है. हज़रत ईसा (अ.स.) नें उस से कहा तू हर बीमारी में मुब्तेला है. पस कौन सी बीमारी ऐसी है जिस में तू मुब्तेला नहीं है. जो तू इस्कदर शुक्र कर रहा है.

नाबीना नें कहा: मैं उस से बेहतर हूँ जो मेरी तरह खुदा की मारफत नहीं रखता. इस वजह से मैं खुदा का शुक्र अदा कर रहा हूँ.

हज़रत ईसा (अ.स.) नें फरमाया: तूनें सच कहा अपने हाथ मुझे दो उस नाबीना नें अपना हाथ हज़रत ईस्सा (अ.स.) को थमाया, अचानक हज़रत ईसा (अ.स.) को हाथ थमाते ही, वह शख्स बऐजाज़े ईसा (अ.स.) तमाम बीमारियों से नजात पा गया, और हसीन व जमील सूरत पैदा करली. उस्के बाद वह शख्स हज़रत ईसा (अ.स.) के साथियों में से हो गया.

इसमें कोई शक नहीं शुक्रे नेमत नेमतों में इजाफ़ा का सबब है.

(गंजीनए मआरिफ जिल्द 1 पेज 581 नक्ल अज़ कशकोल शैख़ बहाई पेज 499)

2-शुक्रे नेअमत:

मोअम्मर बिन खुलूद इमामे रेज़ा (अ.स.) से रवायत नक्ल करता है. कि हज़रत नें फरमाया: बनीइस्राईल में से एक शख्स नें ख्वाब में देखा कि उस्के पास कोई शख्स

आया, और उसनें कहा तेरी उम्र में आधी ज़िंदगी आराम व सुकून और खुशी में गुज़रेगी, और आधी ज़िंदगी परेशानी व तंगदस्ती में. अब तेरी मर्ज़ी है जिसका चाहे पहले इन्तेखाब कर ले. उस शख्स नें कहा: मेरे साथ मेरी शरीके हयात मेरी जौजा भी है. ज़रूरी है कि पहले उस से मश्वेरा करलूं, जब सुबह हुई तो उसनें अपनी बीवी से कहा. रात मैंनें ख्वाब में एक शख्स को देखा जिसनें मुझसे कहा तेरी आधी ज़िंदगी में खुश्यां, और आधी ज़िंदगी में परीशानियाँ हैं. अब तेरी मर्ज़ी जिसको भी पहले इन्तेखाब कर. उस्की बीवी नें कहा. पहले आराम व सुकून और खुशी की ज़िंदगी को इन्तेखाब कर. उसने अपनी ज़ौजा की बात पर अमल किया और खुश्यों की ज़िंदगी को मुन्तखब किया. जब उसनें यह काम किया और दुन्या उस्की तरफ आई और नेमतें मिल्ना शुरू

हईं. तो उस्की बीवी उस से कती, देख तुम्हारा फालां रिश्तेदार नियाज़मंद है, उस्की मदद कर इस तरह उस्को जो भी नेमत मिलती वह ग़रीबों और मुहताजों की मदद करता, और हर नेमत के मिलने पर खुदा का शुक्र अदा करता. इस तरह उस्की आधी ज़िंदगी खुश्यों में गुजर गई, जब दूसरी आधी ज़िंदगी शुरू हुई तो उसकी बीवी नें कहा:

قد أنعم الله علينا فشكرنا والله اولي بالوفاء

खुदा नें हमें नेमत दी और हम नें उस्का शुक्र अदा किया ،और खुदा अपने वादे पर बेहतरीन वफ़ा करने वाला है. यही शुक्रे नेमत ग़रीबों और मुहताजों अज़ीज़ व अकारिब की मदद करनां सबब बना कि उस्की दूसरी आधी ज़िन्दगी भी खुश्यों और वुसअते रिज्क (फरावानी) में गुजरी.

(चेहल हदीस जिल्द 1 पेज 29 शरहे ज्यारते अमीनुल्लाह पेज 315 इंसान साज़ वाकेआत पेज 79)

34) सब्र

आयात:

1-सब्र करनें वालों के साथ खुदा:

وَاصۡبِرُوۡا ؕ اِنَّ اللّٰہَ مَعَ الصّٰبِرِیۡنَ

(सूरए अनफाल आयत 46)

सब्र करो अल्लाह सब्र करनें वालों के साथ है.

2-सब्र खुदा केलिये:

وَاصۡبِرۡ وَمَا صَبۡرُکَ اِلَّا بِاللّٰہِ

(सूरए नहल आयत 127)

और आप सब्र ही करें कि आप का सब्र भी अल्लाह ही की मदद से होगा.

3-दीन की तबलीग में सब्र:

وَاصۡبِرۡ عَلٰی مَا یَقُوۡلُوۡنَ وَاہۡجُرۡہُمۡ ہَجۡرًا جَمِیۡلًا

(सूरए मुज्ज़म्मिल आयत 10)

और यह लोग जो कुछ भी कह रहे हैं उस पर सब्र करें और उन्हें ख़ूबसूरती के साथ अपनें से अलग करदें.

4-सब्र इस्तेह्काम का सबब:

وَاِنۡ تَصۡبِرُوۡا وَتَتَّقُوۡا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنۡ عَزۡمِ الۡاُمُوۡرِ

सूरए आलेइमरान आयत 186

और अगर तुम सब्र करोगे और तकवा अख्तियार करोगे, तो यही कामों में इस्तेह्काम व मज्बूती का सबब है.

5-बशारत व रहमते ईलाही;

وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيۡنَ

الَّذِيۡنَ اِذَآ اَصَابَتۡهُمۡ مُّصِيۡبَةٌ ۙ قَالُوۡٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيۡهِ

رٰجِعُوۡنَ

اُولٰٓئِكَ عَلَيۡهِمۡ صَلَوٰتٌ مِّنۡ رَّبِّهِمۡ وَرَحۡمَةٌ

(सूरए बकरा आयात 155’156’157)

और सब्र करनें वालों को बशारत देदें जो मुसीबत पड़नें के बाद यह कहते हैं, कि हम अल्लाह ही केलिये हैं और उसकी बारगाह में वापस जानें वाले हैं. कि उन्के लिये पर्वर्दिगार की तरफ से सलवात और रहमत है.

रवायात:

1-ईमान का सर;

قال الصادق علیہ السلام : اَلصَّبْرُ رَاسُ الْاِیْمَانِ

(किताब अल शाफी जिल्द 3, पेज 272)

इमाम सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: सब्र ईमान का सर है.

2-हज़ार शहीद का सवाब;

قال الصادق علیہ السلام : مَنِ ابْتُلِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ بِبَلَاءٍ فَصَبَرَ عَلَيْهِ كَانَ لَهُ مِثْلُ أَجْرِ أَلْفِ شَهِيْدٍ

(किताब अल शाफी जिद 3 पेज 380)

इमाम जाफर सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: जो मोमिन किसी मुसीबत में मुब्तेला हो, और उसपर सब्र करे तो उस्को हज़ार शहीद का सवाब मिलता है.

3-कामियाबी:

قال أمير المومنين عليه السلام : اِصْبِرْ تَظْفَرْ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 749)

मौला अली (अ.स.) नें फरमाया: सब्र करो कामियाब हो जावगे.

4-सब्र की किस्में:

قال أمير المومنين عليه السلام : اَلصَّبْرُ صَبْرَانِ : صَبْرٌ فِي الْبَلَاءِ حَسَنٌ وَجَمِيْلٌ وَأَحْسَنُ مِنْهُ اَلصّبْرُ عَنِ الْمُحَارِمِ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 749)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: सब्र की दो किस्में हैं: मुसीबत व बला पर सब्र बहुत अच्छा है. और हराम चीज़ों से बचनें केलिये सब्र करना उस से भी ज़्यादा अच्छा है.

5-मज़बूत लिबास:

قال أمير المومنين عليه السلام : اَلصَّبْرُ أَقْوٰى لِبَاسٍ

(गोररुल हेकम जिल्द .1, पेज 753)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: सब्र मज़बूत तरीन लिबास है.

तशरीह:

सब्र और शकीबाई एक ईलाही, इखलाकी, और इंसानी मसअला है जिस को खुदा वंदे आलम पसंद करता है. जो अज़ीम अज्र व सवाब का बाइस है, सब्र हाफिजे दींन ईमान का बेहतरीन लिबास, आदमी की जन्नत, बेहतरीन सिपर व ज़खीरा, ईमान का सर, यकीन का फल, कमियाबी का जामिन, मोमिन का लश्कर है, सब्र इंसान को हक़ व हकीकत की निस्बत बेतवज्जोह होने से रोकता है. सब्र के ज़रिये इंसान के दिल व दिमाग में ताकत पैदा होती है. नीज सब्र इंसान को शयातीन. जिन व इन्स से हिफाज़त करने वाला है. जो शख्स सब्र से काम ले तो खुदा वंदे आलम उसको सब्र की तौफीक अता करता है. सब्र बेहतरीन और खूबसोरत ज़ीनत है. इंसान को चाहिये कि अपने आप को सब्र से मुज़य्यन करे. ताकि

श्यातीनी खयालात व वस्वसों महफ़ूज़ रह सके. साबिर का मर्तबा व मक़ाम बुलंद है. सब्र का सवाब मुसीबत की तकलीफ को खत्म करदेता है, और सब्र के ज़रिये बंद रास्ते खुल जाते हैं.

आखीर में दुआ करते हैं बहक्के सय्यदे सज्जाद व सय्यदे शोहदा (अ.मु.स.) व असीराने कूफ़ा व शाम हमें सब्र करनें की तौफिक अता फरमाऐ. (आमीन)

वाकेआत:

1-सब्र और इस्तेक़ामत:

हाजियों का काफिला बयाबान से गुज़रता हुवा. एक खैमे के करीब पहुँचा. काफेले वालों नें करीब पहुँच कर इजाज़त तलब की. तो सहरा में रहने वाली खातून नें कहा:

खुश आमदीद अय खानऐ खुदा के ज़ाएरो! मेरे ऊँट चरागाह में गये हुवे हैं. जब वापस आएंगें तो मैं तुम्हारी मेहमान नवाज़ी करूंगी.

काफले वाले वहाँ आराम करनें लगे, खातून बाहर निकली इसनें करीब आकर खातून को बताया: ऊँट जब कूंवें के करीब पहुचे तो वह एक दूसरे से लड़ पड़े उन्को छुडाते हुवे तुम्हारा बेटा कूंवें में गिर गया.

चरवाहे नें आह व जारी करते हुवे मजीद कहा. खातून आप को तो मालूम है कि. वह कूंवा कितना गहरा है, और उसमे काफी

मिकदार मे पानी मौजूद है. उस्के अंदर गिरनें के बाद किसीके जिन्दा रहनें की कोई उम्मीद नहीं लगाई जा सकती.

खातून फ़ौरन आगे बढ़ी ता कि ऊंटों को देख भाल करने वालों को खामोश कराऐ. खातून नें उस से कहा: इस वक्त हमारे यहाँ मेहमान आए हुवे हैं. जोर जोर से गिरया मत करो कहीं अयसा न हो कि मेहमानों के आराम में खलल पड़े! मेहमान नवाज़ी तो हर मुसलमानों के लिये ज़रूरी है.

उस्के बाद उसनें हुक्म दिया कि एक दुंबह ज़बह किया जाऐ ताकि मुसलमानों की खातिर मदारात की जासके. जब वह खातून खैमे में आई तो हाजियों नें उससे कहा: हमें बहुत अफ़सोस है कि अय्से मौके पर हम आप को ज़हमत दे रहे हैं. जब कि इस किस्म का सानेहा आप के साथ पेश आचुका है.

खातून नें कहा: हुज्जाज ए केराम! मै नहीं चाहती थी कि आप को इस वाकऐ का इल्म हो, और आप लोग इस से मुतअस्सिर (असर लें) हों. लेकिन जब आप लोगों को इल्म हो ही चुका है. तो मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं दो रकात नमाज़ पढ़लूं.

हाजियों नें पूछा क्यूं?

खातून नें कहा इसलिये कि कुरआन में इरशादे रब्बुल इज़्ज़त है.

وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ط

सब्र और नमाज़ के ज़रिये मदद तलब करो. मैं चाहती हूँ कि इस मुसीबत व आज़माइश में नमाज़ के ज़रिये मदद तलब करूँ. बाद में उनें पूछा: तुम मेंसे कोई कुरआन की तिलावत करसकता है? हाजियों मेंसे एक नें मुसीबत के मौके पर पढ़ी जाने वाली इस आयत की तिलावत की.

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ

الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ

الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّآ اِلَيْهِ

رٰجِعُوْنَ

اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ

और हम तुम्हें कुछ खौफ और कुछ भूक से, मालों और जानवरों और फलों की कमी से ज़रूर आजमाएं गें और (अय रसूल स.अ.व.) अय्से सब्र करनें वालों को, कि जब उनपर कोई मुसीबत आती है तो वह कहते हैं, हम तो खुदा ही के हैं, और हम उसी की तरफ लौट कर जाने वाले हैं, खुश खबरी दे दो कि उन्हीं लोगों पर, खुदा की तरफ से इनायत और रहमत है.

खातून नें कहा: खुदावंदा अगर इस दुन्या मे कोई हमेशा बाकी रह सकता, तो उस्के सब

से ज़्यादा मुस्तहक तेरे हबीब हज़रत मोहम्मद मुस्तफा (स.अ.व.) थे. उन्हें बाकी रहना चहिये था. परवर्दिगार तूनें कुरआन में सब्र का हुक्म दिया है, और साबिर को जजा देने का वादा फरमाया है, मैं अपने जवान बेटे पर सब्र करती हूँ. तू उस्के बदले मुझे अज्र व सवाब अता फरमा, और मेरे बेटे की मग्फेरत फरमा. यह कहने के बाद वह खातून अपने काम काज में इसतरह मशगूल हो गई. जैसे कुछ हुवा ही नहीं- (बिखरे मोती जिल्द 1- पेज 55 गंजीनए मआरिफ जिल्द 1 पेज 616 कुछ इख्तेलाफ़ व इख्तेसार के साथ नक्ल अज़ तफसीरे नमूना जिल्द 1 पेज 535)

2-सब्र व ईमान:

हारून रशीद का वजीर ''असमई'' शिकार केलिये साथियों के साथ गया हुवा था. शिकार करते करते उस्के साथी पीछे रह गये

और आखिर कार वह अपनें साथियों से बिछड गया. कहते हैं इस हाल में तनहा प्यास का गलबा, हवा गर्म थी, सहरा में उसनें दूरसे एक खैमा देखा, अपने आप से कहा: चलो उस खैमें में जाकर आराम करता हूँ, बाद में साथियों को ढूँढ लूंगा, वह आधे जहां का वजीर था, कहता था जब मैं करीब पहुँचा तो एक हसीन व जमील जवान औरत को देखा जो खैमें में तनहा बैठी हुई है. अरब लोग मेहमानों को बहुत दोस्त रखते हैं जैसे ही उस औरत नें मुझे देखा तो सलाम किया और कहा: अंदर तशरीफ़ ले आएं. मैं खैमें के अंदर चला गया. उस औरत नें मुझे बैठने के लिये कहा मैं जब खैमें में बैठ गया तो मैंने उस से कहा: मुझे बहुत प्यास लगी है. उस्का रंग तब्दील हो गया और कहा: क्या करूँ मुझे मेरे शौहर की इजाज़त नहीं है कि मैं तुम को पानी देसकूं लेकिन मेरे पास

दोपहर के खाने केलिये दूध रख्खा हुवा है तुम दूध पी लो, मैं दोपहर का खाना नहीं खावुंगी! ‘’असमई’’ कहता है: मैंनें दूध पीया, वह औरत मुझ से बातें नहीं कर रही थी, अचानक मैंने देखा कि उस्की हालत गैर हो रही, है क्या देखा कि दूर से एक काले रंग वाला शख्स आरहा है. औरत नें कहा: मेरा शौहर आरहा है. मैं देख रहा था कि औरत नें जो मुझे पानी नहीं दिया उस्की वजह यह थी कि उस्का शौहर पानी अपनें साथ ले गया था. उस औरत नें उस बद अख्लाक़ काले मर्द को ऊँट से उतारा और उस्के हाथ पैर धुलवाऐ और इज़्ज़त व इह्तेराम के साथ खैमें में लाई. उस बद अखलाक मर्द नें मेरी कुछ परवाह न की और औरत से तेज लहजे में गुफ्तगू कर रहा था. ‘’असअमी’’ कहता है: मुझे उस मर्द से नफरत हुई और मैं अपनी जगह से उठा और इस बात की

परवाह न की कि बाहर गर्मी है. मैं खैमें से बाहर निकल गया फिर भी उस मर्द नें मेरी परवाह न की लेकिन उस औरत नें मेरा साथ दिया. मैंनें उस से कहा: अय औरत हैफ है कि तू इस जवानी के होते हुवे इस मर्द से किस वजह से दिल लगाऐ हुवे है? पैसों की खातिर? मालूम है कि उस्के माली हालात बेहतर नहीं हैं. उसनें तुझे बयाबान में डाला हुवा है. अखलाक की वजह से? यह भी मुझे पता चल गया है उस्का अखलाक कितना अजीब है. उस्की ख़ूबसूरती की वजह से? यह बूढा और रंग व रूप का अच्छा नहीं है. पस किस वजह से उस्के साथ रह रही हो? कहता है मैंनें एक मर्तबा देखा कि औरत का रंग तब्दील हुवा और बोली: अय ''असअमी'' तुझ पर हैफ है मैं नहीं समझती थी कि तू हारून रशीद का वज़ीर होते हुवे इस तरह की बातें करेगा और मेरे दिल से

मेरे शौहर की मोहब्बत को कम करेगा. अय ‘‘असअमी’’ तू जानता है कि मैं क्यूं इसतरह कर रही हूँ? इसकी वजह यह है कि मैंनें पैगम्बरे अकरम (स.अ.व.) का फरमान सुना है. कि आप नें फरमाया:

أَلْإِيْمَانُ نِصْفُهُ الصَّبْرُ وَنِصْفُهُ الشُّكْرُ

यानी ईमान के दो हिस्से हैं आधा सब्र, आधा शुक्र. मैं खुदा का इस बात पर शुक्र करती हूँ कि उसनें मुझे हुस्न दिया, जवानी दी और अच्छा इखलाक दिया, और उस्का शुक्र है कि उसनें मुझे तौफीक दी कि अपनें ईमान को कामिल करनें केलिये इस मर्द के बद अखलाकी पर सब्र करूँ. दुन्या खत्म हो जाएगी और मैं चाहती हूँ कि मेरा ईमान कामिल होजाऐ और कामिल ईमान के साथ, इस दुन्या से चली जावूं इस लिये मैंने सब्र व शुक्र का दामन नहीं छोड़ा.

(गंजीनए मआरिफ जिल्द 1 पेज 616)

35) सदक़ह

आयात:

1-खुदा की राह में:

وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ

(सूरए तव्बा आयत 75)

और उनमें वह भी हैं जिन्हों खुदा से अहद किया कि अगर वह अपने फज्ल व करम से अता करदेगा, तो उसकी राह में सदक़ा देंगे और नेक बन्दों में शामिल हो जाएँगें.

2-सदक़ा खुदा वसूल करता है:

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ

(सूरए तवबा आयत 104

क्या यह नहीं जानते कि अल्लाह ही अपनें बन्दों की तौबा कबूल करता है, और ज़कात व खैरात को वसूल करता है, और वही बड़ा तौबा कबूल करने वाला और मेहरबन है.

3-मखफी सदकह देना:

إِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَإِنْ تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ

(सूरए बकरा आयत 271)

अगर तुम सदक़ा अलल एलान दोगे, तो यह भी ठीक है और अगर छुपा कर फकीरों के हवाले करोगे तो यह भी बहुत बेहतर है, और इस्के ज़रिये तुम्हारे बहुत से गुनाह मोआफ हो गाएंगे और खुदा तुम्हारे आमाल से खूब बाखबर है.

4-माल के पाक होनें का ज़रियह:

خُذۡ مِنۡ اَمۡوَالِہِمۡ صَدَقَۃً تُطَہِّرُہُمۡ وَ تُزَکِّیۡہِمۡ بِہَا وَ صَلِّ عَلَیۡہِمۡ ؕ اِنَّ صَلٰوتَکَ سَکَنٌ لَّہُمۡ ؕ وَ اللّٰہُ سَمِیۡعٌ عَلِیۡمٌ

(सूरए तव्बा आयत 103)

पैगम्बर (स.अ.व.) आप उनके मालों मेंसे ज़कात ले लीजिए कि इसके ज़रिये यह पाक व पाकीज़ा हो जाएँ, और उन्हें दुआएं दीजिये कि आप की दुआ उन्के लिये तस्कीन कल्ब का बाइस होगी और खुदा सब का सुनने वाला और जानने वाला है

5-सदक़ा बरबाद न करो:

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تُبۡطِلُوۡا صَدَقٰتِکُمۡ بِالۡمَنِّ وَ الۡاَذٰی

(सूरए बकरा आयत 264)

अय ईमान लाने वालो अपने सदक़ात को मिन्नत गुजारी (ऐहसान जताकर) और अजीयत से बरबाद न करो.

रवायात:

1-बेहतरीन सदक़ा:

قال رسول الله صلي الله عليه و اله وسلم : اَفْضَلُ

الصَّدَقَةِ أَنْ يَتَعَلَّمَ الْمَرْءُ الْمُسْلِمِ عِلْمًا ثُمَّ يُعَلِّمَهُ أَخَاهُ

الْمُسْلِمِ

(मुन्तखब मीजान अल हिक्मह पेज 318)

रसूल अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया: बेहतरीन सदक़ा यह है कि कोई मुसलमान शख्स इल्म को सीखे फिर अपने मुसलमान भाइयों को सिखाऐ.

2-माल की बरकत:

قال أمير المومنين عليه السلام : بَرَكَةُ الْمَالِ فِي

الصَّدَقَةِ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 768)

मौला अली (अ.स.) नें फरमाया: माल की बरकत सदके में है.

3-खजाना:

قال أمير المومنين عليه السلام : اَلصَّدَقَةُ كَنْزٌ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 769)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: सदक़ा खजानें की मानिंन्द (तरह) है.

4-बेहतरीन नेकी:

قال أمير المومنين عليه السلام : اَلصَّدَقَةُ اَفْضَلُ الْحَسَنَاتِ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 770)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: सदक़ा बेहतरीन नेकी है.

5-सदकह के ज़रिये इलाज:

قال أمير المومنين عليه السلام : سُوسُوا أَنْفُسَكُمْ بِا

الْوَرَعِ وَدَاوُوا مَرْضَاكُمْ بِالصَّدَقَةِ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 769)

मौलाऐ काएनात अली (अ.स.) नें फरमाया: अपनें नफ्स को वरअ (तकवा) और पाक्दामनी के ज़रिये कामिल करो, और अपनें मरीजों का इलाज सदक़ा के ज़रिये करो

तशरीह:

सदक़ा देना ऐक अजीम इबादत है, सदक़ा देनें से बालाएं टल जाती हैं. नेमतों में इजाफ़ा होता है माल व दौलत जो हम खर्च करते हैं खत्म हो जाती है लेकिन जो माल सदक़ा के उन्वान से दिया जाता है वह बाकी रहता है. जिस शख्स नें राहे खुदा में सदकह दिया तो उस्के हर दिरहम के बदले जन्नत में कोहे ओहद के बराबर नेमतें मिलें गी. हज़रत इमाम जैनुल आबेदीन (अ.स.) जब भी किसी गरीब को कोई चीज़ देते थे, तो अपनें हाथ चूमते थे, और बाज़ रवायत में है कि साऐल के हाथ का बोसा लेते थे. जब किसी नें इमाम से इसका सबब पूछा तो आप (अ.स.) नें फरमाया: क्या कुरआंन मजीद में यह आयत नहीं पढ़ी.

وهو يأخذ الصدقات

और वह (अल्लाह) सदक़ात को वसूल करता है.

रवायत में भी है.

أنها (الصدقة) تقع في يد الله قبل أن تقع في يد السائل

सदक़ा साऐल के हाथ में पहुंचने से पहले खुदा के हाथ में पहुंचता है. यह दर असल खुदा है जो हम से सदक़ात ले रहा है. ज़ाहिर में तो यह साऐल है या मांगनें वाले का हाथ है. लेकिन हकीकत में खुदा वसूल कर रहा है. इस ऐतेबार से साऐल का हाथ मुतबर्रिक (मुबारक) हो गया है. लेहाज़ा इस वजह से मैं अपनें हाथ का बोसह लेता हूँ. कि इस हाथ से एक नेक काम सादिर हुवा है. सदक़ा दीजिए और माल को फना होने से बचाइये और अपनें मरीजों का इलाज सदक़ा के ज़रिये कीजीये.

आखीर मे दुआ करते हैं बक़क्के चहार्दह मॉँसूमीन (अ.स.) हमें सदक़ा देने की तौफीक अता फरमा. (आमीन)

वाकेआत:

1-सदक़ा देनें वाला जवान:

एक रोज एक जवान हज़रत दाऊद (अ.स.) के पास आया फरिश्तऐे मौत वहाँ पर मौजूद था. उसनें हज़रत दाऊद (अ.स.) को बताया कि यह जवान सात रोज के बाद मर जाऐगा और मैं सात रोज के बाद इसकी रूह कब्ज करलूंगा. वह जवान उस मजलिस से उठ कर बाहर गया रास्तेह में एक फकीर उस्के पास आया, और मदद तलब की, उस जवान नें सदक़ा उस फकीर को दिया. सातवें दिन जब पहुँचा तो वह जवान दोबारा हज़रत दाऊद (अ.स.) के पास आया हज़रत दाऊद (अ.स.) नें हैरत से इज़राईल से पूछा: क्या तुमनें नहीं कहा था कि सात दिन बाद मर जाऐगा? मलकुल मौत नें जवाब दिया: बिकुल उसी तरह है. मगर उसनें सदका दिया था. खुदा वंदे आलम नें उस्की उम्र

सत्तर साल बढ़ा दी. (गंजीनए मआरिफ जिल्द 1 पेज 608)

2-शयातीन की माँ:

किताब अनवारे जज़ाएरी में है कि कहत के ज़मानें में किसी मस्जिद के वाइज़ नें मिंम्बर से कहा: जब कोई शख्स सदक़ा देना चाहता है तो सत्तर शैतान उस्के हाथों से चिमट जाते हैं और उसे ऐसा नही करने देते!

एक मोमिन नें मिम्बर से जब यह बात सुनी तो उसे बड़ा तअज्जुब हुवा और दोस्तों से कहनें लगा: सदक़ा देने में ऐसी तो कोई बात नहीं होती. मेरे पास कुछ गंदुम (गेहूं) है मैं जाता हूँ और अभी

मुस्तहक्कींन के लिये मस्जिद में ले आता हूँ.

यह कहकर वह अपनी जगह से उठा और घर पहुँचा. उस्की बीवी अपने शौहर के इरादे

से आगाह हुई तो उसे बुरा भला कहनें लगी यहाँ तक कि शदीद धमकी आमेज़ अंदाज़ में बोली:
तुम्हे इस कहत के ज़मानें में अपने बीवी बच्चों का कोई ख़याल नहीं है? हो सकता है कहत साली का यह सिलसिला तवील होजाऐ और उस वक्त हम लोग भूक से मरजाएँ! उस्के अलावा और नजानें वह क्या क्या कहती रही. बस मुख़्तसर यह कि बीवी नें उस्के दिल में इतना वस्वसा पैदा करदिया कि वह बेचारा खाली हाथ मस्जिद आगया.
उस्के दोस्तों नें पूछा: क्या हुवा? तुम नें देखा कि सत्तर शैतान तुम्हारे हाथों से चिमट गये और तुम्हें सदक़ा नहीं देनें दिया!
उस शख्स नें जवाब दिया: मैंनें शैतानों को तो नहीं देखा, अल्बत्ता शैतानों की माँ को देखा है जो कि ऐसा नहीं करनें देती है!

36) सिलेए रहम

आयात:

1-हुक्मे इलाही:

اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآیِٔ ذِی الْقُرْبٰی

(सूरए नहल आयत 90)

बेशक अल्लाह अदल व ऐहसान और क़राबद्दारों के होकूक की अदाऐगी का हुक्म देता है.

2-सिलऐ रहम मोमिन की सिफत:

الَّذِیْنَ یُوْفُوْنَ بِعَھْدِ اللّٰہِ وَلَا یَنْقُضُوْنَ الْمِیْثَاقَ

وَالَّذِیْنَ یَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰہُ بِہٖٓ اَنْ یُّوْصَلَ وَ یَخْشَوْنَ

رَبَّھُمْ وَیَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ

(सूरए राद आयात 21’21)

जो अहदे खुदा को पूरा करते हैं और अहद शिकनी नहीं करते हैं और जो उन

तअल्लुकात को क़ाऐम रखते हैं जिन्हें खुदा नें क़ाऐम रखनें का हुक्म दिया है, और उस से डरते रहते हैं, और बदतरीन हिसाब से खौफ़ जदह रहते हैं.

3-कतऐ रहम से परहेज़:

وَاتَّقُوا اللّٰہَ الَّذِیۡ تَسَآءَلُوۡنَ بِہٖ وَالۡاَرۡحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰہَ کَانَ عَلَیۡکُمۡ رَقِیۡبًا

(सूरए निसा आयत 1)

और उस खुदा से भी डरो जिस के ज़रिये एक दूसरे से सवाल करते हो और क़राबद्दारों की बेतअल्लुकी से भी. अल्लाह तुम सब के आमाल का निगरा (देख रहा है) है.

4-कतऐ तअल्लुक करने वाला रहमते इलाही से दूर:

وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۙ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ

(सूरए राद आयत 25)

और जो लोग अहदे खुदा को तोड़ देते हैं और जिन से तअल्लुकात का हुक्म दिया गया है उनसे कतऐ तअल्लुकात कर लेते हैं और ज़मीन में फसाद बरपा करते हैं उन्के लिये लानत और बदतरीन घर है.

5-क़तऐ रहम करनें वाले पर खुदा की लअनत:

فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعْمَىٰ أَبْصَارَهُمْ

(सूरए मोहम्मद आयात 22’23)

तो क्या तुम से कुछ बईद (दूर) है कि तुम साहेबे इक्तेदार बन जाव तो ज़मीन में फसाद बरपा करो और क़राबद्दारों से क़तऐ तअल्लुकात करलो. यही वह लोग हैं जिन पर खुदा नें लानत की है और उन्के कानों को बहरा करदिया है.

रवायात:

1-सिलऐ रहम का फाईदह:

قال الباقر عليه السلام : صِلَةُ الْاَرْحَامِ تُزَكِّي أَلْاَ

عْمَالَ وَتُنْمِي أَلْاَمْوَالَ وَتَدْفَعُ الْبَلْوٰيَ وَتَيَسِّرُ الْحِسَابَ

وَتُنْسِيءُ فِي الْاَجَلِ

(बिहारुल अन्वार जिल्द 1 पेज 111 किताब अल शाफी जिल्द4 पेज 41)

इमाम मोहम्मद बाकिर (अ.स.) नें फरमाया: सिलऐ रहम आमाल को पाक करता है, और माल को ज़्यादा करता है, और बलावों को दूर करता है, और हिसाब में आसानी करता है, और मौत में ताखीर करता है.

2-आसारे सिलऐ रहम:

قال رسول الله صلي الله عليه واله وسلم : صِلَةُ الرَّ

حِمِ تَزِيْدُ فِي الْعُمْرِ وَتُنْفِي الْفَقْرَ

(बिहार जिल्द 71 पेज 103)

रसूले खुदा (स.अ.व.) नें फरमाया: सिलऐ रहम उम्र की ज्यादती का बाइस है और फक्र को दूर करता है.

3-क़तऐ रहम रहमते इलाही से दूर:

قال رسول الله صلي الله عليه واله وسلم : إِنَّ الرَّحْمَةَ لَاتُنْزِلُ عَلي قَوْمٍ فِيْهَا قَاطِعُ رَحِمٍ

(कन्जुल आमाल जिल्द 3 पेज 367)

हज़रत मोहम्मद मुस्तफा (स.अ.व.) नें फरमाया: उस कौम पर रमते इलाही नाज़िल नहीं होती. जिस में क़तऐ रहम करनें वाला मौजूद हो.

4-बेतरीन खिल्कत:

قال أمير المومنين عليه السلام : أَفْضَلُ الشِّيَمِ صِلَةُ الْأَرْحَامِ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 586)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: सिलऐ रहम आला तरीन खसलत है.

5-सिलऐ रहम का हुक्म:

قال أمير المومنين عليه السلام: صِلُوْا أَرْحَامَكُمْ وَلَوْ قَطَعُوْكُمْ

(अमाली तूसी 208)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: अपनें क़राबद्दारों से सिलऐ रहमी करो अगरचे उन्होंनें तुम से कतऐ तअल्लुक किया हो.

तशरीह:

कुरआन व अहादीस में सीलऐ रहम का हुक्म दिया गया है जो रिश्तेदार महरम हैं जैसे वालदैन, बहन, भाई, वगैरह उन से सीलऐ रहम करना बहुत ज़रूरी है अगरचे यह लोग हमसे न मिलते हों और न ही मिलना चाहते हों, हमें अपने फ़र्ज़ को पूरा करने के लिये उनसे सीलऐरहम करना चाहिये, चाहे सिलऐरहम सलाम के ज़रिये से ही करे. हम यह कह कर कि वह तो हम से मिलना पसंद नहीं करते तो हम क्यूं मिलें, उन्का फेल उन्के साथ हमारा फेल हमारे साथ. हर एक को अपनी कब्र और हिसाब व किताब के दिन जवाब देह होना है. सीलऐरहम उम्र में ज्यादती का बाइस है, अखलाक को अच्छा करता है, हाथ को साहिबे करम बनाता है, नफ्स को पाक करता है, सिलएरहम करने वालों से लोग

4मुहब्बत करते हैं, और बेतअल्लुकी, क़तऐरहम करने वाला रहमते इलाही से दूर है और यह खुदा की लानत का हक़दार है. खुदा उनलोगों को दोस्त रखता है जो सिलएरहम करते हैं और उन्को मुअज्ज़म व मुहतरम क़रार देता है. अब आप फैसला करें खुदा कि रहमत से करीब होना चाहते हैं या दूर. अगर करीब होना चाहते हैं तो आज ही जिन्हों नें आप से बितअल्लुकी की है या आप नें किसी से क़तऐरहम किया है फूंन के ज़रिये ही सही, उनसे सिलएरहम करें ताकी उम्र में इजाफ़ा हो और रहमते इलाही आप के करीब हो.

खुदा से दुआ करते है बहक्के मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.मु.स.) हमें सिलऐरहम करने की तौफीक अता फरमा. (आमीन)

वाकेआत:

1-सिलऐरहम करने का हुक्म:

एक शख्स होजूरे अकरम (स.अ.व.) की खिदमत में आया और अर्ज किया: मेरे रिश्ते दार हैं और मैं उनसे सिअऐरहम करता हूँ लेकिन वह लोग मुझे अजीयत देते हैं. मैंनें इरादा किया है मैं भी उनसे बेतअल्लुकी अख्तियार करलूं, क्या मेरा यह इरादा करना सहीह है? पगम्बरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया: इस सूरत में
खुदावंदे मूतआल तुम सब को छोड़ देगा. उस शख्स नें पूछा पस मेरा वजीफ़ा क्या है: पैगम्बरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया:

تَصِلُ مَنْ قَطَعَكَ تُعْطِي مَنْ حَرَّمَكَ وَتَصِلُ مَنْ قَطَعَكَ

وَتَعْفُوا عَمَّنْ ظَلَمَكَ فَإِذَا فَعَلْتَ ذَالِكَ كَانَ اللهُ عَزَّ

وَجَلَّ لَكَ عَلَيْهِمْ ظَهِيْرًا

जिसने क़तऐ रहम किया उससे सिलऐरहम करो, जिसने तुझे हक़ से महरूम किया है उसपर बख्शीश करो और जिसने तुझपर ज़ुल्म किया है उस्को माफ करो, अगर तूनें ऐसा किया तो खुदा की तरफ से तेरे लिये उनपर गलबा हासिल होगा. (बिहार जिल्द 4 पेज 100 गनजीनऐ माआरिफ जिल्द 1 पेज 598 किताब अल शाफी जिल्द 4 पेज 41 कुछ इख्तेसार के साथ)-

---

2-सिलऐ रहम और बरकत:

बनी इसराईल में दो जवान भाई ज़िंदगी गुज़ार रहे थे. वह दोनों एक दूसरे से बहुत मुहब्बत करते और एक दूसरे से बहुत मेहर बान थे. और दोनों एक ज़मीन में काश्त कारी करते एक भाई शादी शुदह और बच्चेदार था. दूसरा भाई फक्र व तंगदस्ती की वजह से शादी न कर सका. जिस वक्त गंदुम काटने का वक्त आया. तो गंदुम

काटने के बाद हर एक नें अपने अपने हिस्से के गंदुम अलाहेदा की. उस्के बाद हर एक नें अपना हिस्सा घर ले जानें का इरादह किया. गुरूब के वक्त बड़े भाई नें छोटे भाई से कहा: मुझे ज़रा काम है मैं अभी घर से होकर आरहा हूँ तुम गंदुम की देख भाल करो. जिस वक्त बड़ा भाई घर गया तो छोटे भाई नें अपने आप से कहा: मैं अकेला हूँ बीवी बच्चे तो हैं नहीं और मेरा खरचा भी कम है, लेकिन मेरा भाई शादी शुदह है और उस्के बीवी बच्चे भी हैं, इस गंदुम के अलावा उस्के पास कुछ और है भी नहीं. बेहतर है जबतक वह नहीं आता मैं अपने हिस्से की कुछ गंदुम उस्की गंदुम में डाल देता हूँ ताकी बीवी बच्चों कलिए गुजर बसर कर सके. उस्के बाद उस छोटे भाई नें अपनें हिस्से की गंदुम बड़े भाई के हिस्से में डाल दी. जिस वक्त बड़ा भाई वापस आया तो

रात हो चुकी थी. सारी गंदुम उठा कर बड़े भाई के घर रख दी और छोटा भाई अपनें घर चला गया. बड़े भाई नें खुदा का शुक्र अदा किया और कहा: अलहम दुलिल्लाह मै घर वाला और बीवी बच्चे वाला हूँ लेकिन मेरा छोटा भाई फक्र व तंग दस्ती की वजह से शादी नहीं कर सका. बेहतर है अभी वह यहाँ मौजूद भी नहीं है क्यूं न मैं अपने हिस्से की गंदुम उस्के हिस्से में डाल दूं ताकि उस्की गंदुम ज्यादा हो जाऐ और शादी के लिये रकम मुहय्या हो जाऐ. इस नीयत से उसने अपनी गंदुम छोटे भाई के हिस्से में डाल दी. जब खुदा वंदे मुतआल नें उन दोनों भाइयों में खैर ख्वाही मुसावात सिलाऐरहमी को देखा तो दोनों भाइयों के रिज्क में इजाफ़ा किया और दोनों को फक्र व तंग दस्ती से नजात दी. जब सुबह को दोनों भाइयों नें अपनी अपनी गंदुम उठाई

तो देखा कि गुज़श्तह साल की निस्बत इस साल गंदुम दोगुनी है. बहुत तअज्जुब करने लगे और हर एक यह ख़याल करनें लगा कि गंदुम के ज़्यादा होनें का सबब मैं हूँ कि मैंनें अपनें हिस्से की गंदुम उस्के हिस्से में डाल दी है लेकिन यह दोनों नहीं जानते थे कि भाई चारा एक दूसरे से नेकी और सिलऐ रहम करने की वजह से खुदावंदे मूतआल नें उन दोनों के गंदुम में बरकत अता फरमाई. (गंजीनऐ मआरिफ जिल्द 1 पेज 599)

37) ज़न व गुमान

आयात:

1-ज़न व गुमान से इज्तेनाब का हुक्म:

اَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اجۡتَنِبُوۡا كَثِيۡرًا مِّنَ الظَّنِّ اِنَّ بَعۡضَ الظَّنِّ اِثۡمٌ

(सूरए हुजरात आयत 12)

ईमान वालो! अक्सर गुमानों से इज्तेनाब करो कि बाज़ गुमान गुनाह का दर्जह रखते हैं.

2-ज़न व गुमान हलाकत का बाइस:

بَلۡ ظَنَنۡتُمۡ اَنۡ لَّنۡ يَّنۡقَلِبَ الرَّسُوۡلُ وَالۡمُؤۡمِنُوۡنَ اِلٰٓى اَهۡلِيۡهِمۡ اَبَدًا وَّ زُيِّنَ ذٰلِكَ فِىۡ قُلُوۡبِكُمۡ وَظَنَنۡتُمۡ ظَنَّ السَّوۡءِ ۖۚ وَكُنۡتُمۡ قَوۡمًا ۢ بُوۡرًا

(सूरए फतह आयत 12)

असल में तुम्हारा ख़याल यह था कि रसूल (स.अ.व.) और साहेबाने ईमान अब अपनें घर वालों तक पलट कर नहीं आ सकते और इस बात को तुम्हारे दिलों में खूब सजा दिया गया और तुमनें बद गुमानी से काम लिया और तुम हलाक हो जाने वाली कौम हो.

3-बुरे खयालात से मना:

وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا

(सूरए अहज़ाब आयत 10)

और तुम खुदा के बारे में तरह तरह के खयालात में मुब्तेला होगये.

4-बुरे ज़न की सज़ा:

وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ

الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَ

غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيۡهِمۡ وَ لَعَنَهُمۡ وَاَعَدَّ لَهُمۡ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتۡ

مَصِيۡرًا

(सूरए फतह आयत 6)

और मुनाफिक मर्द, मुनाफिक औरतें और मुशरिक मर्द व औरत जो खुदा के बारे में बुरे बुरे खयालात रखते हैं उन सब पर् अज़ाब नाज़िल करके उन्के सर अज़ाब की गर्दिश है और उनपर अल्लाह का गज़ब है खुदा नें इन पर लानत की है और उन्के लिये जहन्नम को मुहय्या किया है जो बदतरीन अंजाम है.

5-खैर का गुमान करना चाहिये:

لَوۡلَاۤ اِذۡ سَمِعۡتُمُوۡهُ ظَنَّ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ وَالۡمُؤۡمِنٰتُ بِاَنۡفُسِهِمۡ

خَيۡرًا ۙ وَّقَالُوۡا هٰذَاۤ اِفۡكٌ مُّبِيۡنٌ

(सूरए नूर आयत 12)

आखिर अयसा क्यूं न हो कि जब तुमलोगों नें उस तोहमत को सुना था तो मोमेनीन व मोमेनात अपने बारे में खैर का गुमान करते और कहते कि यह तो खुला हुवा बुह्तान है.

रवायातः

1-नेक खयाल की तस्दीक करोः

قال أمير المومنين عليه السلام : مَنْ ظَنَّ بِكَ خَيْرًا

فَصَدِّقْ ظَنَّهُ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 52)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमायाः जो शख्स तुम्हारे बारे में नेक ख़याल (हुस्नें ज़न) रखता है उस्के हुस्नें ज़न की तस्दीक करो.

2-हुस्नें ज़न के असरातः

قال أمير المومنين عليه السلام : حُسْنُ الظَّنِّ رَاحَةُ

الْقَلْبِ وَسَلَامَةُ الدِّيْنِ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 56)

इमामे अली (अ.स.) नें फरमायाः हुस्नें ज़न दिल के सुकून और दींन् की हिफाजत का सबब है.

3-ईमान नहीं:

قال أمير المومنين عليه السلام : لَا إِيمَانَ مَعَ السُّوءِ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 57)

मौला अली (अ.स.) नें फरमाया: बदगुमानी (सूऐ ज़न) के साथ कोई दीन नहीं है.

4-सूऐ ज़न से बचो:

قال أمير المومنين عليه السلام : إِيَّاكَ أَنْ تُسِيءَ

الظَّنَّ فَإِنَّ سُوءَ الظَّنِّ يُفْسِدُ الْعِبَادَةَ وَيُعَظِّمُ الْوِزْرَ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 55)

इमामुल मुत्तकीन अली (अ.स.) नें फरमाया: खबरदार सूऐज़न न करना बेशक सूऐज़न इबादत को बरबाद करदेता है, और गुनाह को बड़ा बना देता है.

5-हुस्नें ज़न करो:

قال أمير المومنين عليه السلام : حُسْنُ الظَّنِّ يُخَفِّفُ الْهَمِّ وَيُنْجِي مِنْ تَقَلُّدِ الْإِثْمِ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 55)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: हुस्नेंज़न गम को हल्का करदेता है, और गुनाह की पैरवी से नजात दिलाता है.

तशरीह:

ज़न व गुमान यानी ख़याल, वहम, वसवसा, शक व शुबहा ऐहतमाल देने के मानी में इसतेमाल होते हैं. अब इंसान अच्छे खयालात (हुसनेंज़न) भी रख सकता है और बुरे खयालात (सूए ज़न) भी रख सकता है. लेकिन कुरआंन व रवायात में हुसनेज़न को बेहतर क़रार दिया है. और हुसनेज़न के बारे में है कि बेहतरीन आदत और बहुत बड़ा नफ़ा है, बड़ी अता है जिस का गुमान नेक होता है, वह बहिश्त हासिल करनें में कामियाब हो जाता है, और कुरआन व रवायात मैं बुरे खयालात की मुज़म्मत की गई है, जो सूऐज़न रखता है वह हर एक से डरता है, और ऐसे शख्स का बातिन भी अच्छा नहीं होता. ऐसे शख्स पर लोग ऐतेमाद नहीं करते. उस्को अमानतदार नहीं समझते. जिस तरह हम चाहते हैं कि लोग

हमारे बारे में अच्छे खयालात (हुसनेज़न) रख्खें उस तरह हमें भी दूसरों के बारे में हुस्नें ज़न रखना चाहिए. हुस्नेज़न ईमान की एक निशानी है, और सूऐज़न बेईमानी की अलामत है. सूऐज़न ईमान को खत्म कर देता है.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के अह्लेबैते अतहार (अ.मु.स.) हम सब को अच्छे खयालात (हुस्नेज़न) रखनें की तौफीक अता फरमा. (आमीन)

वाकेआत:

1-हुस्नें ज़न की पादाश (सवाब):

कहते हैं: कुछ राह ज़न डाकू रात को अपने घर से इस ख़याल से बाहर निकले कि किसी कारवां का रास्ता रोक कर उन्के माल को तबाह व बरबाद करें गें, लेकिन इत्तेफाक से उस रात कोई कारवां उनसे न टकराया रात गये जब कोई न मिला तो होटल में चले गये. और होटल के दरवाज़े को खटखटाया. साहिबे होटल नें पूछा कौन? तो कहा: हम चंद मुजाहिदे राहे हक़ हैं, चाहते हैं कि आज रात यहाँ पर आराम करें, साहिबे होटल नें काफी इज़्ज़त व ऐहतेराम के साथ उन्को अंदर बुलाया और अच्छी खासी मेहमान नवाज़ी की. साहिबे होटल नें कुर्बतन इलल्लाह उन्की अच्छी तरह खातिर मदारात की कि यह लोग मुजाहेदीने खुदा हैं, इन की जितनी खिदमत करूं उतना ही कम है.

उस्का एक मफ्लूज बेटा था. उन मुजाहिदों को खाना पीना देने के बाद अपनी बीवी के पास आया और कहा आज मुजाहिदे खुदा हमारे होटल में आऐ हैं उन्का रूतबा व मक़ाम बहुत बुलंद है, खाना खारहे हैं जब खाना खा चुकेंगें तो मैं उन्के आगे से बचा हुवा खाना और पानी लेकर आवूंगा तुम ऐसा करना खाना बच्चे को खिलान और पानी उसके बदन पर मलना होसकता है खुदा वंदे मुतआल उन मुजाहिदों के ज़रिये मेरे बच्चे को शिफा देदे. बीवी नें शौहर की बातों को बड़े गौर से सुना और उस पर अमल भी किया. सुबह के वक्त राहज़न डाकू होटल से बाहर निकले और रास्ते में एक कारवां का रास्ता रोककर उन्का माल लूटा, और रात बसर करनें के लिये दोबारा होटल में आगये लेकिन उन्हों ने तअज्जुब से देखा कि जो लड़का कल रात चल नहीं सकता था वह

आज रात चल रहा है. साहिबे होटल से कहा हम नें कल रात इस बच्चे को ज़मीन गीर मफ्लूज देखा था. लेकिन आज रात यह बिकुल सहीह व सालिम है! साहिबे होटल नें कहा जी हाँ: आप लोगों की बरकत से इस को शिफा मिल गई. कल रात आप का बचा हुवा खाना और पानी उस्के बदन पर मला तो यह सेहत मंद व तन्दुरुस्त हो गया.

राहज़नों डाकुवों नें जब यह सुना तो गिरया कने लगे और कहा हम मुजाहिदीने खुदा नहीं हैं बल्की डाकू हैं. खुदावंदे मुतआल नें तेरे बेटे को तेरे हुस्नें जंन और नेक नीयती की वजह से शिफा दी है. हम भी खुदा की बारगाह में तौबह करते हैं. उन तमाम डाकुवों नें तौबह की और उस्के बाद आखिर उम्र तक मुजाहिदेने खुदा के रास्ते पर काइम (बाकी) रहे.

(गंजीनए मआरिफ जिल्द 1 पेज 333)

2-सूएज़न का अंजाम:

एक शख्स अपने बच्चे को बिस्तर पर लिटा कर बाहर चला गया. घर में एक पालतू कुत्ता भी था जब वह वापस घर आया तो क्या देखा कि दरवाज़ा पर कुत्ता खून आलूद बैठा है, उसने बदगुमानी की और सोचा कि कुत्ते नें उस्के बच्चे को खा लिया है. फ़ौरन उसने पिस्तौल निकाल कर कुत्ते को मार दिया. जब घर में दाखिल हुवा तो क्या देखा कि बच्चा सहीह व सालिम झूले में पड़ा हुवा है. और बच्चे के झूले के पास एक दरिन्दा मरा पड़ा है. गोया दरिन्दा बच्चे को खाना चाहता था लेकिन कुत्ते नें उस पर हमला करके उस दरिंदे को हलाक कर दिया और बच्चे की जांन बचा ली. इस वजह से कुत्ते के मुहं से खून टपक रहा था, और जिस्म पर खून लगा हुवा था. यह शख्स काफी गमगीन हुवा, और दौडता हुवा कुत्ते के पास

आया देखा कि कुत्ते की आँखें आंसुवों से तर हैं, और अपनी बेज़ुबानी में कहरहा है. मैंने तेरे बच्चे की जांन की हिफाज़त की. लेकिन अय इंसान तूनें जल्द बाज़ी और सूऐज़न की वजह से मुझे यह इनाम दिया.

(गंजीनए मआरिफ जिल्द 1 पेज 332)

38) इबादत

आयात:

1-खिल्कत का मकसद:

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ

(सूरए जारयात आयत 56)

और मैंनें जिन्नात और इंसान को सिर्फ अपनी इबादत केलिये पैदा किया है.

2-राहे मुस्तकीम:

إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۗ هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ

(सूरए आले इमरान आयत 51)

अल्लाह मेरा और तुम्हारा दोनों का रब है लेहाज़ा उस्की इबादत करो कि यही राहे मुस्तकीम है.

3-हुक्मे इबादत:

يٰاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ

सूरए बकरा आयत 21

अय इंसानों! पवर्दिगार की इबादत करो जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम से पहले वालो को भी खल्क किया है, शायद कि तुम इसतरह मुत्तकी और परहेज़गार बन जाव.

4-इबादत इंसान की पाकीजगी का सबब:

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا

صَعِيۡدًا طَيِّبًا فَامۡسَحُوۡا بِوُجُوۡهِكُمۡ وَاَيۡدِيۡكُمۡ مِّنۡهُ ؕ مَا

يُرِيۡدُ اللّٰهُ لِيَجۡعَلَ عَلَيۡكُمۡ مِّنۡ حَرَجٍ وَّلٰكِنۡ يُّرِيۡدُ

لِيُطَهِّرَكُمۡ وَلِيُتِمَّ نِعۡمَتَهٗ عَلَيۡكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ

सूरए माँएदा आयत 6

ईमान वालो! जब भी नमाज़ के लिये उठो तो पहले अपनें चेहरों को और कुहनियों तक अपनें हाथों को धोवो और अपने सर और गटटे तक पैरों का मसह करो और अगर जनाबत की हालत में हो तो गुस्ल करो और अगर मरीज़ हो या सफर के आलम में हो या पैखाना वगैरा निकल आया है या औरतों को बाहम लम्स किया है और पानी न मिले तो पाक मिट्‌टी से तयम्मुम करलो इस तरह चेहरे और हाथों का मसा करलो कि खुदा तुम्हारे लिये किसी तरह की ज़हमत नहीं चाहता बल्की यह चाहता है कि तुम्हे पाक व पकीज़ा बना दे और तुम पर अपनी नेमत

को तमाम करदे शायद तुम इस तरह उस के शुक्र गुज़ार बंदे बन जाव.

5-इबादत की राह में सब्र:

فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ

(सूरए मरयम आयत 65)

उसकी इबादत करो और इबादत की राह में सब्र करो.

रवायात:

1-इबादत का तरीक़ा:

قال رسول الله صلي الله عليه و اله وسلم : اُعْبُدِ اللهَ كَاَنَّكَ تَرٰاهُ فَاِنْ لَمْ تَرٰاهُ فَاِنَّهُ يَرَانَ

(कन्जुल आमाल जिल्द 16 पेज 128)

रसूलुल्लाह (स.अ.) नें फरमाया: खुदा की इसतरह इबादत करो गोया तुम उस्को देख रहे हो, अगर तुम उस्को नहीं देख रहे तो वह तुम को देख रहा है.

2-आबिद तरीन शख्स:

قال علي بن الحسين عليه السلام : مَنْ عَمَلَ بِمَا افْتَرَضَ اللهُ عَلَيْهِ اَعْبَدِ النَّاسِ

(काफी जिल्द 2 पेज 186)

हज़रत इमाम जैनुल आबेदीन (अ.स.) नें फरमाया: जिस नें अमल किया उस चीज़ पर

जो अल्लाह नें उन पर फ़र्ज़ की है, तो वह सब से ज़्यादा इबादत करनें वाला है.

3-इबादत की जीनत:

قال أمیر المومنین علیه السلام: زَيْنُ الْعِبادَةِ اَلْخُشُوعُ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 61)

हज़रत अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) नें फरमाया: इबादत की जीनत खुशू व खुज़ूअ है.

4-इबादत की गरज़ व गायत:

قال أمیر المومنین علیه السلام: غَايَةُ الْعِبادَةِ اَلطَّاعَةِ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 55)

इमाम अली (अ.स.) नें फरमाया: इबादत की गरज़ व गायत (हदफ़ व मकसद) इताअत है.

5-तीन तरह की इबादत:

قال الصادق عليه السلام : (إِنَّ) الْعِبادَةَ ثَلَاثَه: قَوْمٌ عَبَدُوا اللهَ عَزَّ وَجَلَّ خَوْفًا فَتِلْكَ عِبادَةُ الْعَبِيْدِ عَبَدُوا اللهَ تَبارَكَ وَتَعالي طَلَبَ الثَّوابِ فَتِلْكَ عِبادَةُ الْأَجْرَارِ وَقَوْمٌ عَبَدُوا اللهَ عَزَّ وَجَلَّ حُبًّا لَهُ فَتِلْكَ عِبادَةُ الْإِحْرَارِ وَهِيَ أَفْضَلُ الْعِبادَهُ

(किताब अल शाफी जिल्द 3 पेज 366)

इमाम सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: इबादत तीन तरह की है: बेशक कुछ लोग जहन्नम के खौफ से खुदा की इबादत करते हैं, यह गुलामों की इबादत है, और कुछ लोग सवाब (जन्नत की शौक़) की खातिर इबादत करते हैं, यह इबादत ताजिरों की है, और कुछ लोग सिर्फ खुदा की मुहब्बत की खातिर उसकी इबादत करते हैं, यह आज़ाद लोगों की इबादत है, और यह अफज़ल इबादत है.

तशरीह:

इबादते इलाही खुदा के तक़र्रुब के लिये एक ज़रीया है और हर शख्स को उस्के अमल का अज्र उसकी नीय्यत के मुताबिक दिया जाऐगा. हर वह काम जो खुदावंदे आलम की खुश्नूदी के लिये किया जाए इबादत है, इस लिये हम हर इबादत में नीय्यत के वक्त यह कहते हैं कुर्बतन इलल्लाह. यानी हमारा अमल अल्लाह केलिये है. इंसान इसक़दर इबादत से क्यूं दूर है. क्या खालिके काऐनात नें हमें सहीह व सालिम आज़ा व जवारेह नहीं दिये? क्या हमें नेमतें नहीं दीं? क्या हम उन नेमतों के शुक्र बजा लाने केलिये उस्की इबादत नहीं कर सकते. अगर हम खुदा के बंदें हैं और उसनें हमें इबादत केलिये खल्क किया है. तो आज ही से बल्कि अभी से हम खुदा की इबादत करें. जब हम उस्की इबादत करेंगें. तो वह हमें हरचीज़ से गनी

करदेगा, और खालिस इबादा यह है कि इंसान अपने रब के अलावह किसी से उम्मीद न रखे और अपने गुनाह के अलावा किसी से न डरे उस शख्स को इबादत की लज़्ज़त कैसे महसूस हो सकती है जो ख्वाहिश पूरी करने से बाज़ नहीं रहता. इबादत की लज़्ज़त वही महसूस कर सकता है. जो अल्लाह के लिये इबादत करे, और उस्का बंदह रह कर ज़िंदगी गुज़ारे. खुदा नें हर चीज़ को हमारे लिये खल्क किया और हमें अपने लिये.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के इमामे जैनुल आबेदीन (अ.स.) हमें इबादत करने की तौफीक अता फरमा. (आमीन)

वाकेआत:

1-नमूनऐ इबादत:

हज़रत इमाम सादिक (अ.स.) से रवायत है कि मेरे वालीद नें फरमाया: एक दिन मैं अपनें वालिदे गेरामी अली बिन हुसैन (अ.म.स) की खिदमत में हाज़िर हुवा मैंनें देखा कि इबादत नें आप में बहुत तासीर कर रख्खी है. (यानी इबादत का असर आप पर बहुत ज़्यादा है) और बेदारिये शब (रात में जागने की वजह से) की वजह से आप का रंग मुबारक ज़र्द हो चुका है. और ज़्यादह गिरया की वजह से आप की आँखें ज़ख़्मी हो चुकी हैं, और सज्दा ज़्यादा करने की वजह से, आप की नूरानी पेशानी पर गट्ठा बन चुका है, और नमाज़ में ज़्यादा खड़े रहने की वजह से आप के कदमों पर वरम आगया है. जब मैंनें उन्हें इस हालत में देखा तो मैं अपना गिरया न रोक सका

और मैं बहुत रोया. आप फ़िक्र इलाही की तरफ मुतवज्जह थे. कुछ देर के बाद आप नें मेरी तरफ देखा तो फरमाया: अमीरुल मोमेनीन की इबादत की किताब ले आव कि जिन में आप (अ.स.) की इबादत लिखी हुई है. जब मैं ले आया उन में से कुछ का मुतालेआ फरमाने के बाद. उन्हें ज़मीन पर रख दिया, और फरमाया: किस शख्स में इतनी ताकत व कूवत है कि अली बिन अबी तालिब (अ.स.) की तरह इबादत कर सके. (अह्सनुल मकाल जिल्द 1 पेज 579)

2-हज़रत अली (अ.स.) और नमाज़:

अमीरुल मोमेनीन हज़रत अली (अ.स.) सिफ्फींन के मार्के में थे जंग पूरे जोर व शोर से जारी थी. दुश्मन का लश्कर मुकाबिले पर डटा हुवा था. ऐसे ही मौके पर एक मर्तबा आप (अ.स.) नें सूरज की जानिब निगाह की, इब्ने अब्बास नें पूछा

आप सूरज की जानिब क्यूं मुतवज्जह हैं, हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: मैं ज़वाल का वक्त शनाख्त करना चाहता हूँ ताकि नमाज़े जोहर पढ़ सकूं.
इब्ने अब्बास नें कहा: क्या ऐसी घमसान की जंग के मौके पर नमाज़ पढ़ी जाएगी.
इमाम (अ.स.) नें फरमाया: हम लोगों से किस बात पर जंग कर रहे हैं. हम उनसे इसी लिये तो जंग कर रहे हैं ताकि नमाज़ क़ाऐम हो सके. इब्ने अब्बास बयान करते हैं कि. अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) नें कभी नमाज़े शब नहीं छोड़ी, यहाँ तक कि जंगें सिफ्फींन में सख्ततरीन मौके पर यानी लैलतुल हरीर में भी आप (अ.स.) नें नमाज़े शब अदा की, और नमाज़े जोहर तो फिर भी वाजिब थी, मौला उस्को कैसे छोड़ सकते थे. (बिखरे मोती जिल्द 1 पेज 240)

39) इल्म

आयात:

1-अहमिय्यते इल्म:

الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ

عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْ

(सूरए अलक आयात 4'5)

जिसने क़लम के ज़रिये तालीम दी है और इंसान को वह सब कुछ बता दिया है जो उसे नहीं मालूम था.

2-इंसान की अहममिय्यत इल्म के साथ:

وَلَقَدْ اٰتَیْنَا دَاوٗدَ وَسُلَیْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ

فَضَّلَنَا عَلٰی كَثِیْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِیْنَ

सूरए नम्ल आयत 15

और हमनें दाऊद (अ.स.) व सुलैमान (अ.स.) को इल्म अता किया तो दोनों नें

कहा कि खुदा का शुक्र है कि उसनें हमें बहुत से बन्दों पर फजीलत अता की है.

3-इल्मे इंसान कसबी है (यानी सीखा है):

وَاللّٰهُ اَخۡرَجَكُمۡ مِّنۡۢ بُطُوۡنِ اُمَّهٰتِكُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ شَيۡـًٔا ۙ وَّ جَعَلَ لَـكُمُ السَّمۡعَ وَالۡاَبۡصٰرَ وَالۡاَفۡـِٕدَةَ‌ ۙ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ

(सूरए नहल आयत 78)

और अल्लाह ही नें तुम्हें शिकमे मादर से इस तरह निकाला है कि तुम कुछ नहीं जानते थे, और उसी नें तुम्हारे लिये कांन, आँख, और दिल क़रार दिये हैं. ताकि शायद तुम शुक्र गुज़ार बन जाव.

4-इल्म के हुसूल की दुआ:

وَقُلۡ رَّبِّ زِدۡنِىۡ عِلۡمًا

(सूरए ताहा आयत 114)

और यह कहते रहें कि परवर दिगार मेरे इल्म में इजाफ़ा फरमा.

5-क्या आलिम और जाहिल बराबर हैं

قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ط

सूरए ज़ुमर आयत 9

कह दीजिए कि क्या वह लोग जो जानते हैं उन्के बराबर हो जाएँगे जो नहीं जानते हैं.

रवायात:

1-इल्म हासिल करना वाजिब है:

قال رسول الله صلي الله عليه و اله وسلم : طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلي كُلِّ مُسْلِمٍ اَلَا إِنَّ اللهَ يُحِبُّ بُغَاةَ الْعِلْمِ

(काफी जिल्द 1 पेज 30)

रसूले खुदा (स.अ.) नें फरमाया: इल्म का तलब करना हर मुसलमान पर वाजिब है. बेशक खुदा वंदे आलम इल्म हासिल करने वालों को दोस्त रखता है.

2-बेहतरीन वजीर:

قال رسول الله صلي الله عليه و اله وسلم : نِعْمَ وَزِيْرُ الْاِيْمَانِ الْعِلْمِ

किताब अल शाफी जिल्द 1 पेज 105

हज़रत रसूले अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया: ईमान का बेहतरीन वजीर इल्म है.

3-इल्म की ज़कात:

قال الباقر عليه السلام : زَكَاةُ الْعِلْمِ أَنْ تُعَلِّمَهُ عِبَادَ اللهِ

(किताब अल शाफी जिल्द 1 पेज 91)

इमामे मोहम्मद बाकिर (अ.स.) नें फरमाया: इल्म की ज़कात यह है, कि उस्को लोगों को तालीम दो.

4-अजीम खज़ाना:

قال علي عليه السلام : اَلْعِلْمُ كَنْزٌ عَظِيمٌ لَا يَفْنِي

गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 187

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: इल्म ऐसा खजाना है, जो कभी फना (खत्म) नहीं हो सकता.

5-इल्म बगैर अमल:

قال أمير المؤمنين عليه السلام : اَلْعِلْمُ بِلَا عَمَلٍ وَبَالٌ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 187)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: इल्म बगैर अमल के वबाल है.

तशरीह:

मालिके काऐनात नें इंसान को दो अजज़ा (जुज़) से मुरक्कब (मिलाकर) बनाया है: जिस्म और रूह, और दोनों अपनी हयात और बका के लिये गज़ा के मुहताज हैं. जिस्म की गज़ा का नाम है माल और रूह की गज़ा का नाम है इल्म.

जिस्म माद्दी है लेहाज़ा उस्की गज़ा भी माद्दी है, रूह मुजर्रद है लेहाज़ा उसकी गज़ा भी मुजर्रद है. जिस्म खाक में मिल जाने वाला है लेहाज़ा उस्की गज़ा भी फानी है. रूह आलमे अर्वाह से मुल्हक होने वाली है, लेहाजा उसकी गज़ा भी बाकी रहने वाली चीज़ है. लेहाजा बेहतरीन इंसान वह है जो फानी (खत्म होजाने वाला) माल देकर जावेदानी (हमेशा रहने वाला) इल्म हासिल करले, और बदतरीन साहिबे इल्म वह है, जो बाकी (हमेशा रहने वाला) इल्म को देकर

माल लेने की कोशिश करे. इल्म सिर्फ और सिर्फ खुदा के लिये होना चाहिए न कि माल व दौलत के हुसूल के लिये. इल्म को खाने पीने का ज़रिया बनाने वाला मलउन क़रार दिया गया है. माल खर्च करने से कम होजाता है, और इल्म के रूहानियत का असर यह है, कि सर्फ़ करने से मुसलसल बढ़ता रहता है. तजर्बा बेहतरीन सुबूत है. माल यारे बिवफा (यानी जिसकी मदद में वफ़ा नहीं है) है और इल्म नासिरे बा वफ़ा.

खुदा से दुआ करते है बहक्के बाबे मदीनतुल इल्म हमें तादमें (मरते वक्त तक) आखिर इल्म हासिल करने की तौफीक अता फरमा. (आमीन)

वाकेआत:

1-हुज़ूरे अकरम (स.अ.व.) का इन्तेखाब:

एक दिन रसूले अकरम (स.अ.व.) मदीना मुनव्वरह में मस्जिद में दाखिल हुवे, अप (स.अ.व.) नें दो गिरोह को देखा जो दो टोलियों के शक्ल में बैठे हुए थे. दोनों एक दूसरे के इर्दगिर्द दाएरे की शक्ल में बैठे किसी काम में मशगूल नज़र आरहे थे. उनमें से एक गिरोह इबादत और ज़िक्र खुदा में मशगूल था. दूसरा गिरोह तालीम व तअल्लुम में मसरूफ था. यानी कुछ सीख रहे थे, तो दूसरे सिखा रहे थे. आप (स.अ.व.) नें दोनों की तरफ देखा, और फरमाया: खुश बख्त हैं लेकिन मुझे सिखाने के लिये भेजा गया है, और मेरा काम तालीम व तरबीयत है. फिर तालीम व तअल्लुम के काम में मशगूल गिरोह की

तरफ बढे, औ उन्के साथ जाकर बैठ गऐ. (मौजूइ दास्तानें पेज 263).

2-हमेशा साथ रहने वाली दौलत:

आलिमे रब्बानी और मर्द रूहानी हज़रत आयतुल्लाह अल उज़मा मिरज़ा कुम्मी की एक मर्तबा इत्तेफाक से एक हम्माम में बादशाह से मुलाक़ात हो गई. आक़ाऐ मीरज़ा कुम्मी नें बादशाह फतह अली काचार से फरमाया: लश्कर किधर है, जाह व हशम, सर्वत व दौलत, तख्त व ताज कहाँ है, अकेले कैसे आगये? बादशाह फतह अली शाह नें कहा: किबला साहिबे माल व दौलत, और जाह व हशम, अयसी चीज़ तो नहीं जो हम्माम में साथ आऐ. मिरज़ा साहब नें फरमाया: मैं जिस दौलत व सरमाये का मालिक हूँ वह इस वक्त मेरे साथ है. मेरा इल्म हम्माम में भी मेरे साथ होता है. चूंकि मेरे सीने में है और कयामत तक हर जगह

मेरे हमराह होगा. कब्र में भी मेरे साथ होगा हशर में भी मेरे हमराह होगा. (मोजूई दास्तानें पेज 265).

40) ग़ज़ब व गुस्सा

आयात

1-मुत्तकीन की सिफत:

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ

(सूरए आले इमरान आयत 134)

और गुस्से को पी जाते हैं और लोगों को मुआफ करने वाले हैं. और खुदा ऐहसान करनें वालों को दोस्त रखता है.

2-गुस्सह को पी जाना:

وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰٓاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ

सूरए यूसुफ़ आयत 84

यह कहकर उन्हों (याकूब अ.स.) नें सब से मुहं फेर लिया और कहा कि अफ़सोस है

यूसुफ़ (अ.स.) के हाल पर इतना रोऐ कि आँखें सफैद हो गइं और गम के घूट पीते रहे

3-गुस्सह के वक्त मुआफ करना:

وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ

सूरए शूरा आयत 37

और जब गुस्सा आजाता है तो मुआफ करदेते हैं.

4-हज़रत यूनुस (अ.स.) का गुस्सह:

وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِى الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ★ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ

सूरए अंबिया आयत 87

और यूनुस (अ.स.) को याद करो कि जब वह गुस्से में आकर चले और यह ख्याल

किया कि हम उनपर रोजी तंग न करेंगें और फिर तारीकियों में जाकर आवाज़ दी कि परवरदिगार तेरे अलावा कोई खुदा नहीं है तू पाक व बेनियाज़ और मैं अपनें नफ्स पर ज़ुल्म करने वालो में से था.

5-इख्लाके इस्लामी:

وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَاۤ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۡ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۡ لَا نَبْتَغِى الْجٰهِلِيْنَ

(सूरऐ केसस आयत 55)

और जब लग्व बात सुनते हैं तो किनारा कशी अख्तियार करते हैं और कहते हैं कि हमारे लिये हमारे आमाल और तुम्हारे लिये तुम्हारे आमाल हैं. तुम पर हमारा सलाम कि हम जाहिलों की सोहबत पसंद नहीं करते.

रवायात:

1-हर बुराई की चाबी:

قال أمير المؤمنين عليه السلام : اَلْعِلْمُ بِلَا عَمَلٍ وَبَالٌ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 187)

इमामे सादिक (अ.स.) नें फरमाया: गज़ब व गुस्सा हर बुराई की चाबी (कुंजी) है.

2-गुस्सह को ज़ब्त करनें का सवाब:

قال الباقر عليه السلام : مَنْ كَظَمَ غَيْظاً وَهُوَ يَقْدِرُ

عَلي إِمْضَائِهِ حَشَا اللهُ قَلْبَهُ اَمْناً وَإِيْمَاناً يَوْمَ الْقِيَامَةِ

(किताब अल शाफी जिल्द 2 पेज 410)

इमामे बाकिर (अ.स.) नें फरमाया: जिसनें गुस्सा को ज़ब्त किया हालांकी वह उसको ज़ाहिर कर सकता था, तो खुदा उस्के दिल को रोज़े क़यामत अम्न व ईमान से पुर कर देगा.

3-ईमान की तबाही का सबब:

قال رسول الله صلي الله عليه و اله وسلم : اَلْغَضَبُ

يَفْسِدُ الْاِيْمَانَ كَمَا يُفْسِدُ الْخَلُّ الْعَسَلَ

(काफी जिल्द 2 पेज 302)

रसूले खुदा (स.अ.व.) नें फरमाया: गुस्सा ईमान को इस तरह खराब करदेता है जैसे सिरका शहद को.

4-अज़ाब से दूरी का सबब

قال الباقر عليه السلام : مَنْ كَفَّ غَضَبَهُ عَنِ النَّاسِ

كَفَّ اللّٰهُ عَنْهُ عَذَابَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

(किताब अल शाफी जिल्द 4 पेज 265)

इमाम मोहम्मद बाकिर (अ.स.) नें फरमाया: जो अपनें गुस्से व गज़ब को लोगों से रोकता है, रोजे क़यामत अल्लाह उस पर अज़ाब नहीं करता.

5-गुस्सा अक्ल को खत्म कर देता है

قال الصادق علیہ السلام: مَنْ لَمْ یَمْلِکْ غَضَبَہُ لَمْ یَمْلِکْ عَقْلَہُ

(किताब अल शाफी जिल्द 4 पेज 265)

इमामे सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: जो अपनें गुस्से पर काबू नहीं रखता वह अपनी अक्ल पर काबू नहीं रखता.

तशरीह:

बिला वजह गैज़ व गज़ब से काम लेना, बेजा गुस्सा होना, या अहल व अयाल और रिश्ते दारों की गलती की बिना पर, या दीनी भाइयों की गफलत व जेहालत की वजह से गुस्सा करना वाकेअन एक शैतानी हालत, इब्लीसी मंसूबा, और नापसंद अमल है.

लेहाजा गज़ब व गुस्सा से परहेज़ करना हर मुसलमान केलिये लाजिम व ज़रूरी है. क्यूंकि गुस्सा की हालत में इंसान अपनी अक्ल पर काबू नहीं रखता, और जो कुछ शैतान उस से कहलवाना चाहता है इंसान कह देता है. बाद में पशेमान होता है, और बाज़ अवकात गुस्सा की हालत में इंसान ऐसे गुनाहों का मुरतकिब हो जाता है, जिस की तलाफ़ी ना मुमकिन और मुहाल है.

गुस्से को पीजाना अंबिया अवलिया और अइम्मा ताहेरीन (अ.मु.स.) की सिफात में से

एक है, हमें भी इस सिफत को अपनाना चाहिये.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के इमामे मूसा काजिम (अ.स.) हमें गुस्सा पर काबू करने की तौफीक अता फरमा.

वाकेआत:

1-गुस्सा न करना:

एक शख्स रसूले खुदा (स.अ.व.) सी कहने लगा मुझे कुछ तालीम दीजिए आप (स.अ.व.) नें फरमाया: और गुस्सा न करो उसने कहा मेरे लिये आप का यह हुक्म काफी है उस्के बाद वह अपने घर चला गया, वहाँ मालूम हुवा कि उसकी कौम जंग केलिये आमादा है सफ बंदी हो चुकी है, और लोगों नें हथियार बदन पर उठा लिये हैं, यह हाल देख कर उसने भी अपनें बदन पर हथियार डाले और लड़ने के लिये आमादा हुवा. तब उस्को रसूलुल्लाह (स.अ.व.) का कौल याद आया. गुस्सा न करना. फ़ौरन अपनें बदन से हथियार उतारे और उन्के पास गया जिन से दुश्मनी थी और कहा: लोगो तुममें से किसी को ज़ख्म लगा है, या कोई क़त्ल हुवा है, या चोट वगैरा खाई है,

जिस का असर अब न हो तो मैं अपनें माल में से तुम लोगों को दीयत देने केलिये तय्यार हूँ. मेरी कौम से उस्का कोई तअल्लुक न होगा मैं खुद यह वादा पूरा करूँगा. उन्हों नें कहा जो तुम कह रहे हो. यह तुम अपने पास रख्खो हम तुम से ज़्यादा जवान मर्दी दिखाने के अहल हैं. पस उस्के बाद उनमें सुलह हो गई, और गुस्सा दूर होगया (आप नें देखा गुस्सा को पी जानें कीवजह से दो कौमें एक होगयीं) (किताबे अल शाफी जिल्द 4 पेज 264).

2-शर्ते नबूवत और जा नशीनी:

पैगंबरों में से एक पैगंबर हजरते यसआ (अ.स.) की उम्र मुबारक के आख़री अय्याम थे. उन्हों नें अपनी जा नशीनी के बारे में सोचा. लोगों को जमा किया और फरमाया: जो भी मुझसे तीन कामों का वादा करे गा मैं उस्को अपना जा नशीन मुन्तखब करूँगा.

1-दिन को रोजा रख्खे. 2-रात को बेदार रहे. 3-गुस्सा न करे. लोगों में से एक जवान जिसकी कोई अहमीयत न थी दरमियान से उठा और कहा मैं इंन शर्तों पर अमल करूँगा. दूसरे दिन फिर हज़रत यसअ (अ.स.) नें लोगों के सामने इस बात को दोहराया: उस जवान के अलावा, किसी नें जवाब नाहिं दिया. हज़रत यसअ (अ.स.) नें उस जवान को अपना जा नशीन मुक़र्रर किया यहाँ तक कि इस दुन्या से रुखसत हुवे. खुदा वंदे मूतआल नें उस जवान को जो हज़रत ज़ुल्किफ़्ल थे. नबूवत पर फ़ाइज़ किया शैतान नें सोचा क्यूं न इस जवान को गुस्सा दिलावों. उस्के वादे को तोड़ वाता हूँ. इबलीस नें अपनें एक साथी जिसका नाम अबयज़ था, को कहा जाव और उस जवान (जुल किफ्ल) को गुस्से में लाव. हज़रत जुल किफ्ल रात को शब्बेदारी करते और दिन में

बहुत कम सोते. अबयज़ नामी शैतान नें सब्र किया कि वह दिन में सो जाएँ. जब वह दिन में सोऐ तो यह उन्के करीब आया, और जोर जोर से चिल्लानें लगा कि मुझपर ज़ुल्म हुवा है. मेरा हक़ ज़ालिम से दिलवाएं. हज़रत नें फरमाया: जाव उस्को मेरे पास लेकर आव! अबयज़ नें कहा: मैं यहाँ से नहीं जावूंगा! जुल किफ्ल नें उस्को अपनी अंगूठी दी कि यह ज़ालिम को दिखाना वह तुम्हारे साथ मेरे पास आ जाऐगा. अबयज़ नें अंगूठी ली और फ़ौरन जाकर वापस आगया और फरयाद करनें लगा: मैं मजलूम हूँ! ज़ालिम नें अंगूठी की तरफ तवज्जो ही न की और मेरे साथ आने से इनकार करदिया. दोबारा जुल किफ्ल ने उस से फरमाया: अच्छा मुझे कुछदेर सोने दो गइ रात भी नहीं सोया! अबयज़ नें कहा: मुझ पर ज़ुल्म हुवा है और तुम आराम करना चाहते हो! हज़रत जुल

किफ्ल नें कुच्छ लिखकर उस्को दिया कि यह उस ज़ालिम को जाकर दो और उस्को मेरे पास लेकर आव.

तीसरे दिन जब आराम करनें लगे तो अबयज़ नामी शैतान नें उन्को बेदार किया: जुल किफ्ल नें अबयज़ का हाथ पकड़ा और उस्के साथ चल पड़े लेकिन गुस्सा नहीं किया. अबयज़ नें जब यह देखा कि उन्को गुस्सा नहीं आरहा है तो अपना हाथ जुल किफ्ल से छुडवाकर भाग गया. (गंजीनए मआरिफ जिल्द 1 पेज 655)

41) गीबत

आयात:

1-गीबत करना मना है:

وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ۭ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ

(सूरए हुजरात आयत 12)

और एक दूसरे की गीबत न करो क्या तुम इस बात को पसंद करते हो कि अपनें मुर्दह भाई का गोश्त खाव यकीनन तुम बुरा समझोगे, तो अल्लाह से डरो कि बेशक अल्लाह तौबा कबूल करने वाला और मेहर बान है.

2-रोज़े क़यामत ज़ुबान की गवाही:

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ

(सूरए नूर आयत 24)

क़यामत के दिम उन्के खिलाफ उन्की ज़ुबानें और हाथ पावं सब गवाही देंगें कि यह क्या कर रहे थे?

3-बुराई करनें से परहेज़:

فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ

(सूरए हज आयत 30)

तुम नापाक बुतों से परहेज़ करते रहो और लग्व व मोहमल बातों से इज्तेनाब करते रहो.

4-मजलूम की फरयाद:

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ

(सूरए निसा आयत 148)

अल्लाह मजलूम के अलावा किसी की तरफ से भी अलल ऐलान बुरा कहनें को पसंद नहीं करता.

5-अपनें गुफ्तार का जवाब देह:

كَلَّا ۚ سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا

(सूरए मरयम आयत 79)

हरगीज़ ऐसा नहीं है हम उसकी बातों को दर्ज कर रहे हैं और उस्के अज़ाब में और भी इजाफ़ा करदें गे.

रवायात:

1-अजज़ी व नातवानी की निशानी:

قال علي عليه السلام : اَلْغِيْبَةُ جُهْدُ الْعَاجِزِ

(नहजुल बलागा हिकमत 461)

मौला अली (अ.स.) नें फरमाया: गीबत करना आजिज़ व नातवां की कोशिश है.

2-मुनाफिक की अलामत:

قال علي عليه السلام : اَلْغِيْبَةُ آيَةُ الْمُنَافِقِ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 317)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: गीबत मुनाफिक की अलामत व पहचान है.

3-गीबत सुनने वाला:

قال علي عليه السلام : اَلسَّامِعُ لِلْغِيْبَةِ كَالْمُغْتَابِ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 318)

अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) नें फरमाया: गीबत सुनने वाला गीबत करनें वाले के मानिन्द है.

4-गीबत का कफ्फारह:

قال رسول الله صلي الله عليه واله وسلم: كَفَّارَةُ الْاِغْتِيَابِ أَنْ تَسْتَغْفِرَ لِمَنِ اغْتَبْتَهُ

अमाली तूसी पेज 192

रसूलुल्लाह (स.अ.व.) नें फरमाया: गीबत करने का कफ्फारा यह है कि जिस की तुम नें गीबत की है उस्के लिये अस्तग्फार करो.

5-गीबत से परहेज़:

قال علي عليه السلام: اَجْتَنِبِ الْغِيْبَةَ فَاِنَّهَا اِدَامُ كِلَابِ النَّارِ ثُمَّ قَالَ يَا نُوْفُ كَذَبَ مَنْ زَعِمَ اَنَّهُ وُلِدَ مِنْ حَلَالٍ وَهُوَ يَاْكُلُ لُحُوْمِ النَّاسِ بِالْغِيْبَةِ

(वसाएल अल शीआ जिल्द 12 पेज 283)

हज़रत अली (अ.स.) नें नोफेबकाली से फरमाया: गीबत करने से परहेज करो, क्यूंकि वह जहन्नम के कुत्तों की गिजा है. उस्के बाद फरमाया: अय नोफ! वह शख्स झूठा है जो यह गुमान करता है कि वह हलाल जादह है हांलाकि वह लोगों का गीबत के ज़रिये गोश्त खाता है.

तशरीह:

गीबत एक ऐसा गुनाह है जिस से बचना आजकल के मुआशरे में बहुत मुश्किल है. अगर इंसान कोशिश करे तो उससे बच सकता है. गीबत यानी ऐसी बुराई अपने बेरादरे मोमिन की पसे पुश्त बयान करना जो लोगों में मशहूर न हो, और अगर ऐसी बुराई जो उसमें न हो तो यह बोहतान है. और अगर पसे पुश्त ऐसी बुराई बयान करे जो लोगों में मशहूर हो तो यह गीबत नहीं है मस्लन फलां शख्स दाढी मुडवाता है. कहने वाला भी जानता है और सुनने वाला भी जानता है, अब अगर बयान किया जाऐ कि फलां दाढी मुडवाता है तो सुनने और सुनाने वालों केलिये गुनाह नहीं है. गीबत करना ऐसा है जैसा इंसान अपने मुर्दह भाई का गोश्त खाऐ गीबत जहन्नम के कुत्तों की गिजा है. वाज़ेह हुवा कि गीबत करना ज़ुबान

पर मुन्हसिर नहीं बल्की जिस तरीके से भी गैर का नक्स समझ में आजाऐ वह गीबत है. ख्वाह वह कौल, या फेल, या इशारा, या तहरीर, से की जाऐ.

हमें चाहिये कि हम पसे पुश्त अपनें ब्रादरे दीनी की इज़्ज़त करें, अगर कोई गीबत करे तो उसे रोकें, अगर कोई ऐसा करेगा तो खुदा वंदे मुतआल दुन्या व आखेरत में उसकी मदद करेगा. कहाँ पर गीबत करना जाऐज़ है, उस्के लिये फिकह की किताबों में रुजू करें, जब खुदावंदे मूतआल नें उस्का ऐब छुपाया है तो हम कौन होते हैं कि उस्के ओयूब को ज़ाहिर करें. हम अपनें गरीबांन में देखें हमारे अंदर कितने ओयूब हैं. और सत्तारुल ओयूब नें हमारे ऐबों पर किस तरह पर्दा डाला हुवा है. हम इस बात को पसंद करते हैं कि हमारे ऐब दूसरों को पता चलें. हरगिज़ हम पसंद नहीं करते जब हम पसंद

नहीं करते तो हमें चाहिये कि हम भी दूसरे के ऐबों पर पर्दह डालें, अगर इसतरह हर एक मोमिन करनें लगे तो मोआशरे से फसाद और बुराई खत्म हो सकती है.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.मु.स.) हमें इस बुराई से बचने की तौफीक अता फरमा. (आमीन).

वाकेआत:

1-असाऐ मूसा (अ.स.)

एक दिन हज़रत मूसा (अ.स.) सो रहे थे कि बनी इस्राईल के किसी शख्स नें आप (अ.स.) का असा चुरा लिया. उसे दरमियान से काट कर दो टुकड़े ज़मीन में दफन करदिये. जब हज़रत मूसा (अ.स.) की आँख खुली तो आप (अ.स.) नें अपना असा गाऐब पाया. उसी वक्त अपने रब्बे ज़ुल्जलाल के हुज़ूर शिकायत की.

खुदाया! मेरा असा कहाँ गया, मेरा असा क्या हुवा? निदा आई: अय मूसा! आप के असा को किसी नें दो टुकड़े करके ज़मीन में दफन कर दिया है. हज़रत मूसा (अ.स.) नें अर्ज किया: खुदाया वह कौन है, किसने यह काम किया, कहाँ मेरे असा को छुपाया है?

जवाब मिला: अय मूसा आप को तो मालूम है मेरा हुक्म है कि मेरे बन्दों के अयबों पर

पर्दह डाला जाए, उन्की पर्दह पोशी की जाऐ, आप जिस जगह खड़े हैं उसी जगह पर अपनें असा को आवाज़ दें. मैं आप के असा को सुनने की कुदरत अता करूँगा. वह आप की आवाज़ सुनकर आप का जवाब देगा.

हज़रत मूसा (अ.स.) नें अपनें असा को आवाज़ दी. असा नें खुदा की कुदरत से जवाब दिया और ज़मीन से दो टुकड़े बरामद हुवे. आप (अ.स.) नें अपनें असा के दोनों हिस्सों को उठा लिया और फिर आपस में मिला दिया (मौजूई दास्ताने पेज 273)

2-हकीकते गीबत:

अनस कहते हैं पैगंबरे अकरम (स.अ.) नें एक रोज लोगों को एक दिन रोज़ा रखनें का हुक्म दिया और फरमाया: मेरी इजाज़त के बगैर कोई अफ्तार न करे. लोगों नें रोज़ा रख्खा जब अफ्तार का वक्त हुवा तो एक शख्स आया और कहा: अय रसूले खुदा

(स.अ.) मेरा रोज़ा था अगर इजाज़त दें तो अफ्तार करलूं. पैगंबरे अकरम (स.अ.व.) नें उस्को अफ्तार की दावत दी.
इसी तरह लोग आते रहे और पैगंबरे अकरम (स.अ.व) से इजाज़त लेते रहे और अफ्तार करते रहे यहाँ तक कि एक शख्स आया और अर्ज किया: मेरे घर वालों में से दो बच्चियो नें रोज़ा रख्खा था और वह आप के पास आती हुए शर्माती हैं. अआप उन्को इजाज़त दें कि वह अफ्तार करलें. पैगंबर (स.अ.व) उस शख्स से अपना मुहं फेर लिया. उसनें दोबारा कहा फिर पैगंबर (स.अ.व.) मुहं मोड़ लिया. जब तीसरी मर्तबा कहा तो पैगंबरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया: उन्का रोज़ा नहीं था और किस तरह का रोज़ा था हालांकि आज उन्हों नें लोगों का गोश्त खाया? जाव उन दोनों को हुक्म दो कि कैय करें.

वह मर्द घर वापस आया और उन दोनों को आकर बताया और हुक्म दिया कि कैय करें. जब उन दोनों नें कैय की तो गोश्त के टुकड़े बाहर निकले, वह शख्स पैगंबर (स.अ.व.) की खिदमत में वापस आया और सारा वाकेआ बयान किया. पैगंबरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया: खुदा की क़सम! जिस के कब्ज़ऐ कुदरत में मोहम्मद (स.अ.व.) की जांन है अगर यह गोश्त के टुकड़े उन्के शिकम में बाकी रहते तो जहन्नम की आग उन्को खा जाती. (गंजीनऐ मआरिफ जिल्द 2, पेज 634,हुज्जतुल बैज़ा से नक्ल है जिल्द 5, पेज 252)

42) फ़क्र व नादारी

आयात:

1-शादी के वक्त फक्र से मत डरो:

اِنۡ يَّكُوۡنُوۡا فُقَرَآءَ يُغۡنِهِمُ اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖ‌ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيۡمٌ

(सूरए नूर आयत 32)

अगर वह फकीर भी होंगे तो खुदा अपनें फज्ल व करम से उन्हें मालदार बना देगा खुदा बड़ी वुसअत वाला और साहिबे इल्म है.

2-अव्साफे मुत्तकींन:

وَاٰتَى الۡمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِى الۡقُرۡبٰى وَالۡيَتٰمٰى وَالۡمَسٰكِيۡنَ وَ ابۡنَ السَّبِيۡلِ وَالسَّآئِلِيۡنَ

(सूरऐ बकरा आयत 177)

और मुहब्बते खुदा में क़राबद्दारों, यतीमों, मिसकीनों, गुरबत ज़दा मुसाफिरों, सवाल करनें वालों को माल देते हैं.

3-फ़कीरों की मदद न करनें का अंजाम:

مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرَ

قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ

وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِينَ

(सूरए मुद्दस्सिर आयात 42'43'44)

आखिर तुम्हें किस चीज़ नें जहन्नम में पहुँचा दिया. वह कहेंगें कि हम नमाज गुज़ार नहीं थे और मिस्कींन को खाना नहीं खीलाया करते थे.

4-साएल से सुलूक:

وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ

(सूरए जुहा आयत 10)

और साऐल को झीडक मत देना.

5-खौफे गुरबत:

وَاِنۡ خِفۡتُمۡ عَيۡلَةً فَسَوۡفَ يُغۡنِيۡكُمُ اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖۤ اِنۡ

شَآءَ ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ

(सूरए तव्बा आयत 28)

और अगर तुम को गुरबत का खौफ है तो अन्क़रीब खुदा चाहेगा तो अपनें फज्ल व करम से तुम्हें गनी बना देगा वह साहिबे इल्म भी है और साहिबे हिकमत भी है.

रवायात:

1-मियाना रवी:

قال الصادق عليه السلام : ضَمِنْتُ لِمَنِ اقْتَصَدَ أَنْ لَا يَفْتَقِرَ

(काफी जिल्द 4 पेज 54)

इमाम सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: मैं ज़मानत देता हूँ कि जो शख्स भी मियाना रवी अख्तियार करेगा वह कभी फकीर नहीं होगा.

2-फुकरा के पास बैठनें का हुक्म:

قال علي عليه السلام : جَالِسَ الْفُقَرَاءِ تَزْدَدْ شُكْراً

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 351)

मौलाऐ काऐनात अली (अ.स.) नें फरमाया: फ़कीरों के पास बैठो ताकि तुम शुक्र में इज़ाफ़ा कर सको.

3-ईमान की जीनत:

قال علي عليه السلام: اَلفَقرُ زِينَةُ الاِيمانِ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 347)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: फ़क्र (सब्र व रेज़ा के साथ) ईमान की ज़ीनत है.

4-फक्र का इज़हार मत करो:

قال علي عليه السلام: مَنْ أَظْهَرَ فقرَهُ اَذَلَّ قدرَهُ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 349)

अमीरुल मोमेनीन अली (अ.स.) नें फरमाया: जिस नें अपनें फ़क्र का इज़हार किया उसने अपनी कद्र व मंजेलत को घटा दिया.

5-सब से बड़ा फकीर:

قال علي عليه السلام: أَفْقَرُ النَّاسِ مَنْ قَتَّرَ علي نَفْسِهِ

مَعَ الغِني وَالسَّعَةِ وَخَلَّفَهُ لِغَيْرِهِ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 352)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: सबसे बडा फकीर वह है जो फराखी व सर्वतमंदी के बावजूद खुद को तंगी में रख्खे और उस्को गैर केलिये छोड़ जाए

तशरीह:

फक्र यानी मुहताज व मुफलिसी कोई बुरी चीज़ नहीं है, अगर यही फक्र सब्र व रेज़ा के साथ हो तो ईमान है और अगर फक्र पर सब्र नहीं है तो उससे बेहतर मौत है. शैतान इंसान को फक्र से डराता है जबकि खुदा अपनें फज्ल व करम से देने का वादा करता है फकीरों से मुहब्बत तकवे व परहेज़गारी को कस्ब करता है. इंसान को किसी के आगे हाथ फैलानें की ज़रूरत नहीं, फकत उस्के आगे हाथ फैलाए, जिसके सामनें हर एक हाथ फैलाता है, हर एक उससे सवाल करता है. हम सब फकीर हैं और खुदा वंद गनीये मुतलक है. बहुत से फकीर गनी हैं और बहुत से गनी फकीर हैं, बहुत से फकीर ऐसे हैं कि लोग उन्के न्याज़ मंद होते हैं. जिसपर फक्र व नादारी ग़ालिब आजाती है उसे चाहिए कि.

ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.मु.स.) हमें फक्र में सब्र व रेज़ा अता फरमा और माल को राहे खुदा में खर्च करनें की तौफीक अता फरमा. (आमीन)

वाकेआत:

1-हकीकी शिया:

बहुत दूर से एक इमामे सादिक़ (अ.स.) का शिया हज़रत की खिदमत में आया. हज़रत नें अहवाल पुरसी (हाल चाल पूछने) के दौरान उससे पूछा: तुम्हारे हम शहरी कैसे हैं? उसनें कहा: सब खैरियत से हैं और सिराते मुस्तकीम और आप के खानदानें रिसालत की पैरवी में ज़िंदगी बसर कर रहे हैं.

इमामे सादिक (अ.स.) नें पूछा: साहेबाने सर्वत का बर्ताव फकीरों के साथ किस तरह है? उस्ने अर्ज़ किया इस बारे में उन्का बर्ताव इतना अच्छा नहीं है. हज़रत नें फरमाया: क्या सर्वत मंद अफराद फकीरों की मदद करते हैं और मआशे ज़िंदगी (यानी ज़िंदगी के रहन सहन) के बारे में उन्का ख्याल रखते हैं.

उस शख्स नें जवाब दिया: बहुत ही अफ़सोस के साथ, इस तरह का इखलाक व किरदार हमारे दरमियान बहुत कम देखा जाता है.

हज़रत नें फरमाया: अगर इस तरह है तो फिर वह लोग किसतरह हमारे पैरोकार व शीया हैं. (गंजीनए मआरिफ जिल्द 1 पेज 671 नक्ल अज़ महजतुल बैजा जिल्द 6 पेज 90)

2-इमाम हुसैन (अ.स.) और साऐल:

मकतल ख्वारिज्म और जामेउल अखबार से रवायत हुई है कि एक ऐराबी इमाम हुसैन (अ.स.) की खिदमत में हाज़िर हुवा, और अर्ज किया कि फरजान्दे रसूल (स.अ.व.) मैं पूरी दीयत (खून बहा) का जामिन हुवा हूँ, और उस्के अदा करने की कुदरत मुझमें नहीं है, लेहाजा मैंनें दिल में ख्याल किया कि सब से ज़्यादा करीम शख्स से स्वाल करूं, और कोई शख्स अहलेबैते रिसालत से ज़्यादा करीम मेरे ख़याल में नहीं है. आप (अ.स.)

नें फरमाया: अय अरब भाई मैं तीन मसअले तुझ से पूछता हूँ, अगर एक का जवाब दिया तो दीयत का तीसरा हिस्सा तुझे दूंगा, और अगर दो सवालों का जवाब दिया तो दो सुल्स दीयत का तुझे मिलेगा, और अगर तीनों सवालात के जवाब बताये तो वह सारा माल तुझे देदूंगा ऐराबी नें फरमाया: अय फरज़न्दे रसूल (स.अ.व.) यह किस तरह हो सकता है, कि आप जैसी हस्ती जो साहिबे इल्म व शरफ है, इस फिदवी (यानी जांन निसार करने वाला) से जो बद्दू अरब है सवाल करे. हज़रत नें फरमाया: मैंनें अपनें जद्दे बुज़ुर्गावार रसूले खुदा (स.अ.व.) से सुना है कि आप (स.अ.व.) नें फरमाया:

المعروف بقدر المعرفة

यानी नेकी व बखशिश का दरवाज़ा लोगों की मारेफ़त के अंदाज़ के मुताबिक उनपर खोला जाऐ.

ऐराबी नें अर्ज किया कि आप (अ.स.) जो चाहें स्वाल कीजिऐ अगर मालूम हुवा तो जवाब दूंगा वरना आप से पूछ लूंगा और ताकत व कूवत सिर्फ खुदा के लिये है.

हज़रत नें फरमाया: तमाम आमाल से अफज़ल कौन सा अमल है?

अर्ज किया: अल्लाह पर ईमान लेआना.

हज़रत नें फरमाया: कौन सी चीज़ लोगों को हलाकतों से बचा सकती है?

अर्ज किया: अल्लाह पर ऐतमाद व तवक्कुल करना.

हज़रत नें फरमाया: मर्द की जीनत क्या चीज़ है?

ऐराबी नें कहा: इल्म कि जिसके साथ हिल्म हो.

हज़रत नें फरमाया: अगर इस शरफ पर उसकी दस्त रसी न हो तो (यानी अगर वहाँ तक न पहुँचा हो तो), अर्ज किया फिर माल

कि जिस के साथ मुरव्वत व जवान मर्दी हो. फरमाया: अगर यह भी उस्के पास न हो तो, कहनें लगा फक्र व फाका जिस के साथ सब्र व तहम्मुल हो.

हजरत नें फरमाया: अगर यह भी न हो तो, ऐराबी नें कहा कि आसमान से बिजली गिरे और उस्को जला दे क्यूंकि वह इसके अलावा किसी और चीज़ का मुस्तहक नहीं.

पस आप (अ.स.) मुस्कुराऐ और एक थैली जिस में हज़ार दीनार सुर्ख थे उस्को अता की और अपनी अंगूठी भी उसे अता फरमाई कि जिसके नगीनें की कीमत दो हज़ार दिरहम थी. फरमाया: इस ज़र व माल से तुम खूनबहा अदा करो और यह अंगूठी अपने इखराजात में सर्फ़ करो. ऐराबी नें ज़र व माल उठाया और इस आयऐ मुबारिका की तिलावत की.

اللہ اعلم حیث یجعل رسالتہ

ख़ुदा ज़्यादा इल्म रखता है कि वह अपनी रिसालत को कहाँ क़रार देता है. (अह्सनुल मकाल जिल्द 1 पेज 344)

43) कुरआन

आयात:

1-कुरआन सुनने के आदाब:

وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ

(सूरए आराफ आयत 204)

और जब कुरआन की तिलावत की जाऐ तो खामोश होकर गौर से सुनो कि शायद तुम पर रहमत नाज़िल होजाऐ.

2-जावेदानी मोजेज़ा:

وَاِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ

(सूरए बकरा आयत 23)

अगर तुम्हें इस कलाम के बारे में कोई शक है जिसे हमनें अपने बन्दे पर नाज़िल किया है तो उस्का जैसा एक सूरह ले आव और अल्लाह के अलावा जितनें तुम्हारे मददगार हैं सब को बुला लो अगर तुम अपने दावे और ख्याल में सच्चे हो.

3-कुरआन में इख्तेलाफ़ नहीं:

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ؕ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ

لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا

(सूरए निसा आयत 82)

क्या यह लोग कुरआन में गौर व फ़िक्र नहीं करते हैं, कि अगर वह गैरे खुदा की तरफ से होता तो, इसमें बड़ा इख्तेलाफ़ होता.

4-कुरआन में तहरीफ़ नहीं:

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ

(सूरए हुजर आयत 9)

हम नें ही इस कुरआन को नाज़िल किया है और हम ही इसकी हिफाज़त करने वाले हैं.

5-नसीहत, शिफा, हिदायत, रहमत:

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُمْ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ

(सूरए यूनुस आयत 57)

अय लोगो! तुम्हारे पास परवरदिगार की तरफ से नसीहत और दिलों की शिफा का सामान और हिदायत और साहेबाने ईमान केलिये रहमत ''कुरआंन'' आचुका है.

रवायात:

1-कुरआन को देखना इबादत:

قال الامام الصادق علیه السلام: اَلنَّظَرُ فِي الْمُصْحَفِ عِبادَةٌ

(वासए अल शीआ जिल्द 4 पेज 854)

इमाम सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: कुरान मजीद को देखना इबादत है.

2-घरों को मुनव्वर करो:

قال رسول الله صلي الله عليه و اله وسلم: نَوِّرُوا بُيُوتَكُمْ بِتِلَاوَةِ الْقُرْآنِ

(काफी जिल्द 2 पेज 21)

हज़रत मोहम्मद मुस्तफा (स.अ.व.) नें फरमाया: अपनें घरों को तिलावते कुरआन से रौशन और नूरानी करो.

3-कुरआन अच्छाई का हुक्म देता और बुराई से रोकता है:

قال الامام الصادق علیہ السلام : أَنَّ الْقُرْآنَ زَاجِرٌ وَ آمِرٌ يَأْمُرُ بِالْجَنَّةِ وَيَزْجُرُ عَنِ النَّارِ

(किताब अल शाफी जिल्द 5 पेज 300)

इमामे सादिक (अ.स.) नें फरमाया: बेशक कुरआन बुरे कामों से मना करता है और अच्छे कामों का हुक्म देता है और वह जन्नत का हुक्म देता है और दोज़ख से रोकता है.

4-ग़नी:

قال الامام الصادق علیہ السلام : مَنْ قَرَءَ الْقُرْآنَ فَهُوَ غَنِيٌّ وَلَا فَقْرَ بَعْدَهُ

(किताब अल शाफी जिल्द 5 पेज 308)

इमामे सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: जिसने कुरआन पढ़ा वह ग़नी है उस्के बाद कोई फ़कीर नहीं.

5-तिलावते कुरआंन अज़ाबे इलाही में तख्फीफ़ का सबब:

قال الامام الصادق علیه السلام : قِرَاءَةُ الْقُرْآنِ فِي الْمُصْحَفِ تُخَفِّفُ الْعَذَابَ عَنِ الْوَالِدَيْنِ وَلَوْ كَانَ كَافِرَيْنَ

(किताब अल शाफी तर्जुमा वसूले काफी जिल्द 5 पेज 321)

इमामे सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: कुरआन को देखकर पढ़ना वालदैन के अज़ाब मे तख्फीफ़ करता है, अगरचे वह काफिर हों.

तशरीह:

यह रब्बुल आलमीन की तरफ से अजमते कुरआन का एअलान है, कि इसे हमनें ही नाज़िल किया है, और इसमें किसी बंदे का एक हर्फ़ या एक आयत के बराबर हिस्सा नहीं है, और फिर हम ही इसकी हिफाज़त करने वाले है, कि इस में बातिल की आमेजिश (मिलावट) या इसकी तबाही और बरबादी का कोई इमकान नहीं है. यह खुलाहुवा एलान है कि कुरआन में किसी तरह की तहरीफ़ मुमकिन नहीं है, न इसमें कोई आयत कम होसकती है और न ज़्यादा, वाज़ेह रहे कि तहरीफे कुरआन की अक्सर रवायतें अहमद बिन मोहम्मद सैय्यारी से नक्ल हुई हैं, और यह शख्स फासिदुल मज़हब था, उस्का ऐअतबार नहीं है. हज़रत अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) के जमा करदा कुरआन में नासिख व मंसूख, शानें नोज़ूल

और तशरीह व तफसीर का इजाफ़ा था, आयात का कोई ऐजाफ़ा नहीं था, और न उस्का तहरीफ़ से कोई तअल्लुक है.

कुरआन अपनें परवरदिगार से गुफ्तगू करने का एक ज़रिया है. यह कुरआन रहमत, हिदायत, नसीहत, शफा, नूर, बनकर हमारे पास आया है. इसमें खुश्क व तर का ज़िक्र मौजूद है. जिसतरह हम दूसरी किताबों को गौर से पढते हैं, हमें चाहिये कि कुरआन मजीद को भी उसी तरह गौर व फ़िक्र के साथ पढ़ें ताकि हमें हिदायत मिल सके. यही कुरआन हमें अच्छाई की तरफ लेकर जाएगा और बुराई से रोकेगा, और बीमारियों की दवा इस में मौजूद है. तन्हाई का बेहतरीन साथी यावर व मददगार, परीशानियों से नजात का ज़रीया, रिज्क में वुसअत (ज्यादती) का वसीला, खुदा तक पहुँचने का बेहतरीन रास्ता

है. हमें चाहिये कि हम खुद भी कुरआन पढ़ें और दूसरों को भी उस्की तालीम दें.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के हुसैन इब्ने अली (अ.स.) कुरआन से मुतमस्सिक रहने की तौफीक अता फरमा. (आमीन)

वाकेआत:

1-कुरआन का दावा:

قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا

(सूरए बनी इस्राईल आयत 88)

अय रसूल (स.अ.व.) कहदो कि अगर (सारी दुन्या के) इंसान और जिन इस बात पर इकट्ठे हों कि इस कुरआन का मिसल ले आएं तो (गैर मुमकिन) है इस के बराबर नहीं ला सकते अगर (इस कोशिश में) यह एक दूसरे की मदद करें

जब मुन्किरों की तरफ से कोई जवाब नहीं मिला तो कुरआन की तरफ से दूसरा एलान हुवा:

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ

(सूरए हूड आयत13)
क्या यह लोग कहते हैं कि उस सख्स नें इस कुरआन को अपनी तरफ से गढ़ लिया है. तो तुम उनसे साफ़ साफ़ कह दो कि अगर तुम अपनें दावे में सच्चे हो. तो ज़्यादा नहीं, ऐसी ही दस सूरतें अपनी तरफ से गढ़ के ले आवो, और खुदा के सिवा जिस जिस को तुम चाहो मदद के लिये बुला लो.

मुन्किरों नें बुगलें बजाईं लो अब तो बार हल्का होगया अपनें फ़साहत व बलागत के सरताजों से कहा किस फ़िक्र में हो, अब तो काफी वज़न काम हो गया है. उठो और अरब के कमाल की लाज रखलो वादे हुवे और बड़े बड़े वादे हुवे. लेकिन सब को सांप सूंघ गया बात जहां थी वहीं रही.
कुरआन ने फिर एलान किया:

وَاِنۡ كُنۡتُمۡ فِىۡ رَيۡبٍ مِّمَّا نَزَّلۡنَا عَلٰى عَبۡدِنَا فَاۡتُوۡا بِسُوۡرَةٍ مِّنۡ مِّثۡلِهٖ وَادۡعُوۡا شُهَدَآءَكُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ

(सूरए बकरा आयत 23)

और अगर तुम्हें इस कलाम के बारे में कोई शक है जिसे हमनें अपनें बंदे पर नाज़िल किया है. तो इसका जैसा एक ही सूरह ले आव और अल्लाह के अलावह जितनें तुम्हारे मदद गार हैं सब को बुला लो अगर तुम अपनें दावे और ख़याल में सच्चे हो.

इस ऐलान के बाद मुन्किरों की लाटरी खुल गइ उछ्ल्नें कूदनें लगे लो अब क्या मुश्किल है. यह मसअला तो चुटकी बजाते ही हल हो जाऐगा, हमारे फुसहा ऐसे गये गुज़रे तो नहीं हैं, कि एक सूरे की मिस्ल भी न बना सकें. मौसमे हज आया तो उस ज़माने के चार नामों फसीहुल बयान. 1-इब्ने अबी अल

औजा 2-अबू शाकिर दैसानी 3-इब्ने मक़ना 4-अब्दुल मलिक मिसरी. जिनकी कादेरुल कलामी के सारे मुल्क में डंके बज रहे थे. वह भी आऐ सारी कौम नें उन्का इहाता किया और उन्की गैरतों को जोश दिलाना शुरू किया. हर तरफ से लान तान की बोछार होनें लगी. तुम अब तक किस ख्वाब में हो. मोहम्मद (स.अ.व.) की तरफ से आसानियों पर आसानिया दी जा रही हैं, और तुम्हारे कांन पर जूं भी नहीं रेगती. अगर बेहिसी का यही आलम रहा, तो फिर हमारी नाक कट जाऐगी अक्काज़ के मेलों पर तो बड़ी बड़ी डींगें मारते हो. सीना तान के आते हो, कि है कोई माई का लाल जो हमारे मुकाबिल आये और यहाँ तुम्हारी गैरत व हमीयत पर ऐसे पत्थर पड़े हैं कि सांस तक नहीं लेते!?

चारों ने वादा किया कि अगले साल जब हम आएंगें तो इस दवाऐ कुरआनी की तरदीद लेकर आएंगें.

साल भर चारों अपनी दिमागी सलाहियतों का तेल टपकाते रहे और फ़साहत व बलागत की रग से पसीना निचोड़ते रहे. लेकिन एक आयत का जवाब भी न बन पड़ा. अगले साल जब उदास चेहरे लिये फिर हज करनें आये तो चारों नें बयक ज़ुबान कहा हमारा फैसला यह है:

ما هذا كلام البشر

यह (कुरआन) बशर का कलाम नहीं है.

1-इब्ने मक़ना नें कहा:

जब मैं इस आयत पर पहुँचा:

وَقِيْلَ يٰٓاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ

(सूरए हूद आयत 44)

और जब खुदा की तरफ से हुक्म दिया गया कि, अय ज़मीन अपना पानी जज्ब करले, और अय आसमान, (बरसने से थम जा और पानी घट गया, और (लोगों का) काम तमाम करदिया गया और कश्ती जूदी पहाड़ पर जा ठहरी और हर (चार) तरफ पुकार दिया गया कि ज़ालिम लोगों को (खुदा की रहमत से) दूरी है.

तो समझ गया फसाहते कुरआन से मुकाबिला मेरे बस की बात नहीं.

2-अबुल औजा खड़ा हुवा और कहा: मैं उस वक्त समझा कि मुकाबिला मेरी ताकत से बाहर है जब मैं इस आयत पर पहुँचा.

فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا

(सूरए हूद आयत 44)

फिर जब यूसुफ़ (अ.स.) की तरफ से मायूस हुवे तो बाहम मशवेरा करनें केलिये अलग खड़े हो गये.

3-अब्दुल मलिक मिस्री मुहं बनाए हुवे खड़ा हुवा और कहता है: साल भर मैं इस आयत पर गौर व फ़िक्र करता रहा

اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ

(सूरए हज आयत 73)

जिन लोगों को तुम पुकारते हो वह लोग अगरचे सब के सब इस काम केलिये इकठ्ठे भी हो जाएँ तो भी एक मख्खी तक पैदा नहीं कर सकते.

आखिर खुद को कुरआन की फ़साहत व बलाग़त के सामने आजिज़ पाकर थक हार कर बैठ गया.

4-अबु शाकिरे दैसानी नें अपने अज्ज़ व नातवानी को इसतरह बयान किया: साल भर जो आयत मेरे जेरे गौर थी वह यह है.

لَوْ كَانَ فِيهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا

(सूरए अंबिया आयत 22)

अगर ज़मीन व आसमान में खुदा के सिवा चंद माबूद होते तो दोनों कब के बर्बाद हो गये होते.

आखिर में तमाम अपनी अपनी आजिज़ी व नातवानी का ऐलान करके महफ़िल से बाहर चले गये (कुरआनी लतीफे पेज 184 से लेकर 188 तक).

2-आयत पढता गया खुझूर मिलती गई:

बगदाद के किसी शहर में एक शख्स जो साहिबे हैसीयत, खुझूर खानें में मशगूल था कि उसी दौरान एक खुश मिज़ाज चुटकुले बाज़ शख्स वारिद हुवा और खुझूर की तरफ इशारा करके कहनें लगा अय अमीर, यह क्या है?

अमीर नें एक खुझूर उस्की तरफ फ़ेंक दी.

उस शख्स नें बहुत ही ज़राफत और लताफ़त के साथ गुफ्तगू करना शुरू की और मौके की मुनासेबत से आयत पढता रहा और अमीर उसे खुझूर देता रहा.

जब एक खुझूर लेली तो उस शख्स नें कहा:

إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ

(सूरए यासीन आयत 14)

जब हमनें उन्के पास दो रसूलों को भेजा.

अमीर नें एक और खोझूर उसकी तरफ फ़ेंक दी, जब दो हो गई तो उस शख्स नें कहा:

فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ

(सूरए यासीन आयत 14)

तब हमनें उनकी मदद के लिये तीसरा रसूल भी भेजा. अमीर नें एक और खुझूर उसकी तरफ बढ़ा दी. जब तीन होगये तो उसनें कहा:

فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ

(सूरए बकरा आयत 260)

चार परिंदे लेलो.

अमीर नें फिर एक खुझूर उस्को अता की.

जब चार होगये तो पांचवीं केलिये कहा:

وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ

(सूरए कहफ़ आयत 22)

और लोग कहते हैं कि पांच आदमी थे छठा उन्का कुत्ता है.

अमीर नें दोबारा उसकी तरफ एक खुझूर फ़ेंक दी.

जब पांच होगये तो चुटकुले बाज़ नें कहा:

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ

(सूरए क़ आयत 38)

और हमनें आसमान व ज़मीन और उन्के दरमियान की मख्लूकात को छे दिन में पैदा किया है.

अमीर नें एक और खुझूर उस्की तरफ बढ़ा दी. जब छे होगये तो दोबारह उस शख्स नें कहा:

اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ

(सूरए तलाक़ आयत 12)

अल्लाह वही है जिसनें सातों आसमानों को खल्क किया.

अमीर नें फिर एक खुझूर उस्की तरफ बढ़ा दी. उसनें फिर कहा:

أَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْأَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ أَزْوَاجٍ ط

(सूरए ज़ुमुर आयत 6)

और तुम्हारे लिय आठ किस्म के चौपाऐ नाज़िल किये हैं. अमीर नें दोबारा एक और खुझूर उस्को इनायत की. उस शख्स नें कहा:

وَكَانَ فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي الْأَرْضِ

(सूरए नम्ल आयत 48)

और उस शहर में नौ अफराद थे जो ज़मीन में फसाद बरपा करते थे. अमीर नें फिर एक खुझूर उसे दी. जब नौ खुझूर हो गईं तो उस शख्स नें कहा:

تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ

(सूरए बकरा आयत 196)

इसतरह दस पूरे होजाएं.

अमीर नें एक और खुझूर उस्की तरफ बढा दी.

फिर उस शख्स नें कहा:

اِنِّیۡ رَاَیۡتُ اَحَدَعَشَرَ کَوۡکَبًا

(सूरए यूसुफ़ आयत 4)

मैंने ख्वाब में ग्यारह सितारों को देखा है.

अमीर नें एक खुझूर और उस्को अता किया.

दोबारा वह शख्स बोला:

اِنَّ عِدَّۃَ الشُّھُوۡرِ عِنۡدَ اللّٰہِ اثۡنَا عَشَرَ شَھۡرًا

(सूरए तव्बा आयत 36)

बेशक अल्ला के नजदीक किताबे खुदा में महीनों की तादाद बारह है.

अमीर नें एक और खुझूर उसकी तरफ बढ़ा दी. जब बारह हुवे तो उस शख्स नें कहा:

اِنۡ یَّکُنۡ مِّنۡکُمۡ عِشۡرُوۡنَ صٰبِرُوۡنَ

(सूरए अनफाल आयत 65)

अगर इन में बीस भी सब्र करने वाले होंगें.

अमीर नें आयत के मुताबिक आठ खुझूर देदी. ताकि सब को मिलाकर बीस होजाएँ. जब बीस होगये तो कहा:

يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ

(सूरए अनफाल आयत 65)

तो वह दोसौ बरस भी गालिब आजाएं गें. इसबार अमीर नें हुक्म दिया कि खुझूर की पूरी सेनी उसे दी दी जाऐ वरना अब यह कह देगा.

وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ

(सूरए साफ्फात आयत 147)

और उन्हें एकलाख या उससे ज़्यादा की कौम की तरफ नुमाइन्दा बना कर भेजा. (कुरआनी लतीफे पेज 119 से लेकर 123 तक)

44) क़नाअत

आयात:

1-दुन्या फ़रेब दहिन्दा (धोका देंने वाली):

يَاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعۡدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الۡحَيٰوةُ الدُّنۡيَا ۚ وَلَا يَغُرَّنَّكُمۡ بِاللّٰهِ الۡغَرُوۡرُ

सूरए फातिर आयत 5

अय लोगो! अल्लाह का वादा सच्चा है लिहाजा जिन्देगानिये दुन्या तुम्हे धोके में न डाल दे और धोका देने वाला तुम्हें धोका न देदे.

2-दुन्या खेल तमाशा:

وَمَا الۡحَيٰوةُ الدُّنۡيَاۤ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهۡوٌ

सूरए अनआंम आयत 32

और यह जिन्देगानिये दुन्या सिर्फ खेल तमाशा है.

3-दुन्या व आखेरत केलिये नेकी की दुआ करो.

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّ فِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ

(सूरए बकरा आयत 201)

परवरदिगार हमें दुन्या में भी नेकी अता फरमा और आखेरत में भी और हम को अज़ाबे जहन्नम से महफूज़ फरमा.

4-दुन्या का सरमाया कलील है:

قُلْ مَتَاعُ الدُّنْیَا قَلِیْلٌ ۚ وَ الْاٰخِرَۃُ خَیْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰی ۟ وَ لَا تُظْلَمُوْنَ فَتِیْلًا

(सूरए बकरा आयत 77)

दुन्या का सरमाया बहुत थोड़ा है, और आखेरत साहिबाने तकवा केलिये बेहतरीन जगह है, और तुम पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा.

5-आखेरत की फ़िक्र:

وَابۡتَغِ فِيۡمَاۤ اٰتٰٮكَ اللّٰهُ الدَّارَ الۡاٰخِرَةَ‌ وَلَا تَنۡسَ

نَصِيۡبَكَ مِنَ الدُّنۡيَا‌ وَاَحۡسِنۡ كَمَاۤ اَحۡسَنَ اللّٰهُ اِلَيۡكَ‌ وَ

لَا تَبۡغِ الۡـفَسَادَ فِى الۡاَرۡضِ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الۡمُفۡسِدِيۡنَ

(सूरए किसस आयत 77)

और जो कुछ खुदा नें दिया है. उससे आखेरत के घर का इन्तेज़ाम करो, और दुन्या में अपना हिस्सा भूल न जाव और नेकी करो, जिस तरह कि खुदा नें तुम्हारे साथ नेक बरताव किया है, और ज़मीन में फसाद की कोशिश न करो. कि अल्लाह फसाद करने वालों को दोस्त नहीं रखता है.

रवायात:

1-सबसे ज़्यादह गनी:

قال الباقر عليه السلام: مَنْ قَنَعَ بِمَا رَزَقَهُ اللهُ فَهُوَ مِنْ أَغْنَي النَّاسِ

(काफी जिल्द 2 पेज 139)

इमाम बाकिर (अ.स.) नें फरमाया: जिसनें अपनें रिज्क पर क़नाअत की वह सब से ज़्यादा ग़नी है.

2-साहिबे इज़्ज़त:

قال أمير المؤمنين عليه السلام: إِقْنَعْ تَعِزَّ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 400)

मौला अली (अ.स.) नें फरमाया: क़नाअत करो इज़्ज़त पावोगे.

3-क़नाअत पसंदी:

قال الصادق عليه السلام : مَنْ رَضِيَ مِنَ اللهِ بِالْيَسِيرِ مِنَ الْمَعَاشِ رَضِيَ اللهُ مِنْهُ بِالْيَسِيرِ مِنَ الْعَمَلِ

(किताब अल शाफी जिल्द 4 पेज 24)

इमाम सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: जो थोड़े से रिज्क पर अल्लाह से राजी हुवा, तो खुदा उस्के थोड़े से अमल पर राज़ी हो जाएगा.

4-सर्वत का ताज (दौलत का ताज):

قال علي بن أبي طالب عليه السلام : اَلْقَنَاعَةُ رَأْسُ الْغِنَي

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 401)

इमाम अली (अ.स.) नें फरमाया: क़नाअत सर्वत मंदी का सर (असास) है.

5-नेअमत:

قال علي بن أبي طالب عليه السلام : اَلْقَنَاعَةُ نِعْمَةً

गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 402

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया क़नाअत एक नेमत है.

तशरीह:

क़नाअत यानी थोड़ी चीज़ पर खुश रहना, जो मिल जाये उसपर राजी रहना, जो कुछ खुदा नें इंसान को अता किया है उसपर राजी रहे, लोगों में गनीतरीन और सब से मालदार तरीन इंसान वह है, जो कनाअत करता है. हुस्ने कनाअत का तअल्लुक पाकदामनी से है. क़नाअत के ज़रिये इंसान को इज़्ज़त मिलती है. क़नाअत ज़हमत को खत्म करती है, और हिर्स ज़हमत को बढाती है, कनाअत जैसा कोई खजाना नहीं. जो शख्स उसपर क़नाअत नहीं करता जो उस्के लिये मुक़द्दर हुवा है, वह रंज उठाता है. पस इंसान की तकदीर में जो कुछ लिखा हुवा है या जो कुछ उस्को खुदा नें अता किया है. उसपर क़नाअत करे. हिर्स व लालच का कोई फ़ाऐदा नहीं. कनाअत उस वक्त तक हासिल

नहीं होसकती जब तक इंसान अपनें अंदर से हिर्स खत्म न करे.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के अहलेबैत अतहार (अ.मु.स.) हमें क़नाअत करने की तौफिक अता फरमाऐ. (आमीन)

वाकेआत:

1-कनाअत पसंदी:

असहाबे रसूल (स.अ.व.) में से एक शख्स तंगदस्ती में मुब्तेला था. उसकी ज़ौजा नें कहा: क्या अच्छा होता कि तुम रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास जाकर स्वाल करते. वह आंहज़रत (स.अ.व.) के पास आया, हज़रत नें उसे देखते ही फरमाया: जिसने हमसे स्वाल किया हम नें उस्को अता कर दिया और जिसनें तलब में बेनियाज़ी चाही तो खुदा नें उसे बेनियाज़ करदिया. उसनें दिल में कहा यह हज़रत नें मेरे ही लिये कहा है. पस अपनी बीवी के पास आया और हाल बयान किया. उसनें कहा रसूलुल्लाह (स.अ.व.) बशर हैं. (उन्हें हमारे हांलात का इल्म नहीं) तुम दोबारा अपना हाल जाकर बयान करो. वह शख्स फिर आया हज़रत नें उसे देख कर फिर वही फरमाया. यहाँ तक कि तीन

बार ऐसा ही हुवा उस्के बाद उस शख्स नें एक कुल्हाड़ी उधार ली और एक पहाड़ पर चढकर सूखी लकडियां काटीं और बाज़ार में लाकर एक मुठ्ठी आटे के बदले उन्को बेचा और खाना खाया. दूसरे रोज फिर गया, और पहले से ज़्यादा लकडियाँ जमा करके लाया. चंद दिनों तक यूंही करता रहा. आखिर उसनें कुल्हाडी खरीद ली, और फिर पैसा जमा करके दो ऊँट खरीदे और एक गुलाम. यहाँ तक कि वह माल दार होगया और रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास आया और अपनें स्वाल के लिये आने और हज़रत के सुनने का ज़िक्र किया. आप (स.अ.व.) नें फिर वही फरमाया: जिसनें हमसे माँगा हमनें उस्को अता किया और जिसनें खुदा से बेनियाज़ी और तरके तलब को चाहा खुदा नें उसे बेनियाज़ बना दिया. (किताब अल शाफी जिल्द 4 पेज 25.)

2-कनाअत न करने का अंजाम:

एक शख्स का गुजर एक तालीमी इदारे के सामने से हुवा. उसे दो लड़के नज़र आये जो आपस में बात कर रहे थे. वह कुछ देर केलिये रुक कर उनकी बातें सुनने लगा. उसे मालूम हुवा की वह बच्चे खाना खानें का इरादा रखते हैं लेकिन दरमियान में एक अजीब मसला है. एक के पास रोटी और सालन दोनों चीजें हैं, जब कि दूसरे के पास सिर्फ सूखी रोटी है. सालन रोटी वाले बच्चे नें पूरे शौक़ के साथ खाना शुरू करदिया. जबकि दूसरे बच्चे की रोटी सूखी और खाली होनें की वजह से उस्के गले से नहीं उतर रही थी. उसनें ‘सालन रोटी वाले, बच्चे से दरख्वास्त की, कि मेहरबानी करके मुझे भी रोटी केलिये सालन दे दो.

उसनें जवाब में कहा कि सालन तो देता हूँ लेकिन आप को मेरे लिये एक काम अंजाम

देना होगा. आप अगर मेरा कुत्ता बनकर मेरे पीछे पीछे दौडें तो मैं आप को सालन देदूंगा.
दूसरे बच्चे नें उस्का मुतालेबा मानलिया और कुत्ते की तरह उसी अंदाज़ में उस्के इर्द गिर्द घूमने लगा और आजिज़ी दिखानें लगा.
काफी देर तक वह शख्स खड़ा यह माजरा देखता रहा कि बच्चा अपने साथी के इर्द गिर्द कुत्ते की तरह घूम रहा है और सालन की लालच में उसने यह काम कबूल किया है.
वह शख्स यह देखता रहा इस मंज़र नें उस्के दिल पर गहरा असर छोड़ा वह आगे बढ़ा और कुत्ते की तरह घूमने वाले बच्चे से कहा:
अय बेटा तूनें अपनी सूखी रोटी पर कनाअत क्यूं नहीं की? तू खूराक के एक लुकमे की

खातिर अपनें आप को इसतरह ज़लील करके कुत्ता बन्ने पर आमादा होगया है. तूनें एक लजीज़ लुकमे की खातिर अपने लिये यह काम कबूल करलिया है.

अय बेटा अगर इंसान कनाअत पसंद हो तो उसे हमेशा के लिये इज़्ज़त व वेकार मिलता है. (मौजूई दास्तानें पेज 288.)

45) गुनाह

आयात:

1-ज़िल्लत व बेचारगी:

وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ * وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ

(सूरए बकरा आयत 61)

अब उनपर ज़िल्लत और मुहताजी की मार पड गई और वह गज़बे इलाही में गिरफ्तार होगये यह सब इसलिए हुवा कि यह लोग आयाते इलाही का इनकार करते थे और नाहक अंबिया को कत्ल करदिया करते थे इस लिये कि यह सब नाफरमान थे और ज़ुल्म किया करते थे.

2-गिरफ्तारी और मुसीबत:

وَمَآ اَصَابَكُمۡ مِّنۡ مُّصِيۡبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتۡ اَيۡدِيۡكُمۡ

(सूरए शूरा आयत 30)

और तुम तक जो मुसीबत भी पहुँचती है वह तुम्हारे हाथों की कमाई है.

3-हलाकत:

فَاَهۡلَكۡنٰهُمۡ بِذُنُوۡبِهِمۡ

(सूरए अनआम आयत 6)

फिर हमनें उन्के गुनाहों की बिना पर उन्हें हलाक करदिया.

4-आखेरत में अज़ाबे इलाही:

وَمَنۡ يَّعۡصِ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَاۤ اَبَدًا

(सूरए जिन आयत 23)

और जो अल्लाह व रसूल की नाफरमानी करेगा उस्के लिये जहन्नम है और वह हमेशा उस में रहने वाला है.

5-गुनाह से परहेज़ करने का अज्र:

اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَ

نُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا

(सूरए निसा आयत 31)

अगर तुम बड़े बड़े गुनाहों से जिन से तुम्हें रोका गया है परहेज़ करलोगे तो हम दूसरे गुनाहों की पर्दा पोशी करदेंगे और तुम्हें बाइज़्ज़त मंजिल तक पहुँचा देंगे.

रवायात:

1-रिज्क में कमी का सबब:

قال الباقر عليه السلام : إِنَّ الْعَبْدَ لِيُذْنِبُ الذَّنْبَ

فَيُزْوِيُ عَنْهُ الرِّزْقُ

(किताब शाफी जिल्द 4 पेज 218)

इमाम मोहम्मद बाकिर (अ.स.) नें फरमाया: जब कोई बंदा गुनाह करता है तो उस्का रिज्क कम होजाता है.

2-स्याह नुक्ता:

قال الصادق عليه السلام : إِذَا أَذْنَبَ الرَّجُلُ خَرَجَ فِي

قَلْبِهِ نُكْتَةُ سَوْدَاءَ فَإِنْ تَابَ اِنْمَحَتْ وَ إِنْ زَادَ زَادَتْ حَتَّيٰ

تَغْلِبَ عَلَي قَلْبِهِ فَلَا يُفْلِحُ بَعْدَهَا أَبَدًا

(किताबे शाफी जिल्द 4 पेज 219)

इमाम सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: जब बंदा गुनाह करता है. तो उस्के दिल में एक काला

नुक्ता पैदा हो जाता है. अगर उसने तौबा करली तो वह मिट जाता है. अगर ज्यादती हुई तो वह बढ़ जाता है. यहाँ तक कि सारे दिल पर फैल जाता है. उस्के बाद वह कभी भी फलाह (कमियाबी) नहीं पा सकता.

3-नमाज़े शब से महरूमियत:

قال الصادق علیه السلام : إِنَّ الرَّجُلَ يَذْنِبُ الذَّنْبَ فَيُحْرَمُ صَلَاةَ اللَّيْلِ

(किताबे शाफी जिल्द 4 पेज 221)

इमामे सादिक (अ.स.) नें फरमाया: बेशक जब इंसान गुनाह अंजाम देता है तो वह नमाज़े शब से महरूम होजाता है.

4-गिरफ्तारी में मुब्तला होने का सबब:

قال الباقر علیه السلام : مَا مِنْ نَكْبَةٍ تُصِيبُ الْعَبْدَ إِلَّا بِذَنْبٍ

(किताबे शाफी जिल्द 4 पेज 217)

इमाम बाकिर (अ.स.) नें फरमाया: बंदा पर जो मुसीबत आती है वह उस्के गुनाह के बाइस (वजह से) आती है.

5-दुआ कबूल न होने की वजह:

قال أمير المؤمنين عليه السلام : اَلْمَعْصِيَّةُ تَمْنَعُ الْإِجَابَةِ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 558)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: गुनाह व नाफरमानी दुआ की क़बूलियत में रुकावट बनती है.

तशरीह:

माद्दी गिज़ाओं की फ़िक्र, इंसानी ज़िंदगी का सब से बड़ा अलमिया (दर्द) है, जो शख्स खुदाई अतिया (अल्लाह की अता कि हुई चीज़)) पर इक्तफा नहीं करता, और हवस में पड जाता है, और रंग बिरंग की गीज़ाओं पर जांन देता है, और फिर उन गीज़ाओं का शुकरिया अदा नहीं करता, उस्के हिस्से में जिल्लत और मुहताजी के सिवा कुछ और नही है. उन ही माद्दी गीज़ाओं और हवा हवस नें इंसान को इस चीज़ पर उभारा है कि वह अपनें खालिक व मालिक की नाफरमानी करे नतीजे में इंसान खुदा से करीब होनें के बजाऐ दूर होता चला गया, और अपनें रब्बे हकीकी को भूल गया, और उसकी मासियत की. गुनाह को आसान समझना इस बात की दलील है कि, शहवत व गफलत नें उसपर गलबा पैदा करलिया है.

बहरहाल कोई अक़्लमंद चंद लम्हों की लज़्ज़त के बदले बहिश्त और उसकी नेमतों को नहीं छोड़ सकता. गुनाह से खुद भी बचें और दूसरों को भी बचाएं क्यूंकि हर गुनाह के लिये एक ऐकाब व अज़ाब है. गुनाहों पर खुश होना गुनाहों के इर्तेकाब (करने) से बदतर है, क्यूंकि ज़्यादा तर गुनाह शहवत के ग़ालिब होजाने की वजह से होते हैं लेकिन उन्हें मामूली समझना और उनपर खुश होना, दीन को हल्का समझने का बाइस (सबब) है. मासियतकार का ठीकाना जहन्न्म है.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के मोहम्मद व आले मोहमद (अ.मु.स.) हमें अपने अहकाम की नाफरमानी, मासियत व गुनाहों से बचने की तौफीक अता फरमाऐ (आमीन)

वाकेआत:

1-छोटे गुनाह:

हज़रत रसूले अकरम (स.अ.व.) एक सफर के मौके पर एक बीआब व गियाह मुक़ाम पर कुछ देर केलिये ठहरे. आप नें अपने हमराह सहाबा को हुक्म दिया कि इस वादी से जाकर लकडीयां इकठी करके लेआवो ताकि आग जलाएं.

असहाब नें अर्ज किया: या रसूलुल्लाह (स.अ.व.) इस जगह पर तो सहरा है, पानी है न सब्जा, न दरख़्त, यहाँ ईंधन की लकडिया तो नहीं मिल सकतीं, आप (स.अ.व.) नें फरमाया: आप जाएँ जिसे जितनी मिकदार में मिले ले आये, आप (स.अ.व.) के असहाब सहरा (जंगल) की जानिब रवाना हुवे हर किसी नें जितना हो सका छोटी बड़ी लकड़ी जो मिली लाकर आप

(अ.स.व.) के सामने जमा कर दीं. काफी मिकदार में लकडियाँ जमा हो गईं.

आप (स.अ.व.) नें असहाब को मुखातब करके फरमाया: देखो छोटे गुनाह भी इस किस्म की छोटी छोटी लकडियों की मानिन्द है. निगाहें अव्वल में नज़र नहीं आते लेकिन जब गौर से देखा जाऐ और शुमार किया जाऐ तो बहुत सारे बन जाते हैं, और उन्का अंबार लग जाता है. फिर फरमाया: दोस्तो देखो! छोटे गुनाह से भी परहेज़ किया करो. क्यूंकि छोटे गुनाह ज़्यादा महसूस नहीं होते लेकिन याद रख्खो हर चीज़ को कोई न कोई तलाश करने वाला होता है. आप पर भी इसी इंतेज़ाम के तहत आप पर नज़र रखने वाले फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं. जो आप की ज़िंदगी और मौत के बाद आप के सारे आसार व आमाल लिखते है. एक दिन आप को जब तहरीर शुदा हिसाब व किताब नज़र

आऐगा तो देखोगे कि इन्हीं छोटे गुनाहों का अंबार लगा नज़र आऐगा. (मौजूइ दास्तानें पेज 312,गंजीनए मआरिफ जिल्द 1 पेज 693, इबरत अंगेज वाकेआत पेज 194)

2-गुनाह गार की नसीहत:

एक शक्स हज़रत ईसा (अ.स.) की खिदमत में हाज़िर हुवा.

अर्ज किया मैंनें ज़िना का इर्तेकाब किया है. मुझे शरई सज़ा देकर पाकीज़ा बनाएँ. हज़रत ईसा (अ.स.) नें मनादी कराई कि गुनाहगार की ततहीर केलिये जमा हो जाएँ. सब लोग जमा होगये तो आप नें गढा खोदने का हुक्म दिया. जब गढा तैयार होगया और लोग जमा होगये तो आपनें उसे गढे में उतारा. वह शख्स उतर गया और हुजूम की तरफ देखा और कहा: अय लोगो! मुझे सज़ा भूगतने से कोई गुरेज़ नहीं लेकिन मेरी गुजारिश है कि मुझे सिर्फ वह शख्स पत्थर

मारे जो खुद गुनाह में आलूदा न हो और सज़ा का मुसतहक न हो लेकिन जो खुद सज़ा का मुसतहक़ हो, उसे मुझे पत्थर मारने का हक़ नहीं है.

उस्की यह बात सुनते ही जमा श्हुदा लोग वहाँ से चले गये और हज़रत ईसा (अ.स.) और हज़रत याहिया (अ.स.) बच गये हज़रत याहिया (अ.स.) उस शक्स के करीब आऐ और फरमाया: तूने सब को नसीहत कर दी, अब ज़रा मुझे नसीहत वाली बातें सुनाव.

उसनें कहा: ख़याल रहे कभी अपनें आप को ख्वाहेशाते नफसानी के हवाले न करना वरना बदबख्त हो जावगे.

हज़रत याहिया (अ.स.) नें फरमाया: कुछ और बातें करो.

उसने कहा: किसी खताकार को उसकी लग्ज़िश पर मलामत न करो बल्की उसे नजात देनें की कोशिश करो.

हज़रत याहिया (अ.स.) नें फरमाया: और बताव.

उसनें कहा: गुस्सा पर अमल करने से परहेज़ करो.

हज़रत यहिया (अ.स.) नें फरमाया:

आप की बातें बहुत कीमती और काबिले अमल हैं. (मौज़ूइ दास्तानें पेज 314 नकल अज़ मन ला यहज़रहुल फकीह जिल्द 4 पेज 33)

46) मोहब्बत

आयात:

1-अगर महबूब बनना चाहते हो:

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ

الرَّحْمٰنُ وُدًّا

(सूरए मरयम आयत 96)

बेशक जो लोग ईमान लाऐ और उन्हों नें नेक आमाल किये, अन्क़रीब 'रहमान' लोगों के दिलों में उनकी मुहब्बत पैदा कर देगा.

2-वालदैन से मुहब्बत:

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ

ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا

(सूरए असरा आयत 24)

और उन्के लिये खाकसारी के साथ अपनें कान्धों को झुका देना, और उन्के हक़ में

दुआ करते रहना कि परवरदिगार उन दोनों पर उसी तरह रहमत नाज़िल फरमा, जिसतरह कि उन्हों नें बचपनें में मुझे पाला है.

3-साहिबानें ईमान की मुहब्बत:

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ

(सूरए बकरा आयत 165)

ईमान वालों की तमामतर मोहब्बत खुदा से होती है.

4-मुहब्बते खुदा रसूल की इताअत की बदौलत:

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ

(सूरए आले इमरान आयत 31)

अय पैगंबर कह दीजिये कि अगर तुम लोग खुदा से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो खुदा भी तुम से मुहब्बत करेगा.

5-मोमिन से खुदा की मुहब्बत:

يَاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَنۡ يَّرۡتَدَّ مِنۡكُمۡ عَنۡ دِيۡنِهٖ فَسَوۡفَ يَاۡتِى

اللّٰهُ بِقَوۡمٍ يُّحِبُّهُمۡ وَيُحِبُّوۡنَهٗۤ

(सूरए माँएदा आयत 54)

ईमान वालो तुम में से जो भी अपनें दींन् से पलट जाऐगा तो अन्क़रीब खुदा एक कौम लेआऐगा जो उसकी महबूब और उस से मुहब्बत करने वाली होगी.

रवायात:

1-दींन की असास:

قال الصادق علیه السلام : هَلِ الدِّیْنُ إِلَّا الْحُبِّ

(बिहा रुल अन्वार जिल्द 69 पेज 238)

इमाम सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: क्या दींन् मुहब्बत के सिवा किसी और चीज़ का नाम है.

2-कल्ब मुहब्बते इलाही की जगह:

قال الصادق علیه السلام : اَلْقَلْبُ حَرَمُ اللهِ فَلَا

تَسْكُنْ حَرَمَ اللهِ غَيْرَ اللهِ

(बिहा रुल अन्वार जिल्द 67 पेज 26)

इमाम सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: कल्ब हरमे खुदा है पस हरमें खुदा में गैरे खुदा को साकिन (बिठावो) न करो.

3-बुराई से रोकना:

قال أمير المؤمنين عليه السلام : مَنْ اَحَبَّكَ نَهَاكَ

गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 228

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: जो तुम से मुहब्बत करेगा वह तुम्हें बुरे कामों से रोकेगा.

4-दुआ:

قال أمير المؤمنين عليه السلام : اَحَبُّ اْلاَعْمالِ اِلٰي اللهِ عَزَّ وَجَلَّ فِي الْاَرْضِ الدُّعاءُ

(बिहार जिल्द 90 पेज 295)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: खुदा के नजदीक रूऐ ज़मीन पर सब से महबूब तरीन अमल दुआ करना है.

5-मौत की याद:

قال رسول الله صلي الله عليه و اله وسلم : مَنْ أَكْثَرَ ذِكْرُ الْمَوْتِ رَضِيَ مِنَ الدُّنْيا بِالْيَسِيْرُ

(बिहार जिल्द 100 पेज 26)

रसूलुल्लाह (स.अ.व.) नें फरमाया: जो भी मौत को ज़्यादा याद करेगा वह दुन्या की कम चीजों पर भी राजी होजाऐगा.

तशरीह:

अमल के बगैर दावाऐ मुहब्बत की कोई कीमत नहीं है, और अमल और इत्तेबा का असर खुदा की महबूबियत और गुनाहों की मगफिरत की शक्ल में ज़ाहिर होता है. इत्तेबाऐ रसूल (स.अ.व.) के बगैर, मुहब्बत व मग्फेरत का ख्वाब कभी शर्मिनदऐ ताबीर नहीं होसकता (यानी पूरा नहीं होसकता) बल्की कुरआने मजीद तो इत्तेबा न करने वालों को लफ्ज़े काफिर से ताबीर (याद) करता है. जो बदबख्ती की सब से बद तरीन मंजिल है. इत्तेबाऐ रसूल (स.अ.व.) मुहब्बते खुदा का सबब है, और जो लोग साहिबानें ईमान हैं, और नेक आमाल बजा लाते हैं. तो परवर दिगारे आलम उनकी मुहब्बत लोगों के दिलों में डाल देता है. महबूबे खुदा सब का महबूब होता है, और मग्जूबे खुदा सब का मग्जूब होता है. ईमान और अमले

सालेह को मुस्तहकम रख्खें. ताकि महबूबे खुदा और महबूबे बन्देगानें खुदा बनें रहें. ऐसे आमाल बजा न लाएॅ. कि खुदा के गजब का शिकार हो जाएँ. जब हमारा दावा है कि हम खुदा और उस्के रसूल (स.अ.व.) से मुहब्बत करते हैं. तो उस दावऐ मुहब्बत पर क़ाऐम रहें, और अपनें अमल से वाज़ेह करदें. कि हम सिर्फ और सिर्फ खुदा के बंदे हैं, न कि शैतान के.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के मुस्तफा (स.व.स.) हमारे दिलों में रोज बरोज़ मुहब्बते खुदा का इजाफ़ा फरमा. (आमीन)

वाकेआत:

1-अच्छा दोस्त:

हज़रत यूसुफ़ (अ.स.) जब अजीज़े मिस्र होगये और जुलैखा ईमान लाई तो आप की उस से शादी होगई वह आप की बीवी हुईं लेकिन उस दौरान हज़रत यूसुफ़ (अ.स.) को ऐहसास हुवा कि जुलैखा आप से दूरी को पसंद करती हैं और किनारा कश होनें की कोशिश करती हैं.

आप अगर उसे दिन में बुलाते तो वह वादऐ शब (रात के वादे) से टाल देती थीं और जब आप रात को उन्हें बुलाते तो वादऐ रोज (दिन के वादे) से बहला देती थीं. एक दिन हज़रत यूसुफ़ (अ.स.) नें उस से हैरत जदह होकर पूछा जुलैखा तेरी उन बेपनाह शौक़ भरी मोहब्बतों और शोलावर (भडकती हुई आग जैसा) इश्क का क्या हुवा?

जनाबे जुलैखा नें अर्ज किया: अय अल्लाह के नबी! मुझे जब तक तेरे रब की मारेफ़त न थी और मैं अपने परवरदिगार की मुहब्बत से आशना न थी तो मुझे आप से मुहब्बत व दोस्ती थी, लेकिन जिस दिन से मैंने अपने रब्बे ज़ुल्जलाल को पहचाना है तो अब उस्के अलावा सब चीजों की मुहब्बत को दिल से निकाल दिया है. मुझे उस ज़ात के मुकाबिल कुछ अच्छा ही नहीं नज़र आता. (मौजूई दास्तानें पेज 199)

2-मुहब्बते अहले बैत (अ.मु.स) करनें वाला अहले बहिश्त है:

मआज़ बिन वहब कहते हैं एक मर्तबा मैं चंद लोगों के साथ मक्का की तरफ रवाना हुवा, एक बूढा शख्स भी हमारे साथ था, जो बहुत ज़्यादा इबादत करता था लेकिन हमारी तरह अहलेबैत (अ.मु.स) की विलायत और हज़रत अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) को बिला

फस्ल खलीफा नहीं मानता था, उसी वजह से अपनें खुलफा के मज़हब के मुताबिक सफर में भी नमाज़ पूरी चार रकती पढता था. उस्का एक भतीजा भी महमारे काफले में था लेकिन उस्का अकीदा हमारी तरह सिराते मुस्तकीम पर था, वह बुढा शख्स रास्ते में बीमार होगया, उसने अपनें भतीजे से कहा: अगर अपनें चचा के पास आता और उस्को वीलायत के सिलसिले में बताता तो बेहतर होता, शायद खुदा वंदे आलम उस्को आखरी वक्त में हिदायत फरमा देता और गुमराही व ज़लालत से नजात अता कर देता.

अहले काफला नें कहा: उस्को अपने हाल पर छोड़ दो लेकिन उस्का भतीजा उसकी तरफ दौड़ा और कहा: चचा जांन लोगों नें सिवाऐ चंद अफराद के रसूले खुदा (स.अ.व.) के बाद हक़ से रूगरदानी की लेकिन हज़रत अली इब्नें अबी तालिब (अ.स.) रसूले

अकरम (स.अ.व.) की तरह वाजेबुल इताअत हैं. पैगंबरे अकरम (स.अ.व.) के बाद हक़ अली (अ.स.) के साथ है और आप (अ.स.) की इताअत तमाम उम्मत पर वाजिब है. उस ज़ईफ मर्द नें एक चीख मारी और कहा: मैं भी उसी अकीदे पर हूँ, यह कहकर इस दुन्या से चल बसा.

हमलोग जैसे ही सफर से वापस आये तो इमामे सादिक़ (अ.स.) की खिदमत में ज्यारत का शरफ हासिल किया, अली बिन सिर्री नें उस बूढ़े शख्स का वाकेआ बयान किया, उसवक्त इमाम (अ.स.) नें फरमाया: वह शख्स जन्नती है. उसने अर्ज किया: वह शख्स आखरी लम्हात (वक्त) में इस अकीदे पर पहुँचा है, सिर्फ उस घड़ी उस्का अकीदा सहीह हुवा था, क्या वह भी जन्नती और अहले नजात है. उस वक्त इमाम नें फरमाया: तुम उस से और क्या चाहते हो,

बखुदा वह शख्स अहले बहिश्त है. (तौबा आगोशे रहमत पेज 193)

47) मेहमान नवाज़ी

आयात:

1-मेहमान के आदाब:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّىٰ تَسْتَأْنِسُوا وَتُسَلِّمُوا عَلَىٰ أَهْلِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ

(सूरए नूर आयत 27)

ईमान वालो खबर दार अपने घरों के अलावा किसी के घर में दाखिल न होना, जब तक की साहिबे खाना से इजाज़त न लेलो और उन्हें सलाम न कर लो, यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है, कि शायद तुम इस से नसीहत हासिल करसको.

2-मेहमान लिये दुआ:

رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّ
لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا

(सूरए नूह आयत 28)

पवार दिगार! मुझे और मेरे वालदैन को, और जो इमान के साथ मेरे घर में दाखिल होजाएं, और तमाम मोमेनीन व मोमेनात को बख्श दे, और जालिमों केलिये हलाकत के अलावा किसी चीज़ में इजाफ़ा न करना.

3-हज़रत इब्राहीम (अ.स.) की मेहमान नवाजी:

وَلَقَدْ جَاۗءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ۭ قَالَ
سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَاۗءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ

(सूरए हूड आयत 69)

और इब्राहीम (अ.स.) के पास हमारे नुमाइन्दे बशारत लेकर आये और आकर

सलाम किया, तो इब्राहीम (अ.स.) ने भी सलाम किया, और थोड़ी देर न गुज़री थी कि भुना हुवा बछड़ा ले आऐ.

4-हज़रत लूत की मेहमान नवाजी:

وَجَآءَ اَہۡلُ الۡمَدِیۡنَۃِ یَسۡتَبۡشِرُوۡنَ

قَالَ اِنَّ ہٰۤؤُلَآءِ ضَیۡفِیۡ فَلَا تَفۡضَحُوۡنِ

وَاتَّقُوا اللّٰہَ وَلَا تُخۡزُوۡنِ

(सूरए हिज्र आयात 67,68,69)

और उधर शहर वाले नऐ मुसलमानों को देखकर खुश्यां मनाते हुवे आगये. लूत (अ.स.) नें कहा कि यह हमारे मेहमान हैं. खबरदार हमें बदनाम न करना, और अल्लाह से डरो और रुसवाई का सामान न करो.

5-मेहमान नवाजी:

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِأَخٍ لَّكُمْ مِّنْ أَبِيكُمْ ۚ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّي أُوفِي الْكَيْلَ وَأَنَا خَيْرُ الْمُنزِلِينَ

(सूरए यूसुफ़ आयत 59)

और जब उन्का सामान तैय्यार कर दिया, तो उनसे कहा कि तुम्हारा एक भाई और भी है उसे भी ले आव, क्या तुम नहीं देखते हो कि मैं सामान की नाप तौल में बराबर रखता हूँ, और मेहमान नवाजी भी करने वाला हूँ.

रवायात:

1-मेहमान पर खर्च करने की फजीलत:

قال رسول الله صلي الله عليه و اله و سلم : مَنْ أَكْرَمَ الضَّيْفَ فَقَدْ أَكْرَمَ سَبْعِيْنَ نَبِيًّا وَمَنْ أَنْفَقَ عَلي الضَّيْفِ دِرْهَماً فَكَاَنَّمَا أَنْفَقَ أَلْفَ أَلْفَ دِيْنَارٍ فِي سَبِيْلِ اللهِ تَعَالٰي

(इरशाद अल क्लूब जिल्द 1 पेज 138)

पैगंबरे अकरम (स.अ.व.) नें फरमाया: जिसनें मेहमान का इकराम किया, गोया उसने सत्तर नबियों का इकराम किया, और जिसने मेहमान के लिये एक दिरहम खर्च किया, गोया उसने अल्लाह की राह में हज़ार हज़ार दीनार खर्च किये.

2-मेहमान का इकराम:

قال أمير المؤمنين عليه السلام : أَكْرِمْ ضَيْفَكَ وَإِنْ كَانَ حَقِيْراً

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 804)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: मेहमान का इकराम व इज़्ज़त करो अगर चे वह हकीर ही क्यूं न हो.

3-मोमिन का इकराम खुदा का इकराम:

قال الصادق علیه السلام : مَنۡ أَتَاهُ أَخُوهُ الْمُسْلِمَ فَاَكْرَمَهُ فَاِنَّمَا أَكْرَمَ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ

(काफी जिल्द 2 पेज 206)

इमामे सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: जिसने अपने मुसलमान बरादर का इकराम किया, गोया उसने खुदा अज्ज़ व जल का इकराम किया.

4-खाना खिलाना:

قال الصادق عليه السلام : مَا أَرى شَيْئًا يَعْدِلُ زِيَارَةَ الْمُؤْمِنِ إِلَّا إِطْعَامَهُ وَحَقٌّ عَلي اللهِ أَنْ يُطْعِمَ مَنْ أَطْعَمَ مُؤْمِنًا مِنْ طَعَامِ الْجَنَّةِ

(किताब अल शाफी जिल्द 4 पेज 126)

इमाम सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: सिवाऐ मोमिन को खाना खिलाने के, कोई और चीज़ सवाब में, ज्यारत मोमिन के बराबर नहीं. अल्लाह के लिये सजावार है कि वह जन्नत का खाना उस शख्स को दे जो किसी मोमिन को खाना खिलाऐ.

5-जियाफत:

قال أمير المؤمنين عليه السلام : اَلضِّيافَةُ رَأسُ الْمُرَوَّةِ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 804)

मौला अली (अ.स.) नें फरमाया: जियाफत व मेहमान नवाजी मुरव्वत व मर्दानगी का असास (बुन्याद) है.

तशरीह:

मेहमान नवाजी का बहुत बड़ा अज्र व सवाब है. आप को रवायत पढ़ कर अंदाजा होगया होगा कि, मेहमान नवाजी का कितना अज्र है मेहमान असल में खुदा का दोस्त होता है. जब मेहमान घर में आता है. तो अपनें साथ रहमतें व बरकतें लेकर आता है, और जब मेहमान घर से जाता है तो मेज़बान और उस्के घर वालों के गुनाह ले जाता है.

मेहमान केलिये ज़रूरी है कि जब किसी के यहाँ जाऐ तो पहले इजाज़त तलब करे. अगर इजाज़त मिल जाऐ. तो घर में दाखील होते ही सब से पहले सलाम करे और मेजबान को चाहिये कि मेहमान का एहतराम व इकराम करे, और अपनी इस्ते ताअत के के मुताबिक मेहमान नवाजी करे, और दस्तर ख्वान पर बैठे तो पहले खाना, खाना शुरू करे और सब से आखिर में खत्म

करे, और मेहमान को चाहिये कि मेज़बान के हक़ में दुआ करे और उसकी वुसअते (कुशादगिये) रिज्क के लिये खुसूसन दुआ करे.

खुदा से दुआ है बहक्के चहार्दा मासूमीन (अ.मु.स.) हमें मेहमान नवाजी करने की तौफीक अता फरमा. (आमीन)

वाकेआत:

1-हज़रत इब्राहीम (अ.स.) की जियाफत:

हज़रत इब्राहीम (अ.स.) आला दर्जे के मेहमान नवाज़ थे. आप अकेले खाना खाने के आदी नहीं थे. अगर उन्के यहाँ कोई मेहमान न आता तो आप खुद रास्तों चौराहों पर खड़े होजाते थे, और मुसाफिरों को खाना खानें की दावत देते थे.

एक मर्तबा आप मेहमान तलाश करने केलिये एक शाहे राह पर गये वहाँ उन्हें एक ऐसा मेहमान मिला जो काफिर था. आप नें उसे खाना खाने की दावत दी, और उसने दावत कबूल करली. आप उसे अपने मेहमान खाना ले आऐ, और उस्के हाथ धुलाऐ, और फिर उस्के सामने रोटी रख्खी मेहमान नें जैसे ही लुकमा तोड़ने केलिये हाथ बढ़ाया, तो आप ने उस से फरमाया: दोस्त! खाना शुरू करने से पहले बिसमिल्लाह हिर रहमा निर

रहीम पढ़ो. मेहमान जो काफिर था उसने कहा: मै किसी को रब नहीं मानता, और मैं किसी का नाम लेकर इबतेदा करने का क़ाऐल नहीं हूँ.

इब्राहीम (अ.स.) नें बड़ा इसरार किया कि बिसमिल्लाह पढ़े लेकिन मेहमान अपनी जिद पर बाकी रहा. उसपर हज़रत इब्राहीम (अ.स.) नें फरमाया: फिर तुम यहाँ से चले जाव हमारे पास तुम्हारे लिये कोई खाना नहीं है. मेहमान उठकर वहाँ से चला गया. उसवक्त इब्राहीम (अ.स) पर अल्लाह की वही नाज़िल हुई.

अय इब्राहीम! तुम नें अपने मेहमान को क्यूं भगाया? यह पहले दिन से ही हमारा मुन्किर है मगर हम तो उसे सत्तर साल से मुसलसल रिज्क दे रहे हैं. तुम्हारे दरवाज़े पर तो यह आज पहली बार आया है मगर तुमने उसे धुतकार दिया.

इब्राहीम (अ.स.) को अपने अमल के इस तरीके पर शदीद निदामत (शर्मिन्दगी) महसूस हुई, और आप दौड कर मेहमान के पीछे गये और उस से इसरार किया कि वह वापस आऐ और खाना खाऐ.

काफिर मेहमान नें कहा मैं उस वक्त तक वापस नहीं आवूंगा जब तक मुझे इसका सबब नहीं बतावोगे.

हज़रत इब्राहीम नें फरमाया: जिस खुदा की मुहब्बत में मैंनें तुझे भूका उठा दिया था. उस खुदा नें मुझसे कहा है कि यह शख्स रोज़े अव्वल से ही हमारा मुन्किर है. मगर हमनें उस्का रिज्क बंद नहीं किया. उस्के हिस्से की रोशनी बंद नही की. उस्की अव्वलाद बंद नहीं की. हम तो सत्तर साल से उसे रिज्क दे रहे हैं. आज यह ज़िंदगी में पहली मर्तबा तुम्हारे पास आया है. तो तूनें

उसे दस्तर ख्वान से उठा दिया. जाव और उसे राज़ी करके खाना खिलाव.

मेरा बन्दा ख्वाह मेरा नाम ले या न ले वह भूका नहीं रहना चाहिये. अगर नबी के दरवाज़े से कोई भूका चला गया तो यह हमारी शाने रज्ज़ाकी की तौहीन होगी.

जब काफिर नें यह बात सुनी तो शर्मिंदगी से उस्की गर्दन झुक गई और कहने लगा कि "मैं भी कितना नालाऐक हूँ कि इतने अरसे से इतने मेहरबान खुदा से गाफिल रहा".

उस्के बाद उसने कलमा पढ़ा और मुसलमान होगया. कुछ दिनों के बाद उस्का शुमार सालेहीन में होनें लगा. (कश्कोल दस्तेगैब जिल्द 1 पेज 68).

2-ऐहतेरामे सालेहीन:

एक मर्तबा का ज़िक्र है कि एक शख्स अपनें बेटे के साथ हज़रत अली (अ.स.) का

मेहमान हुवा. आप नें उठ कर मेहमानों का इस्तेकबाल किया. उन्हें सदरे मजलिस में जगह दी और खुद उन्के पहलू में बैठ गये. जब खाने का वक्त हुवा तो आप नें मेहमान के सामने खाना रखवाया. जब मेहमान खाना खाकर फारिग हुवे तो आप (अ.स.) नें गुलाम कंबर से फरमाया: तौलिया लाव और लोटे में पानी लाव.

कंबर दोनों चीजें ले आऐ. आप (अ.स.) नें पानी का लोटा लिया और उनमें से जो बाप था उस्के हाथ धुलाने का इरादा किया. उस शख्स नें अर्ज की मौला: आप अमीरुल मोमेनीन और खलीफतुल मुस्लेमीन हैं, आप मेरे हाथ न धुलाएँ लेकिन आप (अ.स.) नें फरमाया: कोई हरज नहीं तुम हमारे मेहमान हो, मैं ही तुम्हारे हाथ धुलावुंगा, जब आप (अ.स.) उस्के हाथ धुला चुके तो आप (अ.स.) नें अपनें फ़र्जंन्द मोहम्मद बिन

हनफिया से कहा: बेटा! अगर इस शख्स का बेटा अकेला मेरे यहाँ मेहमान होता तो उस्के हाथ भी मैं खुद धुलाता लेकिन खुदा नहीं चाहता कि बाप बेटे दोनों यकसां (ऐक जैसे) हों. मैंनें बाप के हाथ धुलाऐ हैं, तुम उस्के बेटे के हाथ धुलाव. (कश्कोल दस्ते गैब जिल्द 2 पेज 24)

48) नमाज़

आयात:

1-मुश्केलात में नमाज़ से मदद तलब करना:

وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ

(सूरए बकरा आयत 45)

सब्र और नमाज़ के ज़रिये मदद मांगो नमाज़ बहुत मुश्किल काम है मगर उनलोगों केलिये जो खोशू और खोज़ू वाले हैं.

2-नमाज़ बुराई से रोकती है:

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ

(सूरए अनकबूत आयत 45)

नमाज़ बुराई और बदकारी से रोकने वाली है.

3-नमाज़े जमाअत

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ

(सूरए बकरा आयत 43)

नमाज़ क़ाऐम करो, ज़कात अदा करो और रूकू करने वालों के साथ रूकू करो.

4-नमाज़ न पढ़ने का अंजाम:

مَا سَلَكَكُمْ فِىْ سَقَرَ

قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ

(सूरए मुद्दस्सिर आयात 43'44)

आखिर तुम्हें किस चीज़ नें जहन्नम में पहुँचा दिया वह कहेंगें कि हम नमाज़ गुज़ार नहीं थे.

5-इत्मीनान के साथ नमाज़ पढ़ो:

فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

(सूरए निसा आयत 103)

जब इत्मीनान हासिल होजाऐ तो बाकाऐदा नमाज़ क़ाऐम करो.

रवायात:

1-शैतान से बचने का रास्ता:

قال أمير المؤمنين عليه السلام : اَلصَّلَاةُ حِصْنٌ مِنْ سَطَوَاتِ الشَّيْطَانُ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 782)

हज़रत अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) नें फरमाया: नमाज़ शैतान के हमलों से बचने केलिये एक किला है.

2-रहमते खुदा:

قال أمير المؤمنين عليه السلام : اَلصَّلَاةُ تَسْتَنْزِلُ الرَّحْمَةَ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 782)

हज़रत अली इब्नें अबी तालिब (अ.स.) नें फरमाया: नमाज़ रहमते खुदा को खैचती है.

3-इस्कदर रहमतें:

قال أمير المؤمنين عليه السلام: لَوْ يَعْلَمُ الْمُصَلِّي مَا يَغْشَاهُ مِنَ الرَّحْمَةِ لَمَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُودِ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 783)

इमाम अली (अ.स.) नें फरमाया: अगर नमाजी को यह मालूम होजाऐ कि इसवक्त उसपर कितनी रहमतें नाज़िल हो रही हैं तो वह सजदे से कभी सर न उठाऐ.

4-नमाज़ को सुबुक समझना:

قال الصادق عليه السلام: إِنَّ شَفَاعَتَنَا لَا تَنَالُ مُسْتَخِفاً بِالصَّلوٰةِ

(वसाएल जिल्द 4 पेज 26)

इमाम सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: जिसने नमाज़ को सुबुक (हल्का) समझा वह हमारी शफाअत से महरूम रहेगा.

5-आखरी नमाज़:

قال أمير المؤمنين عليه السلام : إِذَا قَامَ أَحَدُكُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَلْيُصَلِّ صَلَاةَ مُوَدِّعٍ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 782)

इमाम अली (अ.स.) नें फरमाया: जब तुम में से कोई नमाज़ केलिये खड़ा हो तो उस्को यह समझ कर नमाज़ पढ़नी चाहिये कि यह मेरी आखरी नमाज़ है.

तशरीह:

जिसके ज़ेहन में नमाज़ का फलसफा लेकाऐ इलाही (अल्लाह से मुलाक़ात) है और अज्र व सवाब का यकीन है. उस्के लिये सुबह, दोपहर, शाम, कोई वक्त मुश्किल नहीं है और खुदा ज़ेहन से निकाल जाऐ तो फिर हर वक्त मुश्किल है. नमाज़ एक फरीजा है और वक्ते मोअय्यन के साथ फरीजा है जिस का मतलब यह है कि नमाज़ पाबंदीये वक्त के साथ अदा करना चाहिये, वक्ते नमाज़ में कोताही करना असले नमाज़ में कोताही करने के मुरादिफ (बराबर) है, और इसी लिये ओल्माऐ इस्लाम नें बिला उज़र नमाज़ कजा करदेने को हराम क़रार दिया है. उज़र की तफसील भी अहकामे शरीयत से दरयाफ्त करनी चाहिये, खुद साख्ता खयालात का नाम उज़रे शरइ नहीं है. इंसान को यकीन हो जाऐ कि रात को देर तक जागना नमाज़े

सुबह के कजा हो जाने का बाइस होगा, तो सो जाना ज़रूरी है, और जागना हराम है. उस्के लिये कारे खैर का उज़र भी कारगर (छुटकारा) नहीं होसकता. नमाज़ पढ़ने से रिज्क में बरकत, परीशानियाँ दूर, और इत्मीनान व सोकूंन हासिल होता है. जब नमाज़ शुरू करो तो यह कहो कि दुन्या में मेरी आखरी नमाज़ है, और यह ख़याल करो कि जन्नत तुम्हारे सामने और जहन्नम तुम्हारे पैरों के नीचे, मलकुल मौत पीछे, अंबिया दाएँ तरफ, फ़रिश्ते बाएँ तरफ, और खुदा सर के ऊपर से देख रहा है. पस देखो कि तुम किसके सामने खड़े हो किस से मुनाजात कररहे हो, और तुम्हें कौन देख रहा है.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के मज्लूमे कर्बला हज़रत इमामे हुसैन (अ.स.) हमें नमाज़ और

अगर हमारे जिम्में कज़ा नमाजें हों तो उन्हें पढ़ने की तौफीक अता फरमा. (आमीन).

वाकेआत:

1-दो रकात नमाज़ दुनयावी ख़याल से खाली:

तफसीरे बुरहान में बरवायत इब्नें शहरे आशोब इब्ने अब्बास से मन्कूल है कि एक दफा रसूले खुदा (स.अ.व.) के पास दो ऊंटनियाँ बतौर हदिया आईं. आप (स.अ.व.) नें असहाब से फरमाया: कि तुम में से जो शख्स ऐसी दो रकतें अदा करे जिसमें कोई दुनयावी ख़याल दिल में न गुज़रे तो मैं इनमें से एक ऊंटनी उस्को दे दूंगा. होज़ूरे अकरम (स.अ.व.) नें यह ऐलान तीन बार दोहराया. किसी को लैब्बैक कहने की जुरअत न हुई. पस हज़रत अली (अ.स.) नें लब्बैक कहा चुनानचे जब दो रकात नमाज़ पढ़ चुके तो जब्रईल नाज़िल हुवे और फरमाया: खुदा तोहफ़ऐ दोरूद व सलाम के बाद फरमाता है हस्बे वादा एक ऊंटनी अली (अ.स.) के

हवाले करदीजिये. आप (अ.स.) नें फ़रमाया: मैंनें शर्त लगाई थी कि दिल में ख़याल न गुज़रे लेकिन अली (अ.स.) नें हालते तशहुद में यह ख़याल किया था कि उनमें से कौन सी लूं? तो जब्रईल नें दोबारा पलट कर अर्ज की, कि खुदा फरमाता है अली (अ.स.) का वह ख़याल दुनयावी न था बल्की मेरी खुशनूदी के लिये था क्यूंकि अली (अ.स.) नें सोचा था कि ऐसी ऊंटनी लूंगा जो ज़्यादा मोटी हो ताकि उस्को नहर करके मसाकीन पर सदका करू. पस खुशी के मारे रसूलुल्लाह (स.अ.व.) पर गिरया तारी हुवा और वह दोनों ऊंटनिया हज़रत अली (अ.स.) के हवाले करदीं और यह आयत उतरी.

اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَذِکۡرٰی لِمَنۡ کَانَ لَہٗ قَلۡبٌ

(सूरऐ क़ाफ़ आयत 37)

इस वाकेआ में नसीहत का सामान मौजूद है उस इंसान के लिये जिसके पास दिल हो.

2-तारेकुस्सलात क्यूं काफिर है?

मसअदा इमाम सादिक़ (अ.स.) का सहाबी, एक बार इमाम (अ.स.) के पास आया, और आकार स्वाल किया: यब्ना रसूलिल्लाह (स.अ.व.), क्या वजह है कि बद कार को बउनवाने काफिर मोअर्रफी नहीं कराई गई (यानी नहीं पहचनवाया गया) जब कि तारेकुस्सलात (नमाज़ छोडने वाले) को काफिर के नाम से याद किया जाता है इसकी दलील क्या है?

इमाम (अ.स.) नें फरमाया: क्यूंकि बदकार और उसकी तरह के दूसरे अफराद उस काम को जिंसी शहवत की वजह से अंजाम देते हैं, लेकिन तारेकुस्सलात नमाज़ को तर्क नहीं करता मगर फकत और फकत सुबुक (हल्का) समझते हुवे. मर्द बदकार औरत की तरफ नहीं आता मगर लज़्ज़त की वजह से लेकिन जो शख्स नमाज़ को तर्क करता है

उस्को कोई लज़्ज़त नहीं होती. जब लज़्ज़त न हो तो मालूम होता है कि नमाज़ को सुबुक शुमार करना बाइस बना कि नमाज़ को तर्क करे.

إذاوقع الإستخفاف وقع الكفر

जब नमाज़ को सुबुक शुमार किया तो कुफ्र आगया. (दास्तानहाए वोसूले काफी पेज.509).

49) हम्सायह

आयात:

1-ऐहसान:

وَاعْبُدُوا اللّٰہَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِی الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِی الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰہَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا

(सूरए निसा आयत 36)

और अल्लाह की इबादत करो और किसी चीज़ को उस्का शरीक न बनाव और वालदैन के साथ अछा बर्ताव करो और क़राबद्‌दारों के साथ, यतीमों, मिसकीनों, करीब के हमसाया, दूर के हमसाया, पहलूनशींन मुसाफिर, ग़ुरबत जदा गुलाम व कनीज़, सब

के साथ नेक बर्ताव करो कि अल्लाह मगरूर व मुतकब्बिर लोगों को पसंद नहीं करता.

2-पड़ोसी की मदद:

وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ

(सूरए माँऊन आयत 7)

और मामूली जोरूफ़ (बर्तन) भी आरियत (उधार) पर देने से इनकार करते हैं.

3-हमसाया से जुदाई:

يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْئًا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ

(सूरए दुखान आयत 41)

जिसदिन कोई दोस्त दूसरे दोस्त के काम आने वाला नहीं है और न उनकी कोई मदद की जाएगी.

4-शैतान कहता है:

وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ

(सूरए अनफाल आयत 48)
शैतान नें कहा मैं तुम्हारा मदद गार पड़ोसी हूँ.

5-हमसाया मोमिन हो:

الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ

اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا

(सूरए निसा आयत 139)
जो लोग मोमिन को छोड़ कर कुफ्फार को अपना वाली और सरपरस्त बनाते हैं क्या उन्के पास इज़्ज़त तलाश कररहे हैं जब कि सारी इज़्ज़त सिर्फ अल्लाह केलिये है.

रवायात:

1-शैतान से बचने का रास्ता:

قال أمير المؤمنين عليه السلام : اَلصَّلاَةُ حِصْنٌ مِنْ سَطَوَاتِ الشَّيْطَانُ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 782)

हज़रत अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) नें फरमाया: नमाज़ शैतान के हमलों से बचने केलिये एक किला है.

2-रहमते खुदा:

قال أمير المؤمنين عليه السلام : اَلصَّلاَةُ تَسْتَنْزِلُ الرَّحْمَةَ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 782)

हज़रत अली इब्नें अबी तालिब (अ.स.) नें फरमाया: नमाज़ रहमते खुदा को खैचती है.

3-इस्कदर रहमतें:

قال أمير المؤمنين عليه السلام : لَوْ يَعْلَمُ الْمُصَلِّي مَا

يَغْشَاهُ مِنَ الرَّحْمَةِ لَمَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُودِ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 783)

इमाम अली (अ.स.) नें फरमाया: अगर नमाजी को यह मालूम होजाऐ कि इसवक्त उसपर कितनी रहमतें नाज़िल हो रही हैं तो वह सजदे से कभी सर न उठाऐ.

4-नमाज़ को सुबुक समझना:

قال الصادق عليه السلام : إِنَّ شَفَاعَتَنَا لَا تَنَالُ

مُسْتَخِفًّا بِالصَّلوٰةِ

(वसाएल जिल्द 4 पेज 26)

इमाम सादिक़ (अ.स.) नें फरमाया: जिसने नमाज़ को सुबुक (हल्का) समझा वह हमारी शफाअत से महरूम रहेगा.

5-आखरी नमाज़:

قال أمير المؤمنين عليه السلام : إِذَا قَامَ أَحَدُكُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَلْيُصَلِّ صَلَاةَ مُوَدِّعٍ

(गुररुल हेकम जिल्द 1 पेज 782)

इमाम अली (अ.स.) नें फरमाया: जब तुम में से कोई नमाज़ केलिये खड़ा हो तो उस्को यह समझ कर नमाज़ पढ़नी चाहिये कि यह मेरी आखरी नमाज़ है.

तशरीह:

जिसके ज़ेहन में नमाज़ का फलसफा लेकाऐ इलाही (अल्लाह से मुलाक़ात) है और अज्र व सवाब का यकीन है. उस्के लिये सुबह, दोपहर, शाम, कोई वक्त मुश्किल नहीं है और खुदा ज़ेहन से निकाल जाऐ तो फिर हर वक्त मुश्किल है. नमाज़ एक फरीजा है और वक्ते मोअय्यन के साथ फरीजा है जिस का मतलब यह है कि नमाज़ पाबंदीये वक्त के साथ अदा करना चाहिये, वक्ते नमाज़ में कोताही करना असले नमाज़ में कोताही करने के मुरादिफ (बराबर) है, और इसी लिये ओल्माऐ इस्लाम नें बिला उज़र नमाज़ कजा करदेने को हराम क़रार दिया है. उज़र की तफसील भी अहकामे शरीयत से दरयाफ्त करनी चाहिये, खुद साख्ता खयालात का नाम उज़रे शरइ नहीं है. इंसान को यकीन हो जाऐ कि रात को देर तक जागना नमाज़े

सुबह के कजा हो जाने का बाइस होगा, तो सो जाना ज़रूरी है, और जागना हराम है. उस्के लिये कारे खैर का उज़र भी कारगर (छुटकारा) नहीं होसकता. नमाज़ पढ़ने से रिज्क में बरकत, परीशानियाँ दूर, और इत्मीनान व सोकूंन हासिल होता है. जब नमाज़ शुरू करो तो यह कहो कि दुन्या में मेरी आखरी नमाज़ है, और यह ख़याल करो कि जन्नत तुम्हारे सामने और जहन्नम तुम्हारे पैरों के नीचे, मलकुल मौत पीछे, अंबिया दाएँ तरफ, फ़रिश्ते बाएँ तरफ, और खुदा सर के ऊपर से देख रहा है. पस देखो कि तुम किसके सामने खड़े हो किस से मुनाजात कररहे हो, और तुम्हें कौन देख रहा है.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के मज्लूमे कर्बला हज़रत इमामे हुसैन (अ.स.) हमें नमाज़ और

अगर हमारे जिम्में कज़ा नमाजें हों तो उन्हें पढ़ने की तौफीक अता फरमा. (आमीन).

वाकेआत:

1-दो रकात नमाज़ दुनयावी ख़याल से खाली:

तफसीरे बुरहान में बरवायत इब्नें शहरे आशोब इब्ने अब्बास से मन्कूल है कि एक दफा रसूले खुदा (स.अ.व.) के पास दो ऊंटनियाँ बतौर हदिया आईं. आप (स.अ.व.) नें असहाब से फरमाया: कि तुम में से जो शख्स ऐसी दो रकतें अदा करे जिसमें कोई दुनयावी ख़याल दिल में न गुज़रे तो मैं इनमें से एक ऊंटनी उस्को दे दूंगा. होज़ूरे अकरम (स.अ.व.) नें यह ऐलान तीन बार दोहराया. किसी को लैब्बैक कहने की जुरअत न हुई. पस हज़रत अली (अ.स.) नें लब्बैक कहा चुनानचे जब दो रकात नमाज़ पढ़ चुके तो जब्रईल नाज़िल हुवे और फरमाया: खुदा तोहफ़ऐ दोरूद व सलाम के बाद फरमाता है हस्बे वादा एक ऊंटनी अली (अ.स.) के

हवाले करदीजिये. आप (अ.स.) नें फ़रमाया: मैंनें शर्त लगाई थी कि दिल में ख़याल न गुज़रे लेकिन अली (अ.स.) नें हालते तशहुद में यह ख़याल किया था कि उनमें से कौन सी लूं? तो जब्रईल नें दोबारा पलट कर अर्ज की, कि खुदा फरमाता है अली (अ.स.) का वह ख़याल दुनयावी न था बल्की मेरी खुशनूदी के लिये था क्यूंकि अली (अ.स.) नें सोचा था कि ऐसी ऊंटनी लूंगा जो ज़्यादा मोटी हो ताकि उस्को नहर करके मसाकीन पर सदका करू. पस खुशी के मारे रसूलुल्लाह (स.अ.व.) पर गिरया तारी हुवा और वह दोनों ऊंटनिया हज़रत अली (अ.स.) के हवाले करदीं और यह आयत उतरी.

اِنَّ فِیْ ذٰلِکَ لَذِکْرٰی لِمَنْ کَانَ لَہٗ قَلْبٌ

(सूरऐ क़ाफ़ आयत 37)

इस वाकेआ में नसीहत का सामान मौजूद है उस इंसान के लिये जिसके पास दिल हो.

2-तारेकुस्सलात क्यूं काफिर है?

मसअदा इमाम सादिक़ (अ.स.) का सहाबी, एक बार इमाम (अ.स.) के पास आया, और आकार स्वाल किया: यब्ना रसूलिल्लाह (स.अ.व.), क्या वजह है कि बद कार को बउनवाने काफिर मोअर्रफी नहीं कराई गई (यानी नहीं पहचनवाया गया) जब कि तारेकुस्सलात (नमाज़ छोडने वाले) को काफिर के नाम से याद किया जाता है इसकी दलील क्या है?

इमाम (अ.स.) नें फरमाया: क्यूंकि बदकार और उसकी तरह के दूसरे अफराद उस काम को जिंसी शहवत की वजह से अंजाम देते हैं, लेकिन तारेकुस्सलात नमाज़ को तर्क नहीं करता मगर फकत और फकत सुबुक (हल्का) समझते हुवे. मर्द बदकार औरत की तरफ नहीं आता मगर लज़्ज़त की वजह से लेकिन जो शख्स नमाज़ को तर्क करता है

उस्को कोई लज़्ज़त नहीं होती. जब लज़्ज़त न हो तो मालूम होता है कि नमाज़ को सुबुक शुमार करना बाइस बना कि नमाज़ को तर्क करे.

إذاوقع الإستخفاف وقع الكفر

जब नमाज़ को सुबुक शुमार किया तो कुफ्र आगया. (दास्तानहाए वोसूले काफी पेज.509).

50) यतीम

आयात:

1-यतीम को खाना खिलाना:

اَوْ اِطْعٰمٌ فِىْ يَوْمٍ ذِىْ مَسْغَبَةٍ يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ

(सूरए बलद आयत 14'15)

या भूक के दिन खाना खिलाना किसी क़राबद्दार यतीम को.

2-यतीम पर कहर व गुस्सा न करो:

فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ

(सूरए जुहा आयत 9)

लिहाजा अब यतीम पर कहर (गुस्सा) न करो.

3-यतीम का माल खाना:

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِىْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ؕ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا

सूरए निसा आयत 10

जो लोग जालेमाना अंदाज़ से यतीमों का माल खा जाते हैं वह दर हकीकत अपने पेट में आग भर रहे हैं और अन्क़रीब वासिले जहन्नम होंगे.

4-यतीम को धोके मत दो:

اَرَءَيْتَ الَّذِىْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ

فَذٰلِكَ الَّذِىْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ

(सूरए माऊंन आयात 1’2)

क्या तुम नें उस शख्स को देखा है जो क़यामत को झुटलाता है यह वही है जो यतीम को धोके देता है.

5-यतीमों के बारे में स्वाल:

وَيَسۡـَٔلُوۡنَكَ عَنِ الۡيَتٰمٰى‌ؕ قُلۡ اِصۡلَاحٌ لَّهُمۡ خَيۡرٌ‌ؕ وَاِنۡ تُخَالِطُوۡهُمۡ فَاِخۡوَانُكُمۡ‌ؕ وَاللّٰهُ يَعۡلَمُ الۡمُفۡسِدَ مِنَ الۡمُصۡلِحِ

(सूरए बकरा आयत 220)

और यह लोग तुमसे यतीमों के बारे में स्वाल करते हैं तो कह दो कि उन्के हाल की इस्लाह बेहतरीन बात है और अगर उनसे मिल जुल कर रहो तो यह भी तुम्हारे भाई हैं और अल्लाह बेहतर जानता है कि मुस्लेह (इस्लाह करने वाला) कौन है और मुफ्सिद (फसाद करने वाला) कौन है:

रवायात:

1-नेकी करो:

قال أمير المؤمنين عليه السلام: بَرُّوا اَيْتَامَكُمْ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 786)

इमाम अली (अ.स.) नें फरमाया: अपनें यतीमों के साथ नेकी करो.

2-खुदा के नजदीक मोअज़्ज़ज़ (इज़्ज़त वाला) व मुकर्रम (बुज़ुर्ग):

قال أمير المؤمنين عليه السلام: كَافِلُ الْيَتِيْمِ وَ الْمِسْكِيْنِ عِنْدَ اللهِ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 786)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: यतीम व मिस्कींन की किफालत (परवरिश) करने वाला खुदा के नजदीक इज़्ज़त वाला और बुज़ुर्ग है.

3-यतीमों से बेहतरीन सुलूक:

قال أمير المؤمنين عليه السلام: مَنْ رَعَي الْأَيْتَامَ رُعِيَ فِي بَنِيهِ

(गुररुल हेकम जिल्द 2 पेज 786)

अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) नें फरमाया: जो यतीमों का ख़याल रखता है उसकी अव्लाद का ख़याल रख्खा जाऐगा.

4-यतीमों से बेहतरीन सुलूक:

قال رسول الله صلي الله عليه واله وسلم: كُنْ لِلْيَتِيمِ كَالْأَبِ الرَّحِيمِ

(मिजान अल हिक्मा जिल्द 4 पेज 3708)

रसूले खुदा (स.अ.व.) नें फरमाया: यतीमों के साथ मेहरबान बाप जैसा सुलूक करो.

5-यतीमों के सर पर हाथ रखने का अज्र:

قال أمير المؤمنين عليه السلام: مَا مِنْ مُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ يَضَعُ يَدَهُ عَلَى رَأْسِ يَتِيمٍ إِلَّا كَتَبَ اللهُ لَهُ بِكُلِّ شَعْرٍ مَرَّتْ يَدَهُ عَلَيْهَا حَسَنَةٍ

(मिजान अल हिक्मा जिल्द 4 पेज 3708)

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: कोई भी मोमिन मर्द या औरत जब अपना हाथ यतीम के सर पर फेरता, या रखता है तो परवरदिगार उस्के लिये हर बाल के बदले एक नेकी लिख देता ह.

तशरीह:

यतीम की किफालत (देख भाल) करना एक अजीम इबादत है. जो शख्स यतीम की किफालत करता है खुदा ऐसे असबाब मुहय्या करता है कि, उस के बच्चो की किफालत की जाऐगी. कुरआन व रवायात में यतीम के साथ अच्छा बर्ताव और नेकी करने का हुक्म दिया गया है, और यतीम के माल की देख भाल और उस्के माल को न खाने का अम्र (हुक्म) किया गया है. यतीमों की देख भाल और उनपर इन्फाक (खर्च करना) और खाना खिलाने वगैरा का बहुत अज्र व सवाब है. जन्नत में एक आलीशान बाग है जिसमें सिर्फ वह लोग जाएँगे जो मोमेनीन के यतीमों को दुन्या में खुश किया करते थे. यतीम के सर पर हाथ रखना या उन्के सर पर हाथ फेरने का भी अज्र व सवाब है. जितनें बाल हाथ फेरने के नतीजे

में हाथ के नीचे आएंगें तो हर बाल के एवज़ एक नेकी लिखी जाएगी. यतीमों का ख़याल रख्खें यह न हो कि यतीमों के नाम पर हम माल जमा करें और फिर खुद ही खाजाएँ. जो ऐसा करता है या करेगा उस्का ठिकाना जहन्नम है. यतीमों के साथ अपनें बच्चों जैसा सुलूक करें जिस्तरह हम चाहते हैं हमारे बच्चे खुशहाल और अच्छे तरीके से रहें उसी तरह यतीमों के बारे में सोंचें.

खुदा से दुआ करते हैं बहक्के मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.मु.स.) यतीमों का ख़याल रखने और उन्के साथ नेक सुलूक करने की तौफीक अता फरमा. (आमीन)

वाकेआत:

1-मौला अली (अ.स.) और यतीम परवरी:

हज़रत अली (अ.स) नें एक खातून को कंधे पर पानी का मश्कीज़ा उठाऐ जाते हुवे देखा. आप (अ.स.) नें आगे बढकर उससे मश्कीज़ा लेलिया और खुद उठाया. उसे उस्के घर तक पहुँचाया और उस से उस्के हालात मालूम फरमाऐ.

औरत नें कहा मेरे शौहर को हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) नें किसी ज़रूरी शरई काम केलिये भेजा था वह उधर शहीद होगया. अपनें बाद मेरे लिये चंद छोटे यतीम बच्चे छोड़ गया है. मेरे वसाऐल महदूद हैं. बच्चो की सरपरस्ती नहीं करपाती हूँ. ज़रूरत कीवजह से मैं लोगों के घरों में खिदमत करती हूँ.

हज़रत अली (अ.स.) वहाँ से वापस लौटे और खुराक का सामान उठाया, उस औरत के

घर को चले जब आप (अ.स.) वह खुराक का सामान उठाकर जा रहे थे तो रास्ते में आप (अ.स.) को आप (अ.स.) के सहाबा अकीदतमंद मजबूर कर रहे थे कि सामान हम उठाते हैं.

आप (अ.स.) फरमाते हैं: आज तो तुम उठावोगे लेकिन क़यामत के दिन मेरा बार कौन उठाऐगा?

आप (अ.स.) उस खातून के दरवाज़े पर पहुंचे दक्कुल बाब किया अंदर से खातून नें पूछा: कौन है?

आप (अ.स.) नें जवाब दिया कि वही जिसनें कल आप का मश्कीजा उठाने में मदद की थी. अब आप के बच्चों केलिये खुराक लाया हूँ दरवाज़ा खोलें.

औरत नें दरवाज़ा खोला खानें का सामान लेलिया और दुआ की. खुदा वंदे मूतआल आप से राजी और अली इब्ने अबी तालिब

(अ.स.) से बाज़ पुर्स करे (हिसाब व किताब करे)

आप (अ.स.) नें इजाज़त चाही कि अगर इजाज़त हो तो अंदर आजावूं. उसने इजाज़त दी आप (अ.स.) नें फरमाया: मैं आप के घरेलू कामों में आप की मदद करना चाहता हूँ. बताव बच्चों को बहलावोगी या रोटी पकावोगी?

औरत नें कहा मैं खाना बनाने का काम ज़्यादा बेहतर जानती हूँ. आप ज़रा मेरे बच्चों को बहला दें.

खातून आटा खमीर (गूंधनें) करने लगी तो हज़रत अली (अ.स.) जो गोश्त लाऐ थे उस्के कबाब बनाने लगे वह कबाब और खुझूरें बच्चों को खिलाने लगे और साथ साथ फरमाते: अय बच्चो तुम अली (अ.स.) से राजी होजाव.

जब औरत नें आटा खमीर करलिया तो देखा कि तनूर रौशन होगया है, हज़रत अली (अ.स.) नें तनूर जला दिया आप (अ.स.) जब तनूर पर खड़े, इंधन डाल रहे थे तो आग की हरारत महसूस करते तो फरमाते: ज़रा इस गरमी को बर्दाश्त करो, आप किसतरह उस बेवा और यतीम बच्चों से बेखबर रहे.

उस दौरान एक औरत जो हज़रत अली (अ.स.) को जानती थी घर में दाखिल हुई जूंही उसकी नज़र हज़रत (अ.स.) पर पडी तो जल्दी से उस बेवा औरत से कहा: यह क्या हुवा अय औरत? अफ़सोस है कि तू अहले इस्लाम के पेशवा और मुल्क के सरबराह हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) से घरेलू काम करवा रही है.

औरत शर्मिंदगी में डूब गई और जल्दी से हज़रत अली (अ.स.) के पास पहुंची अर्ज

किया: अय अमीरुल मोमेनीन मुझे आप से शर्मिंदगी है मुझे माफ करदेना.

हज़रत अली (अ.स.) नें फरमाया: मैं आप से और आप के बच्चों के हक़ में बेखबर होने पर माज़रत (माफी) चाहता हूँ. (बिहारुल अन्वार जिल्द 9 पेज 536 मौज़ूइ दास्तानें पेज 367 गंजीनए मआरिफ जिल्द 1 पेज 789).

2-यतीमों से मेहरबानी:

बसरा के ऐलाके में एक शख्स की वफात हुई, चूँकि वह शख्स गुनाहगार था उस्की मय्यत उठानें में कोई शरीक न हुवा. उस्की बीवी नें उजरत (किराऐ) पर चंद मजदूर मंगवाकर उस्का जनाज़ा उठवाया. गुस्ल व कफ़न के बाद उस्की नमाज़े जनाज़ा मे शरीक होने भी कोई न आया.

जब मय्यत कब्रस्तान की तरफ रवाना हुई तो लोगों नें देखा कि एक जाहिद व पारसा

शख्स रास्ते में खड़ा उस मय्यत का इन्तेज़ार कर रहा था. जब मय्यत उस्के नजदीक पहुंची तो वह खुद भी जनाज़ा पढ़ने केलिये खड़ा होगया और साथ वालों को भी शरीक होनें का हुक्म दिया. सब नें मिलकर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी. देखनें वालों को उसपर तअज्जुब हुवा तो उन्हों नें उस पारसा से पूछा, उसनें बताया कि मुझे ख्वाब में हुक्म हुवा है कि फलां जगह जाव. एक जनाज़ा आऐगा जिसके साथ सिर्फ एक खातून होगी तुम जाकर उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ो, क्यूंकि उसकी बख्शीश हो ग़ई है.

फिर उस पारसा शख्स नें मरहूम की बीवी से उस्के हालात मालूम किये, औरत ने जवाब दिया कि मेरा शौहर अलल ऐलान कसरत से शराब पीता था. नेक शख्स नें पूछा क्या उस्का कोई अच्छा अमल भी था?

औरत ने कहा हाँ वह सिर्फ तीन अच्छे काम करता था 1-जब शराब का नशा खत्म होता है तो रोता है और कहता है खुदाया! क्या मालूम तेरी जहन्नम के किस गोशे में मेरा ठिकाना होगा- 2-सुबह सवेरे गुस्ल करता है, लिबास तब्दील करके नमाज़ में मशगूल होजाता है- 3-वह हमेशा हर वक्त तीन चार यतीम बच्चों को अपनें घर में रखता था और अपनी अव्लाद से ज़्यादा उनसे मुहब्बत का इज़हार करता था. (मौजूइ दास्तानें पेज 366)

तम्मत बिलखैर व अल्म्दुलिल्लाहे रब्बिल आलमीन.

मनाबेअ व मआखज़

कुरआने मजीद = तर्जुमा अल्लामा जीशान हैदर जवादी.

नहजुल बलागा = तर्जुमा अल्लामा मुफ्ती जाफ़र हुसैन साहब.

सहीफ़ऐ कामेला = तर्जुमा अल्लामा मुफ्ती जाफ़र हुसैन साहब.

1-आमालुल वाऐजीन = सय्यद इब्राहीम लैलानी

2-अहसनुल मक़ाल = मौलाना सफ़दर हुसैन नजफी.

3-ओसूले काफी = मोहम्मद याकूब कुलैनी.

4-इर्शादुल कुलूब = आक़ाऐ दैल्मी.

5-अमाली = शैख़ तूसी.

6-अल इरशाद = शैख़ मुफीद.

7-इंसान साज़ वाकेआत = सय्यद अली अफज़ल जैदी.

8-बिहारुल अन्वार = अल्लामा मजलिसी.

9-बिखरे मोटी = आयतुल्लाह दस्ते गैब.

10-बिस्त गुफ्तार = शहीद मुतहहरी.

11-पिंन्दे तारीख = मूसा खुसरवी.

12-तौबा आगोशे रहमत = उस्ताद अन्सारियान.

13-तौबा अज़ मंज़रे कुरआन व रवायात = उस्ताद ऐतमाद.

14-तहजीबे ज़िंदगी = सय्यद शहंशाह हुसैन नकवी.

15-तफसीरे नमूना = आयतुल्लाह मकारिम शीराजी.

16-तफसीरे मजमउल बयान = हसन तबरी.

17-तफसीरे बुरहान = आक़ाऐ बहरानी.

18-चेहल हदीस = रसूल महल्लाती.

19-हयातुल कुलूब = अल्लामा मजलिसी.

20-खेसाल = शैख़ सदूक.

21-खजीनतुल जवाहिर फी जीनतुल मनाबिर = अली अकबर नहावांदी.

22-दास्तानहाये ओसूले काफी = मोहम्मद मोहम्मदी इश्तेहार्दी.

23-सीरते हज़रत फातिमा ज़हरा (स.अ.) = मोहम्मद सलीम अल्वी.

24-सफीनतुल बिहार = शैख अब्बास कुम्मी.

25-शरहे ज़ियारते अमीनुल्लाह = रसूल महल्लती.

26-शरहे हदीसे जुनूद व अक्ल व जेहल = इमाम खुमैनी.

27-आकेबत व कैफर गुनाह गारां = सय्यद जवाद रज़वी.

28-गोररुल हेकम (उर्दू) = सय्यद हुसैन शैखुल इस्लाम.

29-इबरत अंगेज़ वाकेआत = मोहम्मद हुसैन तेहरानी.

30-फीरोजुल लुगात (उर्दू) = मौलाना फिरोज़ुद्दीन.

31-कुरआनी लतीफे = सय्यद तमीजुल हसन रज़वी.

32-किताबुश्शाफी = किबला ज़फर हसन अमरोहवी.

33-कन्जुल आमाल = मुल्ला मुत्तकी हिन्दी.

34-कश्कोल = शैख़ बहाई.

35-कश्कोल दस्ते गैब = आयतुल्लाह दस्ते गैब.

36-गंजीनऐ मआरिफ = मोहम्मद रहमती शहर सफा.

37-गुन्जहाई बहिश्ती = अली मोहम्मद हैदर नराकी.

38-मिज़ानुल हिक्मा = आक़ाऐ रय शहरी.

39-मोजेज़ाते आले मोहम्मद (स.अ.व.) = सय्यद हाशिम बहरानी.

40-मनाकिबे आले अबी तालिब = इब्ने शहरे आशोब.

41-मजालिसे बनी हाशिम = सय्यद इश्तेयाक हुसैन कर्बलाई.

42-मौज़ूइ दास्तानें = काजिम सईद पूर.

43-वसाऐ लुश्शीआ = शैख़ हुर्रे आमुली.

44-हज़ार व यक हिकायते अखलाकी = मोहम्मद हुसैन मोहम्मदी.

55-यक सदो पंजाह मौज़ू अज़ कुरआनें करीम व अहादीसे अहलेबैत (अ.मु.स) = अकबर दहक़ानी.

46-इल्मी उर्दू लोगत = वारिस सर हिन्दी.

47-व रफ़ाना लका जिकरक = सय्यद जुल्फिकार हुसैन नक़वी.

और मुखतलिफ़ अखबारात व रसाऐल, क़ुतुब इंटर नेट से इस्तेफादा.

.'तम्मत'.